

हंडिया विधानसभा क्षेत्र
में
राजनीतिक पक्ष एवं राजनीतिक जागरण
: एक अध्ययन

(Political Parties & Political Socialization
in
Handia Assembly Constituency
: A Case Study.

:
:
:

कमलाक्षर त्रिपाठी
द्वारा
राजनीतिशास्त्र में डी० फिल० डिग्री हेतु
प्रयाग विश्वविद्यालय
की प्रस्तुत
शीघ्र प्रबन्ध

प्रास्ताविक

प्रस्तुत विषय (छड़िया विधान सभा क्षेत्र में राजनीतिक दलों एवं राजनीतिक समाजीकरण : एक अध्ययन 'POLITICAL PARTIES AND POLITICAL SOCIALIZATION IN HANDIA ASSEMBLY CONSTITUENCY : A CASE STUDY ') पर शोध कार्य राजनीतिशास्त्र की वर्तमान नवीन प्रणालियों एवं व्यवस्थाओं के अन्तर्गत एक प्रयास है । परंपरावादी व्यवस्था की पद्धति एवं तत्सम विधियों की परिधि से निकलकर व्यवस्थावादी क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयत्न किया है । औद्योगिक राज्यों में राजनीतिक दलों का उद्भव, विकास, फैलन, नेतृत्व एवं कार्य किस प्रकार तथा स्तर पर औद्योगिक मूल्यों के अनुसार होता है तथा राजनीतिक समाजीकरण में उनका क्या योगदान है इसका एक विधान सभा क्षेत्र की दृष्टि के रूप में स्वीकार कर अध्ययन किया गया है । छड़िया विधान सभा क्षेत्र स्थानीय प्रधान मंत्री पं० बहादुर लाल मेहरा के झुलपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का पंचांग है और इस क्षेत्र का स्वाधीनता संग्राम में प्रगल्भीय, चिरस्थायी एवं अनुकरणीय योगदान का पालन रहा है और वर्तमान समय में भी राजनीतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण स्थल है । छड़िया विधान सभा क्षेत्र राजस्थान के पूर्व का पूर्वी भाग है जिससे वाराणसी जिले की सीमा मिलती है । (छड़िया विधान सभा क्षेत्र का मानचित्र संलग्न है जिसमें मतदान स्थलों की संख्या एवं नाम दीक्षित है)

शोध प्रबन्ध की संरचना को सात अध्यायों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है । प्रथम अध्याय में विषय परिचय है जिसमें राजनीतिक दलों के वाक्यांश, परिभाषा, उनके मूलभूत तत्त्वों और उनके राजनीतिक समाजीकरण के स्तरों को स्पष्ट किया गया है । इसके अतिरिक्त इस अध्याय में उन परिकल्पनाओं (Hypotheses) का भी उल्लेख है जिनके परीक्षण का इस शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत अध्यायों में प्रयत्न है । शोध कार्य में प्रयुक्त पद्धति का भी विवरण दिया गया है जो कि अन्त में छड़िया विधान सभा क्षेत्र के जन के कारणों पर प्रकाश डाला गया है ।

द्वितीय अध्याय में छड़िया विधान सभा क्षेत्र में राजनीतिक

पुरस्कार, एता हस्ताक्षर एवं समस्या-साधन आदि के अवसरों पर होता है।

पंचम अध्याय में राजनीतिक दलों की भूमिकाओं एवं कार्यों का ब्रुण है जिसमें प्रमुख रूप से निर्वाचन जुड़ता है जिसके तत्वीन प्रत्याशियों का चयन, राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव अभियान का संवाहन, मतदाताओं का वडा प्रयोग, राजनीतिक दलों द्वारा मतदान प्रक्रिया में सक्रीय एवं मतगणना कीर उन का पर होनेवाले व्ययों का विवरण है। राजनीतिक दलों के डा १ राजनीतिक-निर्णय-प्रभावन, राजनीति का जायुनिकीकरण, हित सं धियोजन एवं समूहन (Interest Articulation and Aggregation) तथा राजनीतिक समाजीकरण आदि होनेवाले कार्यों का भी विवरण दिया गया है। राजनीतिक दल के सभी कार्य काफ़ीरने के परस्पर जन्यदाता एवं जन्य है जो कि एता प्राप्ति का साधन है।

अष्टम अध्याय में राजनीतिक समाजीकरण जिसके विषय में ज्ञाना विस्तृत अध्ययन इसके पूर्व किसी भी भारतीय की दृष्टि में उपलब्ध नहीं हुआ है, की विवेचना करते हुए उसके एक वडा राजनीतिक भाग ग्रहण (Participation) का दिवरण दिया गया है जिसमें नागरिक का राजनीतिक दलों से संपर्क एवं संघ तथा दलों एवं नेताओं के प्रति पारणा ; नागरिकों की प्रवृत्तियों पर राजनीतिक दलों के संपर्क का प्रभाव ; मतदान की प्रभाविका करनेवाले कार्यों ; मत निर्णय के बाधाओं, मतदाता द्वारा उसके मत के विषय में उनके द्वारा निर्णय ले के कार्यों ; मतदान में वांछित भाग ग्रहण तथा मतदान के प्रति उदासीनता के कारणों ; राजनीति में की लोग बहुत सक्रिय हैं इसके विषय में नागरिकों द्वारा रही जानेवाली पारणाओं तथा वर्तमान समय में दैहिक एवं समानकारी की मूल्यों का नागरिक जीवन में महत्त्वों की होब करने का प्रयत्न किया गया है।

अष्टम अध्याय में राजनीतिक समाजीकरण के अन्तिम पडा राजनीतिक ज्ञान (Cognition) की विवेचना की गई है जिसमें नागरिकों की राजनीतिक गुणा प्राप्ति के माध्यमों, राजनीतिक दलों के नामों, नेताओं एवं निवाधियों से संबंधित जानकारी ; दैवीय समस्याओं का ज्ञान तथा विकास कण्ड में माता एवं तक की राजनीतिक संस्थाओं, अधिकांशों और उनकी संक्रियाओं

के ज्ञान स्तरों का बन्धन किया गया है । ज्ञातव्य है कि राजनीतिक मान ग्रहण एवं राजनीतिक ज्ञान पर जाति, शिक्षा, जाति, व्यवसाय तथा राजनीतिक वर्गों की स्वस्थता एवं अन्य चीजों से सम्बन्ध के प्रभावों का परीक्षण किया गया है । इसी राजनीतिक वर्ग की स्वस्थता का वैशिष्ट्य स्पष्ट हुआ है ।

ग्रंथपुष्पी एवं लेख पुष्पी में छिपित सामग्रियों का विशेष उपयोग अध्ययन के हेतु हुआ है जहाँ से आवश्यक ज्ञान वहाँ से लेना दिया गया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रारंभ किए पन्द्रह मास की पूर्ण नहीं हुए थे कि जापातकाठीन घोषणा २६ जून, १९७५ की गई जिसके कारण शोध कार्य (Field Work) में बनेक व्यवधान बने नागरिकों, फटाफटकारियों एवं नेताओं द्वारा साक्षात्कार देने में विचित्रवास्तव जादि जाये जो कि शोध प्रबन्ध की प्रस्तुत करने में विघ्न के कारण बने ।

प्रधान विश्वविद्यालय के राजनीति विभाग के अधीन व्यावहारिक शोध में यह प्रथम शोध कार्य है । इसके विषय बयन तथा सम्बन्ध परामर्श के लिए मैं परम सम्माननीय डाक्टर सम्बादत पन्त का वाजीवन चुनी रहूँगा । विषय पर पिता निर्देश का गुरुत्तर, कठिन तथा समय एवं आ साम्य साहित्य-निर्वाह डाक्टर सुरेन्द्र नाथ मिश्र ने किया जिसके परिणाम स्वयं यह कार्य जग ही जग में उनका वाजीवन जामारी रहूँगा । जापातकाठीन घोषणा के फलस्वरूप का डा० मिश्र " नीला " (NISA) के अधीन बन्धी बनाये गये तब उस जग तन्त्र में डा० सम्बादत पन्त ने गहन संस्कारपूर्ण एवं निराशागर्भित वेज में अपना दिशा-निर्देश देकर जाशा का संभार किया । श्री मोहन जग, राजनीति विभाग डा० विद्यासागर मिश्र, शिक्षा विभाग ने शोध की प्रकृति पर मार्ग-दर्शन दिया उसका मैं कृतज्ञ हूँ । राजनीति विभाग के कार्यालय प्रधान श्री आनन्द मिश्र एवं पुस्तकालयाध्यक्ष के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिसके उपयोग से समय-समय पर जानकारी जाधार्थ दूर होती रही है । मानना सम्बन्धी अवलोकन है, लिए डा० रामाश्व त्रिपाठी की तथा टंकन के लिए श्री ईश्वर जरण श्रीपास्त की बन्धवाद देता हूँ जिससे शोध प्रबन्ध का प्रस्तुतीकरण हो सका । सभी उन सास्त

(3)

सहयोगी बन्पुत्रों को शारीरिक बर्बाद देता हूँ जिसके दाया दाया एवं कया कया के सहयोगी बिन्दुओं से शीघ्र प्रवेश का सहीवर पर उजा । राजनीतिक बलों की शीघ्रता विधान का दौत्र में गठित बकायों के पदाधिकारियों का मैं जामारी हूँ बिन्दुनि पास्तिकितार्थों को शीघ्र बर्बाद के कदा स्पष्ट किया । मैं उन नागरिकों एवं नेताओं का भी जामारी हूँ जो अपनी अपनी व्यस्त दाया में समय निकालकर तथा सादास्फार देकर जन्मबोध की एकछता की लाभ्य किया । वन्त मैं मैं अपनी कस्त भुमिबुद्धों के प्रति जामार प्रदर्शित करता हूँ जिसके प्रोत्साहनों एवं उद्भावों ने इस कठिन कार्य को करने की शक्ति प्रदान की ।

(कलश रंकर विपाटी)

श्रीपञ्चमी

२६ जून १९७८ ई० ।

(जामादु बुद्धा पदा नवीं गुरुवार विजयी एम्बु २०३५)

(क)

विषय - सूची

पृष्ठ संख्या

प्राक्कल्प

- ४ - ४

मानचित्र

प्रथम अध्याय : विषय-प्रवेश

- १ - २३ ग

राजनीतिक दल की परिभाषा ; राजनीतिक
दल के सत्व ; राजनीतिक स्माजीकरण ;
छोछ्या विधान स्मा दौत्र के कम के कारण ;
पदति ; छेदम छैत ।

द्वितीय अध्याय : छोछ्या विधान स्मा दौत्र में राजनीतिक २४ - ६६
दली का उद्भव स्मा विकास

भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस ; विधान मकसूर प्रजा पाटी ;
प्रजा स्माजवादी दल ; स्माजवादी दल ; छेकुका
स्माजवादी दल ; भारतीय श्रान्तिदल ; भारतीय छेज्जुत ;
छान्तिवादी दल ; रामराज्य परिषद् ; रिषाविक्रम पाटी ;
भारतीय जनछेव ; हिन्दू महाछमा ; छेठन काग्रेस ; मुण्डल
मज्जिछ ; जनता पाटी ; निषाचिन में मत ; रैता विा ;
छेदम छैत ।

तृतीय अध्याय : राजनीतिक दल का छेठन

६७ - १४८

छमयिक ; छदस्य ; छेठनात्मक छकाछ्या ;
छोछ्या विधान स्मा दौत्र का विवरण ;

अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस : अटक कांग्रेस कमेटी ;
 भारतीय जनसंघ : स्थानीय समिति ; मण्डल समिति ;
 भारतीय लोकसभा ; प्रारम्भिक कॉलेज ; दीवरीय कॉलेज ;
 कार्यकर्ता ; सामुदायिक कौशल एवं समितियाँ ; कौशल की
 विशेषताएँ ; नियंत्रणशीलता ; गतिशीलता ; दलीय
 निष्ठा ; पुन्यप्रेता ; विवेकशीलता ; लोकात्मता ;
 शासनात्मक शक्ति दुर प्रशासिकाओं का कीर्तित विवरण ;
 संघर्ष शक्ति ।

अध्याय : नेतृत्व

१४६-२०६

राजनीतिक नेता के लक्षण ; नेता में विशेषताएँ ;
 राजनीति में जानेवाली परिस्थितियाँ ; नेतृत्व की
 भूमिका के बार बरण १- राजनीतिक अनुसंधान ;
 २- राजनीतिक अन्वेषण ; ३- राजनीतिक आदर्शकरण ;
 ४- राजनीतिक प्रवर्धन ; नेतृत्व की प्रकृति ; लोकात्मिक ;
 प्राक्काशवादी ; नेता की शक्तियाँ ; आदर्शवादी, व्यवहारवादी,
 वास्तविक, नाममात्र, वंशकुल, परिस्थितिक, गुटप्रिय,
 का प्रिय, जाति प्रिय, सर्व प्रिय, फासद, उपवासद,
 राजनीतिक नेता के कार्य ; लगे रह की शक्तिशाली एवं
 प्रमुख संघ बनाना ; नागरिकों को राजनीतिक जिज्ञा
 देना ; तनाव शिथिल ; बलों में समन्वय स्थापन ;
 जनता एवं सरकार के मध्य संतुलन ; जनशरीरवाण, नापन
 एवं निवेदन ; प्रशासन का ऐवांशुलीकरण ; राजनीतिक
 मूर्तों का विचार एवं प्रचार ; राजनीतिक नेतृत्वता का
 निर्माण, प्रतिपालन एवं अभिरक्षण ; बल का प्रतीकीकरण ;
 नीति-निर्माण एवं प्रियान्वयन ; राजनीतिक शैली का विकास ;

जलित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस : अंक कांग्रेस कीटी ;
 भारतीय जनसंघ : स्थानीय समिति ; मण्डल समिति ;
 भारतीय लोकसभा ; प्रारम्भिक कीट ; राष्ट्रीय कीट ;
 कार्यकर्ता ; वायुनामिक संलग्न एवं समितियाँ ; संलग्न की
 विशेषताएँ ; नियंत्रणशीलता ; गतिशीलता ; दलीय
 निष्ठा ; पुन्यप्यता ; विद्वन्शीलता ; लोकप्रतापता ;
 तादात्म्यकारीय दुर पदाधिकारियों का कीर्तित विवरण ;
 संघर्ष संघ ।

कुर्य वध्याय : नेतृत्व

१५६-२०६

राजनीतिक नेता के लक्षण ; नेता में विशेषतायें ;
 राजनीति में जानेवाली परिस्थितियाँ ; नेतृत्व की
 भूमिका के चार वर्ण १- राजनीतिक अनुस्थितिकान ;
 २- राजनीतिक अन्तर्गतता ; ३- राजनीतिक आपत्तीकरण ;
 ४- राजनीतिक प्रव्यक्ता ; नेतृत्व की प्रकृति ; लोकतांत्रिक ;
 प्राधिकारवादी ; नेता की भूमिका ; आपत्तीवादी, व्यवस्थावादी,
 वास्तविक, नाममात्र, पैठानुगत, परिस्थितिवन्ध, गुटप्रिय,
 काँ प्रिय, जाति प्रिय, एवं प्रिय, पदाब्ध, उपपदाब्ध,
 राजनीतिक नेता के कार्य ; तपो दल की शक्तिशाली एवं
 प्रभुत्व संयन्त्र बनाना ; नागरिकों को राजनीतिक शिक्षा
 देना ; तनाव शिथिल ; वहाँ में समन्वय स्थापना ;
 जनता एवं सरकार के मध्य संतुलन ; जनसरोज्वारण, भाषन
 एवं निर्देशन ; प्रशासन का ऐवांमुलीकरण ; राजनीतिक
 मूल्यों का विकास एवं प्रचार ; राजनीतिक नेतृत्वता का
 नियंत्रण, प्रतिमादन एवं अभिरक्षण ; दल का प्रतीकीकरण ;
 नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन ; राजनीतिक शैली का विकास ;

पादात्कार किये हुए नेताओं का विवरण ;
 संक्षेप में ।

पंचम अध्याय : राजनीतिक दल की सुविधायें एवं कार्य - २१०-२५४

निर्वाचन लड़ना ; राजनीतिक निष्पक्ष-प्रभाव ;
 राजनीति का जायजनीकरण ; दल की कार्य-योजना
 एवं सुलभ ; राजनीतिक समाजीकरण ; संक्षेप में ।

षष्ठम अध्याय : राजनीतिक समाजीकरण

२५५-३१०

समाजीकरण ; राजनीतिक समाजीकरण की
 परिभाषा ; पादात्कार नागरिकों का विवरण ;
 राजनीतिक भाग ग्रहण : (क) राजनीतिक दल
 से संबंध (ख) राजनीतिक दलों के प्रति धारणा
 (ग) राजनीतिक दलों के संबंध से नागरिकों की
 प्रवृत्तियों पर प्रभाव (घ) मतदान ; संक्षेप में ।

सप्तम अध्याय : राजनीतिक संज्ञान

३११-३६२

राजनीतिक सूचना प्राप्ति के माध्यम ;
 राजनीतिक दलों के प्रति जानकारी ; चुनावों
 में कांग्रेस की विजय के कारण ; चुनाव का प्रभाव ;
 बान्दीज की जानकारी ; समस्याओं का ज्ञान ;
 विकास लक्ष्य स्तर से भारत एवं के प्राधिकारियों ,
 उनकी शक्तियाँ एवं कार्य का ज्ञान ; संक्षेप में ।

उपसंहार

— ३६३-३७४

(बी)

पृष्ठ संख्या

परिशिष्ट

१७५-१८६

- क- संसदन की स्थायीयों के महाधिकातरियों हे
सादात्कार में प्रयुक्त प्रश्नावली ।
- ख- राजनीतिक दलों के नेताओं हे सादात्कार
में प्रयुक्त प्रश्नावली ।
- ग- नागरिकों हे सादात्कार में प्रयुक्त प्रश्नावली ।

प्रति एवं उस पृष्ठा

१६०-१६६

००००००

विचार-प्रवेश

आज संसार के अधिकांश राज्यों ने अपने वर्तमान विचार के विभिन्न तथा अपने नागरिकों की स्वतंत्रता, कला तथा संस्था का रक्षास्वात्म करने हेतु लोकसत्ता का कब स्वीकार किया है। लोक का विकेंद्रीकरण, तथा नै नाग-श्रृंखला, विधान के प्रकार में परिवर्तन, जनसत्ता का सम्मान, शासन में सेवा-भाव का प्रसार, परस्पर बाधा है समस्याओं का समाधान, लोक शक्तिशाली प्रजातंत्रों की प्रोत्साहन, राष्ट्रीयता का वागर्ण तथा नृसैन्य युद्धमन्त्र का पाप पुनः वादि लोकसत्ता के महत्त्वपूर्ण, दीदी-ध्यान एवं लोकसत्ता मूल्य हैं परन्तु इन मूल्यों को धारण करने का वर्तमान क्षमता कौन है ? क्या इसका विचार किया जाता है कि राजनीतिक दलों का किन दलों के धानने का बाधा है। राजनीतिक दल विचार, अधिकांश एवं विश्वास की स्वतंत्रता के परिचायक, सुदृढ़ता तथा समन्वय है और संयुक्त की व्यापक करने एवं व्यवस्था की क्षमता में अधिकांश राजनीतिक दल प्राप्त करने का क्षमता, एकल एवं नवीन क्षमता है। राजनीतिक दलों ने लोकसत्ता के मूल्यों को धारण करने में विश्व समन्वयता का प्रदर्शन किया है उससे यह स्पष्ट हो स्वीकार किया जा सकता है कि लोकसत्ता का प्राण धर्म ही है क्योंकि राजनीतिक दलों के अभाव में लोकसत्ता एक सुखद कल्पना मात्र है।

विश्व के राजनीतिक समन्वय पर राजनीतिक दलों का पदार्पण क्या, कहाँ और कैसे हुआ ? यह राजनीतिक इतिहास हमें विचार की प्रार्थना है जामुल है। अन्तराष्ट्र राजनीतिक विकासोन्मुख राजपक्षी (Statistologist)¹ का दावा पर है कि ऐतिहासिक की ओर अपने ध्यान की है जाता है कि वर्ष 1901 ई० के प्रान्त के वरीय (Versailles) स्थित फ्रेंच कक्ष पर पड़कर उक्त ध्यान स्थिर हो जाता है कहाँ पर प्रतिनिधियों (Deputies) ने अपने स्थानीय हितों के संरक्षण के लिए निजकर विचार करना प्रारम्भ किया था। प्रतिनिधियों की वैचारिक क्षमताओं ने निरंतर निजकर परस्पर विचार विनिमय की प्रोत्साहित किया जिससे संसारभर राजनीतिक मूल का जन्म हुआ। इस

राजनीतिक कदम ने देश के बाहर निवासियों की अभिलेखा बलिष्ठ किया और देश में देश की निवासियों के राज्य स्थायी क्षेत्रों की स्थापना की गई जिसका किस्म रूप राजनीतिक पद है । देश के बाहर की राजनीतिक पद का वास्तविक साक्ष्यिक अभिलेखा और अधिक पदों बाध है हुआ जिसका प्रमाण प्रिंटिंग का अधिक पद (प्रिंटिंग केर पार्टी) है जो कि प्रिंटिंग प्रिंटिंग के १८८८ ई० में छिप गई हुए निवास का परिणाम है कि एक संवत्सरिक तथा निवासिक क्षेत्र का राज्य देना है । इसी स्पष्ट है कि जीवित ने जीवित नामांकों में पारस्परिक प्रिंटिंग उत्पन्न किया जिससे उद्देश्य है उनकी पूर्ण करने की पद्धतियों में राज्य का अनुभव करनेवाले अधिकारों की एक संवत्सरिक कदम करने की प्रेरणा मिली और हाल में जीवित का न्यायिक प्रभाव होने ला । जीवित की राज्य निवास-क्षेत्रों की राज्य के नाम पद पर होने के छिप की बाध उत्पन्न हुआ का राजनीतिक पद है ।

देश, बाध, परिस्थिति, संस्कृति तथा राष्ट्रपति के अन्तर्गत है राजनीतिक पदों के उदय तथा विकास का जो क्षेत्र प्रभावित किया है और अधिक में भी करता रहता जिसके कारण किसी राज्य में राज्य, संवत्सरिक उत्पन्न उत्पन्न क्षेत्र पराधीनता है मुक्ति, स्वतंत्रता की रक्षा, अधिकार का जीवन, कर्म का संवत्सरिक बाध विविध संस्कृति की रक्षा तथा राष्ट्र नेताओं में मर्त्य के बाधों पर जीवन राजनीतिक पदों का उदय की जाता है । पारस्परिक में, पराधीनता है मुक्ति प्राप्त करने हेतु ३० दिसम्बर, १८८८ ई० की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सम्मुख हुआ ; जाति एवं कर्म के बाध पर मुक्ति की का १८८८ ई० तथा हिन्दू महासभा का १८८८ ई० में सम्मुख हुआ ; राष्ट्र नेताओं के पारस्परिक मर्त्यों के बाध पर निवास मर्त्य प्रवा पार्टी की १८८८ ई० में बाधों के जीवित उत्पन्न द्वारा उत्पन्न पद की १८८८ ई० में बाधों नरन्तरे एवं की का प्रभाव पारस्परिक द्वारा और पारस्परिक पद की १८८८ ई० में की प्रभाव पद बाध द्वारा बाध प्रभाव रक्ती गई । भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीयता के बाध पर भारतीय कांग्रेस की बीच २१ दिसम्बर १८८८ ई० की का स्थापना प्रभाव मुक्ति के द्वारा रक्ती

वर्ष । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सन् १९४६ ई० में राष्ट्रपति के निर्वाचन के प्रश्न पर
 जो हुई उसका कांग्रेस का हीटन कांग्रेस में विभाजित होना शीघ्र ही होना चाही एवं
 जो गौराव की वेदाई के मध्य उत्पन्न करने का परिणाम रहा । उक्त प्रश्न में
 जो फलप्राप्त हुआ तात्कालीन मुक्त नहीं तथा जो शीघ्र ही प्राप्त किं तात्कालीन उनके
 बीच मण्डल के उत्पन्न के सन् १९४७ के मतों में जो शीघ्र ही प्राप्त किं जो भारतीय
 राष्ट्रीय कांग्रेस है अतः होकर भारतीय प्रांतिक तथा भारतीय लोकतन्त्र (२६ जनवरी
 सन् १९५० ई०) का एक बना दिया । स्वयं की ही उत्पन्नप्राप्त की उत्पन्न की
 के प्रति गौराव के भाव तथा मुक्त उत्पन्न राज्य की उत्पन्न ने प्रतिक्रिया मुक्त उत्पन्न
 (१० दिसम्बर, १९४६ ई०) को बना दिया । उत्पन्न है कि भारतवर्ष में उत्पन्नप्राप्त
 की उत्पन्न सन् १९५५ ई० तथा उत्पन्नप्राप्त की उत्पन्न सन् १९५४ ई० में
 जो नहीं थी जो कि राजनीतिक दलों के उत्पन्न के लिए वार्षिक कार्यों का उत्पन्न
 प्रस्तुत करते हैं । भारतवर्ष में उत्पन्नप्राप्त का बना उत्पन्न की उत्पन्न है नहीं कि उत्पन्न
 उत्पन्न विवेकानन्द के उत्पन्नप्राप्त के उत्पन्न के उत्पन्न (Gospel) है उत्पन्न
 ऐसा की उत्पन्न बना होकर प्रायः उत्पन्न है । भारत की मुक्तप्राप्त प्रवाप्तप्राप्त शीघ्र ही होकर
 गांधी के उत्पन्न में जो उत्पन्नप्राप्त प्राप्ति २६ जून सन् १९५५ ई० को हुई उत्पन्न
 प्रवाप्तों ने उत्पन्न पार्टी को बना दिया । उत्पन्न का उत्पन्न में हुए उत्पन्न की, उत्पन्नप्राप्त
 एवं उत्पन्नप्राप्त उत्पन्न के कारण मार्च १९५७ के उत्पन्न का उत्पन्न में उत्पन्नप्राप्त
 करने हेतु फरवरी १९५७ ई० में भारतीय उत्पन्न, भारतीय लोकतन्त्र, भारतीय राष्ट्रीय
 कांग्रेस (हीटन) तथा उत्पन्नप्राप्त की उत्पन्नप्राप्त हुआ कि उत्पन्नप्राप्त
 उत्पन्न पार्टी का उत्पन्नप्राप्त बना हुआ । ये उत्पन्न स्पष्ट करते हैं कि राजनीतिक दलों
 का भारतवर्ष में उत्पन्न राजनीतिक प्रवर्तों (Elites) के द्वारा राष्ट्रीय, राष्ट्रीय ,
 राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय मतों के फलप्राप्त हुआ है किन्तु
 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उत्पन्न भारत की स्वाधीनता के लिए राष्ट्रीय राष्ट्रीय के
 रूप में हुआ था । उत्पन्न विधान का उत्पन्न में राजनीतिक दलों का उत्पन्न गौर
 विधान किं हुआ ?^{१०} उत्पन्न उत्पन्न उत्पन्न का प्रयास किया गया है ।

उत्पन्न भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को मार्च १९५७ ई० के उत्पन्न का

पुनर्वाचन में भीतर पराक्रम मिठी और उल्लास केन्द्र में 20 वर्षों का शासन लाया ही गया। केन्द्र में तत्कालिक कानून पाटी का शासन स्थापित हुआ जिसने राज्यों में विधान सभाओं के पुनर्वाचन 1950 ई० में करा दिया और बाह्य राज्यों का शासन केंद्र के हाथ में निरुद्ध गया जिससे केंद्र की मजबूत बाधाएं हट गईं। पराक्रम के चौधरी बाबासाहेब ने पूर्वपूर्व प्रधानमंत्री भीमजी साहेबरा गांधी एवं भारतीय राष्ट्रीय केंद्र के अध्यक्ष श्री के० प्रतापसिंह तेलुकी के बीच मतभेदों का विस्फोट किया और 1 जनवरी, 1952 ई० को केंद्र का संवैधानिक विधान लागू हो गया। निरुद्ध हुए भीमजी साहेबरा गांधी को अपना अध्यक्ष बनाया गया जहाँ की वास्तविक केंद्र घोषित किया किन्तु निर्वाचन बाबासाहेब ने इसे केंद्र (साहेबरा) की मान्यता प्रदान किया है।

इस जीव कार्य की प्रारम्भ करते समय भारतवर्ष में भारतीय राष्ट्रीय केंद्र (का) तथा (काँग्रेस), भारतीय जनता, भारतीय समाजवादी पक्ष, भारतीय उद्योग तथा समाजवादी पक्ष मान्यता प्राप्त पक्षों में थे प्रसृत रहे। विश्व के अब से नई औद्योगिक पैठ भारतवर्ष के राजनीतिक पक्षों पर श्री ए० वाल्मर¹², श्री ए० डी० पामर¹³, भीमजी साहेबरा काँग्रेसी मरवर¹⁴, श्री वेल्डर¹⁵, श्री डाक्टर¹⁶, श्री रानी¹⁷, श्री रानी कोठारी¹⁸, श्री मारकेड फ्रेजर¹⁹, श्री एंडर वीन²⁰ तथा श्री ए० ए० कैदी²¹ आदि विद्वानों की कृतियाँ विशेष उपयोगी हैं किन्तु हमें वैधानिक पक्षों की प्रकाशित किया गया है। वास्तव में राजनीतिक पक्षों के व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन करना ही अभीष्ट समझा।

भारत के राजनीतिक पक्षों के व्यावहारिक पक्षों के अध्ययन में श्री ए० वी० कां तथा श्री इन्साफ माराकण और कल्याणी एवं श्री एस०बी०मुन्शी²² ने प्रकाश डाला है किन्तु वे किन्हीं मतदान एवं पुनर्वाचन पर ही बड़ी हैं।

औद्योगिक में राजनीतिक पक्षों के महात्मापूर्ण योगदानों को दृष्टिगत करके हम पर विश्व के अन्य विद्वानों ने प्रकाश डाला है जिनमें श्री राबर्ट-मारकेड²³, श्री ए० हुनरवर²⁴, श्री के० बन²⁵, श्री ए०बी० रुबीन²⁶, श्री एस०बी० डाक्टर²⁷ तथा श्री ए० वी० इन्साफ²⁸ की कृतियाँ अधिक उपयोगी हैं।

“राजनीतिक जातीयकरण” पर भी एक एक शास्त्र^{१६}; की एक एकलु^{१७} पाई^{१८}; एक ही एक के इस्तेमाल तथा एक कोशिका^{१९}; की एक बार^{२०} पिछला^{२१}, की एक इस्तेमाल के एक^{२२}; की एक वाक्यांश^{२३} तथा की निरिस्त^{२४} वाक्य की कृतियाँ विभिन्न उपरान्त हैं ।

राजनीतिक कठ की परिभाषा

किसी विद्वानों ने राजनीतिक कठ की परिभाषा है, कठ तथा परिस्थिति के अनुसार प्रियाकृतियों एवं मुनिकारों का व्यवहार करने की है किसी कारण परिभाषा में समझा का पता होता है । परिभाषा किसी की वस्तु, विषय, गुण, प्रिया या अन्य का वर्णन, बीबीय तथा मानाक्य स्वयं प्रस्तुत करती है । यहाँ पर राजनीतिक कठ की कुछ परिभाषाएँ दी जा रही हैं :-

- (१) “कठ” एक पूर्ण कल्पना करता है कि कठ के प्रत्येक संघटनों में परस्पर एक समान प्राप्ति उद्देश्य तथा प्रायोगिक अभिलाषों के प्रति उद्देश्यों की एक समान दिशा होती चाहिए ।

The term 'Party' presupposes that among the individual components of the party there should exist a harmonious direction of wills towards identical objective and practical aims, (Quoted by Robert Michels, Political Parties 1958 page 392)

- (२) “राजनीतिक” एक विभिन्न पदों में सुझा दिया जा सकता है” यह कहना है कि निवारितों की निवारितों के ऊपर, जयिदुक्तों की जयिदुक्तों के ऊपर, प्रत्यायुक्तों की प्रत्यायुक्तों के ऊपर प्रस्ता की वस्तु होता है ।”

The term 'Political' may be formulated in the following terms. It is organization which gives birth to dominion of the elected over electors of the mandataries over mandators of the delegates over the delegators”.

(Robert Michels, Political Parties 1958 page 418).

- (3) आधुनिक राजनीतिक दल सामाजिक समूहों तथा वर्गों के व्यापकान्तरिक व्यक्तित्व प्रतिनिधित्व के अभिव्यक्ति हैं ।

The modern political party is therefore an agency of informal indirect representation of social groups and classes. (Avery Leiserson - Parties of Politics 1958 page 73 Quoted by S.J. Elster - Political Parties. A Behavioral Analysis 1971 page 74).

- (4) राजनीतिक दल कुछ लोगों का एक ऐसा संगठन है जो किसी विद्वान्त के आधार पर एक एकता है पर एकता छोड़ कर अपने सामूहिक प्रयत्नों द्वारा राष्ट्रीय जिज्ञासा को करने करना चाहती है ।

A Party is a body of men united for promoting by their joint endeavours, the national interest upon some principle in which they are all agreed. (Edmund Burke - Sabine - A History of Political theory 3rd Indian reprint 1973 page 531).

- (5) राजनीतिक दल उन नागरिकों का संगठित समूह है जिनके राजनीतिक विचार एक समान होती हैं और राजनीतिक दलार्थ की पार्ष्व कार्य करते सरकार पर नियंत्रण को पैदा करती हैं ।

A political party thus may be defined as an organized group of citizens who profess to share the same political views and who by acting as political unit control the Government. (R.N. Gilchrist - Political Science page 349-50).

- (6) व्यक्तियों के किसी समूह को जो कि सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के वास्ते काम कर रहा है उस दल कहा जाता है --- इस दृष्टि से राजनीतिक दल उन व्यक्तियों को कहेंगे जिनके सामान्य राजनीतिक उद्देश्य हैं, उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वे देश में अपने विचारों का प्रचार करते हैं तथा जनता को अपने विचारों का अनुमोदी बनाकर देश की सरकार को अपने विचारों के अनुसार बनाना चाहती हैं (डा० अम्बरधर पन्ना, नागरिक शास्त्र के आधार, पृष्ठ 300-301) ।

- (b) प्रत्येक राजनीतिक दल विवादी उद्देश्यों के निमित्त कार्य करने के प्रति अभिमत है जो कि दल के संरक्षण के लिये एवं कल्याण की राहें खोजता है और जो कि राज्य की राजनीति में इसकी दल की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए ऐसा करता है और सभी दलों की विपरीत प्रियाओं और जो कि उसकी स्थिति को जल्दी से खराब करने का विरोध करता है।

Each party is inclined to work for legislative goals which advance the interests and welfare of the party ORGANIZATION and which serve to strengthen its power position in state politics and oppose actions adverse to its interests and which would weaken its position. (William J. Keefe-Comparative study of Role of political parties in State Legislature- Quoted in Ed. Political Behavior - 1972 page 313).

- (c) एक राजनीतिक दल एक समुदाय नहीं है बल्कि समुदायों का संग्रह है, देश भर में फैले हुए और सम्बन्धकारी संस्थाओं द्वारा संगठित एक समूहों का संग्रह है।

A party is not a community but a collection of communities, a union of small groups dispersed throughout the country and linked by co-ordinating institutions. (Maurice Duverger. Political Parties 1965 page 17).

- (d) राजनीतिक दल एक मुक्त, प्राक्कोन्मूल संरचना है (जो) अपनी बाजार तथा अपनी शक्ति पर जो प्रभाव स्थायी वास्तविकता " सामाजिक भेदभावों की पत्ती" के साथ वास्तविक संरचना और इन भेदभावों की संरचना की प्रमुख संस्थाएं एवं नियंत्रिकात्मक केन्द्रों के सम्बन्धित संरचना तथा पक्षों की प्रदान करने का प्रयत्न है।

(१०) सामाजिक तथा नी राजनीतिक तथा न अनुसार है कि वही केवल सामाजिक महत्त्वपूर्ण सामा राजनीतिक यह है ।

The single most important instrument for the translation of social power into political power is the political party (Frans Neumann, The Democratic and the Authoritarian State (Glencoe Ill-Free Press,1957 page 12 - Quoted by S.J.Elderswold Political Parties. A Behavioral Analysis 1971 page 73).

राजनीतिक दल की उत्पत्ति परिभाषाओं में वर्गीकृत होती हुए भी
एकता कायम करनेवाले कुछ मुख्य तत्व पूर्ण या आंशिक रूप में सम्मानित हैं । ये
तत्व हैं पिछाई, असंतोष, वैराग्य, क्रांतिकारी तथा आधुनिकता

छिद्धान्त बाजार फूट कटु है जो कि नीतिज्ञों, विचारों एवं कार्यक्षमों का निर्देश, नियम एवं मुख्यालय करते हैं। छिद्धान्त प्रत्येक व्यक्ति एवं व्यक्ति समूह के लिए अनिवार्य है क्योंकि पारस्परिक व्यवहारों का निर्धारण वही करता है जिसके जो बाधा, बाधों की स्थापना करने को बाधों और राजनीति संस्कृति की धारा बहने को बाधों। राजनीति संस्कृति की मान्यता है कि कमीशन, स्थायीभाव और वीच को साथ में राजनीति व्यवहार को सुनिश्चित तथा निर्दिष्ट करते हैं वे हस्तक्षेप व्यवस्थापक (Congeries) एकत्रित मात्रा नहीं

अपितु धन्य है जो वाद्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो एक दूसरे के साथ अनुस्यूता और पारस्परिक संकलनकारी (Reinforcing) होते हैं।^{११} एक राज्य की राजनीतिक संसृति, व्युत्पत्ति, विस्थापन, वैचारिक प्रवृत्तियों और मूल्यों से निर्भर होती है जो कि उन परिस्थितियों को परिभाषित करती है किसे राजनीतिक प्रियाई पटल होती है।^{१२} राजनीतिक संसृति मनोवृत्तियों, विस्थापन, मूल्यों और कौशल (Skills) से बनती है जो सम्पूर्ण का संस्था में वर्तमान है साथ ही साथ उन उच्च प्रवृत्तियों और वाद्यों है जो का संस्था के किसी किनारे भागों में उपलब्ध है।^{१३}

यद्यपि राजनीतिक कुछ बड़ी छिदावटों की राजनीतिक संसृति के किनारे के लिए जानका करके किसी न किसी 'वाद' को जन्म देती है जो व्यक्तिवाद, समाजवाद, धर्मवाद, स्वतन्त्र मानववाद आदि वाद्यों का जन्म हुआ है। नागरिक राजनीतिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, वार्षिक, पारिवारिक, स्थानीय, राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय-वर्तारानीय और राजनीतिक तथा सामाजिक - कुछ भाग प्रसार की स्वतन्त्रताई व्यक्तिवाद का तत्त्व है।^{१४} व्यक्तिवाद का उच्च मूल्यवाद के धर्म के फलस्वरूप हुआ। उच्च प्रसुत छिदावट है कि राज्य एक किनारे है किन्तु जोका तथा संस्था की रक्षा के लिए आवश्यक भी है, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता अनिवार्य वस्तु है, राज्य की यक्षमायु (मुक्त व्यापार) नीति का फल करना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में भी है राज्य उच्च प्रवृत्ति का फल है।^{१५} राजनीतिक कुछ व्यक्तिवाद की न्यूनाधिक मात्रा में अवश्य कीकाए करके योग्यता करते हैं।

समाजवाद की अनेक परिभाषायें एवं सारांश हैं किसे किनाएवादी समाजवाद, कैपि समाजवाद, वराकस्मावादी समाजवाद, स्वतन्त्रादीय समाजवाद, वैज्ञानिक समाजवाद एवं कर्ताधिक समाजवाद प्रसुत हैं। जो सारांश व्यक्तिगत संस्था पर निर्भरता, उच्चतम तथा कीकाएकर वार्षिक विनियोग तथा वार्षिक उपर वांछनी है।^{१६} भारतीय राष्ट्रीय अग्रिम है 'कर्ताधिक समाजवाद' का किनारे प्रिया है जो कि कुछ का पक्षि पक्षि है।^{१७} भारतीय राष्ट्रीय अग्रिम का उद्देश्य भारतीय लोगों की प्रवृत्ति एवं कल्याण है और शांतिपूर्ण तथा वैज्ञानिक उपायों से समाजवादी राज्य की स्थापना संसारिक कर्ताधिक के आधार पर करना है।^{१८} भारतीय कर्ताधिक है शांतिमानवाद की

उपायों की रक्षा, प्रियावृत्त, पदाधिकारियों की अपने पद के प्रति जागरूकी, प्रवेश के उद्देश्य तथा नेतृत्व विचार की समता और प्रवृत्ति, पद के प्रति निष्ठाव्यवस्था एवं उक्त कार्यों की पद की विचारधारा में वास्तव्य वादि के नीचे में हीनवादी भूमिकाओं का अध्ययन किया गया है ।

राजनीतिक पद का अंशक रूप में जातीय, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्यों में किताबि नागरिकों को अपना अध्ययन बनाकर 'राजनीतिक अंश' प्रदान करता है किन्हीं नागरिक की जमीनी-भारी, जैव-नीच, वस्त्राव-अज्ञात तथा भारतीय पारम्परिक वादि की कुछ कुंज्याये डीली पद जाती है या दूट जाती है और नागरिक लोक स्थितारी, राष्ट्रीय तथा साम्प्रदायिक विचारधारा में प्रभावित होता है । राजनीतिक अंशता की दिशा में किन्हीं जानेवाले प्रमाणों का करने अंशतात्मक उपायों के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं नेताओं के अंशपूर्ण अर्थतात्मक तथा प्रत्येक व्यवहारों में होता है किन्तु वापसी मामलों को प्रकट करने के लिए परस्पर वाद-विवाद के अतिरिक्त अन्य उपायों का भी उद्योग लेते हैं जो कि औद्योगिक मूल्यों के विरुद्ध है । अंश राजनीति में पाग अंशता नेता या कार्यकर्ता उपाधीनता का उद्योग क्यों हो जाता है ? कार्यकर्ता को अंश में किताबि रहने के लिए क्या क्या उपाय किन्हीं जाती हैं ? राजनीति में प्रवेश के जैन जैन है उक्त नागरिकों द्वारा अनुभव किन्हीं जाती हैं ? अपने पद की जैन जैन पाएँ विच्छेद पद नहीं हैं ? क्या अंश के पद की वैयक्तिक ही ? राष्ट्रीय उद्योग को स्थापित हो ? पद परिवर्तन के प्रति क्या धारणाएँ हैं ? वादि प्रमाणों पर उपायों के पदाधिकारियों के विचार प्रकाश में बाधे हैं । अंश की जैन जैन की फिरोजताएँ किन्हीं पद की उपायों में स्थिता किन्तान है ? उक्त की जैन करने का प्रयास किया गया है ।

राजनीतिक पद का तीव्रता महत्वपूर्ण तत्त्व नेतृत्व है ।

राजनीतिक पद उपाय एवं राज्य की समस्याओं को छु करने के लिए अंशता नेतृत्व प्रदान करते हैं । नेतृत्व का प्रादुर्भाव समस्याओं में होता है ऐसी पैरी परिवर्तना है । नेतृत्व की भूमिका निश्चित स्थिति में ही अंश है । पद की पटनाओं में

किया कर दिया है कि किस राजनीतिक दल ने स्वतंत्रता के युद्ध में राष्ट्र की नेतृत्व प्रदान किया वही अपनी छात्र के ३० वर्षों में ही कक्षा द्वारा अनुमानियों की कैली में छात्र उठाकर दिया गया । राजनीतिक दलों के नेता राष्ट्रीय नेता के रूप में कक्षा के प्रतिनिधि होकर सरकार की पूर्णतः देकर प्रस्तावों के हुमाँ की माजमें धारण करते हैं । राजनीतिक दल नेतृत्व, विकास का मंत्र प्रस्तुत करते हैं किसी व्यक्ति का 'रव' विस्तृत एवं विकसित होता है ।

मेरी यह परिकल्पना है कि नेतृत्व की भूमिका राजनीतिक अनुस्थितिज्ञान (Orientation) राजनीतिक सम्मिलनता (Involvement) राजनीतिक आदर्शीकरण (Idealization) तथा राजनीतिक प्रकटीकरण (Manifestation) के प्रथम चरणों में पूर्ण होती है । प्रायः उन मानव नेतृत्व का अनुभव प्रकटीकरण के समय ही करता है । छात्राधिक प्रणाली में बहुत निम्न स्तरों पर राजनीतिक दलों के अन्तर्गत छात्राधिक एवं प्राधिकारवादी दोनों प्रकृति के नेता होते हैं । नेता का 'रव' 'युद्ध' में गुट बन्दी उत्पन्न करने का प्रमुख कारण होता है और इसके ही अनुशासन हीनता प्रमुख एवं चरित्व होती है । अतः राजनीतिक दलों की भाविः कि वे अपने में छात्राधिक नेतृत्व की विकसित करने की विशेष चेष्टा करें ।

राजनीतिक दल के अन्तर्गत आदर्शवादी तथा अवसरवादी, आस्थापक तथा नाम मात्र ; केंद्रबल तथा परिस्थिति बन्ध ; गुटप्रिय, वर्ग प्रिय , जाति प्रिय तथा कर्तृप्रिय, पक्षरुद्ध तथा अक्षरुद्ध आदि प्रकार के नेता अनुशासनिक माथा में अवश्य होते हैं किसी स्पष्ट होता है कि राजनीतिक दल नेताओं की निर्माणशाला एवं प्रयोगशाला है । राजनीतिक दल अपने ही छविशाली एवं प्रमुख संयम करने के लिए अपने अनुमानियों का 'छिन्नान्त पोषण' (Indoctrination) करते हैं ; नागरिकों को राजनीतिक शिक्षा देकर उनका शिक्षण, दलों में अन्तर्गत कक्षा एवं सरकार में छिन्न आस्थापका एवं निवेश तथा प्रदान का कर्तव्य-मुहीकरण करते हैं ; राजनीतिक मूल्यों का विकास एवं प्रसार, राजनीतिक नीतिकला का निर्धारण, प्रतिपादन एवं अभिव्यक्ति, दल का प्रतीकीकरण , नीति-निर्माण एवं प्रियान्कन तथा राजनीतिक शैली का विकास करते हैं । मेरी यह परिकल्पना है कि राजनीतिक नेताओं के व्यवहार के अच्छी बातों पर कक्षा द्वारा उन विश्वास का रही है जो कि राजनीतिक दलों के

छिए नम्बीर हुआ है । मैरी यह परिकल्पना की थी क्योंकि वह भिन्न है कि
राजनीतिक नेताओं के छिए बहुत परिवार जहाँ कच्चा प्रदान होता है । राजनीतिक
पक्षों के नेता अपने पक्ष की लड़कियाँ बनाने के छिए क्या नहीं करते हैं ? क्या केवल
की विचार करने के छिए एक पाठ्यक्रम की आवश्यकता है ? क्या उनकी पक्षों के नेताओं
की परस्पर भिन्न राष्ट्रीय विकास की कई पिछा देनी चाहिए ? यदि प्रश्नों पर
नेताओं के विचार छिए नहीं हैं ।

राजनीतिक पक्ष का मुख्य व्यवसाय क्या है ? क्या उनकी
राजनीतिक पक्ष के विचारों, लक्ष्य तथा केवल की एकलपक्षीय एवं अलक्ष्यताओं का
माप कुछ है । क्या उनकी राजनीतिक पक्ष की अपनी नीतियों तथा कार्यवाहियों का मूल्यांकन
करने तथा नवीन विचारप्रवृत्ति करने के छिए प्रयास होता है । क्या उनकी राजनीतिक पक्ष
का प्राणाधार है और लक्ष्यता की पूर्ति का ध्यान है । क्या उनकी प्रवृत्ति करने के
छिए राजनीतिक पक्ष ज्ञान में अपनी सुविधायें एवं कार्य करते हैं जो परिवेश
(Environment) के उत्तेजकों (Stimuli) का प्रत्युत्तर (Response)
होता है । छिए पक्ष की और किन्ता काल्पनिक प्रवृत्ति हो रहा है ? की जानकारी के
छिए पक्ष की व्यवस्था, पक्ष के पक्ष प्रतिनिधियों की संस्था, वार्षिक सत्रों की माध्यम
और विचारों में प्रवृत्ति पक्षों की संस्था पर दृष्टि डालनी चाहिए । लक्ष्य की
कीर्ति रत्नों के छिए प्रयुक्त, वाग्व्यवस्था तथा कुछ काल्पनिक विचारों से पिछे छिए राजनीतिक
पक्ष प्राणाधार है कार्य करते हैं । किसी भी पक्ष के पक्ष में काल्पनिक द्वारा जो विचारधारा
किये करते हैं वे सभी का उत्तर के होते हैं । राजनीतिक पक्ष का प्रतिनिधियों के विचारों
में अपनी पक्ष है प्रवृत्ति उत्पन्न करते हैं, ज्ञान वीक्षण का प्रवृत्ति करते हैं तथा का
ऐक्य माध्यमों है काल्पनिक के रूप है कई लक्ष्यता होने का माध्यम प्रयुक्त करते हैं जो कि
व्यक्तिगत काल्पनिक प्रवृत्ति करने का प्रयास है । मैरी यह परिकल्पना है कि काल्पनिक
प्रवृत्ति करने के छिए राजनीतिक पक्ष प्रवृत्ति जातिवाद, प्रवृत्ति, जातिवाद, सामाजिक
ज्ञान तथा विचार का उत्तर होते हैं और कि होता है व्यक्ति का का अन्य विचारों
में करते हैं । जो राजनीतिक पक्ष व्यक्ति काल्पनिक प्रवृत्ति करने में उत्तर हो जाता है
उसे माध्यम है जो व्यक्ति होना पड़ता है ।

एक मान विचारों के आधार पर ऊँछि बहुत प्रमान करनेवाला नविनीत सुपाय है जो जनसमूह के माध्यम से शासकता की पूर्ति पाता है ।

राजनीतिक जागीकरण

आज के 'आज' के जागीकरण विकास के लिए नई सुधारों एवं संस्थाओं की अपनी प्रगति के साथ बन्ध किया है और उन्हें आवश्यक एवं अन्य के अनुसार परिवर्तित करते उनके स्वयं का निर्धारण किया है । राज्य की आज की एक दिन है । 'आज' अपने बन्धनता के पूर्ण एवं विस्तारों का पूरा करे बिना राज्य उचित-ठाही एवं केस केस बन कर तो तब अपने स्वयं की पूर्ति कर कर पड़े निमित्त 'आज' के राजनीतिक व्यवहार की निम्नलिखित विशेषता, प्रतिपादित, ऐतिहासिक तथा एक मान माना अनिवार्य है । 'आज' का राजनीतिक व्यवहार राज्य की तत्त्व-संस्थाओं परंपराओं, प्रथाओं, कानूनों तथा शासन प्रणाली के अनुसार ही पड़े लिए प्रयास राजनीतिक सुपाय करते हैं यद्यपि राजनीतिक सुपाय एवं अभिप्रायों की राजनीतिक व्यवहार की प्रभावित करने का प्रयास करती भिती है । राज्य के मुख्य पर बिना दूर नागरिकों के राजनीतिक व्यवहार की राज्य एवं आज के लिए उपयोगी मानने का कार्य परिवार, विद्यालय, राजनीतिक संस्थायें, प्रजापन एवं राजनीतिक पक्ष जहाँ हैं । नागरिक का राजनीतिक व्यवहार उसी नागरिक संस्था में उपस्थित राजनीतिक विचारों, पूर्णों एवं विस्तारों का परिणाम है क्योंकि उसी राजनीतिक संस्था की दिन है । राजनीतिक जागीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें नागरिकों द्वारा राजनीतिक संस्था का पारण एवं परिवर्तन किया जाता है ।^{४८} राजनीतिक जागीकरण राजनीतिक व्यवहार की बीजों की प्रक्रिया है ।^{४९} राजनीतिक जागीकरण राजनीतिक संस्था के द्वारा 'आज', कुरु एवं राष्ट्र में राजनीतिक पैदा की विकसित करने की प्रक्रिया है जिससे कमान या नापी राजनीतिक आज में उनकी सुविधायें सुनिश्चित एवं पारण का परिवर्तन की जाती है ।

बेरी परिवर्तना है कि राजनीतिक पक्ष राजनीतिक जागीकरण के एक उचित-ठाही अनिवार्य है । राजनीतिक जागीकरण पर एक है पड़े खर्च

एच० वाश्मन ने जू १९५६ ई० में प्रकाश डाला किन्हीं राजनीतिक व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया और निष्कर्ष किया गया कि राजनीतिक व्यक्तियों का राजनीतिक जातीयकरण का कठ है । राजनीतिक यह नागरिकों का राजनीतिक जातीयकरण तीन चरणों से होता है प्रथम-राजनीतिक अनुसंधान, द्वितीय - राजनीतिक मान प्रणाली एवं तृतीय राजनीतिक संज्ञान (Cognition) । एच० वाश्मन ने राजनीतिक मान प्रणाली एवं संज्ञान पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

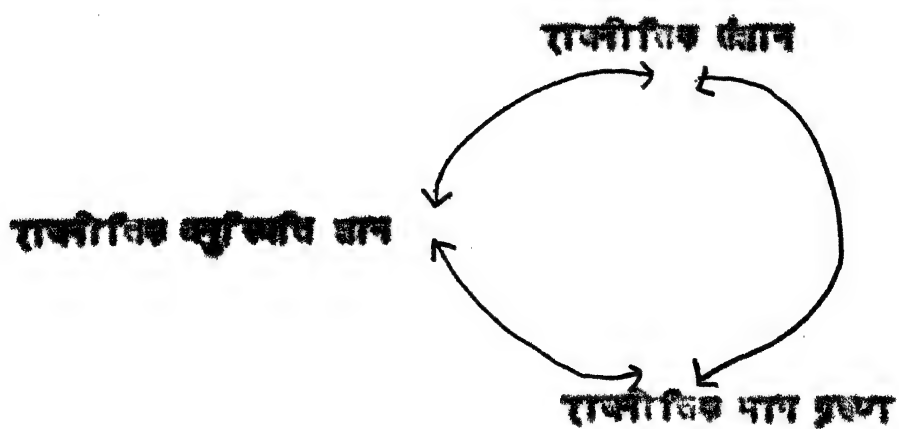
नागरिक राजनीतिक कठ के संदर्भ में एवं प्रथम अन्तर्गत वर्गों के वातावरण है फिर प्रकाश, व्यवस्था, समाधिकारी, कार्यकर्ता, नेता तथा जन प्रतिनिधियों की भूमिकाओं की सीखता है । ज्ञान, वास्तविक तथा वार्तिक ज्ञानों में मान प्रणाली करके नागरिक कठ के और निकट जाता है जिससे उसकी मुख्य राजनीतिक चेतना बाधित होती है । राजनीतिक कठों के कार्यकर्ता, प्रतिनिधियों, संगठनात्मक स्तरों तथा समस्याओं के प्रति जागरूकता का विकास करके नागरिक प्रत्येक कठ के विषय में अपनी पारंगतता बनाता है, स्वयं की जिज्ञा के मत या विपदा में जाने का वापार सुझाव है तथा अपने अनुसूचित वाते राजनीतिक कठ की चेतना का उत्पन्न हो जाता है । राजनीतिक कठों के संदर्भ में जाने है नागरिकों की प्रवृत्तियों में परिवर्तन होता है । व्यक्तिगत संघर्ष विकास में घर-कन्या की स्वतंत्रता, एवं है तृती कोन ? एवं है प्रिय नेता की बात, वस्तुओं के मूल्य, राष्ट्रीय पैदावार, वार्तिक प्रियाओं, एवं एवं राजनीति, कर्ण व्यवस्था तथा राजनीतिक नेताओं के प्रति, नागरिकों की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया है । वेही यह परिचयता है कि राजनीति में अधिक सक्रियता का उद्देश्य स्वार्थ सिद्धि, जीविकार्थ एवं प्रतिष्ठा प्राप्ति है ।

अन्तिम अन्त में यह परिचय वेही राजनीतिक व्याक्तियों पर नागरिकों की निरक्षरता पारंगत है कि चुनाव जीत जाने के बाद किसी भी जन प्रतिनिधि की अपना कठ नहीं बदलना बाधित और यदि वह यह परिचय करे तो पुनः जायके प्राप्त करना अविवार्य है । सरकार की वार्तिक योजनाओं, कानून, सुरक्षा-व्यवस्था के प्रति नागरिक चेतना उन्नत होती है या है राजनीतिक मान प्रणाली सिद्धता प्रभावित करती है ? एवं पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । संदर्भ है कि

के पक्षों पर नागरिकों की जात्या बान्नी का प्रत्यक्ष किया गया है ।

राजनीतिक मान प्रश्न का अंतिम मान प्रमाण है । मानसिक प्रमाण की किसी बरीयता होती है ? किसी पक्षों के प्रमाणों की कृष्ण वास्तवता होती है । प्रमाण में किसी बराबर करते हैं । राजनीतिक यह प्रमाण की बनी पता में कराने के लिए किया प्रयास करते हैं ? बराबरीयिक अंश प्रमाण पर किया प्रमाण छाती है ? वादि प्रमाणों पर प्रकाश छाती का प्रयास किया गया है । राजनीतिक पक्षों के द्वारा प्रमाण पर कुछ प्रमाण बनी पता में प्रमाण के लिए छाती काता है किन्तु प्रमाण बनी प्रमाण का वापार क्या बनाता है ? और अन्तिम प्रमाण क्या करता है ? जो बान्नी का प्रमाण किया गया है । प्रमाण एक प्रमाण में प्रमाण की मत केता है जो प्रमाण प्रमाण में की मत केता यह वास्तविक वस्तु है । प्रमाण परिकल्पना है कि प्रमाण प्रमाण, प्रमाण एवं प्रमाण वास्तव के प्रमाण प्रमाण के प्रति अधिक प्रमाण रहती है । प्रमाण के प्रति अन्तिमता के कारणों की बीच करने का प्रमाण किया गया है । अन्तिमता तथा प्रमाण के प्रमाणों का प्रमाण अन्तिम के नागरिकों में प्रमाण प्रमाण प्रमाण है ? प्रमाण का प्रमाण किया गया है । प्रमाण परिकल्पना है कि प्रमाण के अन्तिमता के प्रमाण प्रमाण, प्रमाण एवं राजनीतिक प्रमाणों द्वारा प्रमाण जाती है ।

नागरिकों का राजनीतिक अंश एक और राजनीतिक प्रमाण - ज्ञान तथा राजनीतिक मान प्रश्न का परिणाम है जो प्रमाण और प्रमाण दोनों की प्रमाण करनेवाला कारण की है ।



ऊपर के विषय से स्पष्ट है कि प्रत्येक कला ऐक्य की कलाओं की प्रभावित करता है तथा अन्य प्रभावित की जाती है क्योंकि इन तीन कलाओं में अंतर्भाव होती है। नागरिकों का राजनीतिक व्यवहार उनकी मानसिक संरचना (ज्ञान) तथा उपस्थित वातावरण (संस्थागत) के अनुसार ही की जानेवाली प्रतिक्रिया (प्रतिक्रिया) है। राजनीतिक ज्ञान राजनीतिक कला के अन्तर्गत आधुनिक, संसार कलाओं एवं पद्धतियों के माध्यम से ही पहुँचा है। भारत के राजनीतिक कला के नाम, अपनी विद्या तथा राज के विचारों में विभिन्न कलाओं की प्राप्त स्थान तथा बीछा नैतिकों के विषय में किसी जानकारी है ? इसकी सीखों का प्रत्यक्ष किया गया है। राजनीतिक कला के द्वारा निम्नलिखित में किसी जानकारी का व्यवहार किया गया है कि कलाओं में नागरिक अनुभव नहीं है इसकी प्रभावित करने का प्रयास किया गया है। यही सब परिदृश्य है कि कलाओं को कलाओं में किस प्रकार करने में कलाओं एवं मुक्तमानों का अपने, तथा, लोक विरोधी पक्ष, अधिकतम-अधिकतम तथा नैतिकता अंतर्गत किया है।

क्या कलाओं के अन्तर्गत में संभव है ? क्या निम्नलिखित में पूर्ण मानववारी की जाती है ? के विषय में ही पारंगतों का अध्ययन हुआ है। विद्या तथा राज की कला कला प्रमुख समस्याएँ हैं ? का नागरिकों की किसी ज्ञान है इसकी सीख करने का प्रयास किया गया है किसे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक समस्याएँ एवं राजनीतिक आजीवन का यदि प्रदान करती हैं।

नागरिकों को राजनीतिक संस्थाओं, अधिकारियों एवं उनकी शक्तियों का ज्ञान देना है ? इसकी समझने के लिए किसे स्पष्ट है कि राजनीतिक कला के मध्य की प्रमुख संस्थाओं तथा प्राधिकारियों के अंतर्गत ज्ञान स्तर की सीख की मयी है। यही परिदृश्य है कि अन्य बातें एवं मुक्तमान नागरिकों का राजनीतिक आजीवन का व्यवहार के नागरिकों की अंतर्गत अधिक हुआ है किन्तु राजनीतिक कला के अन्तर्गत का राजनीतिक ज्ञान स्तर एवं अधिक है। यही सब परिदृश्य है कि राजनीतिक पक्ष राजनीतिक आजीवन के अधिकतम अधिकरण है।

राजनीतिक कला तथा राजनीतिक आजीवन के अध्ययन के लिए बीछा विद्या तथा राज का कम निम्नलिखित कारणों से किया गया :-

- (१) स्वतंत्रता के आन्दोलन में 'महात्मा' का उद्गार प्रथम में उन ही सबसे भारी-भरकब किया गया जो वे हुए थे ।
- (२) स्वतंत्रता आन्दोलन के आन्दोलन की उद्गारवादी शक्ति में उन ही सबसे बड़ा योगदान किया गया जो वे थे ।
- (३) स्वतंत्रता के पूर्व एवं पश्चात् में के स्वतंत्रता के आन्दोलन का वह योगदान है अनिच्छित ही रहा ।
- (४) भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के कृत्युर उद्गार प्रथम योगदान का एक ही है ।
- (५) वर्ष १९५२ ई० से लेकर वर्ष १९५२ ई० तक के सामान्य निर्वाचनों में व० पा० राष्ट्रीय कांग्रेस का विचारक रहा और इसके पश्चात् अन्य दलों के विचारक हुए जो कि राजनीतिक प्रतिस्पर्धा एवं स्थिरता का उद्गार देते हैं ।
- (६) योगदान किया गया योगदान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (तथा और अन्य) भारतीय जनता, किसान मजदूर प्रजापार्टी, प्रजा समाजवादी दल, समाजवादी दल, श्रम समाजवादी दल, रामराज्य परिषद्, हिन्दू महासभा, शीघ्रत दल, मुसलिम लीग, रिपब्लिकन पार्टी, भारतीय श्रमिक दल, भारतीय जनता दल तथा नवजात जनता पार्टी का योगदान रहा है ।
- (७) वर्ष १९७४ ई० के सामान्य निर्वाचन में प्रायः सभी दलों ने भाग लिया । इस विधान का निर्वाचन में कुछ १२ प्रत्यासी रहे जिनमें ७ ब्राह्मण, १ दार्शनिक, १ यादव, १ बिन्द, १ विश्वकर्मा, १ शीनिया तथा १ फार, जातियों के प्रतिनिधि रहे जो कि राजनीतिक मान ग्रहण एवं पैसा का बर्ताव किन प्रत्यक्ष करता है ।
- (८) बहुत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अब तक सम्पूर्ण हुए सभी विधान का पुनर्वाचन में इस योगदान किया गया योगदान है ब्राह्मण प्रत्यासी का ही कम किया जब कि अन्य राजनीतिक दलों ने निम्न निम्न जातियों के प्रत्यासी लगे लगे हैं ।
- (९) योगदान किया गया योगदान उद्गारवादी फार है २१ जिलों में पुराने है भारी-भरकब है कि पर नदीकरण का भी प्रभाव पड़ा है ।

- (१०) चीन्हा किसान उमा दीव में एक लिखी जाऊँ, एक वायुवीन विज्ञापिकाऊँ, एक पाठिहोलीक जाऊँ, वः कण्टर जाऊँ, पाँच हाई स्कुल , दस जुनियर हाई स्कुल तथा प्राथमिक विद्यालय राजनीतिक वर्कों के बढावा राजनीतिक जागीकरण में दीवदान कर रही हैं ।
- (११) चीन्हा किसान उमा दीव में कसीड पुस्तिकाऊँ, धाना, विपुल उपेन्द्राँ, विज्ञाप कण्ड जायाऊँ, नलून प्रकण्डाँ, दूरभाष केंद्र, रेलवे स्टेशाँ, फाऊँ, वस्त्राऊँ, बीजाँ, रीडिंग स्टेशन जादि की जास्थिति प्रगति का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं जिन्हें नागरिकाँ का कवराव राजनीतिकरण (Politicisation) हो रहा है ।
- (१२) चीन्हा किसान उमा दीव में हुक जाऊँ, भारतीय किसान संघ (भरिणदु) विपुल रिन्नु भरिणदु, कान्की इस्लाम, बापव उमा, विन्नु उमा, कुजापा संघ, हरिजन विपारी कल्याण संघ, मानस प्रचार समिति, लुवाई संघ, व्यापारी संघ, बीड़ी मजदूर संघ, सरकारी समितियाँ, सरकारी संघ, न्याय समितियाँ (Trust Committee) ग्रामीणीय संघ, विद्यालय प्राम्थ समितियाँ जादि बराकरीतिक संलग्न एवं समितियाँ राजनीतिक जागरूकता का परिपक्व बीवी है ।
- (१३) चीन्हा किसान उमा दीव में ग्राम पंचायती , न्याय पंचायती, विज्ञाप कण्ड समितियाँ, टाऊन चीन्हा कमीटी जादि नागरिकाँ को सेवा में मान प्रकण्ड करने का कवरा एवं प्रतिक्रान दे रही है ।
- (१४) चीन्हा किसान उमा दीव है अब तक केवल प्रालण एवं बापव जातियाँ के ही विवायक पुर हैं बी कि उन्म कर्ण एवं पिछड़े कर्ण में राजनीतिक सेवा प्रकण्ड की सम्पत्ताओं के विकास का परिपक्व प्रस्तुत करते हैं ।
- (१५) चीन्हा किसान उमा दीव है जायातकाठ के विरीय में पिछे के प्रत्येक विवायक दीव है जाकि उत्पादुही कारागार में बन्दी जाये गी ।

पद्धति

बीछा विकास का दौरा में राजनीतिक दलों का जन्म एवं विकास के सम्बन्ध में ठीक प्रकार का ज्ञान है। उनकी कार्यवाही, उनके परिवार के सदस्यों का उनके काम के सदस्यों के साक्षात्कार किये गये हैं। विभिन्न भारतीय राष्ट्रीय दलों के विषय में तथ्य मिले हैं। भारतीय जनता, किसान मजदूर प्रजा पार्टी, प्रजा समाजवादी दल, समाजवादी दल, युवा समाजवादी दल, भारतीय ग्रामिण दल, भारतीय लोक दल, विप्लव मोर्चा, रामराज्य परिषद्, मुस्लिम पद्धति तथा रिपब्लिकन पार्टी का भी है जन्म एवं विकास का इन इन दलों के लक्ष्य प्रमुख, राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय व्यक्तियों के साक्षात्कार करके तथ्य प्रकट करने का प्रयास किया गया है। राजनीतिक दल विकास के लक्ष्य के लक्ष्य प्रमाणित हो गया उनके विषय में गहराई से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। बीछा विकास का दौरा में भारतीय राष्ट्रीय दलों की एक दल दल लक्ष्य, भारतीय जनता की मजदूर समितियाँ तथा भारतीय लोक दल की राष्ट्रीय समिति - इनके गठित मिलीं जिनके पदाधिकारियों में से कुछ १४ पदाधिकारियों का एक संभावित प्रकरण (Random Selection) करके साक्षात्कार किये गये हैं। पदाधिकारियों के साक्षात्कार में प्रस्तावों का प्रयोग किया गया जिसमें दो प्रकार का संरचित (Structured) तथा मुक्त उत्तर (Open end) के प्रश्न रहे हैं। पदाधिकारियों के साक्षात्कार में प्रत्येक प्रस्तावों पर विचारित हो गई है। प्रत्येक पदाधिकारी के साक्षात्कार में दो से तीन घण्टे तक का समय लगा बिना ठीक ठीक किसी पदाधिकारी के साथ दो बार बैठना पड़ा है।

मैथिल है लक्ष्य प्रमुखों के ठीक राजनीतिक दलों के नेताओं का संभावित प्रकरण करके कुछ १६ नेताओं के मुक्त उत्तर प्रस्तावों के माध्यम से साक्षात्कार किये गये। नेताओं के प्रत्येक साक्षात्कार में एक से दो घण्टे तक का समय लगा है जिससे निर्धारित एवं प्राप्त करने में कभी बार की प्रयास करने पड़े हैं। नेताओं के साक्षात्कार में प्रत्येक प्रस्तावों पर विचारित हो गई है।

राजनीतिक समाधीकरण के अध्ययन के ठीक जन्म विकास का दौरा

है ७६ नागरिकों का वन्द्य (Quota) निर्धारित किया गया जिसमें है ३६ उच्च जाति, २० पिछड़ी जाति, १० अनुसूचित जाति तथा १० पुख्तान नागरिकों का वन्द्य भी निर्धारित किया गया और उन है उन ६० मतदान केन्द्रों (Polling Booths) का प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का निश्चय हुआ । नागरिकों के नमूने (Sample) जाति, आयु, शिक्षा, व्यवसाय आदि जैसे आधारों पर उन वन्द्यिक प्रकरण है प्राप्त किये गये हैं । अनुसूचित जाति पर प्रकरण किये हुए नागरिक है सादाकार किया गया जिसमें प्रस्तावकी का प्रयोग किया गया । प्रस्तावकी में उपर उचित तथा कुछ उपर दोनों धर्मियों के प्रत्यक्ष आविष्ट किये गये हैं जिसे परिशिष्ट ' ब ' में दिया गया है । प्रत्येक नागरिक के सादाकार में एक है दो कटे तक का समय होता है । सापातकाठीन योजना २६ जून, १९७५ ई० को ही जाने है नागरिकों में उचित एवं मय का सादाकार व्यापक हो गया जिससे जैक प्रकरण किये हुए नागरिकों का ही सादाकार देने में अवसर प्राप्त होता है या कुछ प्रस्तावों के उतर देने के परवाच ' क्व नहीं' बता सकते " क्वकर सादाकार की की कर किया । सापातकाठीन योजना के पूर्व १५ मध्य ४४ तथा परवाच में १० नागरिकों है सादाकार किये गये हैं ।

उपर है उचित की सादाकार योजना के द्वारा ही सम्पन्न किये गये हैं । उक्त के फासिगारियों, राजनीतिक पक्षों के नेताओं और नागरिकों है सादाकार प्राप्त करने के लिए उक्त परिशिष्ट व्यक्तियों के माध्यम है पहुँच हो पायी है । सादाकार के निमित्त अनुसूचित तथा वन्दित नागरिकों है पैट कराने में व्यापक एवं विचारियों के उत्पन्न प्राप्त हुए हैं । की सादाकार किये सादाकार (क्याही किन्हीं योजनाओं एवं सादाकार किये सादाकार व्यक्तियों के उपस्थित रहे हैं) में किये गये हैं और उक्त उचित की सादाकार अपनायी गई है । प्रस्तावियों के निर्माण में उक्त के इच्छित की योजनाओं पाटीक- २ विवेकीयता जातिगत के परिशिष्ट है कुछ पिछड़ा प्राप्त की गई है । प्रस्तावकी में एक क्व की सादाकार एवं है योजना के लिए उक्त उचित प्रस्तावों को विवर किया गया है । प्रस्तावियों का प्रमाण (Standardisation) किये प्रयोग किया गया है ।

सन्दर्भ-संकेत:- २१-४ क

- १- राधोकिश कर्मा है विज्ञान-विज्ञान का छात्र ; प्रौद्योगिकी कर्म है विभिन्न विज्ञान प्रयोग एवं हुस्वर है पोलिटिकल पार्टी, १९६६, पृष्ठ ४२२ पर दिया है ।
- २- ए० हुस्वर, पोलिटिकल पार्टी, १९६६, परिचय के पृष्ठ २४-२५ ।
- ३- वही, पृष्ठ २५ ।
- ४- ए० जार्जिन, पोलिटिकल पार्टी, एन सीआ, १९७१, पृष्ठ ३७ ।
- ५- डा० राधेन्द्र प्रसाद, अन्धकार मार्ग, १९४७, पृष्ठ २१ ।
- ६- ए० वाजपेयी, पार्टी पोलिटिकल एन सीआ, १९६७ ।
- ७- ए० ए० जे.पी., वी. सुब्रह्मण्यम् वार्क सीआ पोलिटिकल पार्टी, १९७४, पृष्ठ १४७ ।
- ८- ४ पृष्ठ २०-२१ ।
- ९- ७ पृष्ठ १६६ व १६७ ।
- १०- डॉ० वी.पी., सीआइए एन सीआइए एन सीआ १९७१ पृष्ठ २६ ।
- ११- ए० वाजपेयी, पार्टी पोलिटिकल एन सीआ, १९६७ पृष्ठ २ ।
- १२- ए० वाजपेयी, पार्टी पोलिटिकल एन सीआ १९६७ ; पार्टी पोलिटिकल एन सीआ, १९६७ ।
- १३- ए० डॉ० वाजपेयी, वी. सीआ पोलिटिकल सिस्टम, १९६१ ।
- १४- डॉ० जयदेव वल्लभ, सीआइए एन सीआइए पार्टी सिस्टम ।
- १५- वी.पी., वी. सीआ ।
- १६- ए० जार्जिन, पोलिटिकल पार्टी, एन सीआ, १९७१ ।
- १७- एनी सीआ, पोलिटिकल एन सीआ, १९७७ ।
- १८- वाजपेयी प्रसाद, पोलिटिकल सीआइए एन सीआ, एन सीआइए वार्क एन सीआइए, १९६६ ।

- २०- ए० ए० कैरी, दी सुकल राबिन्सन बाकु सीडल पोलिटिकल पार्टी, ^{टेक्सस} प्रीसीडिंग एंड कन्व्हेनियन्स वेन्चर, १९७१-७४ ।
- २१- ए० पी० कार्ट, हुन्नास वारायण एंड एसीसिन्स, पोलिटि पियेक्चर एन ए वीके सीसायटी (ए के एडो बाकु दी फीर्थ एंड सैकल एन राजस्थान) १९७१ ।
- २२- ए० के० कुमारी, एलेक्जन्डर टू दी बाकुटा बाउलियामन्टी कान्स्टीच्युटिवी, १९७१ फिल रिक्लेन्स टू प्री एलेक्जरी कान्स्टीच्युटिवीन्स केवर कन्डर, १९७४ ।
- २३- राबर्ट मास्केल, पोलिटिकल पार्टी, १९७५ ।
- २४- ए० हुन्सवट, पोलिटिकल पार्टी, १९७५ ।
- २५- वी० व०० पोलिटिकल पार्टी, १९७५ ।
- २६- वार्ल्ड वेड हवीस्टेन, कन्सुमिस्ट पोलिटिकल सिस्टेम्स, १९६६ ।
- २७- ए० पी० कॉन्स्टेन, पोलिटिकल गार्डर एन वीके सीसायटी, १९७५ ।
- २८- ए० वी० हल्लविल, पोलिटिकल पार्टी : ए विलेवोसिड एनालिस्ट, १९७१ ।
- २९- ए० ए० वार्ल्ड, पोलिटिकल सीसायटी, १९७२ ।
- ३०- ए० हुन्सवट पार्स ; पोलिटिकल कन्सुमिस्ट एंड पोलिटिकल डिक्शनरी, १९६५ ; बाकुबाकु बाकु पोलिटिकल डिक्शनरी १९७२ ; कन्सुमिस्ट एंड पोलिटिकल डिक्शनरी, १९७२ ।
- ३१- ए० ए० ए० वी० हल्लविल क्या ए० कैपिटल - पोलिटिकल पियेक्चर ए वीके एन हुन्सवट एंड रिक्ले, १९७२ ।
- ३२- वी० वी० विल्लविल, पोलिटि सीपियल एंड पोलिटिकल एडिटर, १९७४ ।
- ३३- वी० विल्लविल वी० विल्लविल, पियेक्चर एन पोलिटिकल सिस्टेम्स, १९६६ ।
- ३४- वी० ए० विल्लविल, कन्व्हेनियन्स पोलिटिकल - ए डिक्शनरी क्लीप, १९७५ ।
- ३५- विल्लविल वी०, वी० विल्लविल, १९७५ ।

- ३६- ए० डब्ल्यू० चार्ड ए०डि सिडनी व बी, इंग्लिश पॉलिटिक्स क्लब ए०डि पॉलिटिक्स डिस्कसि०, १९६५, पु० ७ (प्रगिता है)
- ३७- सिडनी चर्च, प्रकाश, पु० ५७ ।
- ३८- सी० ए० वात्सोन्स, कन्वेंशियन पॉलिटिक्स, १९७१ पु० २३ ।
- ३९- डा० कन्सायन पु० : पल वीपाठ पु०, वरिमा० के, राक्षीति ज्ञान है वाचार , विवीय मान, पु० १३३ ।
- ४०- डा० सिडनी , वास्तुनिक राक्षीति विचारवादी १९६१ , पु० २, १६-२७।
- ४१- ए० डब्ल्यू० जी०डि, रिप्लिट पॉलिटिक्स पाट , १९३४ , पु० ३० ।
- ४२- मी० चारिया, रिक्कीवीसन्ड पीटि० वाक ए०वा० सी० सी०, मयम्बर २२-२९, १९६६ , पीपिनिट, पु० ३१ ।
- ४३- कन्वेंशियन वाक बी पी०डि वी०डि वी०डि (२१ पु०डि, १९७४ जी सी०डि)
व्युत्पन्न १ पु० १ ।
- ४४- भारतीय वा०डि विद्वान् वी०डि , पु० २-४ ।
- ४५- वी०डि वी०डि, वा०डि वा०डि- ए० ड ड वी०डि, पु० ३४ ।
- ४६- ए० सी० वी० वी०डि, पॉलिटिक्स वा०डि ए० वी०डि वी०डि, १९७५, पु० २५२ ।
- ४७- ए० वी० वी०डि, पॉलिटिक्स वा०डि, १९६५ , पु० १३४ ।
- ४८- सी० ए० वात्सोन्स , कन्वेंशियन पॉलिटिक्स, १९७५ पु० १७२ ।
- ४९- वी०, पु० ६४ ।
- ५०- ए० ए० वात्सोन्स, पॉलिटिक्स वी०डि, १९७२ , प्री०डि
- ५१- वी०डि, पु० १३१ ।

हॉलिया विमान का चीन में राजनीतिक बलों का जन्म तथा विकास

हॉलिया विमान का चीन की रैशुमि पर काम के साथ शुरूआती कामवातावरणिक सम्पत्तियों के आवागम के लिए राजनीतिक बलों का अभिन्न चीता रहा है। स्वतंत्रता के पूर्व बलिष्ठ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रथम कार्य के प्राचीन चीन में सर्वोत्तम हॉलिया की ही रैशुमि बनाया। स्वतंत्रता के पश्चात् कांग्रेस की रैशुमि की हॉलिया की। विमान मजदूर प्रजा पार्टी, प्रजा आन्दोलन पार्टी, आन्दोलन पार्टी, श्रम आन्दोलन पार्टी, भारतीय प्रान्तीय, भारतीय जनता, मुक्ति मजदूर, रिपब्लिकन पार्टी, आन्दोलन पार्टी, रामराम परिवार, भारतीय जनता, हिन्दू महा का का नवीनता प्रजा पार्टी वादि राजनीतिक बलों के प्रत्यक्ष विचार - धारण में अपने पौड-प का परिचय देते रहे हैं किता विचार प्रसूत किया जा रहा है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

भारत की व्यापार संस्था, प्राकृतिक गुणवत्ता और अवशिष्ट संस्कृति की कीर्ति-श्रीमती विश्व पर में विस्तीर्ण हुई किता प्रत्यक्ष बलीजन, पौड एवं कर्माज के विभिन्न छद्म, गुण, यत्न वादि के वाक्ता एवं वाक्मण हुए। पराधिका परकीयों ने अपने अपने देशों में छोटकर भारत के कार्य का प्रचार किया। भारतीय राज्यों के पारस्परिक कर्तव्य के कर्तव्यत्व तथा यत्नों के लोच प्रयासों से पराधीनता का दुःख प्रारंभ हुआ। यत्नों के माध्यम, श्रम, कर्म एवं मर्यादाक व्यवहारों से भारतीय वाक्ता छिबर उठी और यत्नों प्रतीकार विभिन्न रूपों में किया। व्यापार की वाद में ब्रिटीशों ने राज्यों की छलकर अपना हाज स्यापित किया और भारत अधराधीनता में पिछी ला। ब्रिटीश हाज से मुक्ति के लिए भारतीयों ने लोच प्रयास किये जो भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास का स्वर है। भारतीय पौड-प १९४७ ई० के प्रथम स्वतंत्रता छेद के स्वतंत्र में प्रकट हुआ किन्तु एकछा ही नहीं पिछी परन्तु ब्रिटीश हाजतों का प्रकट वायात म्पुता। भारतीय कर्मा की रैशुमि की कर्म, पिछा निर्वहन करने तथा पौड-प मुक्त-मुक्ति

काने के लिए ३१ दिसम्बर १८८५ ई० को मिस्टर ए० जी० ड्रूम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को बन्द किया । १८८८ ई० में वार्ध नुह ; १८९२ ई० में श्री जी० चन्द्र बन्दी और १८९० ई० में चित्तम केडरवा की अध्यक्षता में प्रयाग के पास नू नाम पर तीनों सम्मेलन हुए । १९०५ ई० के बंग-का ने भारतीय मानस को विद्रुम्ब कर दिया और भाव का प्रबुध की राष्ट्रीयता की पारा में बूझ पड़ा । महाभारत काट में श्री शंकरा मल्लभूर्ण रही वह स्वाधीनता के ध्वज में पीढ़े की रत करती थी । शंकरा तत्परीत के कैलापुर प्राथमिक पाठशाला के सम्माननीय अध्यापक श्री पं० टीकाराम शिवाडी निवासी कुशीपुर (रामनाथ पुर रेलवे स्टेशन के समीप) रही काछन में प्रभावित हुए और उन्होंने शक्ति कार्य प्रारंभ किया और परिणामस्वरूप कियाच्य है, श्री कि शिवाडी जीव ज पा, निष्ठापित कर दिये गये । राष्ट्रीयता के प्रबुध पुनारी पीछा टीकाराम शिवाडी का का की पुनः वात्सा की वापस करने में शिवाडीवर लय गये । शंकरा कियान का रीव के काशीरा ग्राम है । उनका रक्त ध्वज है तथा श्रीका के लिए श्री कन मोहन माछीय द्वारा संस्थापित माछी भवन में कार्यरत हुए ।

शंकरा कियान का रीव के कुशीपुर ग्राम है काशीधारी के उत्पीड़न के कारण श्री मुंवर की के बन्द के पश्चात उनके पिता ने प्रयाग में वाकर लरण ही । श्री मुंवर की का परिचय पं० टीकाराम की शिवाडी है जू १८०६ में भारतीय भवन पुस्तकालय में हुआ । श्री मुंवर की में वार्ध भाव संस्था, 'संस्थापी' तथा 'केडरवा' काचार का है तथा पीछा टीकाराम की शिवाडी की लोचि है राष्ट्रीय कैला वापस हुई । यह राष्ट्रीय कैला की किशकि होने का अवसर महात्मा गांधी के शानिच्य में जू १८९६ है १८९२ तक कावसती वाक्य में भिडा । कावसती वाक्य में श्री पीछा काचार काट नेबहु है श्री मुंवर की का परिचय हुआ ।

शंकरा एव के कुशीर संभाव के प्रविड कैलाकन शिवाडी द्वारा बन्दी काये गये पिछे शिरीय में किताड का का १३ अप्रैल, १८९६ को काठियावाड वाय में हुई और काच काचवावर ने कीकण नरनेव किया । यह कुंठ उत्पाकाण्ड का काचार का का का पदुमि, काच के प्रवि किरीड की प्वाडा पदुमि और काचपांग की वाका का - श्री काचकाण में काका केर पीछा टीकाराम की शंकरा

बाये बाँर जगज बरिख की महराय फिरीर काँ स्थायीय जगजगुवाही है हुआ ।
 की काँ का बरिखज जगजगुव में रहा है स्थायीय एक कीधार के मुली है ।
 जू १६२१ के बरखीय बाखीज में किरीकी बरिखार की बरिख नूय ली, लखीर
 के विभिन्न ग्रामों में जहाँ हुई । एक जग बरिखी ग्राम में की हुई किरी कीकी टीकाताय
 की, कीकी रामबहार बाखीकी (कीकी - कीकी टीकाताय की के बरिखी) जग
 मुली महराय फिरीर रहे । इन इन के नामज तथा बाखीकी की ज जगकी पर
 नीय हुआ । परकारी बरिखारी मुली के साथ जगस्थ है किन्तु किरी की की बरिखार
 नहीं किया । जग ग्राम के जगजगुव काँ में जगिष की बरिखता जगिष देना प्रारंभ
 कर किया । कीकी बाखीज नरक का बरिखार जगजगुव जगिष की बरिखी का ।

की मुवर की जू १६२२ फरवरी में बाखीकी जगज है
 मुनिपुर बाये बाँर जगज की बाँर की मरु ली की बरु की साथ साथ बाये । बरिखी
 मुनिपुर जगज जगज नामक बरिखी स्थायी की किरी स्थायीय मुनिपुरी में गाढ़ा मुनि
 प्रारंभ किया किरी किरी लू मुनिपुर है जाने जग बाँर जगज जगज बाये बाँर का
 जगज केन्द्र यही हुआ । की महराय फिरीर की व की मुवर की बाखी में निडे बाँर
 कीकी किया जग बाँर में जगिष का कीकी स्थायी लू है किरी ली तथा पं० टीका
 राम की ली की राम बहार बाखीकी इन तीनों की प्रोत्साहित करी रहे । जू १६२४
 में जगज लखीर जगिष कीकी की किरी की महराय फिरीर की बरिखता ली की मुवर
 की प्रमाण पकी की । जगज विस्तार होने जग । इन तीनों के बाहर है बाहर की स्थाय
 मुनिपुर मुनि मुनि प्रमाण, की मुनिपुर कीबाखी, विहार, की कीतीराम निम,
 प्रमाण, की मुनि विहारी बरिखी, जगपुर ली की डा० राखीश्वरी प्रमाण, मुनिपुर
 (की कि मुनिपुरी बरिखी में डाक्टर है बाँर की मरु की है जगज का जगज
 बाखीर पकी जग किरीकी बरिख की कीकी बाये है) में विस्तार कर जगज किया ।
 स्थायीय बरिखी है जगज जगज जग बाँर ली की बाखी बाखी, जगजगुव ;
 की बाखी बाखी, मुनिपुर, की मुनिपुरी बाखी- बरिख, की किरीरि पाठ
 रसाद, की जग बरिखी निम - जगजगुव; की जग बरिखी जगजगुव-जगजगुव ;
 की कीरीरि निम- जगजगुव; की जगजगुव निम - बरिखीजगजगुव ;
 की मुनिपुरी विहारी मुनिपुर ; की रामजीय मुनि- बाँर ; की बाखी प्रमाण निम-

देवाचार्य ; श्री वाग्मिवाणी - पीछे का पूरा ; श्री गिरिवामन्य- देवाचार्य ;
 श्री रामधुम्बर मिश्र - बल्लभट्टी ; श्री राम धुम्बर मिश्र- ज्वालापुर ; श्री जगदीश चरण
 मिश्रा- पुष्पीपुर तथा अन्य कार्यकर्ताओं का गरीब । इन कार्यकर्ताओं की सक्रिय रहनी
 के लिए पीछे का स्थान ज्वालापुर में जैक मैदानों का वागमन होता रहा जिसमें मुख्य
 रूप से उल्लेखनीय उत्साह बल्लभ भार्गव पंडित व किशोरनाथ बजाज का (१९२४ ई०,
 श्री धूमनाथ धाम्याल का (१९२५ ई०) ; महात्मावाणी , १९ नवम्बर, १९२७ ई० +
 (जब श्री धुम्बर जी ने उन्हें होने की कसौटी का पान किया) ; श्री मीतीनाथ मैत्र
 परिवार ; पीछे का मीन बाबूजी परिवार ; श्री पुष्पजीअयाल टण्डन ;
 श्री जगद बजापुर जाली एवं उत्साह मनीषा प्रसाद हैं ।^१

१२ मार्च १९३० ई० को महात्मावाणी ने एक कानून के विरोध
 में प्रसिद्ध छोटी यात्रा की , उस समय श्री धुम्बर जी उनके बाहर कक्ष में बैठे और
 एक वाग्मिजन करने की अनुमति प्राप्त की । वहाँ से छोटकर पीछे ज्वालापुर जग
 मैदान तथा श्री पुष्पजीअ बाबू टण्डन से मिलकर हमसेवा भिरम्य की । पीछे का
 बल्लभ देवाचार्य पूर्व और कार्यकर्ताओं में जम बायी । १४ अप्रैल का १९३० को
 प्रातःकाल बेलगाँव के बाथ गुरुद्व निम्न विजय केतुत्व श्री महाराज किशोर, श्री धुम्बर जी
 एवं श्री पुष्पजीअ की कर रहे थे । वही केले के लिए प्रमाण मन्द एवं अन्य विजयों से श्री
 जगदीश कार्यकर्ता एवं नेता बायी थे । जब गुरुद्व पीछे का बाजार के परिपक्वी और
 जगदीश कायस्थ पर पहुँचा जब कीमती ज्वाला मैदान ने बल्लभ पर टीका लगाकर काक
 कानून को करने का निष्पत्ति किया और वे तीन कठोरी कड़ाकर एक जमाने में कसुर
 हुए । यह घटना पीछे का जगदीश के उत्साह में श्री नहीं बाँधु भास के उत्साह में
 महात्माजी स्थान रखी है । तीनों नेता गिरफ्तार हो गये । उत्साह का ज्ञ
 का और १६ अप्रैल का १९३० को पीछे का रामजीअ की दूध ; श्री धीमाध बाबूजी व
 श्री राम बारायण मिश्राजी (बागमन व० टीकाराम जी) के केतुत्व में कार्यकर्ता बंदी
 बनाये गये अन्य जैक तीन किशोर मैत्र श्री उषा ज्वाला श्री देवाचार्य सिंह पानेदार हैं ।

श्री कार्यकर्ता केत नहीं का रहे थे वे जगदीश उपायियों के बलिष्कार,
 यह बलिष्कार , विनाश और विवेकी बल्लभ बलिष्कार का वाग्मिजन करने में उन

शास्त्र परामर्श की कठोरता सुनि ने चौकस विचार के की सत्यता सुनी की कभी
 नहीं है किमात्र प्राणिन में ही मारा ।^६ १७ अगस्त, १९४२ की की महात्म्य पाठ
 के नई पार्श्व की की ^(मानाध्यक्ष) फटकर बरसि बाजार छाये । तीन दिन है परिवर्तन जै
 सुने की महात्म्य पाठ का पर सुने का आचार मान्य हुआ । की पाठ की सीका
 करके । बने कपराइन बरसि सुने की बाँर पानेदार की बाँह मिठ गया । पानेदार
 ने चौकस बातों करने के साथ की पाठ की के बरसि की बरसक पीपल की छाउ
 है उल्टा छटा किया, बार बार ऊपर नीचे करवाया, छाँटि है प्रहार कराया
 जिसके फलस्वरूप सुनि ने सुने है निरुद्धर बरसि पर छिट कर सुनि की
 बाँह फैला कर किया । बरसि की बाँहों में बाँह की बारा फूट पड़ी बाँर का ऊँचर
 की बरसकने का कि बरसि सुनि की का बरसक दशा की ? सुनी यात्रा पर
 की का की पाठ ने सारा नहीं माँगी का पानेदार ने सीका है मारने का बाँह दिया
 कि पर की पाठ की बरसि पड़े । पानेदार की की पाठ की की बरसि पर बरसक
 की गया का उन्हें बरसक सुने करके कभी लियाचिनी के साथ चौकस पाने पर बरस
 किया । साथ की का पीपल का कुल की महात्म्य पाठ की यात्रा-सुनि में
 रहा है ।^{१०}

सुनि बरसक की बाँह बढ़ने लगी । सुने के लिए
 पाने मारने का कार्य सुनि ने प्रारम्भ किया, व्यापारियों के परिवारों पर छाये
 छाँटकर उनकी पट्ट-सीटियों की प्रतिष्ठा की सीट सुनि बाँर लीन सुनि बरसि
 पर ग्राम चौक पर मारने लगी । २४ अगस्त, १९४२ की काष्ठ ग्राम में सुनि जै ग्राम
 बाँहों में कठोर ऊँचर हुआ । पानेदार की की कजारी प्रहार पाण्डेय ने सी
 छाँह मारा का उनी पिस्तौल की सीका है की पाण्डेय के प्राण है लिया ; का
 बरसि बाँहों की की सीका ली बाँर तत्काल की सीका नारायण पाण्डेय,
 की बरसक प्रहार सुने, की की नारायण पाण्डेय, की कानन्द पाण्डेय और
 की उनी नारायण पाण्डेय बाँहों बाँहों की जिन्हीं सीटें ली की फट
 किया । बाँहों बाँहों की बरसि काकर पाने पर है बाँह का बाँर उन्हें
 मार सीटकर सुने १६ बाँहों की कपरायी सीका कराया । कजारी की कजारी

विदेशी 'डीप्लोमट सर्व' नामक सामाजिक संस्था की वन्द्य किया। २६ जनवरी, १९५० को भारत का नया संविधान प्रमाणित हुआ जिसके परिचय में जनवरी १९५२ का सामान्य निर्वाचन हुआ।

स्वातन्त्र्य के पश्चात् कीर्तिशायी तथा वन्द्य होने लगे लोगों का प्रवेश कांग्रेस में होना हुआ जिससे बाधित एवं कलह के बीछाण्टु कांग्रेस में हो गये। सन् १९५२ में विधान सभा के लिए की गयी प्रस्ताव मुक्त हो कि सन् १९२९ के कांग्रेस के सम्बन्ध रहे किन्तु उनका कार्यक्षेत्र नया लक्ष्य रखा, यही राजनीति के कारण होकर विधान सभा सत्र (केवाई सत्र) के कांग्रेस प्रत्यासी के रूप में चुनाव लड़े। वे मुक्त अपने ही क्षेत्रों, स्थान, व्यवहार, मान्यता, यही कार्यक्षेत्रों के सम्बन्ध तथा होकर के वहीत कांग्रेस कांग्रेसियों की कलह के कारण किसी हो गये। वास्तव में कि लोक सभा प्रत्यासी कांग्रेस की वीर से पं० क्लारक लाल नेहरू रहे। वे मुक्त की सन् १९५० में भी कांग्रेस प्रत्यासी हुए वीर पुनः किसी हुए तथा लोक सभा के लिए पं० नेहरू की रहे। सन् १९५२-५२ के वन्द्य कांग्रेस में स्वाधीनता का प्रवेश मुक्त से बाधित होना, सामाजिक प्रतिष्ठा वीर राजनीतिक बाधितों की पूर्ति के लिए हुआ। पुराने, कलह, स्थानी, वेद केवी एवं बाधित सम्बन्ध कांग्रेसियों का एक सत्र के साथ लड़ना होने लगा। वे मुक्त की जो उपर प्रवेश कांग्रेस कमेटी के गठनशील का वास्तव्य होना नया तथा की संयुक्तमन्त्र मंत्र मन्त्र में राज्य उनकी के रूप में बन केवा करने का व्यवहार निकल। इस बात में होकर विधान सभा सत्र के विचारों एवं विचारों का विकास हुआ।

सन् १९५२ के सामान्य निर्वाचन के पूर्व होकर होकर लोगों का भारत कांग्रेस के वन्द्य लड़ वीर विधान सभा प्रत्यासी के सम्बन्ध की वन्द्य मान्यता, की वीरय मान्यता एवं की वन्द्य नारायण निम बाधित प्रत्यक्षीत हुए। वे मुक्त की गठनशील के पद पर बाधित होने के कारण अपने लिए विस्वस्त कि पुनः वीर वीर वीर की प्रत्यासी मान्यता किया बाधित। वे वीरय मान्यता के लक्ष्यों में समाविष्टों, वर्गों तथा गणमान्य का का वन्द्य वन्द्य मान्यता पञ्चा

यस पीछा बसावर जाल वैरुठ जामन्य नकन बाये उस की पाण्डेय के अग्रिम उत्तर
हस्तापराई की बाळिका पं० वैरुठ के बरों में लापित किया किसी हुसब नाया है ।
की हुसब की बरों पर पानि प्रच्छा रहे ।

पीछा किया जाल बाय है अग्रिमी प्रस्थापी का
निरन्य करने के लिए कमीलाक बाये और प्रसुत कार्यवाही है परानर्त किया, जिन
स्थानों पर जालों के बायीक जिये गये । बरों की ब कच्छा पर की एक जाल पूर्व
हमें की केलाप पाण्डेय के उत्तरों में जेकी बायाय किया किसी की हुसब की की
ज्यासित है उन्हें ज्ञीय की बाया और कष्ट की हुसब । अन्तर्गतता की केलाप पाण्डेय
के जालीय स्थान, जालाबाय जाल में जालीय पुन की मुत्तु, पं० बसावर जाल वैरुठ बरिबार
है जाली, जाल प्रिया और विरिधी बरों के क्यू प्रभाव के कारण की अग्रिम प्रस्थापी
पीछित हो छे । की केलाप पाण्डेय बाहुक, जाली, जालावर हुसब, जालावर
जाल पं० वैरुठ के जामन्य नकन है । जालीय प्रभाव, जाली जाल एक बार बसावर की
बाया करनेवाले की पाण्डेय की कमील नर्त है किसी हुस । यह पीछा-अग्रिम का
स्थिति जाल था ।

की हुसब-पीछा विवारी - हुसब-पीछा - की अग्रिम
है जाल १९३० है जाल की रफात्तक बायी की और की पुनर की की प्रेरणा है जाल ।
की पुनर की जाल १९५२-५३ तक मैरु पीछा है कियाक रहे । बाया के निमित्त प्रभाव
बाहुक की मुनि की बाया रायक्याय है पीछा जालीय कियाक के लिए प्रसुत पूर्व ।
१३ जुलाई १९५४ ई० की पं० बसावर जाल वैरुठ ने बाहुक है बायर जालीय कियाक
का जालायाय किया । की विवारी की इस विवाक्य के विकास के लिए जाली सम्मता
के बाय जाल है जाल जाल " पीछा के बाळीय " के रूप में सम्मता करने जाल ।
हुस जाल में जालीय जालाति का कमील नकन जालीय जालीय जालीय के विकास में
जालीयों के प्रभाव है जाल । पं० वैरुठ की मुत्तु के पश्चात प्रभाव पड़ी की जाल बसावर
जाली के जाल जाली जाल की बायी बाहुक विरुठक्याय जाल जालायाय
१३ दिसम्बर, १९५४ ई० की हुसब । की जाली की की बाळीय मुत्तु है इस पीछा
का विकास जालायाय की जाल है जालीय नवीन प्रभाव प्रारंभ है ।

पीछा बसावर जाल वैरुठ के निमित्त है रिक्त जालाया

के प्रयासों की कैलाश माछीय की पराधि ही की । काष्ठ के पानी कम पिराव
की कापी में उठ की वीर उकी प्रतिष्ठा पर कायात का । काठा वीर वचुका के
परकात का १८७१ के काठ का कायात में की विलकाय कायात वीर कायातकाठीय
कायात, कायात कायात का कायात कायात के कायात कायात ही की ।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विभाजन-का एवं संघर्ष के
परिणाम वर्ष १९०४ के विधान का निर्वाचन में स्थित विचारों की राक्षसराज पाण्डेय
की जी कि वेदों का अन्वेषण यह है कि किसी दूर के और उच्च कांग्रेस में सम्मिलित हुए
थे, उन्हें ही कांग्रेस प्रत्यागी घोषित किया गया । श्री पाण्डेय का कांग्रेस प्रत्यागी
घोषित होना बहुतकर एवं कुछ सामान्य व्यक्तियों को अप्रसन्न नहीं बना और उन
उन्होंने भी 'आत्मिकारी परिणाम' के नाम से अस्वीकार कर दिया था। वह विरोध
किया और तो अज्ञानता तिवारी - बंधु , खुशी एवं प्रत्यागी के रूप में उत्तर
पड़े । इनके अतिरिक्त अन्य अन्य कारणों से श्री पाण्डेय पराजित हो गये क्योंकि
स्वयं प्रधान मंत्री मोतीलाल नेहरू साहिब स्वयं ही उच्च निर्वाचन क्षेत्र में उत्तर २२-२-०४
को लखनऊ में पड़ती का सम्मेलित हो थी । श्री राक्षसराज पाण्डेय की ३१ फ़रवरी, ०४
की प्रथा ही रही ।

चौधवा जत्रिय का मुख्य केंद्र देवा तल्लील के रायपुर ग्राम
 में बना पार करके जनाबुल फिर देवा कीर अब चौधवा का पूरा बन गया है ।
 श्री रावेन्द्र प्रसाद बिवाही एवं देवती रावेन्द्र कुमारी बाजपेयी के जुगापी श्री यमुना
 प्रसाद पाण्डेय दोनों जत्रिय मुट बापिता जत्रियी चौधवा के पूरा के ही बिवाही हैं ।
 श्री देवती नन्दन बल्लुणा के मुख्य पौत्रत्व काळ में श्री बिवाही उत्तर प्रवेष्ठ तलकारी
 एवं के बच्यदा कर्मावीर हुए और उन्होंने बापाय याचा भी की । श्री बल्लुणा के
 स्थान पर के बच्यदा श्री बिवाही निम्निय प्रवीर ही रहे हैं । श्री यमुना प्रसाद पाण्डेय
 की मुट बापी में बहुर बने का ईर्ष बापिकारी के फल को भी ली बंटे । चौधवा जत्रिय
 श्री राखीपिक केतुव मुन्का को काम्य करने के छिर प्राण प्रणा है बहुरक जत्रियी
 प्रगत कर रहे हैं किन्तु पारम्परिक कल, बहुरा एवं निम्दा के बाधावरण में एकछा
 के छरण नहीं पिताई की । बापाकुलीय पौत्रणा की " कीरामीन " की सम्बन्ध

उत्पन्न करने में असमर्थ सिद्ध हो गई है । श्री रावेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी जून १९३३ के किसान उपा निवाचन में चुनकर नहीं हो उसे यद्यपि ब्रह्मका और हरिन कसबावाली को विशेष वाक्यान्वित करने का प्रयास किया । श्री यमुना प्रसाद पाण्डेय की एक विज्ञापित है श्री कृष्णाचरण निम्न-कठरीरा के एक स्थानीय श्री राविकरान पाण्डेय के कार्यों के साथ बढ़ रहे हैं । श्री कल्याण प्रसाद केव की कठिना में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । कश्चित् के स्थानीय संजल में उसे केवलों, कार्यकर्तों एवं कर्माधिकारियों की उत्तरीय हो रही है । जगन्नाथी किसान उपा के निवाचन में प्रयासी कर्म की पैन्टा में व्यक्तित्व जगन्नाथी प्रारंभ हो गयी है । कश्चित् की प्रतिष्ठा की पुनः स्थापित करना देवी होर है ।

१९ जून, १९३३ ई० के पूर्व होकर किसान उपा हीन में कश्चित् भारतीय राष्ट्रीय कश्चित् के कठिना कर्म सिद्ध श्री राविकरान कठ का वाक्यान्वित नहीं हुआ । भारत स्वतन्त्र हो जाने के परभाव कठिना कर्माधिकार प्रगति की कश्चित् तथा मूर्तों में कश्चित् उत्पन्न हुआ । कर्म कर्माधिकारों में कल्याण, कर्मपात्र तथा एक भारत के साथ साथ कश्चित् कठिना कर्म राविकरान कर्मों का उत्पन्न हुआ । पैन्टा, प्रोड, शीशीय एवं कल्याण कठों पर राविकरान, पाण्डेय, कश्चित् एवं कश्चित् वाक्यान्वित पर केविक एवं कश्चित् कश्चित् तथा प्रतिस्पर्धा में कठ एवं प्रतिष्ठा के लिए कठिना के वाक्यान्वित में राविकरान कठ कश्चित् किया । श्री राविकरान कठ कर्म उद्देश्यों, नीतियों एवं कश्चित् में प्रोडिय, राविकरान एवं कश्चित् परिस्थितियों के प्रभाव के परिवर्तन करते रहे और कर्म पुनः नामकरण की करते हैं ।

किसान मजदूर प्रजा पार्टी

भारतीय राष्ट्रीय कश्चित् के कर्म में कश्चित् होकर कश्चित् पार्टी का ही संजल था जो ने कश्चित् प्रगति के परभाव कश्चित् कठ के नाम के कर्म किया । जून १९३३-३४ में भारतीय राष्ट्रीय कश्चित् के कश्चित् वाक्यान्वित श्री पी० कुंठावी तथा कश्चित् कश्चित् के प्रभाव श्री कश्चित् कठ पैन्टा प्रभाव नहीं है । संजल एवं कठ में कश्चित् के लिए कश्चित् प्रारंभ हुआ कर्म में कठ की कश्चित् हुई । वाक्यान्वित कुंठावी की स्थान का कश्चित् किसान मजदूर प्रजा पार्टी कश्चित् कश्चित् और

ने कमर परिष्कार किया किन्तु द्वितीय स्थान ही रह गया। यह में जंग, रूढ़ि एवं प्रियादीक्षा को बनाये रखने के लिए पुनर्जा, इस में साथ वास्तविक प्रारंभ किया गया।
 किर्से की राक्षसराज पाण्डेय; की बल्लाराम पाण्डेय; की रामलाल बायलवाड; की कपूर कलापुर सिंह पाण्डेय एवं की बल्लुत बाण्डेय बल्लारी के नेतृत्व में कई कमी कार्यकर्ता कारागारों की बाहर २० दिन के बाद की छुट्टी वापसी। कारागार के मुक्त होने पर की उत्थाप्रस्थिति ने अग्रिम कार्य प्रारंभ किया^{१४} और ६ उत्थ उत्थ बनाये। बाद के वर्षों में की उत्थ उत्थ नहीं की।^{१५} यह के बड़ी प्रभाव के की स्वातंत्र्य दिवसी - बल्लार, की उत्थाप्रस्थिति दिवसी - बल्लारपुर, की बल्लारमण्डल दिवसी; की उत्थ बारायण दिवस - बीटी; की मुन्नालाल बायलवाड - कल्लुर; की बायलवाड दिवसी - बल्लारी; की ज्वाल प्रवाह दिवस - बल्लारी; की ईश्वरीय दिवस बल्लार; की सुदास सिंह - बल्लारी बादि लोक व्यक्तियों ने यह में प्रवेश किया। की कल्लुर पाण्डेय - बल्लार बल्लार - यह के बड़ी रहे।

जब पुनः में जब की बल्लारी सिंह ने उत्तर प्रदेश काग्रेस के उत्तर पुनः की बल्लारमण्डल मुक्त को बल्लार किया जब प्रदेश पर में की सिंह का स्वागत प्रारंभ हो गया। बल्लार में ६२ काटक बनाये गये और यह उत्थ उत्थ के बीच जका स्वागत हुआ। इस का की बल्लारमण्डल की मुन्नालाल बल्लारी - बल्लार ने की। यह १९५० के ग्राम बल्लारों के पुनः में इस यह में कमी प्रस्थापित^{१६} को बढ़ा किया और बल्लार एकलवर्ष की बल्लारी। कल्लुर बल्लार उत्थ है की मुन्नालाल बायलवाड बल्लार प्रसुत पुने गये और बल्लार बल्लार उत्थ है की रामलाल बायलवाड बल्लार बल्लार के उत्थ बल्लारिष्ठ हुए। इन वर्षों की प्राप्त करके यह की उत्थ करने के लिए लोक कार्य फिर की।

सन् १९५२ के सामान्य निर्वाचन के लिए यह में की राजित राम पाण्डेय की प्रस्थापित बनाया बादा किन्तु काग्रेस की बाहर है की बल्लार पाण्डेय की बल्लार की बल्लारमण्डल की राजित राम पाण्डेय ने प्रस्थापित बनाया बल्लार कर दिया। डॉ० राम बल्लार बल्लार ने कमी बल्लारमण्डल पार्टी को बल्लार कर दिया था जब; इनके बल्लार कार्यकर्ता प्रभा बल्लारमण्डल यह के उत्थ नहीं रहे। की राक्षसराज पाण्डेय का प्रस्थापित बनाया कार्यकर्ता की बल्लार न का।^{१७}

प्रत्याही न करने के प्रमुख कारण की छात्रियाराम बायबाबू की श्री रत्नाथ पाण्डेय
 है स्वतन्त्रता आन्दोलन में राष्ट्रीय भिन्नता तथा बाहिम चुनाव में करने देने का वक्त उस
 की बायबाबू का श्री राखिराम पाण्डेय पर उनका गुण रहा ।^{१६} बाहिम राजा
 में स्वीकृत करीब की प्रत्यक्ष पाण्डेय-सीता की वक्त में वक्ता प्रत्याही स्वीकृत किया
 किन्तु तब तक एतद्वि पूर्व वक्त है नहीं था । श्री प्रत्यक्ष पाण्डेय की कठिण की प्रत्याहिता
 में वक्तव्य एतद्विना व्यक्तियों का परीक्षा करने की भिन्न किन्तु चुनाव परिणाम में
 वक्त का स्थान सुतीय ही क्या काकि " ५० में प्रतीय था । वक्त की परीक्षा बाबाबू
 पटना बाहिम की स्वीकृत तब के करने कार्यकर्ता की छात्रियाराम बायबू के साथ छात्रबादी
 वक्त के कल्याणी ही नहीं है । प्रका छात्रबादी वक्त पराकाई है व्याकुल होकर छात्रबादी
 वक्त है विषय की पुनार करने का ।

छात्रबादी वक्त

बाबाय नरिन्द्र के की मृत्यु, श्री कप्त प्रमोद नारायण का
 राजनीतिक सन्ध्या और बाबाय के ० बी० दुपजानी की राष्ट्रीय विरक्ति तथा की वक्तव्य
 मेरुता के धोका राजीव का छात्रबादी का जाने है छात्रबादियों में निराशा व्याप्त
 हो गयी।^{१७} डा० राम मोहर जीधिया ने प्रका छात्रबादी वक्त है वक्तव्य होने के कारण
 पुनः छात्रबादी वक्त की कीर्ति किया । एत १९६२ के सामान्य निर्वाचन में जीधिया के
 लिए डा० जीधिया वं० नेहरू के सदा कुलपुर एकीय दौरे है किन्तु एक वक्त सीता
 निर्वाचन विमान का दौरे है के प्रत्याही हुए और विमान का के लिए श्री रत्नाथ
 सिंह यादव- वकील की कि एत १९६२ में बिज परिषद् का चुनाव जीते थे, प्रत्याही
 हुए । श्री रत्नाथ सिंह यादव ५२ और ६० में ही जीता विमान का दौरे है प्रत्याही
 जीना बाकी है । श्री रत्नाथ सिंह यादव परिषद, राष्ट्रीय एवं विपक्षी बाति के
 लिए संघर्षरत नेता रहे । श्री मुनर की विमान परिषद्-वक्तव्य है प्रतीय की मुक्ति
 है वक्त कारण उनकी कठिण है वक्तव्यता स्वाभाविक की और उक्त प्रत्यक्ष छात्रबादी
 एवं छात्रबादी प्रत्याही के करने है हुआ । एतनी अनुकूलता होने पर भी छात्रबादी
 प्रत्याही की पराकाई की जीना पड़ा किन्तु प्रतीय स्थान, वक्तव्य प्राप्ता हो गया ।

छुआ समाजवादी क

सन् १९६२ के सामान्य निर्वाचन के परिणामों से प्रभा समाजवादी क तथा डा० छीन्हा द्वारा संघात समाजवादी क दोनों की पारस्परिक कृपा से नकार पाति हुई और पुनः उन्हा की प्रतीति हुई । सन् १९६३ में से सन् १९६४ की छी के प्रभाव से दोनों क पिलर छुआ समाजवादी क नामकरण किया । छुआ समाजवादी क का जाने पर बागमाट पर से राखि राम पाण्डेय के नेतृत्व में छीन्हा के पांच कार्यकर्ता कुल बान्नीज में बगहर पुर और केड नये पुनः कुल पिनो के परभाव कूटकर बाये ।^{१६} पुनः छीन्हा में काय बान्नीज का किमुत का तीर की राय नारायण सिंह ने तल्लीन मन प्राविण में बाकर बाणज दिया और ६४ व्यक्ति केड नये । ये छी बान्नीजगरी २०-२१ दिन के परभाव कूटकर बाये ।^{२०} दोनों पक्षों के कार्यकर्ताओं की परस्पर दूरी मिटने ली । केड बानेवालों में से श्री राखिराम पाण्डेय, श्री बख्तराम यादव, श्री कृष्णर पाण्डेय, श्रीरामलाल बायल्लाठ, श्री फरीद बहादुर यादव, श्री सुराज सिंह - भिनीट, श्री कहराम सिंह शिराधि, श्री पुनमार सिंह - सुल्हा एवं श्री हापति मिनाठी बस्तीपुर प्रमुख रहे ।

कुलपुर छीन्हा निर्वाचन दोष का उप ज्ञात नवम्बर ६४ में हुआ किसे छुआ समाजवादी क की ओर से श्री हाखिराम बायल्लाठ प्रत्याशी हुए । क ने कम प्रभाव त्यागी, कई एवं संघर्षीत नेता की किस्ती बनाने के लिए किया किन्तु यं नेहरू परिवार की प्रतिष्ठा के कारण पराजित होना पड़ा । नवंबर, ६६ में का प्रभाव नहीं छीन्हा नहीं का छीन्हा बाछेजनिन में जाने का कार्यक्रम का एवं कार्यकर्ता एवं नेता विरोध प्रदर्शन के लिए संघटित हुए । बाछा कण्डा नहीं पिता पाये क्योंकि पुच्छ ने श्री राखिराम पाण्डेय, श्री रामलाल बायल्लाठ एवं श्री ज्ञान नारायण पाण्डेय की कड़कर का रक्त । ३० मीट दूर फरारि वाराणजी से बाकर लौट किया

सन् १९६७ के सामान्य निर्वाचन में छुआ समाजवादी क के वक्तव्य विचार का के लिए प्रत्याशी बनने की स्पर्धा पैदा हुई क्योंकि अधिकतर एकछा का छीन्हा से रहा था । छुआ समाजवादी क बनाने से शिष्टाचार और बर्जिष्टा, उन्हा की एवं पिछड़ा की, जन्तुप्रिय एवं संघर्षीय ली का छेन हो गया । श्री बख्तर सिंह यादव की प्रत्याशी बनना बाछी से किन्तु श्री हाखिराम बायल्लाठ के कारण

उपर प्रवेश में धुन्ना विधायक पद की रीकायों के पन्थ
 वैधानिक एवं नीति विधायक पद वैधान्य उत्पन्न हुआ । धुन्ना समाजवादी पद की
 उमान् एवंकी मुक्ति नीति है किताब का निर्माण हुआ । ए १९६६ में धुन्ना विधायक
 पद की सरकार की विकल्पा है सामान्य निर्वाचन हुआ निर्णय पुनः धुन्ना समाजवादी
 पद ने की राधिकाराम पाण्डेय की जना प्रत्याक्षी बनाया । लोक उमा के लिए
 उम पुताव की साथ साथ हुआ विपक्षी सदस्यता के लिए की कौश्वर भिन्न पद के प्रत्याक्षी
 हुए । सामान्य उम्य हुआ वीर की कौश्वर भिन्न एवं की राधिकाराम पाण्डेय जमी
 अपने समय में उकाठ हुए । की पाण्डेय की जनमत जनता, ज्ञानिकारी जतीत,
 बार बार कर्म, निर्भीकता, मेहनत का सम्मान, पद निर्वाचन में पराजय है उतापुमुति
 उमा सीटा लिए श्रुताछा स्वस्थ जेपा उतीर, उकाठता के प्रमुख कारण की ।
 की पाण्डेय की निर्भीकता का उम है बड़ा परिचय ए १९६२ के सामान्य निर्वाचन में
 पं० नेहरू की उमापाद उमा में जीत के लिए उकाठों की जेपा स्वर में पांच है मिला ।
 उसकी प्रतिप्रिया में पं० नेहरू ने अपने निर्वाचन जीत के वाचनारिक मार्गों में ज्ञान
 किया वीर उकाठों की वाचनारता अनुभव करते उनके निर्वाचन के वाचन की दिर ।

पॉला कलापति जिवाडी को मुख्यमंत्री बनाने के लिए वह
 एका कग्रेस ने प्रयास किया जो कि हम में भी राजकिरण कायकवाठ के नेतृत्व में मुख्य
 कलापवादी पक्ष के राक्षियों की संस्था में विधायक श्री राजकिरण पाण्डेय सहित
 एका कग्रेस की कलापवादी में नहीं थी । स्थानीय कार्यकर्ताओं एवं उनके समर्थकों को
 चांदिनि कष्ट हुआ और वे तीन निष्क्रिय हो गये किन्तु उन्होंने एका कग्रेस की समस्या

स्वीकार नहीं की। इस पक्ष परिकल्पने ने श्रुत समाजवादी पक्ष को वैतु-विहीन कर दिया। इस चौधरी चरण सिंह ने निम्नलिखित मोर्चा - (भारतीय क्रान्ति पक्ष, श्रुत समाजवादी पक्ष तथा मुद्रात्मक क्रान्ति का) बनाया और चौधरा विमान का चीफ है कि कच्छीराम यादव पुराने श्रुत समाजवादी पक्ष के व्यक्ति को अपना प्रत्याक्षी बनाया इस बीच कार्यकर्ता भारतीय क्रान्ति पक्ष में शामिल हो गये। चरवाच में भारतीय लोकमत बन जाने से श्रुत समाजवादी पक्ष का वस्तुस्थिति अत्यन्त ही भया। कमिशन समय में भी, निष्ठावान एवं प्रभावशाली कार्यकर्ता कायम होकर राजनीतिक गतिविधियाँ से विरक्त बैठे हैं।

भारतीय क्रान्ति पक्ष

भारतीय क्रान्तिपक्ष का प्रादुर्भाव भी चौधरी चरण सिंह के पक्ष परिकल्पने से हुआ। चौधरा विमान का चीफ है जू १९६० में निम्नलिखित प्रत्याक्षी की कच्छीराम यादव किसी दूर और भी चौधरी के अनुगामी बन गये। जू १९६१ के निर्वाचन में भारतीय क्रान्ति पक्ष ने स्थित विधायक की कच्छीराम यादव को विमान का के लिए प्रत्याक्षी घोषित किया। की यादव अपने पुराने कार्यकर्ताओं, कार्य, एवं कच्छी तथा चौधरी चरण सिंह की कीर्ति स्तम्भ के साथ निर्वाचन-रण में लड़े। विधायक काठ की केवारे, श्रुत समाजवादी बीकन का बान्दीनात्मक उत्थान, मुद्रा स्वभाव तथा प्रतिष्ठा जाति की दावे पर बनाया किन्तु पराक्रम मिठी बिछका प्रमुख कारण भारतीय, शिक्षित, नवयुवक तथा रिपब्लिकन पक्ष के प्रत्याक्षी की रामाराम यादव कच्छीराम द्वारा चुनाव में अपना प्रकाश विरोध रण।

पराक्रम के पश्चात् की कच्छीराम यादव ने पुनः नये धिरे से कार्य प्रारंभ किया और यहाँ तक कि ग्राम प्रधान का भी चुनाव लड़े। की कच्छीराम सिंह यादव ने अपने उप मंत्री एवं मंत्री काठ में चौधरा विमान का चीफ में जाकर किया कच्छ चौधरा के विमान कच्छ अधिकारी को निर्भीकता किया और के पक्ष योजना की श्रुत समाजवादी चीफ के लिए कार्यनिष्ठ करने की रामाराम सिंह पिछाई हथी की व कच्छीराम यादव का प्रभाव चीफ विकसित एवं फैल हुआ।^{२४} कच्छुर विमान कच्छ में भारतीय की रामाराम यादव - दक्षिण की कच्छ प्रमुख पक्ष प्राप्ति करने में सक्रिय उपयोग

किया । चौधरी चरण सिंह, बिपाकी स्मार्क चार्ज स्लूट हो गया (क्व इण्टर काउंस) में जू १९७१ में बाये वीर राजनीतिक काम की । जू १९७४ के निर्वाचन में श्री यादव हो गया किसान काम दौध है पुनः प्रत्यासी हुए तथा बिपकी हुए । क्व जब राजनीतिक कर्तों भारतीय प्रान्ति बल, उत्तर कर्ष, श्रुत कामवादी बल, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल, स्वतंत्रवादी, किसान मजदूर पार्टी तथा फेदाव बैरीवादी कीपार काम है क्वने स्मार्क की बिछीन करके भारतीय लोक बल नाम हल किया तब क्वी कार्यकर्ता भारतीय लोक बल के फेदावर हो गये ।

भारतीय लोक बल

२६ अगस्त, १९७४ को कर्ष के विकास की बाता है प्रथम अन्तराष्ट्रीय आर्थिक बिछीनीकरण की अनुमानणा पूर्व वीर भारत के राजनीतिक रैमन पर भारतीय लोकबल का बनिम्य प्रारंभ हुआ । चौधरी चरण सिंह बन्धन हुए वीर उन्होंने २० अन्तराष्ट्रीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी की योजना किया किमें उड़ीसा के लख उदस श्री रविराम की बल का मंत्री बनाया गया । ^{२५} हो गया किसान कामा दौध में तबसील स्तर पर इस समय तबई समिति बनी है किन्तु वास्तव है कि पहले कुछ फेदाकारी बल के उदस नहीं बने हैं । ^{२६} श्री लखराम यादव- बिपाक केवत है किन्तु कठिनता का वाकल नबिन्ध होना । बान्धान्तर बन्धान्ति की समापना है २६ जून, १९७५ वापावकातीन योजना हुई । श्री क्व प्रकाश नारायण के नेतृत्व में लोक रैमन समिति गठित हुई, किमें लख कर्ष, भारतीय लोकबल, भारतीय कर्ष एवं कामवादी बल बल रहे । २२ नवम्बर, १९७५ है लोक रैमन समिति ने अन्तराष्ट्र का वाकल किया किन्तु हो गया किसान कामा दौध है भारतीय लोकबल की वीर लख की कार्यकर्ता सम्मिलित नहीं हुआ । यह वास्तव इच्छित है कि यहाँ का बिपाक भारतीय लोकबल का उदस है । भारतीय लोकबल के बिपाक की वीर प्रकाश सिंह यादव प्रतापपुर दौध है क्वनी स्वतंत्र समिति की कि श्री पुनर वी की पुपुनी रही है नाम है बिपाकी स्मार्क मन्त्रि इण्टर काउंस हो गया कामाि कल्ले पुनगति है विकास कराया । यह बिपाक की प्रस्थापना है बिछी बातिनों में स्वाभिमान कापुत हुआ है । भारतीय लोकबल का नबिन्ध बिछी बातिनों के लख पर बापुत है।

हुए किन्तु नाम मात्र का प्रचार हुआ परिणामस्वरूप प्रविभूति के दुराचार नहीं रुक
 उनी । इस उच्च रामराम्य परिणाम का कोई फल नहीं है ।

रिपब्लिकन क्ल

हॉन्डा विधान का बीच में रिपब्लिकन क्ल ने जू 1842
 के सामान्य निर्वाचन में श्री बीकरीराम हरिजन - बम्बपुर को प्रत्यादी बनाया किन्हीं
 हरिजन का ही वार्षिक उत्पन्न मिला । श्री बीकरीराम के पराजित हो जाने के परभाव
 जू 1844 के सामान्य निर्वाचन में श्री रावाराय सिंह यादव - कंठपुर वरीष्ठ को
 प्रत्यादी घोषित किया किन्हीं मुखलि कलित ज श्री उत्पन्न मिला और बीच में
 हरिजन मुखलि पार्थ पार्थ का बारा लगाया गया । श्री यादव को पिछड़ी काति,
 हरिजन एवं मुखजानों के का वार्षिक ही मिले किन्तु प्रविभूति दुराचार रही । यद्यपि
 पराजित हो गये । श्री रावाराय सिंह यादव , श्री बीकरीराम यादव से मकरंद होने पर
 संयुक्त जायवादी क्ल है किन्तु हुए है । जू 1898 एवं 99 के सामान्य निर्वाचन में हुए
 क्ल ने श्री हरिश्चन्द्र हरिजन को उत्पन्न किया किन्तु पराजित हो गये । इस क्ल
 के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रामचन्द्र पौड - हॉन्डा एवं श्री हरिश्चन्द्र हरिजन हॉन्डा कार्यकर्ता
 हैं किन्तु फलनात्मक फलार्थ का क्लाय है ।¹⁰

भारतीय जनता

स्वाधीनता प्राप्ति के परभाव भारत के नवीनिर्माण हेतु जनक
 नीतियाँ भारतीय राजनीतिज्ञों के मानस में झुका हुई । परिणामस्वरूप वलित भारतीय
 राष्ट्रीय कांग्रेस को त्यागकर प्रभावी व्यक्तित्व एवं वलितपूर्ण नेताओं ने नवीन
 राजनीतिक दलों को कम किया । किन्तु भारतीय संस्कृति, मर्यादा एवं धर्म के
 अनुष्ठान एवं परिचय धर्मार्थ एवं परिवारिक क्लाय है प्रविष्ट राष्ट्रवाद का वापार
 केर 21 अक्टूबर जू 1841 ई० को डाक्टर ब्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनता
 की स्थापना की । डाक्टर कैज पठिराम कैजीवार द्वारा संस्थापित एवं श्री नाथवराम
 छात्रि राव मोठसकर द्वारा ध्यापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक एवं नाथर वार्षिक फलार्थ
 के हुए वलण, निवर्ती, फलार्थ फलार्थ एवं राष्ट्रापति बीकरीराम कार्यकर्ता वेहे

श्री प्रेमाधारी जी - बन्धु, श्री कान्हाजी - पंजाब, श्री कान्हाजी जी - दिल्ली,
 श्री कान्हाजी जी - दिल्ली, श्री नाना जी वैद्य - महाराष्ट्र, श्री दीनदयाल उपाध्याय
 एवं श्री बट्ट विहारी ^{दाज} ब्रम्हचारी - उग्र प्रवृत्ति, श्री कान्हाजी राय बौद्धी - जाट,
 श्री पुष्कर सिंह मंडारी - रायस्यार बादि ने भारतीय जनता के कान्हाजी जी को एक
 जहाँ पर लिया, उनके द्वारा किन्तु प्रजापति की भाँति भारतीय जनता भारत में विस्तार
 हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वैचारिक आधार भूमि पर राजनीतिक भूमिका का
 वर्णन भारतीय जनता का प्रमुख कार्य हुआ।

श्री कान्हाजी विद्याना जी जी के श्री कान्हाजी विद्याना जी - श्री कान्हाजी
 ने राजनीतिक विद्याना जी १९४४ ई० में वास्तव में की थी। जब श्री कान्हाजी विद्याना जी
 बम्बई के लिये गये तो १९४६ ई० के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संसद में जा गये तथा
 नियमित स्वयंसेवक भी गये। = कुतर्क १९४८ ई० में मैकडोनाल्ड केन्द्र की स्थापना
 श्री कान्हाजी (कान्हाजी कान्हाजीराय परचुराम पुत्रिया मैकडोनाल्ड केन्द्र, श्री कान्हाजी) ने
 वहायश बम्बई के रूप में श्री कान्हाजी विद्याना जी के द्वारा। वहाँ पर १९४० ई०
 से श्री कान्हाजी प्रसाद विद्याना जी - विद्याना के प्रचारकत्व में श्री कान्हाजी जी का प्रारंभ हुआ।
 जब भारतीय राजनीतिक गण में भारतीय जनता का बम्बई हुआ तब श्री कान्हाजी
 विद्याना ने उस वक्त की उस संघ में स्थापना की नवंबर १९४९ ई० में श्री कान्हाजी
 पाण्डेय कान्हाजी-श्री कान्हाजी (पूरवर्ष कान्हाजी) की बम्बईवासी में वहायश विद्याना पर
 की।^{१९} उस वक्त की श्री कान्हाजी जी का स्वयंसेवक - बम्बई प्रशिक्षण विद्याना
 ने सम्पादित किया किन्तु उन्होंने भारतीय जनता के उद्देश्यों, कार्यकर्ता एवं नीतियों पर
 प्रकाश डालते हुए वास्तविक स्वयंसेवक के लिए बम्बई भारत की वनिवासी को सिद्ध किया।
 श्री कान्हाजी विद्याना ने राजनीति को भारतीय मूल्यों के अनुसार होने पर कह दिया।
 वहायश विद्याना की छात्र के परभाव जूनि पट्टी, बड़ौदा, शाहीपुर, नरेंद्र एवं श्री कान्हाजी
 बादि स्थानों पर कार्यवाही की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विस्तार किन्तु
 ग्रामों तक हुआ या उनके बाध बाध के ग्रामों में श्री भारतीय जनता का प्रचार हुआ
 और अन्य कार्यकर्ता प्रजापति की शीली के निमित्त विद्यार्थी का रंग पट्टीय निष्ठा की
 पिछारी में परकर किन्तु पड़े।

न्यायालय है दीवपुत्र दुर । श्री विपाठी के विद्यालय है विष्णुदास होने है जना परिवार ऐस्य ही क्या क्या होछा निवास दीव है श्री कर्ण की बीच विष्ठा का एक प्रमाण प्राप्त किया ।

सन् १८५२ ई० का प्रभाव ज्योतिष होने पर एवं पराधिपत में श्री राजा प्रणव विपाठी का स्वामान्तरण हो गया । श्री राजाराम विपाठी ने पूर्ण साधित किया । काशी, मुरादाबाद जलद में प्राचीन बन्नीज हुआ विष्णु श्री राजाराम विपाठी एवं श्री दीर्घराज ज्योतिषी माने हैं नदी । वही बन्नीज में श्री दीनबहाल जगन्नाथ उतर प्रवेश के मर्यादी हो । गी हस्त के विरोध में श्री हस्त ज्योतिषी के हस्ताधार कराकर भारत के राष्ट्रपति की प्रेषित किया । कुजर्त सन् १८५३ ई० में श्री विपाठी ने श्रीनारायण नाथनिक विद्यालय (कनिष्ठ एण्टर काठेव) मन्तुली, कोनियां बाराणसी का प्रवासाचार्य बन स्वीकार किया । इस विद्यालय में श्री विपाठी ने अपनी विचारधारा के तम होछा विद्या का दीव के विपाठी ज्योतिष ज्योतिषी की नियुक्तियां की । श्री विपाठी होछा विद्या का दीव में भारतीय कर्ण के संस्थापक, संस्थाप एवं मार्ग प्रष्टा होने के कारण का कारण का एक एवं का समस्याओं के प्रति अवैष्ट रहे । श्री विपाठी ने ज्योतिषबान, वास्तु युक्त एवं ज्योतिषबान कार्यकर्ताओं का निर्माण का संस्थाप किया किर्ण प्रसु श्री ज्योतिषबान युक्त- बन्नीज ; श्री राजपति पाण्डेय, बन्नाय ; श्री राजपति मिश्र-कुल्लु श्री परमानन्द विवारी - मिश्रवरा ; श्री ब्रह्मचरि विवेदी - ठेठा ; श्री चिन्माणि पादव - वास्तुर ; श्री ज्योतिषबान विवारी होछा ; श्री कुंजर रातेन्द्र प्रणव विवारी-ठाडीपुर ; श्री ज्योतिषबान विवारी- ठेठा ; श्री पुरुषोत्तम विवारी - रामनगर ; श्री श्री प्रणव विवारी- जयपुरा ; श्री ज्योतिष प्रणव पादव - वास्तुर ; श्री चन्द्र विवारी पाण्डेय एवं श्री दीर्घराज पाण्डेय- बन्नीज वादि मन्तुली काय रहे ।

सन् १८५७ ई० के सामान्य विवाध में श्री मुरारि विवारी बन्नीज विवारी, विद्या का है विवारी प्रणव श्री ज्योतिष दुर वीर श्री राजाराम विपाठी कुट (उनी) प्रणवारी रहे । श्री विवारी का राजपति विवारी मन्तुली नहीं था किन्तु दीव के प्रतिष्ठित परिवार के जलद का न्यायान्य विविधों में का रहे ।

कार्यक्रम एवं नीति का प्रसार करते हुए जनसमस्या समाधान प्रारंभ किया। साथ में किसानों के कार्यक्रमों की रचनी लगी।

१६ फरवरी को १९५१ ई० में ही बाबाजी निरक्षर में काम करने के निमित्त छठछा के जीय पुस्तुराबाद ग्राम से छाया प्रारंभ हुई किन्तु प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रख्यात पौष्टिक शास्त्री डा० मुखी मनोहर जीजी, वाराणसी जल के बन्दगी धानपुर के पूर्व मानकी दण्डाधिकारी (बागरी पब्लिश्ट) की मुखीपर बाण्डेय एवं श्री राधाशिव त्रिपाठी प्राचार्य के शास्त्रिक, बाबाकात्मक तथा पशुनि-मित्रता पाजण हुए किन्तु उपस्थित कम लूह बन्दगी की विचारवारा से प्रभावित हुआ। किमानछा जीय के लोच स्थानों पर छाया प्रारंभ की गई और छेपूनी जीय में बन्दगी की कर्षा प्रारंभ की कही किन्तु बातावरण का काम छानने के लिए कस्यता बधियान तीव्रगति से पछापा गया और श्री पारलमाय जी बाण्डेय - मनोहरपुर, प्राचार्य राधास्वामी राम छण्टर काठेय, वाराणसी की छेपूनी में बायी तथा छाया की छेपूनी करने लगे ।

एव १९६१ ई० के शीमांकलन में तृणों पियान का दोष में
 बार पांच ग्रामों के मध्य बिन्दु पर एक छा करने की योजना की रायाराम त्रिपाठी
 के निर्देशन में निश्चित हुई। परन्तु शीक रख एक खाना, ताहू परत बपाका कना
 के नार्मिक कल एवं एक कानाबाद विरोधी प्ल के साथ हुआ पत्र मुद्रित हुए और
 कार्यकर्ताओं का एक पत्र निम्न पड़ा किमें की रायाराम त्रिपाठी, की पारकाण
 पाण्डेय, की प्रजापति पाण्डेय, की रामधुत पाण्डेय, की रायपति मिश्र, की चिन्ता-
 नाथ साधन एवं की सत्य नारायण ठासी, की चन्द्र शिखर पाण्डेय, की शुष्म
 प्रसाद पाण्डेय बापि प्रसुत रहे, इनके अलावा अन्य स्थानीय कार्यकर्ता भी संग्रह रहे।
 एक एक दिन में दो या तीन छाये जायीं कि की किमें मृत्युवृत्ति, प्रष्टाचार,
 उत्पीड, कलहारी सेती, बीबी बाहुमण एवं पंथीक, मो सत्या, अग्नि भाषा के
 प्रति आनीक छा कानाबादी नीतियों बापि के विरोध में मानण, अक्याये एवं
 नीत हाते छा भारतीय कर्षक के सिद्धान्तों, नीतियों एवं कार्यक्राओं पर प्रकाश डाले
 जाते और अन्त में प्रकृष्टापी नारे ऊठाकर छा विघटित होती। प्रकृष्ट अन्त छाओं
 के अन्त दाकक वायु के फाँकों में की छाये होती रही विच्छा लोकमान्य पर भीतर
 प्रभाव पड़ा कि कर्षक के नेता एवं कार्यकर्ता बका के पनी होते हैं। तृणों पियान का

दीव में कैफ़ी ज़ायें हुईं किछी कर्मों का प्रचार एवं प्रचार पाठ, पुस्तक, बुद्ध, बुद्धच
 मङ्गल एवं व्यापारी ज़ी कर्तों में हुआ । दीव में कर्मों की स्तुति तथा बन्ध पढ़ीं
 किछी रूप है ज़िन्दगी की विन्दा के स्वर फूट गई । इन ज़ायों में कर्मों कर्मों की
 कर्मों तथा कर्मों ज़ायों एवं कर्मों में परिचित हुई एवं कर्मों के कर्मों एवं कर्मों
 कर्मों, ज़ायों, ज़ायों, कर्मों एवं कर्मों ज़ायों में कर्मों हुई । कर्मों का
 दीव में कर्मों के कर्मों एवं कर्मों की कर्मों विन्दा हुई । इन ज़ायों में
 की राक़ाराम विन्दा, की राक़ाराम विन्दा, की राक़ाराम विन्दा एवं कर्मों
 कर्मों के कर्मों में विन्दा हुआ तथा कर्मों का परिवार में कर्मों की
 ज़ायें कर्मों हुई एवं कर्मों कर्मों की कर्मों कर्मों ।

पाक पराधा विषय यानी के व्यवहार में पुनः छाया में लाया गया हुआ किन्ती चीन में पुनः नृत्यवा लायी । विषय यानी पर स्थानीय कार्यवाही कण्डा, टीवी एवं विज्ञापन लाकर छोटे छोटे कुर्छों में मेज केन्द्रों पर पहुँचे । जनवरी १९६२ ई० में तत्कालीन सम्मेलन कैटरापरिषदाय परधराम पुस्तिका मेजलत इण्टर जालिय होठिया के महाकला में की मारकनाथ पाण्डेय प्राचार्य की बन्धनता में हुआ । ३४ सम्मेलन में स्थानीय स्वायत्तता की व्यवस्था रहे । सम्मेलन में डा० मुरली मोहर जोशी एवं की रावाराय विवाठी के सम्मानजनक हुए और १० सूची प्रस्ताव पारित हुए । प्रस्ताव संख्या ४ में जलविद्या, कन्नुर एवं बामेपुर में रावकीय शिक्षणालय खोलने की मांग ; प्रस्ताव संख्या ७ में गौड़री, ^(मुमदना) पुष्पपुर एवं जलानुह के मार्गों की बाँधकर मूलजल रोकने की मांग , प्रस्ताव संख्या ८ में होठिया टैक्सिन्ड जालिय की मनु यकी करने की मांग तथा प्रस्ताव संख्या १० में जलानुह में होठिया तक नगरपाल सेवा प्रारंभ करने की मांग बापि बाज मन्त्रुह यानी के बाद की उत्तरा की दृष्टि में परी की प्रतीक होती है ।

सन् १९६२ ई० के सामान्य विधान के तहत कार्य में श्री राजा
राज भिषाठी प्राचार्य जी अपना प्रत्याशी घोषित किया । श्री भिषाठी-कुछ समय,
सुन विचार प्रस्ता, व्यवस्था, व्यवहार, व्यवस्था बना, व्यवहार विपुल ;
कार्यकर्ता विधान, बहुत कार्य एवं विधान प्रक्रिया समय व्यक्ति रहे बिना
प्रक्रिया होकर कार्य करनेवालों ने एक एक माह का समय तथा मासिक समय विधान

में किया। उपर प्रवेश करने के बादपिहारी के नामक छिंद बरिंद वार्ड तथा उससे कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। डा० मुरली मोहर खोड़ी ने कुछ छात्रों में भाषण किया। इस निवास भवन में श्री राम बालाचन्द्र पाण्डेय-कर्मधरा, श्री दीना नाथ तिवारी-छिन्नाद, श्री राम बालाचन्द्र पाण्डेय-बाँसपुर, श्री राम नारायण पट्टिया-कोटा, श्री बीछानाथ तिवारी-बराकपुर, श्री चन्द्रमूखण पाण्डेय-बुद्धिपूर्व श्री छिदिनाथ तिवारी-छातापुर, श्री छिन्दराय छिंद-हुसैयका, श्रीरामचंद्र मिश्र-केरौली, श्री चम्पछाउ हुस-कैला, श्री चन्द्रमूख पाण्डेय-करीरा, श्री बाछाराम मिश्र-बाँसपुर, श्री चिन्तामणि मिश्र-बुद्धिपूर्व, श्री छिन्दाराम छिन्द-नीलीपुर, श्री राम चिन्दर मिश्र-दीरापुर बादि स्त्रीय कार्यकर्ताओं का निर्माण हुआ। इस भवन में कार्यकर्ताओं के बैठ के कम में कला के अलावा उभरा। छिन्दाराम मिश्र, अडे एवं बीछ के कार्यकर्ताओं तथा बापटियादी छिन्दारों के बैठ पर कार्यकर्ता हुआ किन्तु बातिबाद, प्रतीक, प्रमाण एवं बाधिक प्रमाण की कटिरी बांधी में अला रंग कुछ बूझित हो गया और श्री बिपाठी पराधिक हो गये।

सु १९६२ के छात्राध्य निवास के परचाय श्री नारायण पाण्डेय-प्राचार्य तथा श्री राजेश पाण्डेय-अध्यापक दोनों कार्यकर्ताओं कायास्थानी धाम विद्यालय के निष्ठाछिंद कर दिया गया। इससे होछा कार्य की प्रतिष्ठा एवं प्रजासौ पुनः बाचाय छा किन्तु बीजी के किनाउ के श्री पांथे का बन्ध एवं किनाउ होता है। अलाभार में श्री बाचाराम बिपाठी की प्रजा, अलाय एवं अलायता है कोऊ में पाण्डेय माध्यमिक विद्यालय अरस्की बाक कोऊ की स्थापना पुर्न और श्री राजेश पाण्डेय की अला प्रजाप्राचार्य निवृत्त किया गया श्री अलाभार में अष्टर अलाय हो गया। श्री नारायण पाण्डेय-प्राचार्य की पुनः एक अलाभार माध्यमिक विद्यालय का प्राचार्य बन प्रमाण किया गया।

सु १९६४ ई० में लीक अला के उपभुताय में श्री बाचाराम पाण्डेय कोनपुर की बैठ का प्रजादी योनिच होने पर यहाँ के श्री कार्यकर्ता श्री बाचाराम बिपाठी के निवेदन पर कार्य छिंद और बाधन परिचारा में अपना प्रभुत्व विस्तार करने का प्रयास छिंद। १९ अगस्त सु १९६५ ई० की श्री बाधन प्रजाद बिपाठी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं का एक बड़े 'कम अलाय' के विरुद्ध में प्रपत्ति करने दिखी गया। सु १९६६ ई० के अला में कार्यकर्ता हुआ करने पर हुसकी का एक प्रपत्ति श्री बाचाराम

मित्र के मावण पुर । देवादाय बाजार में बिकत भारतीय कपड़े के मंत्री की पुनर-
 णिष्ठ पण्डारी का प्रत्यक्षी, मंत्री एवं निवेदात्मक मावण का का में हुआ ।
 बलवर्धन में उद्योग चीन का प्रमाण बार बार मिलते तथा जमावों की उद्योगिक करी
 पुर प्रत्यक्षी का हुआ । उन दिवसीय कपड़ा की प्रमुख प्रत्यक्षी द्वारा भी बलवर्धन
 के विरोध में होने के कारण एवं मुख्य कृति है उत्पन्न उद्योगों है उद्योग भारत का
 राजनीतिक मावणप्रमाण कतिपय- विरोधी जो कहा । इन बाह्य कारणों के विरोध
 प्रत्यक्षी की उद्योग उद्योगता, कार्यकर्ताओं की निष्ठा तथा बलवर्धन एवं स्थानीय
 पुराने कतिपयों के बलवर्धन करने है की मित्र की बल के पिछड़े पुनार में कपड़ा
 पुनरी का प्रमाण पुर किन्तु बिक्रम पराज-मुक्त रही । पराज के लोच कारणों में उद्योगिक
 मलवर्धन, विरोधन के अनुसार एक बावर्धन की चीन का यौन बिजली पिछड़ी बावधि
 एवं मुक्तमानों की बलवर्धन के कारण किन्तु हुआ ।

सन् १९६६ ई० में उद्योग विचारक कल (लोकर) प्रमाण की
 बिक्रमता के कारण प्रमाण में पुनः बिक्रमता का के निवेदन की बलवर्धन प्रारम्भ
 हुई । यह पुर भारतीय कपड़े के पिछड़े करी के की रानरिक्त णिष्ठ निवेदन - देवपुर
 कारणही, जो कि कि रानरिक्तबाध बलवर्धनप्रमाण निवेदन उद्योग जाले, उद्योग
 में कल बलवर्धन है, की प्रत्यक्षी बावधि किन्तु । की निवेदन कतिपय के उद्योग
 कार्यकर्ता एवं बलवर्धन बावधि के नेता रहे और का पुनार में की कपड़े पर बावर्धनों का
 रहे बलवर्धन कृतिता है रानरिक्त करी रहे । यह निवेदन में की निवेदन में निजी बलवर्धन-
 कतिपय का चीन उद्योगिक हुआ किन्तु बावधि बावधि कपड़े में की पुनर पुनरिक्तता का
 की निवेदन की उद्योग प्रविष्ट पुर । कपड़े के कार्यकर्ताओं में बलवर्धन उत्पन्न हुआ क्योंकि
 कि प्रत्यक्षी का बलवर्धन बावधि नहीं पा किन्तु बल के बलवर्धन नेताओं में बलवर्धन
 निवेदन के बावर्धन में प्रत्यक्षी की कृतिताओं की बावधि करने का प्रमाण किन्तु । कपड़े
 कपड़े में की बलवर्धन मावणप्रमाणों के अनुसार प्रत्यक्षी नहीं है की बलवर्धन करने की बावधि
 बावधि पर बलवर्धन की बलवर्धन कतिपय हुई । की निवेदन ने कार्यकर्ता हैं पुनार के बलवर्धन
 किन्तु में कल कहा कि कल में बलवर्धन बावधि की बलवर्धन का कपड़े का पुनार, ३५
 किन्तु कपड़ा बावधि बावधि करने के कारण कपड़ा: यह कतिपय नहीं का कल । यह की
 पराज ही नहीं और का निवेदन में प्रमाण कपड़े के बावधि है की कल बलवर्धन ।

पराज ने की निवेदन की बलवर्धन मावणप्रमाणों के अनुसार होने के

छिए किमल किया और वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक भी और स्थानीय
 क्षेत्रों नेताओं के मार्ग यही थे एवंपूर्ण जीवन की वापार छिज रही । की निरंतर
 के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं का एक पक्ष दिल्ली सम्मेलन में गया और कुछ समय परवाह कीज
 देश की मान्यता पहचाने के छिए वायविक विचार का प्रदर्शन में की पुनः दिल्ली गया
 दिल्ली की कटारकर पाम्पेन- कृष्णदी, की कम्पनर मिथ-कीटी, की किमल नारायण पुन-
 कवरीरा, की कंगार मिथ - कसट, की पुनिराम विन्ध - कन्दीपटी बाहि के नाम
 उल्लेखनीय है । की निरंतर की ने छीछा किमल कुछ पर एक कौशल प्रदर्शन किया ।
 प्रदर्शनकारियों के पाठ एवं, विन्धु एवं अन्य कौशल विन्धु की वी जे जे की निरंतर
 के नेतृत्व में किमल कुछ कायाज पर खुंकर अपने अपने कीविर्भावकी जे प्राणियों
 की छीछा किया देखी देखी है छी छीछा में प्रवेश करने छी और छी कपिारी छीछी
 एवं मेरी के ऊपर छी छीछा प्राण क्वाली का बलिदान करने छी और उन्होंने वास्तव
 किया कि प्रदर्शनकारियों के छिए स्वीकृत रूप बलिदान निमित्त हो जाया । पूर्ण वास्तव
 होने पर ही की निरंतर के वादेद पर छी एवं विन्धुओं की फलु किया गया ।

छीछा किमान छी दीव में की राम प्रकाश गुप्त पूरापूर्ण
 जे मुखसंधी उतर प्रवेश, की छिरिचन्द्र कीवास्तव संकलन नवी उतर प्रवेश कर्तव्य एवं
 की रवीन्द्र छिछीर छीछी- देवीया बाहि नेताओं का वागमन हुआ विछी कता कर्तव्य
 की कत छिछीर की खुल करने छी । छे १९७४ ई० के सामान्य निर्वाचन में किमान
 गया के छिए की निरंतर की कर्तव्य में पुनः प्रस्थापी घोषित किया । पुनाब बलिदान
 का छुनारम्भ १६ जनरी, १९७४ ई० की बलिदान भारतीय जाति के नेता कर्तव्य कीवस्थी
 वकता ,विचार एवं भारतीय संकलन के कर्तव्य की कटल विचारी बाबकीने ने छीछा रैछे
 संकलन नेमान की विचार कण्ठा के कर्तव्य है किया । की बाबकीने के कर्तव्य है
 पक्ष केने नेताओं ने वागमन किया था । की बाबकीने ने छीछा की कता है वाकता
 किया कि ' मेरे पक्ष के कर्तव्य विचारी निरंतर की किमान छी में कर्तव्य खुंवाप्ये ।'
 छीछा किमान छी दीव की कता के स्वर्ग में की कटल विचारी बाबकीने शब्द का
 की और कार्यकर्ताओं के छिए नीव का की । छी कार्यकर्ता बलिदान में जे गये, कायाज
 आचार छीछा गया वरिष्ठ में प्रियादीन हो की एवं क्वाली के वायविक होने छी ।
 कार्यकर्ताओं का एक पक्ष की राधाराम विपाठी के संकलन में दूसरा पक्ष एक अन्य व्यक्ति
 के संकलन में तीसरा पक्ष की क्वाली प्रकाश विपाठी एवं की पुनर पन्द्र मिथ के संकलन में

की याचना किया और बाप का वास्ताव किया किन्तु कमजोरी वपराधियों की वकिलान् पकड़ने तथा छेड़ने केनी कला की दिखाने का वास्ताव प्राप्त करने पर बाजि रहे । तबहीछकार ने बाकर कमजोराधियों की का पूर्ण वास्ताव किया का छेड़ा के रूप से वापराण कमज की पुता । केहु जमुजण (छेड़ी) के धिरीय में २२ मार्च एव १९७५ की विमान छेड़ का प्रकलन तबहीछ पर पुता धिरीय की वास्ता प्रकाश मिथ, की धिपाठी, धिराम देवा मिथ, एवं की रापाकान्ध पाण्डेय- धुधियुर के पाण्डेयों ने छेड़के कमजिय की विद कर दिया । बादे दूर पुनर्की ने किया उचित मूल्य प्राप्त की केहु न केनी की प्रविता की ।

संकेत एव १९७५ ई० में छेड़ छेड़न समिति का मज बाहु का प्रकाश वापराण के विचार वापराण के कमज की ने छेड़का में की गति किया । २६ जून एव १९७५ ई० की वापावकाठीन धीनका के परवात् २२ जुलाई, ७५ की की रापाका छेड़ मिथ एवं २६ जुलाई ७५ की की धुधिराम मिथ वापरा रता वधियम के वनुछार वन्दी काये की । प्रतिपुति पर धीनी व्यक्ति छूटकर बादे । २२ नवंबर एव १९७५ ई० से छेड़ छेड़न समिति के वापराण पर उत्थाग्रह प्रारंभ पुता किछे प्रम वन्दी के उत्थाग्रहियों के पकड़े जाने के पुस दाण परवात् की मिथ की की पकड़ छेड़ की और उनके निवास का की मूल वधियम पुति ने किया वाप में उन विजावीछ छेड़का की रहे । की मिथ की वापावीय वापरी की वधियम करी उन के का की कतिपय पठ के कार्यका के वान से कमज बादे उन विजावीछ ने कर किया । उपरीका पुस की विजाठ का छेड़ एवं उन्नी विडीन पठ के लैक कायेका वाप्रीछ एवं वाप के वापु धीकर वान वेकी रहे ।

छेड़ छेड़न समिति के वापराण पर छेड़का विमान का की वधियम वन्दी के की केता एवं कार्यका उत्थाग्रह में वधियम दूर और वापराण में वन्दी काये की । उन्नी की रापाकान्ध धिपाठी, की रापकान्ध पाण्डेय, की रापकान्ध पाण्डेय, की धुधिराम मिथ, की पुनारायण मिथ, की पुनर वन्ध मिथ, की लमैछ केवावी , की रापेन्द्र प्रकाश मिथ, की छेड़कर प्रकाश मिथ, की विम्य वापराण पु, की वनर वनापुर धि, की हिन्ध वापराण पु, की वान वापराण मिथ एवं की- वान वन्ध विधी वाप पुति दारा वाप रता वधियम में पकड़कर की

कारागार में डूब दिए गये। उनका ही हीन माघ के परचातु प्रतिभूति (क्रांति) पर
 की कारागार है बाहर बाहे किन्तु अभिमान की तिथियाँ पर न्यायालय में व्यवस्था
 होते रहे हैं। अन्ततः कारणों से भी निरर्थक की वास्तविक प्रस्ताव अन्ततः का राष्ट्रीय
 बन्दी बना दिया गया।

चौथी क्रांति का हीन में भारतीय कार्य के बाह
 व्यवस्था, व्यवस्था, व्यवस्था प्रस्ताव, का अन्ततः के लिए व्यवस्था, उच्च व्यवस्था
 व्यवस्था व्यवस्था बाहे का हीन में प्रतिष्ठा प्राप्त कार्यवाही एवं नेताओं का अन्त
 है, ऐसी परिस्थिति में व्यवस्था व्यवस्था प्रतीत होता है।

हिन्दू महासभा

हिन्दू महासभा का उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र की संस्थापना
 एवं परंपराओं के आधार पर वास्तविक औद्योगिक हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करना है
 तथा यह हीन के अन्ततः द्वारा अन्ततः भारत की पुनः स्थापना के लक्ष्य है। चौथी
 क्रांति का हीन में हिन्दू महासभा में प्रथम बार सन् १९०४ ई० के निर्वाचन में अपना
 प्रस्ताव प्रस्तुत किया। श्री चौथी क्रांति पाण्डेय - चौथी क्रांति का हीन पर बाह्य
 प्रथम अन्ततः के बाह्य पर हीन प्रस्ताव की घोषणा हुई। अन्ततः में श्री पाण्डेय की
 व्यवस्था के अन्ततः के बाह्य पर हीन प्रस्ताव प्रस्ताव प्रस्ताव की नीति।
 अन्ततः पर हीन चौथी क्रांति का हीन में हीन के अन्ततः के अन्ततः नहीं है। चौथी क्रांति
 का हीन में हिन्दू महासभा की चौथी क्रांति पाण्डेय का हीन है जो अन्ततः के लिए
 निर्वाचन है। ऐसी प्रतीत होता है कि यह व्यवस्था अन्ततः रणनीति की एक कड़ी के
 अन्ततः बाह्य पर हीन नहीं है क्योंकि अन्ततः प्रस्ताव की राक्षस पाण्डेय है पारस्परिक
 विरोध रहा। श्री चौथी क्रांति पाण्डेय का प्रस्ताव हीन श्री राक्षस पाण्डेय की पराजय
 में अन्ततः हीन हुआ। हिन्दू महासभा का व्यवस्था एवं क्रांति का हीन में पुनः-निर्माण
 ही है।

अन्ततः अन्ततः

अन्ततः भारतीय राष्ट्रीय अन्ततः के अन्ततः नेताओं की
 बाह्य प्रस्ताव का भारत के राष्ट्रपति पर हीन प्रस्ताव-निर्णय में विस्तारित हुआ।

सु १९७४ ई० के सामान्य निर्वाचन में किसान छा है और वे रामछल
 मुक्त - वैवाचार (प्रतीय कायल्लि उत्तर में वैवाच) की छेदन कटिब ने निर्भीक
 प्रत्यादी पीनित किया । ज्ञातव्य है कि कर्मावित कटिब ने की उन्हें सु १९७३ ई० के
 सामान्य निर्वाचन में अपना प्रत्यादी बनाया था । वीर के मुक्त कथन काँ है पदाधि
 की पुके है । उस बार के मुक्त वातावरण के कि पीपीय उन्मात्त काँ है कमीन है
 एकछवा भिठ लीनी । उस ज्ञातव्य कथन में की डा० वैवाच छिं छिंछा, कि पारखान
 छिं छिंछा, की पान कसापुर छिं - राकपुर तथा की पीनावाय मुक्त प्राचार्य- कुवा
 तथा अन्य लगे उन्मात्त काँ ने की मुक्त का प्राण प्राण^{पण} है छाप किया किन्तु परिणाम
 यवत्तर नहीं हुआ । विरोध है जानि तथा छा है छाँ के क्षीताकि नामकि उन्मात्त ने
 छेदन कटिब के कटि कर्मकाथी में छा कटिब की वीर कुचने के छिं वाक्यता उत्पन्न
 कर किया कठ की उपकथा का नवीनीकरण वाच कठ पुनः नहीं हुआ ।^{१६} की रामछल
 मुक्त तथा की पान कसापुर छिं के कटिरेका कीछरा कीछ छेदन कटिब का छाप पैर
 नहीं पिछछाई पैता । की छिं ने किसान परिचरु के स्नातक निर्वाचन में तत्काल
 छीच पता (छेदन कटिब, भारतीय कर्म, भारतीय छीचछ) के प्रत्यादी की कमी
 कथाय वकला के छिं छीच पता वाक्य किया है किन्तु कीय वक्तानियों का कथाय उन्हें
 ववाच कथन का उन्मात्त है रहा है । ' छेदन कटिब ' का दो की पविच्य है या तो छा
 कटिब में किछ या नवीन विरोधी कठ के कठ पर अर्ध किछ ।^{१७}

मुछलि पयुछि

भारतीय राक्षीति में हस्तान काँ के कुयाथियों ने अपनी कर्मिणी
 वस्तुतः अं वारतः के छिं विस्तर प्रयाप किया है किछे परिणाम में पाकिस्तान
 तथा कंछा पैठ (की पूर्वी पाकिस्तान का) का पिरव के पानपि में वस्तुतः है ।
 मुछलि छीच की प्रेरणाकी ने भारत की छीच किया । छिन्दू अं मुछमान अपनी अपनी
 गुरता अं निष्ठा के कारण क्व निर्मित पाकिस्तान तथा छेच भारत के छिं स्थानान्तरा
 हुए किछे छेदनाथी कथ्या उत्पन्न हुई । स्थानान्तरण कठ में पयिं कमानुषिक
 कथाचार अं कथाय की हुई । छीछा कथान छा पीच है की प्रतिष्ठित मुछमान
 पाकिस्तान की की ।

भारत में ही निवास करनेवाले श्रेष्ठ मुसलमानों ने राष्ट्रिय का धाय बना पलम करने का प्रयत्न किया । अलग-अलग में वे एक प्रवेष्ट में मुसलमानों की एकता : गति का पुर्न किया अन्य राजनीतिक तथा वराजनीतिक क्षेत्रों में भारतवर्ष पर में ही । 'कायसी इस्लाम', 'कायसी इस्लाम' तथा मुस्लिम महाभारत 'बापि' क्षेत्रों का कार्य कर रहे । चौथी कियान का दौर में एड १९५० ई० में मुसलमान महाभारत का क्षेत्रों का दौर की शक्तिशाली पुर्न की एकता किया - वरदा बन्धन कर ।^{५१} मुसलमान महाभारत में विभिन्न राजनीतिक विचारधारा वाले की मुसलमान व्यवस्था की वरदा की शक्तिशाली मुख्य वरदा मुसलमानों का के के प्रवेष्ट किया गया है । यह वराजनीतिक क्षेत्रों वरदा वरदा, विवेककर एड किया की स्वीकार करनेवाले राजनीतिक वरदा की वरदा बना रहा । वरदा महाभारतवादी की पुर्न के लिए एड १९५० ई० में डाक्टर वरदा वरदा करीबी ने 'मुसलमान वरदा' के रूप में एक राजनीतिक वरदा क्षेत्रों किया ।

चौथी कियान का दौर में मुसलमान वरदा का क्षेत्रों मुसलमान महाभारत की वरदा किया पर पुर्न की वरदा किया की वरदा कर । मुसलमान वरदा के क्षेत्रों पर वरदा व्यवस्था की । एड १९५१ ई० के कियानधारा निवास में की राबाराय सिंह यादव एड^{५२} वरदा रिपब्लिकन प्रवेष्ट की प्रतिवर्ष के अनुसार मुसलमान वरदा ने वरदा किया वरदा भारतीय ब्रान्चियल एवं राष्ट्रिय वरदा की वरदा पर विचार की गया । मुसलमान वरदा के महाभारती वरदा वरदा वरदा-वरदा वरदा रही है ।^{५३} किया कार्य क्षेत्रों के व्यवस्था की वरदा वरदा वरदा का स्थायी बना चौथी में ही है । डा० कचरुड रमान वरदा, एड मुसलमान वरदा, वरदा वरदा वरदा वरदा वरदा किया, डा० मुस्तार वरदा वरदा, निवासीकन चौथी वरदा वरदा के वरदा वरदा है की कि मुसलमान वरदा की क्षेत्रों, पुर्नित वरदा वरदा एवं वरदा वरदा राजनीतिक बना की रही है ।

एड १९५५ ई० के निवास में विवेकिय वरदा (माध्याम, वरदा तथा मुसलमान वरदा) के प्रवेष्ट की वरदा यादव की वरदा किया वरदा किया का वरदा-वराद किया । डा० करीबी की वरदा के वरदा व्यवस्था का वरदाकरण वरदा पुर्न की वरदा की प्रवेष्ट पुर्न किया पुराने महाभारती वरदा में वरदा है । कायसी इस्लाम' पर प्रतिवर्ष का वरदा वरदा किया का रहा है । मुसलमान

महाविद्यालयों में प्रवेश करने में बाधा है किन्तु अपना काम कर चुके हैं जो किसी काम में लगाने हैं ।

जनता पार्टी

२६ जून १९७५ ई० से २९ मार्च १९७७ ई० तक के आधा-काठ की सर्वोच्च अदालत की निर्णायक फैसलों के फलस्वरूप जनता पार्टी का अस्तित्व है । मार्च १९७७ ई० के लोक सभा निर्वाचन में एकजुटता प्राप्त हुई एवं केन्द्र में महा कांग्रेस का बिकल्प प्रस्तुत करने का काम कर भारतीय कांग्रेस, भारतीय लोकसभा महा कांग्रेस एवं आजादी का आन्दोलन नेताओं ने साकारता के अनेक उपायों की एक प्रकाश भारतीय के संस्थापन में एक मात्र जीवित जनता पार्टी के नाम से वास्तविक हुए । लोक सभा के निर्वाचन की घोषणा के पश्चात् महा कांग्रेस के निरन्तर की कार्यवाही राम की अध्यक्षता में उनके पक्ष के कुछ नेताओं ने औद्योगिक कांग्रेस का भी गठन किया जिसकी जनता पार्टी के चुनाव चिन्ह पर ही निर्वाचन में नाम प्रस्ताव दिया । केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार की नीति की रचना के नेतृत्व में की । १ मई १९७७ ई० को जनता पार्टी के छी पांच पक्षों ने अपने नाम एवं चुनाव चिन्हों को आत्म कर जनता पार्टी में विलीन होने की घोषणा दिल्ली में की ।

बोझा किसान का दल में आजादी का आन्दोलन जनता पार्टी के अन्य पक्षों के कार्यकर्ता, पत्रकारिता एवं सेवा न्यायिक क्षेत्रों में है । लोकसभा एवं विधानसभा में यह दल है जनता पार्टी का प्रतिनिधि ही का प्रतिनिधित्व कर रहा है । किसान का दल स्तर पर भी एक जनता पार्टी का अंश नहीं हुआ है क्योंकि प्रथम वर्ष गाठ पूरी हो गई है । जनता पार्टी की यह संज्ञा है क्योंकि उनके मौखिक पक्षों की रचनाओं एवं मुख्य अंशों की भी हैं किन्तु उनके स्थान पर नई रचनाओं का गठन तथा नई मुद्दों का प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं हो सका है । जनता पार्टी के प्रत्येक पक्ष में परस्पर प्रतिस्पर्धा एवं ईर्ष्या के नाम क्या क्या प्रकट हो जाते हैं । राष्ट्रीय किसान की अग्रणी भाषा राष्ट्रीय लोक पक्ष पक्ष है अन्तर्गत होने के कारण परिवर्तित परिवर्तित में कार्यवाही स्थापित करने का यत्न कर रहे हैं । जनता पार्टी की प्रथम वर्ष गाठ

तब भी कौशबर भिन्न एवं भी नरसिंह बापस्य उत्सवका केन्द्रीय मंडप परिसरमें तथा
 भी उत्सव प्रभाव ग्राह्यीय, भी कर्माकर बापसी। भी केवरी बाप तिवारी, भी काडी
 चरण बापस्य, भी सुविचार प्रभाव, भी ऐसी-हण सिंह एवं भी डिम्बाच तिवारी,
 उत्सवका उत्तर प्रदेस मंडप परिसरमें के बापस्य सीता विमान का सीत नें हुए हैं ।
 दुर्भाग्य है कि उत्सव के प्रभावकाहियों का बापस्य कथा पाटी की उत्सव का
 बापार उठा करने से विच्छेद नहीं हुआ किन्तु कथा पाटी अपने पटलों के प्रचारों
 का अनिवार्यता एवं मिलन है ।

छात्राध्य निवाधि १९५२ कैमर विवाध कन रीध

नकाशा - ६००००

नकाश - ३००२२

नकाशीर प्रकाश मुका (कविध)	१००००
नित्यर धिध बाध (कविध)	२०००
नैध प्रकाश (के. ए. पी. पी.)	२०००
मुनित्यर प्रकाश निमारी (निमिध)	१०००
छात्रा प्रकाश निमारी (नमिध)	१०००
राध नाराधन मुका (राधराधन परिध)	३००
नकाशीर नका	१००

नित्यर धिध बाध नैध प्रकाश नैध नैध नैध नैध ।

नैध : नकाश ६ नैध मुका १९५२ मुका ५ ।

००००

छात्राध्य निवाधि १९५३ कैमर विवाध कन रीध

नकाशा - ३९६००

नकाश - ३९२२२

नकाशीर प्रकाश मुका (कविध)	२०२००
राधनाध धिध (पी. ए. पी.)	३९५५
नैध नाराधन (निमिध)	२०२०
मुनित्यर धिध (नमिध)	२२५५
नकाशीर नका	१०

नैध नाराधन कन मुनित्यर धिध नैध नैध नैध नैध ।

नैध : नकाश ६ नैध मुका, १९५३ ।

०००

छात्राभ्य विभागे १९६२ कैमार्ड विमान क्वा सीध

महाराष्ट्र - ७६००५

मह पट्टे - ४५४४

देवराय बाळीस (काष्ठ)	२२४०६
लक्ष्मण सिंह (वीजविद्य)	७४११
प्रदीप (पी० एच० पी०)	२६०६
राधाशरण (कर्म)	२५६५
बालदेवराय (विज्ञान)	२५०२
अस्वीकृत मध	२४०४

अन्तिम सीध प्रत्याशियाँ मे अपनी कुमानवीं सीधी ।

ग्रीक : पायथिगर तः कुत्तरी कुम्हार १९६२ पुष्ठ ७ ।

०००

छात्राभ्य विभागे १९६० सीधियाँ विमान क्वा सीध

महाराष्ट्र - १०६१०६

मह पट्टे - १६६०४

बालदेवराय (विज्ञान)	१६००६
नरका प्रसाद (कर्म)	६२४५
राधेशरण (एच० एच० पी०)	१२६४४
रामचरण कुम्हार (काष्ठ)	१६६५२
अस्वीकृत मध	४५०५

कर्म मे कामध सीधी ।

ग्रीक : पायथिगर तः कुत्तरी सीधियाँ १९६० पुष्ठ ३ ।

निर्वाचन १९५६ सीटों का विधान कमा सीट

महाकावा	- १०६३८९	
महा फंड	- ५०५५४	
बलदेवराज भावराव (निर्वाचनीय)		१५५६८
महादेव शिंदे	११	१२०६
राधाकाश भावराव		६९३५
राधिकाश भावराव (सीटों का)		६००६२
राधिकाश भावराव (निर्वाचनीय)		१०६०२
राधिकाश शिंदे (निर्वाचनीय)		२६६२
महादेवराज भावराव		३५३६
महादेवराज भावराव		१२

नोट : निर्वाचन कायदा का अनुपालन के अधीन ।

००००

सामान्य निर्वाचन १९५६ सीटों का विधान कमा सीट

महाकावा	- १२४४६६	
महा फंड	- ३०५३९	
बलदेवराज भावराव (भा० प्र० का)		१६०३०
महाकाश भावराव (निर्वाचनीय)		३००६
महाकाश भावराव	११	३०५६
महाकाश भावराव (भावराज भावराव)		१९५६
महाकाश भावराव (निर्वाचनीय)		१९५६
महाकाश भावराव (निर्वाचनीय)		१९५६
महाकाश भावराव	११	१२५६
महाकाश भावराव (निर्वाचनीय)		१५५३०
महाकाश भावराव (निर्वाचनीय)		१२५३५
महाकाश भावराव (निर्वाचनीय)		२५३०
महाकाश भावराव (निर्वाचनीय)		१९५६
महाकाश भावराव	११	१९२९
महाकाश भावराव (निर्वाचनीय)		१२२५
महाकाश भावराव		३५३६

निम्नलिखित १८७७ बीछता किसान कमा बीच

मजदारा - १२००००
मजदारी - ६००००

मजदारा (मजदारी)	१२०००
मजदारा (मजदारी)	६०००
मजदारा (मजदारी)	१०००
मजदारा (मजदारी)	१२०००
मजदारा (मजदारी)	६०००
मजदारा (मजदारी)	१०००
मजदारा (मजदारी)	१२०००
मजदारा (मजदारी)	६०००
मजदारा (मजदारी)	१०००
मजदारा (मजदारी)	१२०००

नोट : मजदारी बीछता मजदारी १६ मज, १८७७ मज

०००

मजदारी मजदारी पर मजदारी मजदारी
मजदारी के मजदारी पर मजदारी

- [illegible]

- ४ - श्री सुरेश कुमार पाण्डेय याचक श्री राधिकाराम पाण्डेय है वादात्कार दिनांक २-४-१९७६ ।
- ५ - ए० सी० पामर' व सीडम पाब्लिटिज लिमिटेड ' १९६१ पृष्ठ १३० ।
- ६ - श्री जगनाथ सिंह याचक - है वादात्कार है दिनांक २-४-१९७६।
- ७ - श्री रामकृष्ण बापकसाठ है वादात्कार दिनांक २-४-७६ ।
- ८ - श्री कर्षेव बहादुर सिंह है वादात्कार दिनांक २-४-१९७६ ।
- ९ - श्री रामकृष्ण बापकसाठ , सरलाडीन नदी संयुक्त कानूनीयारी पत्र - वादात्कार दिनांक २-४-७६ ।
- १० - श्री जगनाथ सिंह याचक है वादात्कार दिनांक २-४-१९७६ ।
- ११ - नहीं ।
- १२ - श्री रामकृष्ण बापकसाठ है वादात्कार दिनांक २-४-१९७६ ।
- १३ - डा० एम०एस०कुर्मा , भारतीय लोकमान और नागरिक बीकन श्री कुरेशा, १९७५ पृ० ३३४-३६
- १४ - श्री कुलकर्ण सिंह याचक- जीजाबाबा, भारतीय लोकमत, सीडिया, वादात्कार दिनांक १२-४-१९७६ ।
- १५ - श्री मन्मथ याचक - मुनिपुर है वादात्कार दिनांक २४-४-१९७६।
- १६ - श्री डा० बबलु साहिब , सीडिया है वादात्कार दिनांक २४-४-१९७६ ।
- १७ - श्री राध नारायण कुच्छ- बराही है वादात्कार दिनांक ७-७-१९७६ ।
- १८ - श्री हरिचन्द्र हरिच - सीडिया है वादात्कार दिनांक १६-७-१९७६ ।
- १९ - श्री राजाराम जिवाडी - बीरहरा है वादात्कार दिनांक ६-४-१९७६ ।
- २० - श्री राजाराम जिवाडी बीरहरा है वादात्कार दिनांक ६-४-१९७६ ।
- २१ - श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय, सीडिया जंजल नदी है वादात्कार दिनांक १५-४-७६ ।
- २२ - कैमार्ड मण्डल कर्षेव द्वारा पारित प्रस्ताव, १९६२ ।
- २३ - श्री कानक प्रकाश जिवाडी- जेनाबा है वादात्कार दिनांक १४-७-१९७६ ।
- २४ - श्री रामरेखा सिंह' निरुद्ध' है जगनाथ लोकमान व वादात्कार दिनांक ३०-१-१९६६ ।
- २५ - बच्चनदीप पाण्डेय १५ वीं वार्षिक सम्मेलन पुण्यदीर्घ प्रमाण जू १९७३ पृ० २-४ ।
- २६ - श्री सीटिका पाण्डेय सीडिया जिवाडी नदी है वादात्कार दिनांक १४-५-७६ ।
- २७ - श्री महेन्द्र कुमार झा - मावापुर - प्रमाण नदी उपर प्रदीप दिव्य महाकाव्य है वादात्कार, प्रमाण कानूनीय वर दिनांक १०-४-७६।

- ३६- श्री कपीव्या सिंह, प्रवक्ता, देवराजमहोदय, सीक्या है शास्त्राचार दिनांक २८-७-७६ ।
- ३७- श्री डा० देवराज सिंह, सीक्या है शास्त्राचार, दिनांक २८-७-७६ ।
- ३८- श्री राम बलपुर सिंह, चक्र प्रमुख सीक्या, राखपुर है शास्त्राचार दिनांक १६-६-७६
- ३९- श्री रामचरण कुंभ- देवाचार है शास्त्राचार दिनांक १-८-१९७६ ।
- ४०- श्री डा० देवराज सिंह सीक्या है शास्त्राचार दिनांक २८-७-७६ ।
- ४१- श्री देव पुष्पमय मनी, सीक्या है शास्त्राचार ।
- ४२- देवराज बलपुर मनीय ठकुर बल्लभामिया, सीक्या है शास्त्राचार दिनांक १३-७-७६ ।
- ४३- देवराज मुस्ताक बल्लभ काशी बालक श्री शक्तिशार प्रमुख ठकुर बल्लभ मिया -
सीक्या है शास्त्राचार दिनांक ६-८-७६।
- ४४- देव पुष्पमय मनी, सीक्या किता प्रतिनिधि है शास्त्राचार दिनांक ६-८-७६ ई० ।

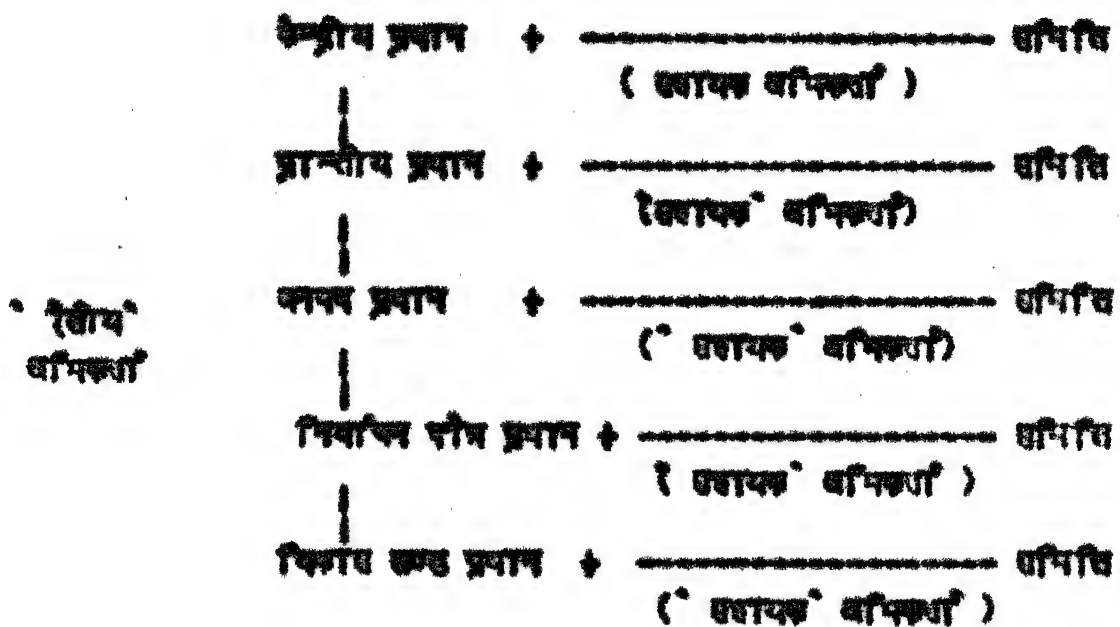
राजनीतिक कठ का केंद्र

अपूर्ण प्रमुख अन्य औद्योगिक राज्यों में राजनीतिक कठ के वितरित सरकार विभाजन का अन्य विकल्प उपलब्ध नहीं हुआ है। राजनीतिक कठ की संस्था एक ही अन्य कठ केंद्र है किन्तु अभाव वर्तमान है। राजनीतिक कठ राज्य-वर्ग की हस्तगत स्थायी एवं अविनाशित प्रतीति करने के लिए, अपनी मुख्य विचारधाराओं के प्रचार-प्रसार एवं प्रियान्वयन के लिए; शासन में प्रत्येक नागरिक की योग्य भागीदारी बनाने के लिए; राजनीतिक समावीकरण के लिए; तथा समावाधिकार समाज बनाने के लिए अपनी संरचना किया है। राजनीतिक कठ की यह संरचना खंड-खंडी, प्रभावी एवं चिर स्थायी की ओर इसके लिए केंद्रन अपरिहार्य है।^१ केंद्रन रहित औद्योगिक अर्थव्यवस्था है ——— केंद्रन वास्तविक इच्छा उत्पन्न करने का वाक्य है, केंद्रन वास्तव प्रयत्न के सिद्धान्त पर आधारित है कि अर्थव्यवस्था केंद्र खंड की पद्धति की। केंद्रन कठों के साथ केंद्रन में निर्वर्तों का उत्पन्न है।^२ कठना ही नहीं राष्ट्र मार्गदर्शक ने यहाँ तक कहा है कि 'हो केंद्रन कठना है यह अर्थव्यवस्था कठना है।'^३

राजनीतिक कठ के केंद्रन में अत्यंत पदाधिकारी, कार्यकर्ता, शासन एवं नेता केन्द्रित में संयोजन होते हैं। केंद्रन में अप्रतिष्ठ नागरिकों की संस्था, अक्सर तथा अक्सर नागरिकों की संस्था का मूलांक है। प्रत्येक राजनीतिक कठ एक या अधिक कार्य तथा गुणों का प्रतिनिधित्व करने के लिए ही बन्य होता है, कार्य करता है तथा कीर्ति करता है। उनका केंद्रन नेताओं के काम का यंत्र नियंत्रित करता है तथा उनकी सेवा का विवरण करता है।^४ केंद्रन के आधार पर सिद्धान्त का एवं तथा का विभाजन, वैयक्तिक वरता का विचार, बहनों में उत्पन्नपूर्ण समाधीन, राष्ट्रीय मिष्टा की अनुपस्थिति, राजनीतिक साम्यकरण, राजनीतिक समावीकरण तथा अन्य है। केंद्रन के द्वारा राजनीतिक कठ राजनीतिक समावीकरण की प्रक्रिया की आवेगित, उत्पन्न तथा वैयक्तिक बनाते हैं। राज्य के अक्सर तथा अक्सर नागरिकों का प्रभुतः

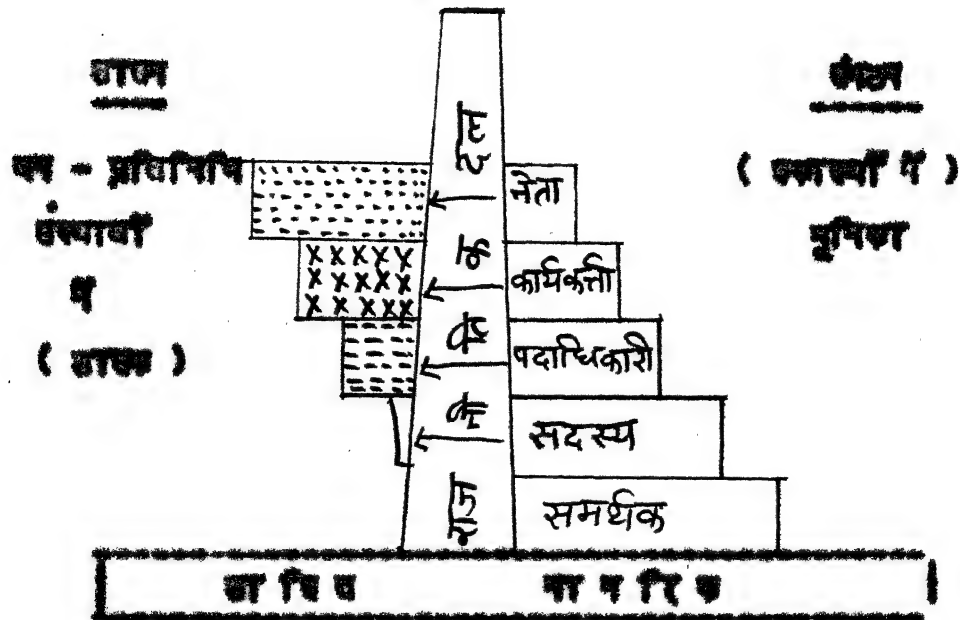
कार्यक, कर्म, कर्मिकारी, कार्यकर्ता, शासन एवं सेवा के रूप में विज्ञापन राजनीतिक पक्ष हो करते हैं। संसदन में निम्नलिखित प्रकार से उपरोक्त उक्तसम संसार तल कर्मिकारी का केन्द्रियकरण होता है। संसदन की राजनीतिक पक्ष की प्रत्येक संस्थाओं में 'रेडीय' एवं प्रत्येक प्रकार के वस्तुकी कार्य करनेवाले कर्मिकारी कर्मिकारियों की उपस्थिति है। इसके स्पष्टीकरण के लिए निम्न च का व्यवस्थापन करें।

राजनीतिक पक्ष का संसदन



निम्न १ : रेडीय एवं उदायक कर्मिकारी

राजनीतिक पक्ष की चौदरी भूमिका निम्नलिखित पद्धति है प्रथम संसदन तथा द्वितीय शासन। इन दोनों भूमिकाओं की माया भिन्न भिन्न संसदन है। संसदन में उपायन तथा शासन में उपायन की प्रिया होती है। राजनीतिक पक्ष विज्ञापन मागिरियों में है कुल कार्यक, कार्यक में है कर्म, कर्मियों में है कर्मिकारी, कर्मिकारियों में है कार्यकर्ता एवं कार्यकर्तियों में सेवा का निमाण संसदन की संस्थाओं के द्वारा करते हैं जो कि इन प्रतिनिधि संस्थाओं में स्वाम प्रत्येक करके शासन पक्ष शासन कार्य संवाहित करते हैं। (निम्न २ का व्यवस्थापन करें)



चित्र १ : राजनीतिक दल के केंद्र में नागरिक के नेता का निर्माण और शाखा में इसके द्वारा स्थान प्रणाली की स्थापनाओं को प्रभावित के लिए वह है जो तथा नेता के लिए कार्याधिक है ।

कार्य :

कार्यकर्ता या कार्यकर्ता नागरिक को राजनीतिक, प्रभावों के परिणामस्वरूप दल के लिए में उपयोग प्रदान करती हुए भाषण के लिए व्यवस्थापक होता है जो कार्यकर्ता करती है । कार्यकर्ता दल के लिए के लिए अपने लिए का स्थान अनुमानों में ही कर सकता है । कार्यकर्ता जो छोटे की तरह है जो कि कार्यकर्ता की पुष्पक के भाषण को प्राप्त कर वास्तविक होता है और समाज में निष्क्रिय रहता है । कार्यकर्ता मजबूत अनुशासन के द्वारा रहकर अपनी पूर्ण स्वाधीनता का परिणाम दल की बाध्यताओं है होता है । राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन नागरिकों में है जो किसी में राजनीतिक नेता वास्तव होती है जो वह कार्यकर्ता ही करता है । कार्यकर्ता निष्क्रिय है जो अधिक तथा व्यवस्था के द्वारा वह है ।

मुताबक विचारों में राजनीतिक विचारों (कर्मचारी) का स्वाधीन मतवाताओं की अवस्था कार्यकर्ता पर अधिक प्रभाव पड़ता है । कार्यकर्ता है समस्त मतवाता कार्यकर्ता; स्वाधीन मतवाता होती है । कार्यकर्ता उनका प्रभाव कि वह राजनीतिक दल की ओर होता वह निर्दिष्ट या रहता है । कार्यकर्ता विशेषकर व्यक्ति

या नामना के प्रति बड़ा, लीची, मऊ या मिठ होता है बिछी कुचाल्याति में यह है उर्वर नहीं रहता । ऊपर के सभी तात्कालिक राजनीतिक चीजों में व्याप्त वस्तु है प्रिय होता है इतिहास यह व्यवस्था होती है ।

ऊपर के बात और वस्तु ही प्रकार के होते हैं । बात ऊपर के यह है बिछी यह है प्रति ऊपर की कता तथा यह हीनों मान्यता प्रदान करते हैं और वस्तु ऊपर के यह है बिछी ऊपर की कता या यह हीनों में एक मान्यता नहीं प्रदान करता । बात ऊपर की ही यह का ऊपर का बात है और वस्तु ऊपर के ऊपर की सामान्य का में बिछी रहकर सभी मान्यता साम्य एवं मान्य होयत्व के विभिन्न कार्य करता तथा कालान्तर में बात की कता में प्रविष्ट कर रहता है । राजनीय कर्मचारी एवं व्यापारी प्रवृत्ति के व्यक्ति वस्तु ऊपर होते हैं क्योंकि कता उनके ऊपर की नहीं ऊपर जाती किन्तु राजनीतिक यह ऊपर की मान्यता प्रदान करते हैं ।

ऊपर का चीज और बात सीमित होता है क्योंकि यह सभी सामाजिक चीजों एवं वैयक्तिक चीजों की दृष्टिगत रहकर ही ऊपर होता है । बिछी बात ऊपर की यह है विद्वान्ता, नीतियों एवं कार्यकर्ता का व्यवहार मान होता है किन्तु सामाजिक, वैयक्तिक या वैयक्तिक प्रतिष्ठा वस्तु प्राप्त रहती है । ऊपर के यह है प्रति ऊपर ऊपर की एक या ऊपर की में व्यक्त कर रहता है की शारीरिक आ, वैयक्तिक उत्साह, वातावरण में परा, निजी चीज का मान या यह हित में उत्पन्न, वैयक्तिक में स्थान प्रदान, चीजों के विचारण में वस्तुमान या वस्तुमान, विरोधियों के रहस्यों की जानकारी देना या उन्हें विचारण उत्पन्न करना तथा विचारण में कुछ मर्तों की अपने मर्त में वधि प्रवृत्त एवं यह के निर्दिष्टों का मान वादि । मरदाता या व्यवहार सामाजिक यह के लिए विच्छिन्नता की स्थानकर कर्मता का सुधारण विचार दान करता है जो समय है ऊपर की कता में प्रविष्ट हो जाता है । यह है ऊपर की राजनीतिक कारणों है नहीं वस्तु अन्य कारणों है ही उत्पन्न में का प्रतिनिधि वस्तुओं के व्यवस्था मूल स्थान प्राप्त होती है ।

उपसंहार :

यह व्यवहार या व्यवहार सामाजिक, ही राजनीतिक यह के विद्वान्ता, नीतियों एवं कार्यकर्ता में विच्छिन्न करके अपनी उत्पत्ति की एक एक के

राम तथा के प्रति आकर्षण बलवाली है पुराता, समझ है संरक्षण, काम तथा वेद तथा तथा यह है विद्वान्ताँ एवं नीतियों में वास्ता है ।^{१०} व्यवस्था प्रणाली के परभाव, नागरिक स्थीय राजनीति, स्थीय राजनीति तथा वेद-विद्वेद की राजनीति की प्रकाश, काम एवं प्रभाव है परिवर्तन प्राप्त करता है काम ही काम सभी वास्तविकताओं, स्थितियों, अभिव्यक्तियों एवं वास्तविकताओं की पूर्ति, तथा तथा अभिव्यक्ति का क्षेत्र की यह है काम में व्यवस्था ही वास्ता है । व्यवस्था की मूल्यम वायु वसिष्ठ भारतीय जटिल, भारतीय कार्यय तथा भारतीय जटिल ने १८ वर्ष की निर्धारित किया है की कि व्यवस्था की मूल्यम वायु है तीन वर्ष का है । उल्टी स्पष्ट होता है कि राजनीति केता सभी व्यवस्था विचारवाला का निमित्त १८ वर्ष की वायु में कर लगी है । यदि यह तथ्य सत्य है तो २१ वर्ष की वायु में व्यवस्था होने का कोई औचित्य नहीं प्रतीय होता ।

व्यवस्था प्रणाली का स्वागत करने के लिए जटिल, कार्यय एवं भारतीय जटिल यह का द्वार क्षेत्र हुआ रहता है किन्तु यह के कार्ययताओं द्वारा निर्दिष्ट काठ में अभिव्यक्ति प्रकाश वास्ता है किसे व्यवस्था अभिव्यक्ति होती है । यह के कार्ययताँ नागरिकों के वास्तविकताँ एवं निवासों पर आकर उन्हें वास्तविकता के माध्यम है करिब परिवर्तितियों के प्रति अवलोकन तथा स्वर्गिक, प्रकाश एवं कार्यात्मिक पवित्र्य है वास्तविकताँ का व्यवस्था प्रणाली करता है । चौक्या विमान तथा नीच में लोचि राजनीतिक यह की वकाशों के फलप्रकारिताँ में वास्तविकताँ में प्रष्ट प्रश्न क्या व्यवस्था अभिव्यक्ति में प्रचार या समा करी है ? का उत्तर नहीं ही किया । उल्टी स्पष्ट है कि वास्तविकताँ का व्यवस्था प्रणाली का वास्तविकताँ नहीं किया वास्ता और व्यवस्था का द्वार की लोच के लिए नहीं हुआ है । व्यवस्था का द्वार निर्दिष्ट काठवायि के लिए पुराने तथा नये परिवर्तितों के प्रवेष्ट के निमित्त हुआ है और परभाव बन्द ही जाता है फिर उच्च वकाश का उच्च फलप्रकारिताँ ही विवेकवापिकार है प्रवेष्ट है उल्टा है वेता कि स्थीय की राशि राम वास्तविक विचारय की जटिल यह में किया गया ।

व्यवस्था-उच्च जटिल, कार्यय तथा भारतीय जटिल ने तीन वर्ष निर्धारित किया है । व्यवस्थापर यदि व्यवस्था यह में रहना वास्ता है तो उल्टी प्रति तीन वर्ष के उत्तर पर पुनर्विनीकरण अभिव्यक्ति है । किन व्यवस्थाँ की व्यवस्था है क्षेत्र एवं प्रस्ताव प्राप्त होता है के यह में स्थिर व्यवस्थाँ के लय में पुनर्विनीकरण

राष्ट्रीयता वर्ग का नाम	उपस्थ प्रकार	अनुदान वर्षा वादा	विमान का पीस व एक एक	पूरी विमान हुक	अनुदान हुक	अनुदान प्रकार वर्षा	निर्देश
१	२	३	४	५	६	७	८
राष्ट्रीय मार्तीय राष्ट्रीय कापी	प्रारंभिक २२ वर्ष अंतिम २१ ००	२५०० ७५० (१)	विमान कापी कापी कापी कापी कापी	१-०००० २५-०००० २५-०००० २५-०००० २५-०००० २५-००००	पूरी वर्ष अंतिम अंतिम अंतिम अंतिम अंतिम	अंतिम पूरी पूरी पूरी पूरी पूरी	अंतिम पूरी पूरी पूरी पूरी पूरी
मार्तीय कापी	अंतिम २२ वर्ष	५०० (१)	पूरी अंतिम	५० पूरी ५० पूरी ५० पूरी ५० पूरी ५० पूरी ५० पूरी	पूरी वर्ष अंतिम अंतिम अंतिम अंतिम अंतिम	अंतिम पूरी पूरी पूरी पूरी पूरी	अंतिम पूरी पूरी पूरी पूरी पूरी
मार्तीय कापी	प्रारंभिक २२ वर्ष अंतिम	५०० १२०० (१)		१-००००	पूरी वर्ष		

परीक्ष : (१) बिनास कष्ट एवं निराशा की वजह से दलित समाजियों में
साधारणतः है प्रायः किसी भारतीय छात्रों के राष्ट्रीय बोर्ड के
अध्यक्ष ने १०० अक्षय कक्षाओं में बिनास की वजह से १२००
अक्षय अक्षय कक्षाओं ।

संविधान भारतीय संविधान के संविधान अनुच्छेद ५(ब) के अन्तर्गत
संविधान के अन्तर्गत ही की पात्रता का स्पष्टीकरण और भी किया गया है । वे प्राथमिक
उपस्थ संविधान के अन्तर्गत ही की १-संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थाओं में संविधान
ही या २-विधान ३६५ दिन पूर्व प्राथमिक उपस्थता प्रणय की है । संविधान के
अन्तर्गत ही (ब) प्राथमिक एवं संविधान के अन्तर्गत (ब) संविधान-निधि (क)
(क) प्रविष्टि एक संस्था का संविधान का वेद संस्था, एक संस्था, नगर संस्था,
संस्था, संस्था संस्थाओं की संस्था, संस्थाओं की संस्था (क) प्रविष्टि
संस्थाओं में पात्र प्रणय (क) संस्था के संस्थाओं का संस्था संस्था (क) संस्थाओं
के संस्था में संस्था वेद संस्था संस्था का संस्था, संस्था-संस्था का संस्था, संस्था संस्था
संस्थाओं के संस्था कार्य (क) संस्था संस्थाओं का संस्था (क) संस्था
संस्था संस्थाओं का संस्था - १ संस्था २- संस्था ३- संस्था एवं संस्थाओं ४- संस्था एवं
संस्थाओं का संस्था ५- संस्थाओं का संस्था, ६- संस्थाओं का संस्था ७- संस्था संस्था
संस्था संस्था ८- संस्थाओं का संस्था एवं संस्था ९- संस्थाओं का संस्था

भारतीय जनसंघ ने संविधान एवं निष्प्रिया के उद्घाटन के
 संविधान के अनुच्छेद ७ के निम्न में स्पष्ट की है : ^{११} (क) जोर की उच्च संविधान समिति
 वास्तव में यह (ख) संविधान या उद्घाटन, विचार यह उच्च संविधान के रूप में यह ५० प्रतिशत
 अधिकतमों में संविधान द्वारा ही तथा (ग) प्रतिपक्ष जनसंघ का प्रत्यक्ष अपना जनसंघ
 के प्रत्यासी के रूप में निर्वाचित होकर उद्घाटन, विधान संसद या स्थानीय विधानों का
 उद्घाटन उद्घाटन के जोर ऐसा कार्य, किन्तु अनुच्छेद ७(१) के अन्तर्गत नियुक्त विधान
 ने मान्यता दी हो, करता हो । (घ) जोर की उच्च निष्प्रिया समिति वास्तव में यह
 (क) प्रति उच्च जनसंघ के ११ उच्च न बनाने (ग) संविधान विधान के तीन उद्घाटन
 केन्द्रों में विधान अनुसंधान के अनुसंधान रहे उद्घाटन । जोर (घ) संविधान द्वारा निष्प्रिया
 उद्घाटन, उच्च जनसंघ के तीन भाग तक न है ।

भारतीय संसद के संघान में वर्णित अनुच्छेद ४ में प्रारंभिक
उद्देश्य का ही विवरण किया गया है। उचित उद्देश्य का संपूर्ण संघान में मान
लगा नहीं है।

सुभाषचन्द्र बोस का है शायद सोचा है कि कांग्रेस का एशियाई एजेंसी
होना है और २५-०० रुपये वार्षिक शुल्क एवं साधारण खर्चों का मध्यम एवं एशियाई

उपलब्धता पर बर्ताना पड़ता है किन्तु भारतीय जनता के राष्ट्रिय उत्सव की उपलब्धता का एक ही है और दूसरा भी एक ही है । राष्ट्रिय के राष्ट्रिय उत्सव को परिष्कृत करने के लिए राष्ट्रिय समिति के अध्यक्ष द्वारा निर्दिष्ट किया जायगा ।^{१४} राष्ट्रिय किसान का दिवस के सम्बन्ध में राष्ट्रिय के राष्ट्रिय उत्सवों के साथ परिष्कृत करने के लिए नहीं मिले और यह के उत्सव में ही समाविष्टाहियों के द्वारा सरकार में स्वीकार किया कि परिष्कृत करने के लिए राष्ट्रिय समिति द्वारा निर्दिष्ट हो नहीं हुए ।^{१५} भारतीय जनता एवं भारतीय लोकसभा में 'परिष्कृत करने' की कोई आवश्यकता नहीं है । राष्ट्रिय उत्सवों के लिए राष्ट्रिय में लोक समितियों की कुछ सूची दी गयी है किन्तु भारतीय जनता काय केवल ही ही अपनी लोकसभा में स्थान देकर पानि ही गया । राष्ट्रिय के राष्ट्रिय उत्सव की अपनी कुछ मात्रा^{आम} की योजना काही कही है किन्तु वह किसान का दिवस के सम्बन्ध में काय ही किया है किन्तु अन्य कहीं में ही कोई वैधानिक व्यवस्था नहीं दी गयी है ।

राष्ट्रिय के राष्ट्रिय उत्सव की प्रति हकीकत के परभाव पुनर्जीवीकरण के लिए प्रत्येक वं पराना पड़ता है किन्तु प्राथमिक उपलब्धता काकि और राष्ट्रिय उपलब्धता काकि का ही उत्तम अन्य किस्मों के साथ करना पड़ता है किन्तु महान कारण है कि राष्ट्रिय केवल ही प्रत्येक किन्तु भी काकि राष्ट्रिय समिति के साथ उत्सवों के पूर्ण या अपूर्ण विवरण का एक ही विनिर्दिष्ट नहीं है ।^{१६} काकि राष्ट्रिय समिति के साथ विनिर्दिष्ट न होने का मूल कारण उपलब्धता काकि की प्राप्ति एवं वापसी में काकि राष्ट्रिय समिति का एक एवं अन्य माध्यम का न होना ही है ।

भारतीय जनता के मजबूत समिति में उत्सवों की वर्तमान का ही सूची ही उपलब्ध है किन्तु स्थायी उपलब्धता नहीं विनिर्दिष्ट होती है उत्सवों का विवरण मिले ही, नहीं निर्दिष्ट है । भारतीय लोकसभा की राष्ट्रीय समिति के वादित्यों में यह प्रकार का कोई उत्तम नहीं है ।

भारतीय जनता के एक, भारतीय लोकसभा के एक का भारतीय राष्ट्रीय समिति (का) के बहुत ही उत्सवों में उपलब्धता है स्थान पर विनिर्दिष्ट है । भारतीय राष्ट्रीय समिति (का) के साथ है केवल पांच ही एक उत्सवों में, भारतीय जनता के एक उत्सव में का भारतीय लोकसभा के राष्ट्रीय उत्सवों में का १९७४ ई० के किसान का दिवस में अपनी अपनी का के प्रचाराती के का में स्थान नहीं मिले ।

ऐक्यतात्मक एकाध्यायी

प्रत्येक राजनीतिक दल ने अपनी प्रारंभिक एवं शीघ्र कार्रवाई की, एक दल में बांकी, बाँझता एवं समता की प्रोत्साहित करने, विभिन्न एकाध्यायी की एकीकृत करने तथा राष्ट्रीय एवं जातीय विचारों के समापन के लिए, विभिन्न स्तरों पर ऐक्यतात्मक एकाध्यायी की औपचारिक व्यवस्था किया है। ऐक्यतात्मक एकाध्यायी का वापार प्रथम तो राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व, द्वितीय का समस्याओं का बीच तथा तृतीय वार्षिकिक व्यक्तियों की कानिष्ठ के प्रति ध्यान करना है। ऐक्यता की एक है शीघ्र एकाध्यायी की है विचारों उपरीकृत तीनों वापारों का एक मूल्यन होती है। एक की एक है शीघ्र एकाध्यायी का प्रत्यक्ष स्वीकृत होती है और वेब वेब एकाध्यायी का बीच कृपा जाता है वेब वेब कानता है दूरी को बढ़ती जाती है। ऐक्यता में वापार है औपचारिक कानिष्ठ नागरिकों की कुछ एकाध्यायी कानिष्ठ का मूल्यन है। प्रत्येक राजनीतिक दल अपने अपने मूल्यन की मुद्रि के प्रति प्रत्यक्षीक रखा है, यदि उदात्तन को वापार को निरिच्छा की उदात्त कानिष्ठ धर्मिष्ठ है। शीघ्रता विचार काना बीच में भारतीय राष्ट्रीय कानिष्ठ, भारतीय औपचारिक एवं भारतीय कानिष्ठ की औपचारिक एकाध्यायी गठित एवं कार्यरत है। अन्य राजनीतिक दल कानिष्ठ कानिष्ठ प्रत्याशी कानिष्ठ काना के एक पुनर्वापारों में पुनर्वापार को छोड़े किन्तु उनकी की एकाध्यायी धर्मिष्ठ कानिष्ठ में गठित होती है। कानिष्ठ एकाध्यायी बाँझ एक किन्तु महाकाय, रामराज्य परिणत, रिश्ताकान बाँझ, मुश्किल मण्डित तथा ऐक्यता कानिष्ठ है।

वाँझ भारतीय राष्ट्रीय कानिष्ठ ने पाँच एकाध्यायी प्रकृत: शीघ्र है वापार एक निपारित की है - १ - वाँझ भारतीय कानिष्ठ कीटी २- बाँझ कीटी ३- प्रत्येक कानिष्ठ कीटी ४- विचार। नगर कानिष्ठ कीटी तथा एक कानिष्ठ कानिष्ठ। निवर्तित बीच कानिष्ठ कीटी^{१६}, भारतीय कानिष्ठ ने वापार है शीघ्र एक प्रकृत: १- स्थानीय समिति २- मण्डल समिति ३- विचार समिति ४- मान समिति ५- प्राथमिक प्रतिनिधि काना ६- प्राथमिक कार्य समिति ७- भारतीय प्रतिनिधि काना ८- भारतीय कार्य समिति तथा ९- राष्ट्रीय वार्षिक^{१७} एकाध्यायी की औपचारिक व्यवस्था की है। भारतीय औपचारिक ने को वापार है शीघ्र एक एक की एकाध्यायी प्रकृत: १ प्रारंभिक कानिष्ठ २- राष्ट्रीय कानिष्ठ ३- विचार कानिष्ठ। नगर कानिष्ठ ४- प्रत्येक (राज्य) कानिष्ठ ५- राष्ट्रीय कानिष्ठ तथा राष्ट्रीय कानिष्ठ द्वारा कानिष्ठ पाँच^{१८} निपारित की है।

श्रीलंका किसान क्वा सीब में ग्राहक काग्रेस । निवासी सीब काग्रेस कीटो । भारतीय किसान की स्थायी समिति तथा मजदूर समिति एवं भारतीय शीक कल की प्रारंभिक शीक क्वा सीबीय शीक, गठित सीबी पाठिए । किन्तु क्वा इनके व्यस्तताओं की सीब की गई तब बाद हुआ कि प्रारंभिक शीकों का पता नहीं है । यहाँ पर मैं इन तीनों राजनीतिक वर्गों की हजारों निर्माण के बाजार मूल विज्ञानों की बीर ध्यान देता हूँ कि भारत एवं की प्रजासत्ताक राज्यों क्वा क्वा प्रतिनिधियों की निवासी करनेवाली राज्यों का निवास अनुकरण प्रतीत होता है । एवं, राज्य एवं शीक की राज्यों में प्रजासत्ताक का अनुमान परिवर्धित होता है । निवासी सीब, किसान क्वा, न्याय संस्था एवं ग्राम स्तर की राज्यों में कृषिनिर्माण निवासी करनेवाली राज्यों का अनुकरण प्रतीत होता है ।

श्रीलंका किसान क्वा निवासी सीब २०१ श्रीलंका एवं १९७४ एवं १९७७ का निवास २२

क्र. सं.	नाम	कुल संख्या
१	किसान क्वा	३ २९
२	न्याय संस्था	३२
३	किसान क्वा (सीबीय केंद्र)	८९
४	किसान क्वा (सीबीय)	१४६
५	ग्राम	२५८
६	सीबीय क्वा	१५४८१ एवं ५७८८३ २४
७	पुरुष क्वा	६७६२५ एवं ७७७४२ २५
८	कुल क्वा	४२ २७०
९	कुल क्वा	१६२८६६

कुल क्वा - २०६७६

कुल क्वा - १२४४६ एवं १२८६२६ २६

श्रीलंका किसान क्वा क्वा सीब में किसान उपरी क्वा क्वा के

परिचय में बतलाने वाली भारतीय राष्ट्रीय कठिब, भारतीय कार्यक तथा भारतीय कार्यक की धुन का अनुमान कठिब कठिबों तथा अन्य विवरणों से फिर किया जा करता है। कठिब बतलाने वाली भारतीय राष्ट्रीय कठिब, फिर भारतीय कार्यक और अन्य में भारतीय कार्यक का विवरण प्रस्तुत करें।

बतलाने वाली भारतीय राष्ट्रीय कठिब

बतलाने वाली विवरण का नीचे में बतलाने वाली भारतीय राष्ट्रीय कठिब की तीन प्रकार कठिब कठिबों में बतलाने वाले में विवरण किया जाया।

क्रम संख्या	कठिब कठिब का नाम	कार्यकारियों की संख्या	रिक्त स्थानों (पर) की संख्या	कार्यकारियों की संख्या	कार्यकारियों का नाम	कार्यकारियों का नाम
१	कार्य कठिब कठिब, बतलाने	६	सुन्य	८, १०, १५	६	सुन्य
२	कार्य कठिब कठिब, बतलाने	३	सुन्य	१०, २५	६	सुन्य
३	कार्य कठिब कठिब, फलपुर	६	१		नहीं	सुन्य

संख्या : कार्यकारियों के उपायान्वय

क- नववर्षी, उ- कठिब संख्या न- बतलाने द्वारा

क- नववर्षी, उ- बतलाने द्वारा।

कार्य कठिब कठिब :

प्रत्येक कार्य कठिब कठिब में बतलाने, उपायान्वय, नववर्षी, संख्या, कठिब संख्या के एक एक एक है : कार्य कठिब के कार्यकारियों की

है तथा विन्य विन्य पदाधिकारियों ने परस्पर विरोधी कार्रवाई काफ़ि एक पत्रक काटिब
कमीटी में यह निश्चित होगी । कार्य समिति के सदस्यों में से किसे काटिब कमीटी का
प्रतिनिधि काटिब कमीटी के लिए एक एक प्रतिनिधि के रूप में । महान कार्यकर्ता है कि एक ही
पत्रक काटिब कमीटी के अध्यक्ष महानधी एवं कमीशन नहीं ने साक्षात्कार में केवल हमें
होना क्यों है पदाधिकारियों का नाम जान बताया है पदाधिकारियों के नाम एक
पुस्तक में विन्य रहे । पत्रक काटिब कमीटी कीर्त्या के महानधी ने की जाजाणि विन्य की
बीजावस्था बताया और कमीशन नहीं ने की बीबी कीर्त्या- वधिरा की बीजावस्था
बताया ।^{१०} पत्रक काटिब कमीटी केबाद के अध्यक्ष की कमीशन काठ ऊर्ध्व-पुर्वाक
ने अपने साक्षात्कार में केवल महानधी की बीजावस्था पाण्डेय सम्मनता के वधिरा
वन्ध पदाधिकारियों के बारे में नहीं मालूम है" ऐसा उत्तर दिया ।^{११} काफ़ि
की पाण्डेय ने अपने साक्षात्कार में अध्यक्ष , अध्यक्ष एवं अपने की महानधी बताया

पत्रक काटिब कमीटी में पदाधिकारी होने के लिए सक्रिय अवस्था
की अवस्थाओं का होना आवश्यक है । एक मात्र अध्यक्ष एवं कार्य समिति के सदस्यों के
लिए ही सक्रिय जीवन में निष्ठा की व्यवस्था है और अध्यक्ष की कार्य समिति के
सदस्यों के मध्य है की एक सक्रिय (नहीं) की निष्ठा करता है ।^{१२} अध्यक्ष वन्ध
पदाधिकारियों का काम करता है । काम में १६, ५ प्रविष्ट बाध ; कठिना, विस्वाध,
हर्षा और बाधकृषी प्रत्येक ११ प्रविष्ट ; व्यवहार, नीतिव्य, व्यक्तित्व , अनुभव,
पराता एवं निष्ठा प्रत्येक ५, ५ प्रविष्ट प्रभावकारी वत्त है ।^{१३} सक्रिय जीवन
पर दृष्टिपात होने है यह अवस्था विस्वाध होता है कि अध्यक्ष की सारत पदाधिकारियों
एवं कार्य समिति के सदस्यों का नाम ज्ञात होना चाहिए किन्तु अनुभव यह बताया कि
व्यवस्थाओं की वत्ता ज्ञान नहीं किन्ता कारण यह प्रतीत होता है कि उनकी ज्ञान
का प्रयोग किसी वन्ध द्वारा किया गया और पूर्ण विवरण उन्हें (अध्यक्ष को) प्राम
की नहीं हुआ । पदाधिकारियों के अधिकारों एवं कर्तव्यों का जीर्ण विवरण कठ
के जीवन में नहीं निष्ठा है । क्या यह समझ बाध कि प्रत्येक पदाधिकारी अपने
अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान किसी वन्ध प्रतीत है करता है ?

साक्षात्कार में पुच्छ प्रश्न " क्या कठ के जीवन में रहकर
अपने नेतृत्व का विकास कर सके हैं ? के उत्तर में उनकी पदाधिकारियों ने" हाँ" कहा

जब बिना काग्रेस कमेटी के सम्मति पर पर विरोधी गुट विपक्षी कलम चलावना के वाक्यन होने है उन्हें एकलता नहीं मिल रही ।

प्रत्येक फटाफटारी की फटाफट ही वर्क के काम की होती है ।^{११} कार्यकाज बढ़ाने की योजना में कोई व्यवस्था नहीं की गई है । चारक काग्रेस कमेटी अनुसार के सम्मति की लिए प्रभाव सिंह विपक्षी पक्षाधी विचार ११ नवंबर १९७५ की ही सम्मति ही की^{१२} किन्तु बावजूद रिक्त पर पर कोई भी प्रभाव नहीं किया गया, यद्यपि राष्ट्रीय कार्यकाज के अनुच्छेद २६(ब) के अनुसार उसी धूर्ति की व्यवस्था की गई है । फटाफट के सम्मति किसी भी फटाफटारी की फटाफट करने की लक्ष्य अनुशासनात्मक विचारों के कभीन बिना काग्रेस कमेटी एवं इसके ऊपर की संस्थाओं की प्राप्ति है ।^{१३} इसी स्पष्ट होता है कि चारक काग्रेस कमेटी यदि किसी भी फटाफटारी की फटाफट करना चाहे तो उसे वापिकार नहीं है । संभवतः प्रत्येक काग्रेस कमेटी की अनुमति है बिना काग्रेस कमेटी अपने अधीनस्थ चारक काग्रेस कमेटी की तीन मास के लिए निर्दिष्ट करें पुनः तीन तीन मास करें यह कार्य एक वर्क तक बढ़ाकर किसी भी भी कलम करने का उपाय कर जाती है ।^{१४} इन पीछियों के लिये एक फटाफट प्राप्ति हुआ है कि कार्य बिना काग्रेस कमेटी की योजना ही पुनः है बिना ही प्रभाव चारक काग्रेस कमेटी पर पड़ता । कार्य समिति के उपाय के कलम तीन फटाफट पीछियों में पूर्व पुनः के बिना न सम्मति होनेवाले कार्य की व्यवस्था व्यवहार ही जाती है^{१५} किन्तु इसका फल नहीं किया जाता प्रतीत होता ।

यह है फल में निर्दिष्ट यद्यपि के लिए राष्ट्रीय प्राधिकार है उत्पन्न कार्य की फटाफटारी कर जाती है । फटाफटारी अपने फटाफट तक राष्ट्रीय विचारों का न्यायी समकाल जाता है ।

चारक काग्रेस कमेटी के द्वारा ही कार्य प्रत्येक काग्रेस कमेटी का कार्य निर्वाचित होता है उसे तीन मास के सम्मति एक ही हमने क्षेत्र इसके प्रत्येक काग्रेस कमेटी में का करना होता है ।^{१६} प्राथमिक कार्य है क्षेत्रीय कार्यकाज फल की फटाफट का फल प्रत्येक मास चारक काग्रेस कमेटी की फल फटाफट^{१७} किन्तु यह फटाफट कि फटाफटारी के फल या नाम है फल रखी जाती है फल

के पास रखी है इसकी निश्चित करना बहुत ही क्या किन्तु महामंत्री ने कायाचित में रखा जाना बताया । पिछले ही वर्षों में किसी बैठकें हुए ? के उत्तरों में बैठकों की संख्या में वृद्धिमान बताया गई किन्तु नियमित प्रक्रिया की बैठकों पर ध्यान है । इसी स्पष्ट है कि यह के पदाधिकारियों की बैठकें अनियमित होती हैं और बैठकों की सूचना पदाधिकारियों की एक नियमित माध्यम है नहीं दी जाती है । डॉक्टरों की बैठकों के विवरण है उनकी योजना की प्रथम करने में अन्य कठिनायियों का होना पदाधिकारियों ने बताया । पिछले किसानका चुनाव में उदात्त करनेवालों की कुछ बैठक के पदाधिकारियों के पास या कायाचित में नहीं मिली थी कि यह के पित में होती बाहिर थी ।

जब २४ फरवरी में बीज है किन्ता समय राखीति में बैठे हैं , के उत्तर में ही आठ जगह कीटियों के बच्चों में बार बार फटे, जल मशीन २ फरवरी एवं महामंत्री १६ फरवरी, समय राखीति में पैना बताया किन्तु किसी ने भी " निवारित जाउ " (किसी भी है किसी भी एक) स्पष्ट नहीं किया किछी अधिक समय देनाओं पर बाकी होती है । यदि यह प्रत्यक्ष समय ठीक ठीक बताया नहीं हो तो भी पदाधिकारियों का पड़ीकरण का ही प्रतीत होता है । पड़ीकरण का प्रक्रिया है किछी यह के उत्तर में पड़ीय निष्ठा, पैना एवं ज्ञान का प्रतिक्रिया होता है । ईश्वरः प्रवेश में यह की प्रचार होने के कारण यह के उत्तर में अधिक समय जानने की आवश्यकता का अनुभव पदाधिकारीयण का ही करते हैं ।

एक आठ जगह कीटियों का अपने किछी के बच्चों की निश्चितान पौर्णालिक बीच में स्थित दूसरी आठ जगह कीटियों है किसी प्रकार का समय नहीं है, परिणामस्वरूप एक दूसरे कीटियों के पदाधिकारियों के जानकारी बहुत का होती है । ऐसी औद्योगिक व्यवस्था के बभाव में किसान का निवास बीच सार पर पदाधिकारियों एवं जमींदारों की मेलन के विकास का मार्ग व्यवहृत भिन्न है । मेरे विचार है एक किसान का निवास बीच में बहुत बनावडी की आठ जगह कीटियों की जगह विभाजित के उत्तरों द्वारा निवास बीच जगह कीटियों अवश्य गति होती बाहिर । इस प्रकार की एक और स्तर होने है ऊपरि तथा दोस्त - दोनों प्रकार के बीच-बीच यह के बच्चों नियमित हो है ही होने ।

भारतीय कार्य

भारतीय कार्य

चौथ्या विधान का दौर में भारतीय कार्य की स्थानीय समितियों एवं मण्डल समितियों का विवरण दिया जा रहा है।

स्थानीय समिति :

यह स्थानीय कक्षा है निम्नलिखित संघों रखेवाली किन्तु यह है उन संघों की संख्या है। प्रत्येक स्थानीय समिति का दौर प्रायः पंचायत है और न्याय पंचायत दौर तक ही सीमित है। एक स्थानीय समिति नटिख होने के लिए सदस्यों की न्यूनतम संख्या निर्धारित नहीं है किन्तु भारतीय कार्य के विकास के अनुसार ६ है उपरान्त है यह स्पष्ट हो जाता है कि कि स्थानीय समिति के सदस्यों की संख्या २५ है उन सभी उच्च कार्य समिति के सदस्यों की संख्या (मण्डल समिति) निर्धारण में मतदान का अधिकार नहीं होगा।^{१६} मण्डल समिति, चौथ्या के दौर में ३३ पैदावार - ७ तथा कपुर - ७, स्थानीय समितियाँ नटिख है। यह प्रकार चौथ्या विधान का दौर में उन तीनों मण्डलों है संख्या कुल २७ स्थानीय समितियाँ नटिख है। विधान का दौर में कुल पदाधिकारियों की संख्या १५६ है जिनमें २७ अध्यक्ष, २७ नजी, २७ सचिव तथा १०० कार्य समिति के सदस्य हैं। स्थानीय समिति के सदस्य प्रत्येक ठेग है अपनी कार्य समिति का चुनाव करे हैं।

दलीय विकास के अनुसार^{१७} सदस्य बनाने का कार्य स्थानीय समितियों के द्वारा होगा। जहाँ स्थानीय समिति न ही जहाँ मण्डल समिति^{१८} यह कार्य करेगी किन्तु यह विधान का दौर में मण्डल समिति की अवस्था विधान में परिचित दिखाई देती है। स्थानीय समिति की बैठक दलीय विकास के अनुसार प्रति पदा होने चाहिए^{१९} और कार्यवाहियों का विवरण पुस्तिका में उल्लेख होगा बाकिर किन्तु किसी भी स्थानीय समिति के पास कोई भी विवरण पुस्तिका होगा नहीं और न ही बैठकों की प्रतिपदा होती है। सामान्य कक्षा उन्हें नहीं जानती। दलीय विकास में स्थानीय समितियों के पदाधिकारियों के अधिकारों एवं कर्तव्यों का भी कोई विवरण नहीं मिलता।

स्थानीय समितियों में परामर्शार्थी द्वारा का प्रवेश निषिद्ध होता है। मण्डल समिति द्वारा नियुक्त निवाचित अधिकारी विशेषकर मण्डल मंत्री की उपस्थिति में उच्च एवं निम्न में परामर्शार्थी का चुनाव होता है। निवाचित कार्यवाही अधिकृत होती है किन्तु निर्वाचित परामर्शार्थी की कुछ मण्डल समिति के पास प्रेरित की जाती है।^{४७} परामर्शार्थी वर्ग में निम्न वर्गीकृत किसी भी प्रकार की अनुशासनात्मक कार्यवाही मण्डल समिति प्रादेशिक कार्य समिति की स्वीकृति से ही कर सकती है ऐसा प्रावधान है।^{४८} इससे स्पष्ट है कि स्थानीय समिति स्वयं अपने किसी परामर्शार्थी के विरुद्ध कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही नहीं कर सकती है। परन्तु स्थानीय समिति मण्डल समिति के द्वारा किसी भी प्रस्ताव कर सकती है।^{४९} स्थानीय समितियों में मंत्री का जो पद होता है विशेष महत्व दिया जाता है क्योंकि उन्हें सक्रियता का बड़ा अधिक विस्तार होता है। सम्मेलन की पहला बैठक या द्वारद्वारिक स्थलों पर विशेष सम्मान से प्रकट होती है किन्तु जीना-व्यवस्था जीना विशेष की भिन्न। उपर्युक्त कुछ में स्थानीय समिति के बंध का कोई विवरण प्रवधान में नहीं पाया जा सकता है।

स्थानीय समिति में स्थानीय दल के सदस्यों में से प्रभावशाली व्यक्ति एवं दलित की दृष्टि से उनकी जाति का पद देने की परंपरा मौजूद की जाती है। पिछ जाति कक्षा वर्ग के सदस्यों की संख्या अधिक होती है उनकी स्वाभाविक ही है पर भिन्न जाता है किन्तु बलपूर्वकता की उद्देश्य नहीं की जाती। स्थानीय समिति के सदस्यों द्वारा निर्वाचित कार्य समिति के परामर्शार्थी की किसी प्रकार की कान या पद नहीं मिलता है किन्तु यही नियम चलाती है। स्थानीय समिति सदस्यों के पदीकरण का प्रश्न सम्मिलित है। पूर्ण पदीकरण हो जाने पर सदस्य का कोई पदीय प्रतीक हो जाता है।

स्थानीय समिति के सीनियरत उत्पन्न अनुयायी, अधिनायक एवं विपदायी या अन्य बातों की जानकारी मण्डल समिति के परामर्शार्थीकरण की विशेषकर उनके द्वारा देवें करने पर होती है। आकस्मिक दशाओं में स्थानीय समितियाँ

के पदाधिकारी स्वयं मण्डल समिति के कार्य स्थापित करके कार्य की समिति समझती है।^{४६} स्थानीय समितियों के पदाधिकारियों का बीच सीमित होने के कारण उही बीच की कमी उनके पास है वकालत नहीं होती है। इन पदाधिकारियों के दो राजनीतिक व्यवहार विशेषकर सामाजिक, वार्षिक एवं वित्तीय कारणों से प्रभावित होती है। स्थानीय समितियों की सुझाव देने की शक्ति के द्वारा प्रभाव बहुत कम मिले करते हैं जिसका प्रभाव उनके ऊपर बहुत कम कार्यों का बोझ होता है। एक स्थानीय समिति का दूसरी स्थानीय समिति से कोई पारस्परिक संबंध नहीं है, जो उसमें मण्डल समिति में सब प्रभाव करना चाहती है वे ही स्थानीय समितियों की कार्य समिति है ही कार्य करती है।

मण्डल समिति :

भारतीय जनसंघ के संरक्षण की आधार पुर स्थापित मण्डल होती है। मण्डल के अन्तर्गत एक विकास समूह का बीच बाधना।^{४७} मण्डल समिति का मूल उही समझ ही करता है वह कम है कम ५ स्थानीय समितियाँ गठित हो चुकी हो।^{४८} उच्चतर विकास तथा बीच के अन्तर्गत तीन विकास समूह उच्चतर, पैदावार एवं सुसुध बीच बाधना है वतः तीन मण्डल समितियाँ गठित हुई हैं। स्थानीय समितियों की कार्य समिति के एक निर्वाचित अध्यक्ष ही मण्डल समिति के अध्यक्ष होते हैं। मण्डल समिति के अध्यक्ष एक प्रधान, दो उप प्रधान, एक वकील, दो सहायक तथा एक सौजन्यता का चुनाव करते हैं वही मण्डल समिति के अध्यक्षों द्वारा कुछ बात पदाधिकारियों का ही चुनाव होता है। मण्डल की कार्य समिति में सुझावित्वम वकील अध्यक्ष ही होती है किन्तु उपरोक्त निर्वाचित पदाधिकारियों के वतावा केन नियुक्तियाँ प्रधान द्वारा होती है।^{४९} मण्डल समिति में दो, दो स्थान सदस्यों एवं वित्तीय मामलों के लिए सुरक्षित है।

छोटा किसान का हाथ में भारतीय जनक के गठित करारों की ताकिता

क्र. संख्या	संविदा करार का नाम	प्रदायिकाओं की संख्या	संविदापति के करारों की संख्या	रिक्त संख्या की संख्या	संविदापति के करारों की संख्या	संविदापति के करारों की संख्या	संविदापति के करारों की संख्या	संविदापति के करारों की संख्या
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	संविदापति छोटा	७	१४	-	७	६१	नहीं	नहीं
२	संविदापति देवादा	७ ७	१४	१	७	४६	नहीं	नहीं
३	संविदापति फरपुर	७	१४	६	७	४६	नहीं	नहीं
योग		२१	४२	१	२०	१५३		

संविदा : १- श्री किशु नारायण पुने, करारा, ज्वाधरा,
नरक संविदा, छोटा ।

२- श्री सुरेश चन्द्र मिश्र, देवादा, नहीं , नरक संविदा,
देवादा ।

३-श्री सुंदर राधेन्द्र प्रसाद सिंह, फरपुर ज्वाधरा,
नरक संविदा, फरपुर ।

प्रत्येक नरक संविदा के प्रदायिकाओं का चुनाव निम्न संविदा
कारा नियुक्त निर्वाचक अधिकारी के द्वारा होता है ।^{५०} प्रत्यासी होने की कतिता

की शक्तियों का कोई हल्लेच नहीं किया गया है किन्तु पक्षीय विपक्ष शक्ति की शक्तियों का विशेष ध्यान रखा जाता है। कभी कभी नये सदस्यों की कठ के प्रति जागरूकता के उपायों को स्वीकृति करने के निमित्त की पदाधिकारी नियमित किया जाता है जिसका प्रमाण मण्डल समिति की ओर से सम्पूर्ण कठ पर की शक्तिशाली व्यवस्था को पता चले जाता है।

पक्षीय शक्तिशाली में पदाधिकारी किन किन कार्यों पर काम है उक्त कोई विवरण नहीं दिया गया है। पदाधिकारियों ने कभी कार्यालय में पठ के सम्बन्धित पदाधिकारी का कार्यालय, 20 प्रतिष्ठित कठ के प्रति निम्न : २१ प्रतिष्ठित उपाय का नाम : २२ प्रतिष्ठित नीति प्रतिनिधित्व : २३ प्रतिष्ठित उपाय उपाय : २४ प्रतिष्ठित कार्यों का अनुभव : २५ प्रतिष्ठित पक्षीय प्रतिनिधित्व और २६ प्रतिष्ठित विचारणीयता कायाय। पक्षीय कार्यालय है कि शक्तियों के प्रति पक्षीय का नाम किसी की पदाधिकारी ने नहीं किया किन्तु कठ में मुद्राशक्ति का विचारणीय है। पक्ष-प्राप्ति में जहाँ अन्य कारक कार्यालय है वहीं पर राष्ट्रीय स्तर के एक ही में कार्यालय, कठ प्रमाण उपाय एवं विस्तार में सम्पूर्ण की विशेष महत्व रखा है। तीनों मण्डल समितियों के एक विचार पदाधिकारी राष्ट्रीय स्तर के एक ही में काम है।

मण्डल समिति का कार्यकाल २ वर्ष निर्धारित है जिसमें प्रत्येक पदाधिकारी कभी एक बार ही कार्य कर सकता है। यदि किसी पदाधिकारी या सदस्य के कार्यों एवं व्यवहारों में पक्षीय विपक्ष पर मुद्राशक्ति होता है तो उसे भी हटाया जा सकता है, पर शक्तिशाली मान है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रकार की समस्या की समाधान की एक अनुभव की गई। प्रादेशिक कार्य समिति की किसी भी ऐसी कारण के लिए किसी कठ नाम का उपाय नहीं किया जाता किन्तु यह आवश्यक समझा प्रमाणिकता किसी की समिति कभी कभी के विरुद्ध अनुमान की सम्पत्ति करने का किसी की समस्या की कभी प्रवर समिति के पदाधिकारी की हटाने का अधिकार होता है। यह विचार के विरुद्ध भारतीय कार्य समिति की स्वीकृति की जा सकती है जिसका निर्णय सम्पन्न होता है।^{१६} उपरोक्त द्वारा है स्पष्ट हो जाता है कि समस्याओं का समाधान केन्द्र मण्डल या किसी समिति नहीं है और प्रादेशिक कार्य समिति की स्वीकृति

नहीं है। अन्तिम विमर्श केन्द्र भारतीय कार्य समिति है जिससे जग के केन्द्रीकरण का परिणम निकला है।

मण्डल समिति प्रादेशिक कार्य समिति की स्वीकृति है पुरानी समितियों का पुनर्गठन करती है।^{४९} प्रादेशिक कार्य समिति की वस्ययी समितियों की बना लकी है जिसका कार्यकाण्ड अधिकतर यह बात हो जाता है।^{५०} इन बातों से स्पष्ट है कि मण्डल समिति अपने अतीवस्य एक बार गठित स्थानीय समितियों का पुनर्गठन प्रादेशिक कार्य समिति की अनुमति है ही कर लकी है, उसे वस्ययी समितियों के विमर्श का विस्तृत अधिकार नहीं दिया गया जो कि बाध्य प्रतीत होता है। यदि किसी पदाधिकारी का स्थान रिक्त हो जाय तो संसदीय कार्य समिति को अधिकार होता कि वह उस स्थान की पूर्ति अवशिष्ट हो के लिए कर है।^{५१} नियुक्ति एवं पदच्युत करने की शक्तियों के विभाजन से यह में अनुमान लं जाता स्थिर रहती है। समिति की तीन छातार बैठकों में बिना अनुमति के अनुपस्थित होने पर निर्णय किसी भी अवस्य निर्णय घोषित किया जा लक है।^{५२} किन्तु अभी तक किसी के प्रति ऐसी कार्यवाही नहीं हुई। अनुमति कौन देता ? यह स्पष्ट नहीं। यदि अवस्यता की वंछ में अवशिष्ट न होना चाहे तो अनुमति कौन देता ? देर बिना है अनुमति के स्थान पर पूजा की कार्यवाही समीचीन नहीं पाविर।

प्रत्येक समिति के कार्यवाह्यता का कार्यवाही होता कि वह ठीक प्रकार से होता रहे, प्रतिवर्ष उसका अन्तिम हो तथा समिति द्वारा स्वीकृति हो। समिति किसी भी क्षेत्र में अपना विज्ञापन लीक लकी है।^{५३} किन्तु वह लकी व्यवहार के परातल पर प्रुष्टियात करते हैं तो तीनों मण्डल समितियों के कार्यवाह्यता में है किसी ने भी वह का विज्ञापन न लकी क्षेत्र में रहा है और न लकी पाव कोई पनराति हो जाता है।^{५४} उत्तर प्रुष्ट की कार्य समिति ने अवस्यता कौन का २० प्रतिशत मण्डल समिति के पाव रहने का प्राधिकार किया है।

कारवाह्यता में प्रुष्ट प्रुष्ट यदि लैलन के पदाधिकारियों का पद वैतनिक हो जाय तो कैला रहैगा ? का उत्तर तीन पदाधिकारियों ने वंछा कर दिया और एक पदाधिकारी ने अपनी अवस्यता व्यक्त किया कौनहि लकी पद

स्वाधीनता पर होती है जिसकी सुनारों का द्वारा ही जाती है और देशों का विकास उस चीजों में होता जाता है । यह दृष्टिकोण जगत् में अपना नहीं के साथ रहता है । चीनका मजबूत धर्म के नीचे ने बताया कि आपातकाल में जगत् के सभी लोग प्रतिक्रिया करता है यह, देश की मजबूत की चीजों के नीचे चीजों के साथ मिली । क्रापिकारियों ने क्रापिकारिक देशों का चीन की बताया । इसी स्पष्ट है कि देशों होती है । जिसके विकास का सुनाव में यह की बताया करनेवाले व्यक्तियों की व्यक्तित्व सुनी का बताया जिस की कि यह के देशों के साथ है कि यह वास्तव में होता है ।

आप २४ फरवरी में बोला है किना समय राजनीति में होती है के साथ में मजबूत धर्म के अनुसार के बताया ने २ फरवरी ; मजबूत धर्म के साथ के नीचे ने २ फरवरी ; मजबूत धर्म के नीचे ने २ फरवरी तथा उपायों में 'हुआ नहीं' कहा । इसी स्पष्ट की बताया है कि यह कि के कि राजनीति में प्रमुख समय का है और यह वास्तव है कि किसी ने नियंत्रित का नहीं बताया । मेरा ऐसा अनुमान है कि यदि यह, केवल ही साथ तथा कार्य निरीक्षण के अनुसार की बताया धर्म का साथ ही देशों में क्रापिकारिक धर्म का बताया है कि किसी परिणाम स्वरूप बड़ीकरण के राजनीतिक समाप्ति के प्रक्रिया तीव्र हो जाती है ।

भारतीय लोक कल

व्यापार की में स्पष्ट किया जा चुका है कि भारतीय लोक कल का क्या विकास का विकास का १९७४ ई० में गठित एक भारतीय धर्म- भारतीय धर्मिक, धर्म का बताया यह के मुक्ति के नीचे की एकताओं ने किया । चीनका विकास का चीन में भारतीय धर्म के धर्म का बताया कि के कारण प्रायः आधारित बताया भारतीय लोक कल है यह नहीं कर पाता । चीनका विकास का चीन के व्यक्तित्व भारतीय लोक कल के विकास के अनुसार प्रारंभिक चीन के भारतीय लोक का क्या चीन का बताया ।

प्रारंभिक कौशल :

प्रारंभिक कौशल भारतीय लोक कल की एक ही छोटी कक्षा है जिसकी पहचान होने का सीधे प्रत्येक युवा केन्द्र है जहाँ पर छात्रों की संख्या कम है जो एक बस है।⁴³ हर प्रारंभिक कौशल कमी बनी छात्रों में है एक कार्य समिति का चुनाव होती जिसमें एक अध्यक्ष एक सचिव एक कोषाध्यक्ष और दो छात्र होते हैं। कार्यकारिणी समिति के फंक्शनरी कौशल के दो फंक्शनरी होते हैं।⁴⁴ कार्यकारिणी के जो छात्र और फंक्शनरी राष्ट्रीय कौशल के प्रतिनिधि छात्र होते हैं।⁴⁵

उत्तम राष्ट्रीय कौशल के अध्यक्ष के कोषाध्यक्ष सचिव, फंक्शनरी प्रवक्ता, कक्षा समारोह केन्द्रों केन्द्र केन्द्र (सामान्य) में एक छात्रों की संख्या बार ही बतायी⁴⁶ और जो विद्यार्थी की प्रमुख समिति के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय विद्यार्थी के कोषाध्यक्ष यात्रा में बार ही बतायी⁴⁷ किन्तु एक ही प्रारंभिक कौशल के कक्षा का कुछ नहीं किया। अन्य कक्षा की पहचान भारतीय लोक कल में दो प्रत्येक फंक्शनरी के समिति एवं कार्यकर्ता का विवरण होकर ही नहीं किया है।⁴⁸ महामंत्री बसती सचिव द्वारा कोषाध्यक्ष के समिति है नीटेल युवाओं जायेंगी। --- किन्तु किसी स्तर पर कक्षा के 115 छात्र जो कक्षा की नीटेल की नाम करते हैं तो बसती महामंत्री को कोषाध्यक्ष को उनके लिए समिति होना कि वह नाम के एक नाम के बसती की नीटेल युवाओं का प्राधिकार छात्रों द्वारा पत्र करने का अधिकार होकर ही बसती प्रवक्ता करता है।

प्रारंभिक कौशल की कक्षा की कोई व्यक्ति निर्धारित नहीं है कि कि छात्रों के लिए निर्धारित है। प्रारंभिक कौशल की कार्य समिति में कोषाध्यक्ष का पद है किन्तु अन्य अन्य कक्षाओं की पहचान छात्रों के विवरण में अक्षा कीर्ति कक्षा नहीं किया गया है।⁴⁹ प्रारंभिक कौशल का कार्यकर्ता को बसती है किन्तु किसी राष्ट्रीय कक्षा के अन्य राष्ट्रीय कौशल पार्टी युवाओं की एक बसती एक टाउ कक्षा है और जो बसती में नीटेल कौशल और नीटेलों का समय उनके बसती के लिए पत्र किया जाता है।⁵⁰ कोषाध्यक्ष की द्वारा 12 के अनुसार युवाओं को बताया कि कक्षा के लिए राष्ट्रीय, प्राथमिक एवं किता स्तर पर युवाओं व्यापारिकरण

श्री, राष्ट्रीय कार्य राष्ट्रीय कौशल है या उसके किसी पदाधिकारी है कि वाक्य अस्पष्ट
 श्री, पूर्व भारतीय कौशल के निम्नलिखित पदों में कौशल कायदा की कड़ की श्री
 प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए ऐसा परिचय दिया गया श्री । राष्ट्रीय कौशल
 श्री कल्लेराम वाक्य ने राष्ट्रीय कौशल का कौशल-कला श्री नील प्रदान किया,
 श्रीलता श्री काया काकि अन्य किसी पदाधिकारी ने उनका नाम नहीं दिया कि
 श्री कामन्धन सिंह कौशलपुर श्री श्री कल्लेराम वाक्य कायदा प्रतीकान्तर कौशल -
 मन पुर का नाम दिया । श्री कल्लेराम वाक्य कौशल ने कायदा पर श्री श्री
 काकि का नाम नहीं दिया श्री श्री राम कल्लेराम वाक्य- श्रीलता श्री कल्लेराम कार्य-
 काकि कायदा काकि अन्य पदाधिकारी ने श्री वाक्य कायदा कायदा कायदा
 काया है । कायदा कायदा है कि श्री कामन्धन सिंह भारतीय कौशल के कल्लेराम श्री
 पुर है किन्तु कौशल-कला है ।^{१५} उन्हीं का स्पष्ट श्री वाक्य है कि कायदा श्री श्री
 कायदा दिया वाक्य है कि कायदा है कि कायदा प्रदान कराया कल्लेराम है ।

राष्ट्रीय कौशल श्री कायदा का प्रतिनिधि प्रदान कौशल कायदा
 कायदा प्रतिनिधि कौशल कौशल के लिए कायदा कायदा^{१६} किन्तु किसी भी पदाधिकारी
 ने कल्लेराम नहीं काया । कायदा कौशल कौशल एवं कायदा कायदा के कायदा श्री कायदा
 राष्ट्रीय कौशल के कायदा श्री कायदा या कायदा करने का कायदा नहीं कायदा है
 श्री श्री श्री कायदा है कायदा श्री कायदा श्री श्री है ।

कायदा कायदा श्री कायदा कायदा कायदा है कायदा कायदा
 कायदा है ? कायदा श्री कायदा कायदा श्री श्री कायदा कायदा किन्तु कायदा श्री श्री
 कायदा है कायदा कायदा कायदा कायदा कायदा श्री श्री कायदा कायदा कायदा
 कायदा । कायदा कायदा कायदा कायदा श्री कायदा कायदा कायदा श्री श्री कायदा
 कायदा कायदा श्री । कायदा कायदा कायदा श्री कायदा कायदा श्री श्री कायदा
 कायदा श्री श्री कायदा कायदा कायदा श्री श्री कायदा कायदा श्री श्री कायदा
 कायदा श्री श्री कायदा कायदा कायदा श्री श्री कायदा कायदा श्री श्री कायदा
 श्री श्री कायदा कायदा कायदा श्री श्री कायदा कायदा श्री श्री कायदा कायदा श्री श्री कायदा
 श्री श्री कायदा कायदा कायदा श्री श्री कायदा कायदा श्री श्री कायदा कायदा श्री श्री कायदा

केंद्रों में रहकर अपने क्षेत्रों का विकास करने में लगी कार्याकारिणीयों ने विस्वाप्त प्रकट किया । यह के सम्बन्धित विहीन परिस्थितियों में का फल है जिसका सीधा है का उन्हें समझाने, सीखाने, पान करने की शक्त, विचार शक्ति का जगता का का कारण बनना ने बताया का उदाहरण ने जिसका करनेवाले अधिकारी का साथ बाकी^{१००} सीधा बताया ।^{१०१} यह में कार्याकारिणीय कि कि कार्यों पर सीधा है ? के अन्त में कार्याकारिणीय ने २२ प्रविष्ट का का पान ; २२ प्रविष्ट सीधे प्रतिनिधित्व ; २२ प्रविष्ट यह के प्रतिनिधित्व ; २२ प्रविष्ट आपन सम्पत्ता का २२ प्रविष्ट नेताओं के प्रति अधिक बताया, सीधीय प्रतिनिधित्व, विचार शक्ति एवं कार्यों के अनुभव पर सिद्ध ने यह नहीं किया ।^{१०२} नेताओं के प्रति अधिक के कारण पर कार्याकारिणीय यह सीधे करती है कि यह में अधिक विचार की भाषि है जो मुहम्मदी के का में प्रकट सीधा है ।

सीधीय सीधे के कार्याकारिणीय का कार्यकाण्ड २ वर्ष है किन्तु सिद्धी राष्ट्रीय केंद्र के का राष्ट्रीय सीधे पार्टी चुनावों की एक वर्ष का टाठ होती है किन्तु सिद्धी बार ; इसका स्पष्टीकरण नहीं है । सिद्धी सीधीय सीधे या उसके सिद्धी कार्याकारिणीय के विरुद्ध अनुमान सीधी कार्यकारी प्रविष्ट कार्यकारिणी समिति का होती है इसके सम्बन्धित निम्न, निम्न एवं सहायक कौटिल्यों की नियुक्ति की भी जम्बूका ही का भाषि है ।^{१०३} प्रविष्ट कार्यकारिणी समिति के केन्द्र के विरुद्ध में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के कादा कौटिल्य ही सीधी बार उका केका सीधे सीधा ।^{१०४} इसके स्पष्ट है कि अन्तिम विचार केन्द्र राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति है जो कि आत्मक व्यवस्था की पूरी है ।

सीधीय सीधे की व्यवस्था मुक्त में है ४० प्रविष्ट केंद्र मिलना चाहिए ।^{१०५} सीधीय पार्टी केंद्र का धरणा सीधा उसी विन्नीदारी सीधी कि बाकायदे विचार रहे, पर बाध का बाध कराए और सीधे सीधे है उसी स्वीकृति प्राप्त की । पर सीधे या सीधी सिद्धी बीच में का काउण्ट सीधे होती है ।^{१०६} कायि कायि सीधीय सीधे गठित होने पर व्यवस्था अन्तिम का किन्तु सीधीय सीधी का सम्बन्धित विचार का का एक भी प्रविष्ट केंद्र न सीधा किया का न सीधी बीच (बाकिनीय) में सीधे विचार ही सीधा का है ।^{१०७}

पुस्तकों की दुकान खोल्या जायार में है जो कि किसान उस रीत का केन्द्र रखे है । केन्द्र रखे रखीय है क्योंकि यही पर लखीय ,धाना, तीन के (अफ्रीका), विद्युत उपकरण, कपड़े उस किसान कायलिय, राष्ट्रीय वस्त्रालय, उस डिप्लोमेटिक मजिस्ट्रेट का न्यायालय, कुछ किसान कायलिय, बाजीटैमिक कायलिय, खिली कायलिय, नयी वायुवीर विश्वविद्यालय, दो कम्पटर कायलिय, सुविचार चार्ज स्कूल, लखारी के कायलिय एवं बीच नौदाम बोटी कर्मी के तीन कारखाने, रीजिस्टर चैलन तथा रेलवे चैलन कायलिय स्थित है जो उन कारखानों के निरन्तर कर्मकर बना करते हैं । ऐसी स्थिति में जो केन्द्र रखे पर अवस्थित रहता है वह राष्ट्रीय में अधिक समय के लम्बा है और अपनी सक्रियता के कारण वास्तव में किया जाता है ।

राष्ट्रीय कोष्ठ खोल्या का नाम बटुका उस दुका कोश कायलिय दिखतायी नहीं किया और बचता एवं उपायता है वह स्वीकार किया है कि स्थायी कायलिय नहीं है परन्तु कोशाल्यता एवं नयी के स्थायी कायलिय का चीना स्वीकार ही नहीं किया अथवा कायलिय का २०१-२०० मासिक किराया किया जाना भी बताया बिना के रमार्कटर यावत- कर्मी पट्टी , लखीय का स्थायी रूप है बचना भी बताया । अब कोशाल्यता की कामन्धन सिंह है पूजा कि ' क्या वाप की कायलिय नये ? तब उन्होंने कहा ' कभी भी कायलिय नहीं नये ।' इसी वह निष्कर्ष निष्कर्ष है कि स्थायी कायलिय की योजना ही निश्चित ही नयी चीनी किन्तु कायलिय नहीं ही पायी या वह के कामलों पर कायलिय की ही नयी ही । राष्ट्रीय कोष्ठ के पास बाबा के निजी राशन नहीं है ।

कार्यकर्ता :

नागरिक जिन्ही यह का कार्य करता है, फिर व्यवस्था करता है यदि उसकी लोकप्रियता है वह जो काम मिल करता है या वह प्राप्त करने है उसकी लोकप्रियता बहुत बड़ी है या अन्य महत्वाकांक्षियों पूरी ही होती है उन पदाधिकारी बन जाता है । यही पदाधिकारी अब यह के अधिकार ईश्वर में रखकर, व्यक्ति-निष्ठा है ऊपर उठकर, राष्ट्रीय विद्वान्त एवं विचारों के लोकप्रिय होकर, यह जित ही नयीका प्रमाण करते हुए एवं अधिकतम बाकांक्षाई रखी हुए भी यह के प्रत्येक क्रिया-

क्याप की करता है तब उसे कार्यकर्ता (Activist) कहा जा सकता है। कार्यकर्ता में पदाधिकारी के आवश्यक गुण विराजमान रहते हैं किन्तु उनी पदाधिकारियों में कार्यकर्ता के गुण नहीं पाये जाते हैं। कार्यकर्ता में वह है वरिष्ठ कार्यक्षमता होती है। दूसरे वह व्यक्ति स्वयं को जो कि वह के प्रारम्भिक कृत्यों के केन्द्र में और उसके उपर वह के उनी नीतिगत प्रियाकृत्य वाचान्वित होती है, युद्ध (Militant) कहाया है।^{१४} निम्नलिखित सभी कार्यकर्ता कृत्य प्रेरक, वाक्य एवं राजनीतिक वह की पूर्ण होता है। कार्यकर्ता कृत्य पदाधिकारियों का पाम्य विभाजित होता है क्योंकि उनी की धृष्टि और धृष्टि पर वह उनी स्वयं की पश्यता या पश्यता करता है। कार्यकर्ता कृत्य वह के केन्द्र की धरीर की कीर्तियाँ हैं उनके कृत्य कृत्य वक्तव्य ही जाने पर वह की नीतियाँ एवं कार्यक्रम प्रियान्वित नहीं हो सकते। कार्यकर्ता अपना विकास करते करते नेता की केनी में पहुँच जाता है।

वर्गीयता के तिर प्रमुख समय के वाचक पर कार्यकर्ताओं की दो वर्गों में रह सकते हैं १ अल्पकालिक २ पूर्णकालिक। अल्पकालिक कार्यकर्ता कुशाधीन, बान्धीकाली, प्रवर्गी, परमा, पेराम या उनी प्रकार की अन्य राजनीतिक प्रियावों में प्रेरणा एवं वरिष्ठ योगदान की है और वह कार्य उन्मत्त हो जाता है तब पुनः अपने व्यक्तिगत कार्यों में लगे जाते हैं। पूर्णकालिक कार्यकर्ता व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के तिर अपने धृष्ट परिवार या धृष्टियों या वह के उपर जाति होकर वक्तव्य वह के कार्यकर्ता की पूर्ण करने में लगे एवं मन दीनों है वरिष्ठ रहता है। वरिष्ठ विद्यान उनी दीन में गठित वर्गों में है भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के पास वह है वरिष्ठ पूर्णकालिक कार्यकर्ता कर्ण, वरिष्ठ कायधियों एवं जलमान पूर्ण में विल्लाप्यी होती हैं किन्तु की कानता प्रणय मित्र, केप, स्वयं प्रान्तीय काग्रेस कमेटी ; की कलता कान्त विवारी के कलता स्वयं विता परिणय ; की कलतीकल मित्र - कलतीरा ; की कलतीरान मित्र - कलतीरान, युक्त काग्रेस वापि प्रमुख है। भारतीय लीजल के पास की कलतीरान पावन विवारी के कलता पूरता लीर नहीं है वरिष्ठ भारतीय कलतीर के पास वह की पूर्णकालिक कार्यकर्ता नहीं है वरिष्ठ अल्पकालिक योग्य कार्यकर्ता वरिष्ठ है।

राजनीतिक वर्गों के द्वारा कार्यकर्ता विभाजित की प्रक्रिया कलतीर किन्तु पश्यता है होती है और कलता प्रतिकल की नकलीत की पाति न्यून

जब मुक्त होता है । कार्यकर्ता-विभाजन-प्रक्रिया पांच चरणों में होती है १- कार्यकर्ता अपने योग्य व्यक्ति की तलाश २- योग्य व्यक्ति को वाकफिज करना ३- वाकफिज को स्थिर करना ४- वाकफिज योग्य व्यक्ति को राजसखी में विराट करना और ५- वहीच विचारधारा के अनुसार व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करना ।

कार्यकर्ता अपने योग्य व्यक्ति की तलाश राजनीतिक पक्षों के द्वारा अवसरता विभाजन, चुनाव विभाजन, वाकफिज, प्रदर्शनों, समाजों वादि के माध्यम से ही जाती है । इन कार्यकर्ता में जो व्यक्ति होकर नेता या कार्यकर्ता के रूप में जाता है, अपनी पविष्टता विनोदित करने पड़ाता जाता है और वह द्वारा निर्देशित कार्य में रुचि लेकर किसी परिस्थितियों से पीड़ित होकर भी व्यक्ति हमेशा प्रयास करता है, वही कार्यकर्ता अपने योग्य व्यक्ति बनता जाता है । प्रारंभ में व्यक्ति का कारण रक्त रोग, पित्त, पित्रा, वात प्रभृति, प्रतीक, प्रतीक, प्रतीक, प्रतीक (कुछ के साथ रहने की प्रवृत्ति) होता है, प्रतीक वादि होता है ।

जब योग्य व्यक्ति मिल जाता है तो उसे वह ही और वाकफिज करने का प्रयास होता है । वाकफिज करने के उपायों में ऐलानात्मक उपायों में फल, नेता या कार्यकर्ता की उपाय, अपने द्वार पर खाना, योग्य व्यक्ति के द्वार पर बार बार फल, उज्ज्वल वाकफिजताओं को पूर्ण करने का प्रयास, वह ही विचारधारा के वैश्वज्ञान का प्रतिपादन एवं विचारों में एतानुष्ठित प्रदर्शन वादि प्रमुख है ।

जब कार्यकर्ता अपने योग्य व्यक्ति मिली एक या ज़ीक उपायों से वह के प्रति अवस्थाही रूप में वाकफिज हो जाता है तो उज्ज्वल स्थिर करने की प्रिया की जाती है कि वाकफिजों का स्थिरकरण कहा जा सकता है । जो वह वाकफिजों का स्थिरकरण करने में अवसर ही जाता है या अवसर नहीं होता उज्ज्वल और वाकफिज योग्य व्यक्ति दूसरे वह ही और वहीच का बाधा में वाकफिज हो जाती है । जो कुछ फल पावनीय - अवरोध, जो १९६२ एवं ६७ में भारतीय जनसंघ की ओर रहे किन्तु १९६६ के निर्वाचन में साथ होकर व्यक्ति वह ही और कुछ नही ।^{२५}

वह के नेता अपने वह के कार्यकर्ताओं की क्या क्या व्यक्तिगत

६ प्रसिद्ध नेताओं के परिचय ; ७ प्रसिद्ध पंडीय साहित्य का अध्ययन ; ८ प्रसिद्ध का कर्म ; ९ प्रसिद्ध प्रोत्साहन ; १० प्रसिद्ध कर्म के कार्य तथा ११ प्रसिद्ध कर्म ; के माध्यमों की महत्त्व दिया । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने ३३ प्रसिद्ध माध्यम ; १४. ५ प्रसिद्ध साहित्य ; १४. ५ प्रसिद्ध बैठकों ; १४. ५ प्रसिद्ध शिबिरों तथा १४. ५ प्रसिद्ध छात्रावासों ; के माध्यमों पर कर्म दिया । राष्ट्रीय शीर्षक के पदाधिकारियों ने वापसी स्थापना ; साहित्य ; समाचार ; प्रोत्साहन ; प्रभाव के रूप ; कर्म के कार्य का साहित्य एवं माध्यम पर एक छात्र कर्म के रूप में छात्र शीर्षक शीर्षकों के पदाधिकारियों ने २०-२२० प्रसिद्धों में क्या भारती , मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने ' पान्थकर्म ' ५-१० प्रति तथा ' कर्मिणाक्षर ' २-५ प्रति और राष्ट्रीय शीर्षक के पदाधिकारियों ने २-५० प्रसिद्धों में ' कर्मिणाक्षर ' पठाया है, के अध्ययन एवं नेताओं के प्रत्यक्ष कर्म के शीर्षक है साथ ही साथ कर्म प्रवृत्ति, कर्म कर्म एवं ऊपरी कर्मिणाक्षरों की दूर करने के लिए पदाधिकारियों के परिचय साहित्य के प्रयोगात्मक अनुभवों के ज्ञान की गंभीरता बढ़ जाती है ।

ऊपरीकृत माध्यमों के द्वारा एक और कर्मिणाक्षर एवं पान्थकर्म का विकास होता है दूसरी और कार्यकर्ता कर्मिणाक्षर व्यक्ति के मास्तिष्क में कर्म की विचारधाराओं का प्रवेश कराते विद्वान्तीकरण की होता है । विद्वान्तीकरण में कर्म कर्मों की विचारधाराओं की व्याख्या, वाणीका एवं प्रवृत्ति करते हुए कर्म कर्म की विचारधारा का एवं केवल कर्म, व्यवहार एवं उपयोगिता के अनुसार विद्व कर्म, कार्यकर्ता कर्मिणाक्षर व्यक्ति के मास्तिष्क में, अनुकूलित होता है । यह पान्थकर्म प्रवृत्ति में व्यक्ति की कर्म की और है दीक्षा कर दिया जाता है और ऊपरी कर्म कर्म की कर्मिणाक्षरों की पूर्ति ; व्यक्तिगत वाचरण है कर्म की विचारधारा का वापसी एवं कर्म के कर्म प्रतीक का विचार दिया जाता है । कार्यकर्ता निर्माण की प्रक्रिया पंडीकरण का महत्वपूर्ण कर्म है ।

वापसी एक ही पुनर् कर्म की राजनीति में जाने के लिए क्या कर्म ? के प्रवृत्ति ऊपरी में छात्र शीर्षक शीर्षकों के पदाधिकारियों में है ३३ प्रसिद्ध

ने उत्पादित क्या ६० प्रतिशत ने कुछ नहीं कहे ' क्या । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में २५ प्रतिशत ने उत्पादित क्या ७५ प्रतिशत ने कुछ नहीं कहे ' क्या । राष्ट्रीय काँग्रेस के पदाधिकारियों में ६० प्रतिशत ने उत्पादित ' २५ प्रतिशत ने ' स्वीकृत' क्या २५ प्रतिशत ने ' कुछ नहीं कहे ' क्या । ' उत्पादित ' करनेवाले पदाधिकारियों में राजनीतिक क्षमताएँ जो स्तर तक पहुँच चुकी हैं कि वे अपने कार्यकर्ता का वाता है और राजनीतिक पक्ष में वास्तव उत्पन्न प्रतीत होती है । ' कुछ नहीं कहे ' करनेवाले पदाधिकारी कुछ के स्वतंत्र विकास के कलापाती हैं विशेष स्पष्ट होता है कि पक्ष की प्रियाओं एवं उपस्थितियों के मध्य सम्बन्ध परिलक्षण के प्रति कुछ सम्यक् दृष्टिकोण में की गयी है । ' स्वीकृत' करने ' उपर देनेवाले पदाधिकारी राजनीति की किन्तु कच्चा नहीं समझते हैं ऐसा प्रतीत होता है ।

उन्हीं पदाधिकारियों के कब कब प्रश्न किया गया, कुछ लोग समझते हैं कि ' राजनीति मन्दा रेंड है ' वाप क्या अनुभव करते हैं ? के उपर में ' वाक्य जटिल कीटियों के पदाधिकारियों में ६० प्रतिशत ने ' हाँ ' तथा २५ प्रतिशत ने ' नहीं ' कहा । मण्डल समिति के पदाधिकारियों में ५० प्रतिशत ने ' हाँ ' तथा ५० प्रतिशत ' नहीं ' कहा । राष्ट्रीय काँग्रेस के पदाधिकारियों में ४५ प्रतिशत ने ' हाँ ' कहा । वास्तव में यह है कि अपने एकजोते हुए जो राजनीति में जाने के लिए ' उत्पादित ' करनेवालों में है ७५ प्रतिशत पदाधिकारियों ने राजनीति की मन्दा रेंड बताया । ' कुछ नहीं कहे ' उपर देनेवाले पदाधिकारियों में है २०, ५ प्रतिशत ने राजनीति की मन्दा रेंड नहीं माना कुछ पदाधिकारियों का ७५, ५ प्रतिशत राजनीति की मन्दा रेंड रेंड अनुभव करता है जो किन्तुनीय स्थिति का प्रतीक है । यह स्थिति विद्यार्थीकरण एवं वजीकरण के कार्यों का परिणाम प्रतीत होता है ।

वाप क्या वापस कैसा ज़िदी मामला है ? के उपर में ' वाक्य जटिल कीटियों के पदाधिकारियों ने प्रभाव पक्षी कीमती रॉपिरा नाथी, जी गुठ्तारी डाक मन्दा, कृतार्थ कुछ नहीं, भारत सरकार ; जी वि.सनाथ प्रभाप सिंह, राष्ट्रीय रेंड एवम् रेंड उन वाणिज्य नहीं भारत सरकार तथा जीमती राजेन्द्र कुमारी काकीडी स्वायत्त राज्य नहीं उपर प्रवेश सरकार की बताया । मण्डल समिति के पदाधिकारियों ने स्वनीधि १० दीनक्याठ उपाध्याय, भूतपूर्व बरिष्ठ भारतीय जनसेवक अध्यक्ष ; जी कान्नाथ राज बोडी रेंड एवम् तथा सगनीय नेताओं का नाम लिया । राष्ट्रीय

कौटिल्य के पदाधिकारियों में श्री चौधरी बरण सिंह, कौटिल्य पारसीय लोकपाल के अध्यक्ष तथा मूलभूत मुख्य मंत्री उद्योग प्रवर्धन सरकार एवं श्री कौशिक प्रसाद मिश्र (श्री मूलभूत उद्योगिक विकास सचिव हैं) के मध्यस्थित चुनाव में विजयी हुए हैं) का नाम दिया । उपरोक्त उपायों से एक कौशल मिश्रण है कि सरकार के उच्च स्तर पर वाणीय व्यवस्था की हाजिरी रखने वालों का वापस का वापस है किन्तु मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं व्यवस्थाओं की ही वापस नेता बनाया ।

यदि वापस वापस नेता यह है त्याग करने दे दे तो क्या उनके साथ है फिर वापस की त्याग करने दे देने ? के उपाय में मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में है २३ प्रतिशत में है कि क्या की कि चीनकी नापी, वापसकी एवं की विस्तार प्रसाद सिंह की वापस नेता माननी हैं ।^{१००} चौथीय कौटिल्य के १० प्रतिशत पदाधिकारियों में है कि क्या की कि चौधरी बरण सिंह की वापस नेता माननी हैं ।^{१००} मण्डल समिति के उपाय प्रतिशत पदाधिकारियों में है नहीं कि क्या । एवं उपायों से स्पष्ट है कि चौथीय कौटिल्य में अधिक निष्ठा पराकाष्ठा पर है और मण्डल समिति में अधिक निष्ठा के स्थान पर विद्वान् निष्ठा का परीक्षण प्रतीत होता है ।

यह के कार्यकर्ताओं के अधिकतम धर्म पर किन्ना ध्यान देना चाहिए ? के प्रश्न उपायों में मण्डल समितियों, मण्डल समितियों तथा चौथीय कौटिल्य के पदाधिकारियों में अधिक कि, जिससे ही कौशल मिश्रण है प्रम या तो धर्म का समाप्त होता है और चौथीय या तो कार्यकर्ता का विस्तार ही उनके धर्म यह पर निर्भर है । वापस यह के कार्यकर्ता अपने यह की नीतियों एवं विचारों की अपने व्यावहारिक जीवन में किस तरह का समाप्त हुए हैं ? के प्रश्न उपायों में मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में १० प्रतिशत बहुत कम, २३, ५ प्रतिशत वापस तथा १६, ५ प्रतिशत अधिक उपायों का प्रयोग किया । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में है १० प्रतिशत बहुत कम, २५ प्रतिशत वापस तथा २५ प्रतिशत अधिक उपायों है उपाय किया । चौथीय कौटिल्य के पदाधिकारियों में है ७५ प्रतिशत बहुत कम तथा २५ प्रतिशत अधिक उपायों है उपाय किया । इससे स्पष्ट ही जाता है कि यह के

छिटाईयों एवं कीटियों को यह क्या अधिक कार्यकर्ता बहुत कम कीटों में अपनाये हुए हैं किसी संस्था की पक्षों में अधिक प्रवीण होती है ।

‘ यह कि शक्ति कार्यकर्ता की की उत्पत्ति क्यों हो जाता है ? के उत्तर में ‘काच कटिब कीटियों के पदाधिकारियों ने ५० प्रतिशत कार्यकर्ता की उत्पत्ति की प्राथमिकता न मिलना, १४ प्रतिशत नेता के द्वारा उनके कार्य के उत्तर में उत्तर नहीं मिलता, १४ प्रतिशत यह की कार्य प्रभावी है नहीं ’ तथा १४ प्रतिशत कार्यकर्ता के कार्य के अनुसार प्रतिक्रिया का न मिलना ’ कारण बताया । उत्तरण में कि विधान परिषद परीक्षा १० वर्षों तक प्राथमिक माठवाला पड़ता रहा किन्तु वह सरकारी नहीं हो कर । कि बीकान प्रभाव पाण्डेय - रवीश्वर के पार्श्व की कम नारायण पाण्डेय की ठीक नौकरी है अधिक करा देना, ^{५२} बताया । मण्डल समिति के पदाधिकारियों ने २० प्रतिशत कार्यकर्ता की वार्षिक स्थिति का विवरण ; २० प्रतिशत उत्तर के अधिकारियों के उत्तरों का उत्तर ; २० प्रतिशत सभी मार्ग-मार्ग का उत्तर ; २० प्रतिशत पदाधिकारियों के मुख्यकार ; तथा २० प्रतिशत यह में सभी मुख्यकार का न होना ’ उत्पत्ति का कारण बताया और उत्तरण में कि कर्नाट प्रभाव विपत्ति, स्वाभाव अधिकतर अठनाईती है कि कर्नाट पाण्डेय- कर्नाट, कि रावरी कि ’ निरुद्ध ’ के मुख्यकार है उत्पत्ति होना बताया । ‘ राष्ट्रीय कीट के पदाधिकारियों ने ’ यह के उत्तर कार्य ; ‘ स्वार्थ का विरुद्ध न होना ’, ‘ अधिक कर का न मिलना ’, ‘ अधिकतर उत्तरण ’, ‘ यह में उत्तर ’ तथा उत्तर पदाधिकारियों द्वारा उत्तर पर उत्तर यह के उत्तर उत्पत्ति के कारणों की स्पष्ट किया । उत्तरों कि उत्तरों है निरुद्ध कि उत्तर है कि शक्ति कार्यकर्ता की उत्पत्ति के तीन मौलिक कारण हैं प्रथम यह की मुख्यकार कार्य प्रभावी, द्वितीय नेता का उत्तर, कर्नाटपूर्ण एवं मुख्यकार तथा तृतीय उत्तर कार्यकर्ता की वार्षिक पक्ष एवं उत्तरकारियों में उत्तरकारी (आर-पक्ष) ।

यह कि नेता या कार्यकर्ता यह का उत्तर क्यों कर देता है ? के उत्तर में ‘काच कटिब कीटियों के पदाधिकारियों ने ५० प्रतिशत अधिकतर उत्तर-कारियों की उत्तर न होना, १४ प्रतिशत यह के कार्य है उत्तर ’ तथा १४ प्रतिशत नेता द्वारा उत्तर का न माना जाना ’ बताया । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने ५० प्रतिशत अधिकतर उत्तरकारियों की उत्तर न होना १४, ५ प्रतिशत कि उत्तर

कम्य कठ द्वारा प्रज्ज्जन का पिछा, १६, ५ प्रतिष्ठान कठ का वाच्यार्थ कहते हैं तथा १६, ५ प्रतिष्ठान कठीय निष्ठान का अर्थ बताया । सीरीय कोष्ठ के पदाधिकारियों ने ६० प्रतिष्ठान अधिकतम मरवाकरागारों की पूर्ति न होने २० प्रतिष्ठान प्रज्ज्जन तथा २० प्रतिष्ठान छिद्रान्त के विरुद्ध कार्य बताया । उनकीय उपरि है यह स्पष्ट होती है कि यह परिस्थिति का प्रमुख कारण परिवर्तन की अधिकतम मरवाकरागारों की है जो का-प्रान्ति वाच्यकारागारों की पूर्ति, प्रतिष्ठा-वृद्धि तथा कार्य-विकास के रूप में प्रकट होती है । जो कठों के पदाधिकारियों ने अपने अपने कठ के कार्यकारणों के द्वारा ज्यों ज्यों यह परिवर्तन की प्रमाणित किया है । किन्तु किसी भी पदाधिकारी ने अपना यह परिवर्तन नहीं किया है ।

मुक्त (निश्चित - कार्यकारण) उत्तरों का हेतुत्व करता है उत्तर उत्तरों का हेतुत्व करता है एवं कार्य निष्कर्षों का हेतुत्व करता है ।^{६९} पदाधिकारी उत्तर एवं कार्यकारणों के बीच की कड़ी है । जो पदाधिकारी को अधिक सम्मान देते हैं माय उपरि कि उनके वादों का पाठन कार्यकारण करते हैं उन्हें यह विचार करना चाहिए कि कार्यकारणों की कक्षा की पदाधिकारी का वादों होती है ।

वाच्यार्थिक उत्तर एवं समितियाँ

राजनीतिक कठ सामान्य उद्देश्यों वाले समुदाय है वे उत्तर के प्रति पूर्ण एवं उत्तर विचारों के संस्थानों की प्रदान करती हैं । वे राष्ट्रीय की नहीं अपितु अन्तराष्ट्रीय जीवन की पूर्ण उत्तर करने का उद्देश्य रखती हैं । उद्देश्य की यह विशेषता है बहुत है और, जो किसी निश्चित उद्देश्य है उत्तर है पूर्ण है नहीं पूरा नहीं करते हैं । वाच्यार्थिक कठ राजनीतिक कठों के प्रतिमाशुद्धी विचार है कि कठ के कार्य (सामान्य उद्देश्योंवाले समुदाय) वाच्य प्रतियों की एक केंद्र की व्यवस्था की वाच्य वाच्य कयाचन समित उद्देश्योंवाले किने उत्तर -समुदायों की स्थापना की । का: राजनीतिक कठ का सामान्य उत्तर की उत्तरपूर्ण पूर्ण है केना : कठ, एक अन्य और अन्य कठ की कि पूर्णिया अधिकतम, अत्यन्त उत्तरपूर्ण और परा विश्वस्त

नहीं है। उदाहरणार्थ किछे में मुक्तों के लिए मुक्तों काग्रेस जहाँ मुक्त काग्रेस कौटो नाम है वही ऐलन वी विभिन्न मुक्तों के उत्तरों के बने हुए हैं।^{६९} मुद्राबन्दी का प्रमाण दिनांक ७-१०-७६ की कार्यवाही ४ बने बलिष्ठ भारतीय मुक्त काग्रेस के महासचिव श्री मुक्त राम बाबु है। रा० प० न० कण्ठर जटेल में पवारी किन्तु श्री कर्माच बाबुश्री प्रमुख श्रीमती रावेन्द्र कुमारी बाबुश्री के विविध उत्तरों के विवरित वक्तव्य मुक्त काग्रेसी सम्पादित नहीं हुए।^{७०}

बाबुश्री वक्तव्य का किन किन नामों (मुक्त, पञ्चूर, विपारी, व्यापक, कौटो, व्यापारी, वक्तव्य) में किन नाम है ऐलन है ? के उत्तर में पञ्चूर काग्रेस कौटोश्री के महासचिवों ने, मुक्त काग्रेस, 'राष्ट्रीय कार्य ऐलन', 'विपारी काग्रेस', 'पञ्चूर काग्रेस', 'पञ्चूर कल्याण संघ', 'मुक्त संघ' समिति के नाम लिए और एक महासचिव ने स्पष्ट मुक्तों में बताया कि मुक्त पता नहीं। मुक्त काग्रेस का नाम ५० प्रतिष्ठित महासचिवों ने दिया। सबसे स्पष्ट होता है कि बोलिया विधान क्या चीज में मुक्त काग्रेस की उत्पत्ति है। मुक्त काग्रेस की किन्तु उत्पत्ति १६-१०-७६ की बैठने के लिए किसी एक श्री कर्माच बाबुश्री (प्रमुख श्रीमती बाबुश्री, प्रवान नहीं, भारत सरकार) का बाराणसी है उदाहरणार्थ वही वक्तव्य उत्तर स्वागत में प्रतिस्पर्धियों की बांधी नहीं।

भारतीय जनसंघ के संविधान में किसी भी वास्तुकीय ऐलन या पुरीमाण का नाम नहीं दिया गया है जबकि भारतीय प्रतिनिधि क्या है पटकों की पूरी में भारतीय कार्य समिति द्वारा मनोनीत विभिन्न मोर्चों पर काम करनेवाले वक्तव्य यदि हैं। प्रत्येक प्रवेश के किसी भी मोर्चे है वही है अधिक वक्तव्य मनोनीत न रहने, 'संघ संस्थाओं के प्रतिनिधि किसी संस्था भारतीय कार्य समिति द्वारा निर्दिष्ट होती किन्तु किसी भी एक संस्था के ५ है अधिक प्रतिनिधि न रहने^{७१} के प्राविधान है समझा वस्तुतः प्रष्ट होता है। भारतीय प्रतिनिधि क्या किसी भी ऐलन क्या संस्था की जनसंघ है निर्दिष्ट कर सकती है क्या किन्तु आवश्यक उनके अपना प्रतिनिधित्व जल्दी है सकती है^{७२} है स्पष्ट ही जाता है कि भारतीय जनसंघ का प्रस्ताव वास्तुकीय ऐलन नहीं है।

भारतीय जनसंघ की मण्डल समितियों के कार्याकारियों ने इस वातावरण में यह पूछा कि "वापके कल का किन किन कार्यों में किस नाम से लेखन है", के उपर में "विपरीत परिणाम", "भारतीय नक़्कूर संघ", "भारतीय किसान संघ", मुक्त जनसंघ के नाम दिए गये। यदि ये लेखन भारतीय जनसंघ के वापकीनिक हैं तो यह के संविधान में कल नाम क्यों नहीं? क्या सभी विचारों की विधान का उपाय किया गया है? विपरीत परिणाम, नक़्कूर संघ तथा किसान संघ में उचित व्यक्तियों में भारतीय जनसंघ के प्रत्याक्षियों की ही उपायकारें करते दिखाने देते हैं। और जब इन लेखनों के कार्यक्रम वापकीनिक किये जाते हैं तो उन्हें भारतीय जनसंघ के उचित कार्यकर्ता का नेता ही सम्पादित करते हैं।" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्य प्रचारक (Feeder - फीडर) लेखन में तो प्रभा सीसीआई पार्टी में सीसीआई पार्टी के साथ है^{१०१} जो कि भारतीय जनसंघ का प्रचारक माना गया है।

सीआर किसान का नीम में भारतीय किसान संघ सीआर की नीम है २० मार्च रविवार को १९७५ ई० को दीपपुर में लखनऊ के लखन बन्धन उद्घाटन (Levy - लेवी) के विरोध में कार्यक्रम वापकीनिक किया गया। उद्घाटन का विरोध भारतीय जनसंघ के प्रमुख स्थानीय कार्यकर्ताओं और नेताओं द्वारा किया गया जिसके अध्यक्ष श्रीराम रैला सिंह सिंह (जु १९७४ ई० के किसान का निवास में भारतीय जनसंघ के प्रचारक) रहे। भारतीय किसान संघ उपर प्रवेश का उद्देश्य पूर्ण विकास, वापकीनिक स्वायत्तता समूह जीवन एवं सामाजिक सम्बन्ध है।^{१०२}

भारतीय लोकसभा के संविधान की धारा ५, यह की उपायों के बन्धन में यह नीम की राष्ट्रीय लोकसभा या राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा लेखन या स्वीकृत किए जाए^{१०३} है वापकीनिक लेखनों और पुरोमान लेखनों का लेखन मिलता है किन्तु उनके नामों की सूची किसी भी स्थान पर उल्लिखित नहीं है जो वापकीनिक वापकीनिक लेखन का उपाय प्रस्तुत करता है। भारतीय लोकसभा की राष्ट्रीय लोकसभा के कार्याकारियों ने "वापके कल का किन किन कार्यों में किस नाम से लेखन है" के उपर में वापकीनिक के मुक्त लोक संघ, "लोकायता ने" भारत मुक्त कला" एवं वापकीनिक के मुक्त ग्रामिक संघ के नाम बताये। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय लोकसभा कने पर मुक्त ग्रामिक संघ की मुक्त लोकसभा की गया किन्तु उपाय

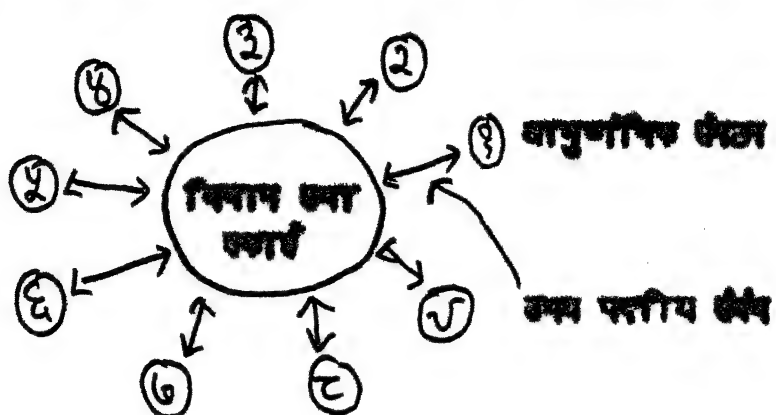
होना, जस से देश जनतादि प्रसिद्ध कण्डिब कीटी अं अलिङ्ग भारतीय कण्डिब कीटी में एक समान हो जायेगी, प्रसिद्ध कण्डिब कीटी की चीनी विपरीत चीन एवं कल्याणमान में एक सेंट्रल होना होनी । यह प्रकार स्पष्ट है कि अलिङ्ग भारतीय कण्डिब में कपरीय स्वाधी अलिङ्गिनी हैं किन्तु कुतन्त्रि है कि विमान का चीन एक कपरी कल्याणी स्वाधिक कपरी की जीर्ण व्यवस्था की हो कर है । विमान का कुतन्त्र के कपरी कुतन्त्र कल्याण अलिङ्गिनी की कल्याणारिक्त पारि कपरी कुतन्त्र कपरी है ।

भारतीय जनसंघ के वन्दनीय भी अलिङ्गिनी की प्रणाली विमान है, कल्याण अलिङ्गिनी^{११०} (क) भारतीय कार्य अलिङ्गिनी एवं कल्याण अलिङ्गिनी विपरीत अलिङ्गिनी कल्याण ७ चीनी, विपरीत चीनी और विपरीत उद्योग कल्याण कल्याण विपरीत कार्य के कल्याण के लिए जी आवश्यक अलिङ्गिनी की । (ख) प्रसिद्ध कार्य अलिङ्गिनी प्रसिद्ध के लिए कल्याण अलिङ्गिनी विपरीत अलिङ्गिनी कल्याण ७ चीनी विपरीत चीनी की कल्याण कल्याण अलिङ्गिनी है प्रान्त विपरीत के अनुसार कार्य चीनी ; स्वागत अलिङ्गिनी^{१११} विपरीत स्थान पर कल्याण कल्याण विपरीत चीनी की कार्य अलिङ्गिनी स्वागत अलिङ्गिनी का गल्याण चीनी और कपरी कल्याण चीनी । अलिङ्गिनी के अनुसार कल्याण कल्याण कल्याण का कल्याण एक गल्याण के बीच कल्याण कल्याण स्वागत अलिङ्गिनी कल्याण स्वागत चीनी कल्याण और कल्याण एक प्रसिद्ध प्रसिद्ध कल्याण भारतीय कार्य अलिङ्गिनी की कल्याण कल्याण । यदि कुतन्त्र पन कल्याण चीनी विपरीत कल्याण प्रकार चीनी कि कपरी कुतन्त्र का २० प्रसिद्ध कल्याण चीनी, २० प्रसिद्ध प्रसिद्ध चीनी कल्याण कल्याण १० प्रसिद्ध स्वागत अलिङ्गिनी विपरीत अलिङ्गिनी की पिङ्ग । कल्याण विमान का चीन में विमान का है कुतन्त्र ७४ के कपरी कल्याण कुतन्त्र कल्याण अलिङ्गिनी का गल्याण विपरीत अलिङ्गिनी है कल्याण या की प्रसारण, कपरी, कपरी, कपरी एवं कपरी कपरी के कल्याण विपरीत का विपरीत कपरी रपरी और प्रणाली की आवश्यक विपरीत की कपरी रपरी ।^{११२}

भारतीय जनसंघ के वन्दनीय भी अलिङ्गिनी की व्यवस्था हुई है, 'कुतन्त्र स्वागत अलिङ्गिनी^{११३} की कि चीन कपरी का चीनी है विपरीत गल्याण कल्याण, प्रसिद्ध एवं विपरीत कल्याण पर चीनी है और विपरीत कुतन्त्र कार्य कल्याण कुतन्त्र के विपरीत का कल्याण कल्याण है, किन्तु चीनीय कल्याण कल्याण पर कल्याण गल्याण की कल्याण व्यवस्था

नहीं है क्योंकि उसके अतीतस्थ प्रारंभिक कौशल का पुनः उद्भव होता है ।
 पार्लियामेन्टरी बोर्ड ^{११२} - राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति ७ कर्णों का एक
 पार्लियामेन्टरी बोर्ड नियुक्त करेगी जो क्षेत्रीय चुनावों के लिए पार्टी उम्मीदवारों
 का काम करेगा । पर प्रत्येक कार्यकारिणी समितिस्कट पार्लियामेन्टरी बोर्ड ७ कर्णों
 का नियुक्त करेगा जो प्रत्येक विधान सभा और उसके अतीत स्थानीय क्षेत्रों के उम्मीद-
 वारों का काम करेगा । राष्ट्रीय कौशल का अन्वयता तथा प्रदेशीय कौशल के अन्वयता
 अन्वय: अपने पार्लियामेन्टरी बोर्ड के अन्वयता रहने ।

अतः किन्तु यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय परिचरणा की
 व्यवस्था किछी न किछी नाम (पार्लियामेन्टरी बोर्ड) है तीनो वर्गों में किया है ।
 स्वतन्त्र समिति की व्यवस्था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं भारतीय जनता में है वहीं
 पर पुनः व्यापारिकरण की व्यवस्था एक नैव बाध्यता में ही है । बाधुर्वाधिक,
 पुरोमान (नौपार) एवं समितियों के निर्माण की परिपाटी का पाठ न्यूनाधिक
 वर्गों में तीनो वर्गों में किया है । बाधुर्वाधिक एवं पुरोमान क्षेत्रों के कुटीरक वरु
 के हाथों में रहते हैं । ^{११३} राजनीतिक वरु जो हमें क्या काम मिलते हैं वह प्रत्येक
 किन्तुणीय है । मेरी दृष्टि है प्रमुखता वरु का क्षेत्र विस्तार, नवीन उत्पत्ती
 व्यक्तियों के क्षेत्र, कौशल किताब का काम एवं उनका कार्यक्षेत्र के हाथ में रहना, वरु
 की क्षेत्रीयता एवं वास्तविकता में वृद्धि, निर्वाचनों में उत्थान एवं अपने की प्राप्ति
 वरु के कार्यक्षेत्रों एवं नेताओं की वास्तविकता समताओं के उत्थान एवं विकास के अन्तर्गत
 की प्राप्ति, कई क्षेत्रों का काम, प्रत्येक वास्तविक के क्षेत्रीयता की निश्चयता में
 समिवृद्धि, राजनीतिक आधीकरण के क्षेत्रों में उत्थावृद्धि तथा राष्ट्रीय स्वातन्त्रता
 का क्षेत्र एवं अन्तर्गत है । यह राजनीतिक वरु निश्चित उद्देश्यों को एक सामान्य
 उद्देश्य या काम किताब का पूरा नहीं बना पाते उस समय वरु में उन बाधुर्वाधिक क्षेत्रों
 एवं पुरोमानों के कारण किन्तु का प्रभाव ही जाता है किन्तु परिणामस्वरूप वरु
 की नीचे वरु जाती है । बाधुर्वाधिक क्षेत्रों (वृद्ध युवक, नौपार और अन्य बाधु)
 का उत्थान, जो कि वास्तविक वर्गों के बाहर रहते हैं, वास्तविक वितीय के प्रभावों
 की वृद्धि करता है । ^{११४} मेरी किन्तु है प्रत्येक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में राजनीतिक



राजनीतिक दल की सृष्टि उन्हें जेल में निवास करती है क्योंकि
 वही राजनीतिक दल विपत्ता की कौटिल्य है वह जेल की सृष्टि-शाली सिद्ध होता है ।
 परन्तु विपरीतार्थीय प्रश्न यह है कि विपत्ता कौटिल्य है ? इसका निवारण कैसे हो ?
 इसके उत्तर के लिए यह वाचस्पत्य है कि जेल की विशेषताओं तथा उनके बर्तों का
 अध्ययन किया जाय । जेल की विशेषताओं-आश्रय, शक्तिशाली, सुलभता, शरीर
 निष्ठा, सुलभता, जीवनशाली एवं जीवनशाली की विशेषताओं का परीक्षण
 करने का प्रयास किया गया है जिससे सीखा कि जेल की शक्ति में भारतीय राष्ट्रीय
 कांग्रेस, भारतीय कांग्रेस एवं भारतीय जीवनशाली की शक्तियों में उनकी उपस्थिति के बर्तों
 की काल्पनिक शक्ति ।

निर्देशात्मकता के अभाव में संलग्न की प्रस्ताव ही नहीं की जा सकती । राष्ट्रीयता एक बड़ी अवस्था, स्वायत्तता, कार्यक्षमता, नेताओं एवं

प्रशासकों (या प्रतिनिधियों) के राजनीतिक प्रियाच्छाओं को धीरे धीरे करना चाहिए ।
 वरुण विमर्शित करता है साथ ही फिर प्रियाच्छाओं के यह जो संकेत मिले ही चाहिए
 उन्हें प्रतिबोधित भी कर देते हैं । राजनीतिक प्रियाच्छाओं के राजनीतिक व्यवहार का
 प्रश्न होता है । राजनीतिक यह अपने है सम्बद्ध नागरिकों के राजनीतिक व्यवहारों का
 निर्देशन करते हैं जो व्यवहारप्रण, पञ्चक, वैकुण्ठ, पञ्चानन, प्रवर्धन, ज्योतिष,
 वागीश्वर, प्रवर्ध, प्रवर्ध के अन्य परिचयित होता है ।

निर्देशनशीलता के दो रूप ही होते हैं प्रथम पाण्डु निर्देशन
 शीलता एवं द्वितीय-वार्त्तिक निर्देशनशीलता । पाण्डु निर्देशनशीलता का प्रमुख
 कारण यह होता है विच्छेद प्रणति में स्थायीता का हीन ही बात है और शील
 में उदा प्रकाश व्यक्त बात का बात है वहीं उदा का शील । वार्त्तिक निर्देशन-
 शीलता का प्रमुख कारण लौक, प्रेम एवं श्रद्धा है विच्छेद नागरिक के मन में स्वयं निर्देशन
 व्यवस्था एवं वागीश्वर की उदा व्यक्त कुशासन का वृद्धि होता है । शीलताधिक
 मूर्त्या पर वागीश्वर राजनीतिक यह उदा कुशासन पर यह भी है ।

आज काग्रिप कीटियों, पञ्चक क्षमिधियों तथा द्वितीय कीटित
 के पदाधिकारियों ने शासनात्मक में बताया कि उनी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी
 के उदय निर्देशन समय पर बैठकों में नहीं पहुँचते हैं और विच्छेद के जानेवालों में
 उदाव्यता, क्षमिध, क्षमिधव्यता एवं कार्यकारिणी के उदय ही अधिक होते हैं ।
 वरुण स्पष्ट है कि महत्त्वपूर्ण मुनिता निम्नलिखित पदाधिकारी समय-मात्र का विच्छेद
 व्यापन करते हैं किन अपने दावित्व की क्षमिध (DL १६०) का हीनित करते हैं
 बैठकों में व्यवस्था की क्षमिध न ही उन की आज काग्रिप कीटियों के ३३ प्रतिष्ठत
 तथा द्वितीय कीटित के २५ प्रतिष्ठत पदाधिकारी अपने भाषण की स्वतंत्रता अनुभव
 करते हैं किन्तु पञ्चक क्षमिध का एक ही पदाधिकारी व्यवस्था की क्षमिध के वभाव
 में बैठने की स्वतंत्रता नहीं अनुभव करता ।

वागीश्वर यह भी जीन जीन उदा नेता है किनने वागीश्वर क्षमिध वरुण
 नहीं है ? के उदा में आज काग्रिप कीटियों के उदा प्रतिष्ठत पदाधिकारियों ने
 की क्षमिध नन्वन वरुण एवं क्षमिध राजेन्द्र कुमारी वागीश्वर का नाम बताया ;

मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में श्री डा० मुरली मनीषर बोधी, श्री रवीन्द्र सिन्हा बोधी एवं श्री रामजीपाद सिंह के नाम छिड़े ; तथा राष्ट्रीय कौण्ड के पदाधिकारियों में श्री कल्याण सिंह यादव, खजूरि, प्रोफेसर बी०पी० सिंह एवं तथा श्री और प्रयास सिंह यादव (बिराह) का नाम बताया । इसी सन्दर्भ में कि दोनों राजनीतिक दलों में एवं केवल मतदान है कि कि इनके अन्तर्गत के विभिन्न स्तरों पर चर्चा करा है ।

यदि कोई ऐसा प्रत्यासी का जाता है जिसे पक्ष की संसुति नहीं रखी एवं पदाधिकारी क्या करते हैं ? के ऊपर में आठ राष्ट्रीय कौण्डों के ६० प्रतिशत तथा मण्डल समितियों के २५ प्रतिशत पदाधिकारियों में 'कल्याण' व 'कल्या' की की विरोध करना' कुछ विरोध करना' बताया । इसी सन्दर्भ में कि यह कि उच्च स्तरों के द्वारा प्रत्यासी विरोध किने जाने पर कौण्ड उत्पन्न होता है । बापके यह है किने स्तरों में यह है प्रत्यासी की किसी विमान का पुनः में मत नहीं दिए ? के ऊपर में आठ राष्ट्रीय कौण्डों के पदाधिकारियों में 'पाप', 'पाप' की 'बापके' तथा ६० प्रतिशत बताया ; मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में 'एक' तथा 'कोई नहीं' कहा, और राष्ट्रीय कौण्ड के पदाधिकारियों में 'पाप', 'मनीष' तथा 'बापके' नहीं कहा । एवं उधरों है सन्दर्भ में कि एवं है बापके विरोध बापके भारतीय राष्ट्रीय कौण्ड के प्रत्यासी का यह के स्तरों द्वारा हुआ कि पराक्रम का प्रमुख कारण का । एवं है एवं बापके विरोध भारतीय कौण्ड के प्रत्यासी की देखा कहा कि यह एवं कल्याण की कल्याण विचार का उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

' बापके यह के कार्यकर्ता और बापके यह का प्रत्यासी व होने पर क्या कुछ भी करने की स्वीकृति है ? के ऊपर में आठ राष्ट्रीय कौण्डों के ६० प्रतिशत मण्डल समितियों के ५० प्रतिशत तथा राष्ट्रीय कौण्ड के भी ५० प्रतिशत पदाधिकारियों में 'हाँ' कहा । इसी बापके होता है कि कल्याण प्रत्यासी व होने पर भी स्तरों की विचारों में पूर्ण स्वीकृति प्राप्त नहीं रहती है ।' यह के बापके मतों की कार्यकर्ता का देखा कि कि स्तरों में प्रवृत्त होती है ? के ऊपर में आठ राष्ट्रीय कौण्डों के पदाधिकारियों में १० प्रतिशत बापके विचार, ३३ प्रतिशत उच्च पदाधिकारियों में

विन्दा" १० प्रचिन्ना कला में प्रचार, २५ प्रचिन्ना विरोधी कला में प्रचार, ३० प्रचिन्ना नार पीट के रूपों पर कल किया, मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में ३३ प्रचिन्ना वाप-विचार के तथा ४० प्रचिन्ना उच्च पदाधिकारियों के विन्दा के रूपों पर कल किया और राष्ट्रीय कौशल के पदाधिकारियों में ३३ प्रचिन्ना वाप-विचार, ४० प्रचिन्ना उच्च पदाधिकारियों के विन्दा के तथा १० प्रचिन्ना कला में प्रचार के रूपों पर कल किया। यह पैरों की कल की परिधि है बाहर प्रकट करने के रूपों की कला में प्रचार और विरोधी कला को बताना कल की निर्माण क्षीयता की अवस्था का पीछा है। नार पीट के रूप में नवम्बरों का प्रकटन अनुशासकीयता की बराबर का और बाहर है।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय कला में कला में निर्माणक्षीयता का है अधिक है और भारतीय राष्ट्रीय कला में कला है कला है।

नविकीयता

कला की व्यापक, दीर्घायु, महत्त्व और प्रभावपूर्ण कला की कला का नाम नविकीयता है। कला की नविकीयता का परिणाम नवीन कलाओं के प्रवेश, विशिष्ट कला पर पदाधिकारी-परिणाम, विद्वानों, कार्यकर्ताओं और नीतियों पर अनुशासक पुनर्विचार, नवीन विचारों में कला; सामुदायिक कलाओं के निर्माण और विभिन्न समितियों की रचनाओं है मित्रता है।

एक ही कल पर एक व्यक्ति का बहुत बड़ा कल पदाधिकारी कला कला के लिए है। का उपर कला कला कला, मण्डल समितियों तथा राष्ट्रीय कौशल के पदाधिकारियों में मुक्त कला है नवीन कला दिया। यह नकारात्मक उपर का प्रमुख कारण नविकीयता के लिए है उत्पन्न कलाओं का अधिकतर परिणाम है।

का कल में कला का कार्य करके कला नविकीय का विकास कर कला है। के उपर में कला कला कला, मण्डल समितियों तथा राष्ट्रीय कौशल के

कभी पदाधिकारियों ने पूर्ण विश्वास के साथ नहीं कहा। वही यह स्पष्ट भी बताता है कि गतिशीलता के विश्वास में ही विकास के अवसरों की बाढ़ा बौध्दिक रहती है। ईमान में गतिशीलता रहने है व्यक्तियों की विकास का अवसर, विभिन्न समस्याओं के बीच का अवसर तथा कभी-कभी स्थितियों के परिणाम का अवसर मिलने की बाढ़ा रहती है। गतिशीलता की बाढ़ा रहने के लिए ईमान में प्राथमिकीय विश्वास^{१९५} अनिवार्य रूप है जोया है बिनाही नवीन एवं प्राचीन दोनों अनुयायियों में प्रेरणा बाधुव रहती है।

बापकी दृष्टि है कि यह सब के कार्यकर्ताओं की ईमान एवं पुरस्कार प्राप्त नहीं होता है। के उपर में बाक कटिब कीटियों के पदाधिकारियों ने ६० प्रतिशत कटिब, १६, ५ प्रतिशत भारतीय जनकर्म तथा १६, ५ प्रतिशत भारतीय लोककर्म के नाम बताया; मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने ७५ प्रतिशत भारतीय जनकर्म तथा २५ प्रतिशत कटिब के नाम लिये और राष्ट्रीय लोककर्म के पदाधिकारियों ने ५० प्रतिशत, लीडरशिप, २५ प्रतिशत कटिब तथा २५ प्रतिशत भारतीय लोककर्म एवं भारतीय जनकर्म के नाम लिये। वही यह लीव मिलता है कि बाक भारतीय राष्ट्रीय कटिब एवं भारतीय जनकर्म के बाकिया बिना ही सभी के कार्यकर्ताओं में अपने अपने सब है गहरा बाकिया है जो कि बाकिया गतिशीलता में किसी न किसी प्रकार की कमी का परिणाम है। गहरे बाकिया के बाक बाकिया कारणों में है उन दोनों बाक के बिनायक प्रत्याभितों की १९७४ ई० के जुनाव में पराभव प्रसुव है। जुनावों में किसी गतिशीलता का प्रतीक है।

“ दलीय निष्ठा ”

जनाय का प्रत्येक बापिक, सामाजिक, पारिषिक, व्यावसायिक, राजनीतिक एवं एक लीव अनुयाय कने कनेकों में अनुयायिक बापना की बिबिधता रहता है बिबिध लीव कनेकों में रहता है सब ही बाकी है। प्रत्येक राजनीतिक सब कने राजनीतिक अनुयाय है जो अपने कनेकों के बन्धनकरण में दलीय निष्ठा की बिबिधता ईमान के बापना है बिबिध करने का बिबिध प्रभाव करता रहता है। यह ईमान बापिबुद्ध बापना बिबिध प्रत्येक सब में दलीय निष्ठा पराकाष्ठा पर लीव। सब के

प्रति व्यापक एकाग्रता की पक्षीय निष्ठा है। आजीवनकारी एवं राष्ट्रवैयक्तिकारी यह की विचारधाराओं में विश्वास करते कम नागरिक जिन्ही यह के प्रति ध्या करता है उन्हीं सम्पत्ति, सुखता एवं सुखता के ही वाता है और मुख्यतः स्थान की सम्पत्ति उत्पन्न की जाती है जो कम एकत्रित ही जाता है और बाँटनेवालों की निष्ठा है मुख्य की ही जाता है। नागरिक में प्रेम धारण में व्यक्ति निष्ठा, द्वितीय में पक्षीय निष्ठा और तृतीय में श्रेष्ठ निष्ठा ईश्वर में ही रहने है उत्पन्न होती है। किन्तु ईश्वर में श्रेष्ठ निष्ठा व्यक्ति व्यक्ति होने का विराग हीना।

संख्या विधान का हीन में तीन राजनीतिक वर्गों के गठित कर्तव्यों है फाफिजारियों में पक्षीय निष्ठा का अनुमान जो है जो नई आशाकार में प्राप्त उम्मीदों है लाया या करता है। किन्तु वापसी प्रेम धार उत्पन्न लाया उन्हीं किन्तु वापस है वाप प्रभावित ही नही ; के रूप में एकत्रित कीटियों है फाफिजारियों में 'स्थान और वज्रान', 'आवृत्त है वाक्यनि', 'जीवनदारी', 'नाथी' (मीनवाप करम वन्द नाथी) की पुनर् 'कट्टि' में 'रुक्मान' एवं कार्यकर्तियों का सम्मान बताया। इन उम्मीदों में आवृत्त है वाक्यनि' श्रेष्ठ निष्ठा का प्रतीक है पिछली १६, ५ प्रतिष्ठित महत्त्व दिया गया, 'कट्टि' में 'रुक्मान' पक्षीय निष्ठा का परिचायक है पिछली १६, ५ प्रतिष्ठित महत्त्व दिया गया और ऐन ६० प्रतिष्ठित महत्त्व व्यक्ति निष्ठावाले उम्मीदों ही दिया गया। मण्डल समितियों के फाफिजारियों में 'छिन्नान्त', 'राज्या', 'निष्ठा', 'परिच', 'वाचित्कपूर्णता', 'यह के प्रतिनिष्ठा तथा' बंजलके के लिए वाक्यनि' लाया। इन उम्मीदों में 'छिन्नान्त' श्रेष्ठ निष्ठा का प्रतीक है पिछली १४ प्रतिष्ठित महत्त्व निष्ठा ; 'निष्ठा' यह के प्रतिनिष्ठा' तथा 'कला' यह के लिए वाक्यनि' पक्षीय निष्ठा का प्रतीक है पिछली ४३ प्रतिष्ठित महत्त्व निष्ठा और ऐन ४३ प्रतिष्ठित व्यक्ति निष्ठा के परिचायक है। पक्षीय कट्टि के फाफिजारियों में की वर्णार्थ का हेतु' वर्तमान राज्य की वृद्धता' की वर्णार्थ में लाया, 'यह की विरोध' तथा 'यह की नीति' बताया। इन उम्मीदों में श्रेष्ठ निष्ठा मुख्य प्रतिष्ठित है ; पक्षीय निष्ठा २० प्रतिष्ठित तथा ऐन ८० प्रतिष्ठित व्यक्ति निष्ठा स्पष्ट होती है। यह विचार है स्पष्ट होता है कि मण्डल समिति के

कैसा सामाजिक जीवन की अधिक बढ़ियाता पैदा होती है । क्यापिजार्जिया का अनुमान है कि परस्पर मिलने से बहुत कम बीबी, बिमारियाँ के वातान प्रदान के प्रत्यक्ष कारण अधिक हानि, ज्ञान में जीवन का बीबा, कार्यालय की सुविधा बीबी और पैर-उत्थापन बीबी । ये ज्ञान राष्ट्रीय स्तर में लगायत छिड़ हो जाती हैं । काः की राजनीतिक यहाँ है केवल काँ की परस्पर नियमित हो से बहुत नाकाम है अगर अगर पैरालिस में प्रत्यक्ष बिमार विभिन्न का प्रतिनिधित्व करनेवाले राजनीतिक संस्थाओं से बाहर भी करना चाहिए । यह प्रकार के वातावरण से यही निष्ठा पैर जिस की जीव निष्ठा में परिवर्तित हो जाती ।

“ गुणवत्ता ”

जीव, ज्ञान का होना मिलने काय हो जाती है यही गुणवत्ता है । राजनीतिक यहाँ के जीवन, व्यवहार, नीति, कार्यक्रम, किस, बिमारयारा एवं मिश्रित प्रक्रिया में गुणवत्ता अनिवार्य गुण है । यदि किसी के बीच में गुणवत्ता का होना कम हुआ तो नौकरीयता करनेकी किसी अवस्था में बिबरताय बढ़ेगा और राजनीतिक यहाँ का औद्योगिक स्वल्प किसी का वायना क्याही बिप्लव की बिज पैरि पलकित बीबी । जीवन में गुणवत्ता उत्पन्न करनेवाले तीन मुख्य कारक हैं ज्ञान यहाँ का प्रत्यक्ष बिजय बाँकन्य तथा सामान्य भाषा में लिखत बीबी, द्वितीय-बिज्ञान तथा अविज्ञान अवस्था के बिबर ज्ञान का बहुत बीबी तथा तृतीय प्रत्यक्ष अवस्था तक नवीकृत बावजारी पहुँचाने के बिबर पलायन रहित एवं कुमायी केदार व्यवस्था बीबी । किन्तु राजनीतिक यहाँ के जीवन में ये तीनों कारक कुम्हूय एवं अवत होनी उहाँ गुणवत्ता की अधिक यहाँ में बीबी ।

राजनीतिक यहाँ का जीवन, नीति, कार्यक्रम तथा औद्योगिक जित्त बीबी है । यही औद्योगिक के अनुसार जीवन किया जाता है । औद्योगिक में गुणवत्ता उत्पन्न करने के बिबर किस एवं अविज्ञान बनाये जाते हैं । औद्योगिक की अवस्थाओं में औद्योगिक अवस्थाओं, अवस्थाओं से अविज्ञान क्यापिजार्जिया की निम्नलिखित बिधि, पदा-बधि, बिजार्जिया एवं कर्तव्य, बावुजार्जिया औद्योगिक, पुरी भाषा एवं बिजार्जिया :

केता है क्योंकि यह के धीकान की चारा १४ में विवरण दिया गया है । क्या इन व्यवस्थाओं के दो कारण होने नहीं हैं कि यह का धीकान का जो गुण न गुण हो, या गुण होने पर भी सबसे धीकान व्यवस्था न व्यवस्था हुई हो या इन विधियों का फल हो न दिया जाता हो बादि ।

यह के विधी व्यवस्था की यह की व्यवस्था है धीकान करने का क्या नियम है ? के उतर में 'आर्य समाज कीटियों' के २२, ५ प्रविष्ट पदाधिकारियों में 'वारीयण' स्पष्टीकरण, निष्कासन एवं विधी की प्रस्ताव का इन बताया गया १६, ५ प्रविष्ट में 'कभी एक कीट प्रत्यक्ष ही नहीं बताया' कहा क्योंकि यह यह के धीकान 'आर्य समाज कीटियों' के फल में के अनुसार तीन तथा पदान्ति के अनुसार एक व्यवस्था के साथ व्यवस्था है धीकान करने की कार्यवाही की गई है एक व्यवस्था की व्यवस्था में विधी की व्यवस्था के साथ धीकान कार्यवाही नहीं हुई है । मण्डल धीकानियों के पदाधिकारियों में ५० प्रविष्ट वारीयण, स्पष्टीकरण एवं निष्कासन २५ प्रविष्ट निष्कासन एवं विधी की प्रस्ताव तथा २५ प्रविष्ट 'माह' नहीं 'कहा' तथा 'धीकान' कीट के पदाधिकारियों में ५० प्रविष्ट 'माह' नहीं २५ प्रविष्ट स्पष्टीकरण एवं निष्कासन तथा २५ प्रविष्ट 'वैधानिक, वारीयण, स्पष्टीकरण, निष्कासन एवं निष्कासन' बताया । इन उतरों में स्पष्ट है कि 'आर्य समाज कीटियों' के पदाधिकारियों में 'अनु विधान' व्यवस्था धीकान है 'धीकान' के पदाधिकारियों में व्यवस्थाओं का है जो है । विधी की यह का धीकान पूर्ण प्रविष्ट की स्पष्ट नहीं करता है । 'आर्य समाज कीटियों', मण्डल धीकानियों तथा 'धीकान' के एक ही पदाधिकारी की वही यह के व्यवस्था धीकान फल एवं धीकान फल की पूर्ण जानकारी नहीं है । १२०

'वाक्य यह तीन तीन है उत्तर बताया है ? के उतर में 'आर्य समाज कीटियों' के पदाधिकारियों में 'अनुविधान' में १५ जून ('वैधानिक विधान') २ जनवरी ('वैधानिक विधान') तथा २६ जनवरी ('वैधानिक विधान') बताया २२, ५ प्रविष्ट में १४ नवम्बर ('वैधानिक विधान') २६ जनवरी ('वैधानिक विधान') बताया ; २३, ५ प्रविष्ट में २० जनवरी ('वैधानिक विधान') बताया और १६, ५ प्रविष्ट में १६ नवम्बर ('वैधानिक विधान') बताया ;

मण्डल समितियों के ७५ प्रतिष्ठान स्थापिकादियों में जानकारी नहीं करा गया २५ प्रतिष्ठान में स्वामा प्रचार मुखी एवं पीछा पीछेपाठ उपस्थान कम पिछे बताया गया राष्ट्रीय कोष्ठ के स्थापिकादियों में ५० प्रतिष्ठान जोड़ नहीं, २५ प्रतिष्ठान हाथ नहीं एवं २५ प्रतिष्ठान राष्ट्रीय फर्म बताया । इन उपरों से स्पष्ट है कि पीछे उत्तरी के स्थापिक स्थापना पत्रक कठिन कीटियों के स्थापिकादियों में है और मण्डल समितियों तथा राष्ट्रीय कोष्ठ के स्थापिकादियों में यह की उत्तरी के प्रति उपेक्षाओं की प्रमाणित किया है । इसके पत्र के उत्तर और राष्ट्रीय फर्म में स्पष्ट फर्म की सुस्पष्टता का कथा भी पिछापी कहा है । प्रत्येक राजनीतिक पत्र की राष्ट्रीय फर्म कथन बताया चाहिए ।

पत्र में प्रोत्साहित के बापारों का विवरण फिरी की पत्र के बीकान में अतिरिक्त नहीं है किन्तु उपर्य कनेपाठे नागरिक की वरिष्ठ बीकानों का पत्रों का प्रचलनार्थ पिछाई नहीं देता है । इसके कथा में प्रोत्साहित का बाकांसी सदस्य पत्र के अधिकारियों (Bazaar) की मर्क का कथार प्राप्त करने के लिए वाध्य हो जाता है ।

बापका पत्र कने बावस्थ कार्यो के बीकान के लिए फर्म की एकत्रित करता है ? के उत्तर में पत्रक कठिन कीटियों के स्थापिकादियों में उपस्थान मुखी एवं पान बताया और यही उत्तर मण्डल समितियों एवं राष्ट्रीय कोष्ठ के स्थापिकादियों ने भी किया । किन्तु राष्ट्रीय कोष्ठ के बीकान्यता ने व्यापारियों की वरिष्ठ (Bazaar) प्राप्ति फर्म (परमिट) का अनुपात (जड़वन्ध) प्रदान करवाकर भी फर्म लिये जाने की बात कही । यदि पत्र पत्र प्रकार की सरकारी पुक्काओं की पिछाई भी पत्र के लिए फर्म केंद्र करते हैं तो अन्य पुक्काओं के मृत्य की पुजाई जाते हैं । यहाँ के बीकानों में फर्मका प्राप्ति है किन्तु सदस्यता मुख, प्रतिनिधि मुख एवं बीकान के बाकिर अन्य प्रीतों का विवरण नहीं है ।

पत्र कने कथित फर्म की कथा कथा कथन करते हैं ? के उत्तर में पत्रक कठिन कीटियों, मण्डल समितियों तथा राष्ट्रीय कोष्ठ के सभी स्थापिकादियों में पुनर्भा कथा, बाकिर, बाधा कथन, कथन, कथन, कथा तथा प्रत्यासी है

संश्लेषण करके बताये । किन्तु आजकल जटिल नीति के एक कार्याकारी ने उत्तरीय (यूरोप) तथा दान ने भी अन्य का केंद्र किया जिसकी पुष्टि दीवीय नीति के एक कार्याकारी ने भी की । यदि यह उत्तरीय एवं दान में एक अन्य नहीं है तो उल्टा बता उस की क्यों नहीं उन पास । अब: यह के केंद्र में मुख्यतया के लिए एक के साथ एवं अन्य के प्रोत्साहन का निर्धारण और जटिल पास काय्य होना चाहिए ।

यह भी नीतियों, कार्यक्रमों एवं विचारधाराओं की किसी मुख्यतया उनके केंद्र में है उनके लिए कार्याकारियों की किसी मुख्यतया उनके केंद्र में है उनके लिए कार्याकारियों के अलग-अलग समस्याओं में है कुछ पर कार्याकारियों में प्रत्यक्ष किया गये । राष्ट्र में उल्टा केंद्र जारी का केंद्र है ? के ऊपर में आजकल जटिल नीतियों के कार्याकारियों ने मुख्यतया मुख्यतया की भाषना " सभी वर्गों के बापसी केंद्रों की पुष्टि ", " सभी वर्ग के कार्य " और पर यह, "राजनीतिक वर्गों की उत्पत्ति की होना " सम्प्रदायिकता, बाधित एवं नीची-नीची का कार्य का होना " बताया । उन ऊपरों है यह अनुमानित होता है कि राष्ट्रीय उल्टा उत्पन्न करने के लिए किसी (व्यक्ति, राजनीतिक यह का केंद्र) प्रत्यक्ष होना चाहिए । यह निर्विवाद मुख्य प्रतीत होता है कि राष्ट्र में विप्लव उत्पन्न करने में राजनीतिक वर्गों की अधिक उत्पत्ति की उल्टा होती है । मुख्यतया कार्याकारियों के कार्याकारियों ने राष्ट्र में उल्टा करने के लिए " न्याय एवं उत्पत्ति ", " मानव उत्पत्ति ", " मानव भाषा, वर्ग एवं उत्पत्ति " ; राष्ट्र में मानव भाषा तथा उत्पत्तियों का केंद्र उल्टा उपाय बताया । उन ऊपरों है समस्या है मानव का दायित्व व्यक्ति, मानव तथा उत्पत्ति तीनों पर है । दीवीय नीति के कार्याकारियों ने भी " वर्ग निर्धारण ", " केंद्र के विरोध में एक वर्ग " गरीबी दूर करना " एवं केंद्र के उपाय बताया । दीवीय नीति के एक कार्याकारी ने तो यहाँ तक कहा कि " राष्ट्र में उल्टा का भी नहीं केंद्र " कि वैचारिक रिक्रिया का अधिक है विप्लव कारण यह की स्पष्ट योजना का बभाव है । आजकल जटिल नीतियों, मुख्यतया कार्याकारियों तथा दीवीय नीति के कार्याकारियों के ऊपरों में मानव केंद्र का केंद्र है कि वैचारिक मुख्यतया के बभाव का केंद्र होता है । यदि संश्लेषण राजनीतिक वर्गों ने विचारों की पिछा की होती तो कार्याकारिता निर्दिष्ट की रहती ।

‘ भारत का उत्थान किंवा विचारधारा है ईश्वर है ? के उत्तर में पञ्चक कण्ठि
 कीर्तियों के पदाधिकारियों ने ‘ श्री शरीर हाज’, ‘ आत्मवाद’, ‘ राष्ट्रीयवाद’,
 वैयक्तिकता का उत्थान’ तथा ‘ धर्म का महत्व कम होना’ है ईश्वर बताया । इन उत्तरों
 में कण्ठि की आत्मवादी विचारधारा का नाम बताया किन्तु श्री शरीर हाज की
 बात उल्टी विपरीत थी है । वैयक्तिकता का ध्यान एवं धर्म का वैयक्तिक महत्व पदाधि-
 कारियों के वैयक्तिक धर्म प्रभाव डालना प्रतीत होता है । मण्डल समितियों के
 पदाधिकारियों ने ‘ श्री’, ‘ आत्ममायावाद’, ‘ हिन्दूवाद’ है भारत का उत्थान
 होना बताया किन्तु भारतीय जनता का स्वतन्त्र मानववाद भी स्पष्ट होता है
 धर्म की छाप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की हिन्दूवादी विचारधारा का भी प्रभाव
 फैल रहा होता है । राष्ट्रीय कीर्तियों के पदाधिकारियों ने वैयक्तिकता एवं
 आत्मता पर आधारित आत्मवाद’ राष्ट्रीय विचारधारा’ तथा ‘ आत्मवाद’ उल्टा
 उभाय बताया किन्तु आत्मवाद की वैयक्तिक कुरीतियों की आवश्यकता का उचित भिन्नता
 है । वास्तव्य वास्तव्य है कि भारतीय जनता ने अपनी विचारधारा आत्मवादी नहीं
 घोषित किया है किन्तु भी पदाधिकारी बतला रहे हैं श्री कि राष्ट्रीय विचारधारा
 की प्रत्यक्षता के अभाव का परिणाम होता है । वैयक्तिक दृष्टि है राष्ट्रीय कीर्तियों के
 पदाधिकारी पञ्चक कण्ठि कीर्तियों के निष्ठ है किन्तु पञ्चक कण्ठि कीर्तियों के
 पदाधिकारी मण्डल समितियों की कार्यविधि है वैयक्तिक विचारों है प्रभावित प्रतीत
 होते हैं ।

‘ जीवनशैली’

जीवनशैली केन्द्र की यह विशेषता है श्री कि अपनी बल के
 शक्तियों, कमशक्तियों, अस्थिरता, भिन्नता एवं व्यक्तियों के प्रति कर्त्तव्य तथा कर्त्तव्य मानवक
 रहती है । किन्तु बल के केन्द्र में जीवनशैली का भी श्री यह कि व्यक्तियों, कर्त्तव्य-
 शक्तियों एवं कर्त्तव्य का वास्तविक प्रतिनिधित्व नहीं कर लैला और अन्त में जनश्रौश
 की जवाबदायी है मुख्यतः प्राण स्थान देना । शैली विधान का में राजनीतिक
 बलों की वैयक्तिक कर्त्तव्यों में किसी जीवनशैली है उल्टा अनुमान कुछ प्रश्नों के
 उत्तरों है बताया का करता है ।

वाजी यह की किस यह है अधिक कम छात्रा है ? के उतर में
 काक काग्रेस कीटियों के फटाफटाहियों ने १० प्रतिशत भारतीय लीकड के तथा
 ३० प्रतिशत भारतीय जलक के कम बताया किन्तु साथ साथ यह भी कहा कि
 वायव्यजालीय पीकणा के परवाह कम किया है के कम नहीं छात्रा है । मण्डल
 कमितियों के फटाफटाहियों ने १० प्रतिशत काग्रेस तथा १० प्रतिशत भारतीय
 लीकड के कम का अनुभव है और राष्ट्रीय लीकड के फटाफटाहियों ने ३५ प्रतिशत
 काग्रेस तथा २५ प्रतिशत किया की यह है नहीं कम का अनुभव है । उन उतरों के
 स्पष्ट है कि भारतीय लीकड के हितों पर भारतीय जलक वायव्य नहीं कर रहा है
 काकि भारतीय जलक के फटाफटाही भारतीय लीकड एवं काग्रेस दोनों के मनीष
 है, काग्रेस के फटाफटाही भारतीय लीकड है अधिक मनीष है और भारतीय लीक
 यह के काग्रेस है अधिक मनीष है काग्रेस काग्रेस एवं भारतीय लीकड के फटाफटाही
 एक दूसरे के यह है अधिक कम अनुभव करते हैं ।

ऐसा अनुभव साथ क्यों करते हैं ? के उतर में काक काग्रेस कीटियों
 के फटाफटाहियों ने भारतीय लीकड है कम का अनुभव उनके जातीय वायव्य पर
 लैकन एवं विरापरीवाद की प्रोत्साहन है किया और भारतीय जलक है कम का
 अनुभव उनके धार्मिक छिन्नाहियों एवं निष्ठावान कार्यकर्ताओं है किया ; मण्डल
 कमितियों के फटाफटाहियों ने काग्रेस है कम का अनुभव ' उन्हें प्रष्ट लोगों का
 प्रकट तथा लैकन में होने है किया और भारतीय लीकड है कम का अनुभव उनके
 जातीय वायव्य एवं जलकहियों के पदकों की लैकन किया जाना है किया ; राष्ट्रीय
 लीकड के फटाफटाहियों ने काग्रेस है कम का अनुभव उनके अनुभव तथा कम तक लैकन
 में की रहना है किया । कम का उदीपन काग्रेस के लैकन में की रहने है ; भारतीय
 जलक धार्मिक छिन्नाहियों एवं निष्ठावान कार्यकर्ताओं है और भारतीय लीकड के
 जातीय वायव्य पर लैकन है हो रहा प्रतीत हुआ ।

किस यह है वापसी कम क्यों नहीं छात्रा है ? के उतर में काक
 काग्रेस कीटियों के फटाफटाहियों ने १० प्रतिशत लैकन काग्रेस कीटियों लैकन और
 लैकन और विरापरी नहीं, १४, २ प्रतिशत लीकडहियों कीटियों लैकन की लैकन
 लैकन नहीं, १४, २ प्रतिशत अनुविष्ट यह यह नहीं है तथा १४, २ प्रतिशत

राष्ट्रीय जनसंघ की एकता वादीयता का आधार नहीं बताया ; पण्डित जीधरजी के पदाधिकारियों ने हिन्दू महासभा , रामराज्य परिषद्, ईश्वर कृष्ण, श्रीधरजी कृष्णनन्द तथा कृष्ण के साथ प्रसिद्ध में यह का कथन सभी ईश्वरों का कार्य पर न होना तथा कृष्ण के प्रचारों में प्रसन्न परिणाम बताया और राष्ट्रीय जीधर के पदाधिकारियों ने ज्ञान का है भारतीय कार्य - " क्योंकि यह सब का ईश्वर ईश्वर ही है ज्ञान कहा है, ^{१२१} तथा श्रीधरजी - " क्योंकि यह सब कर्मात्मा है, उन कारणों से यह का कथन बताया । अतः यह स्पष्ट है कि किन राजनीतिक वर्गों की कर्मात्मा होना किमान का हीन नहीं है उसे विस्तृत रूप नहीं ज्ञान और किसी एककी कर्मात्मा नहीं है एवं प्रति स्वीकृत है उसे ही यह का उद्दिष्ट शिष्टों के लिए अस्मिता ज्ञान बताया है ।

राजनीतिक यह कथन की कर्मात्मा, उच्छास, कर्मात्मा कापण्य तथा विपण्य के प्रति उत्तर है कि उनकी कर्मात्मा का परिणाम होता है ।" कथन की उच्छास का ज्ञान कहे करते हैं ? के उत्तर में तीनों वर्गों की कर्मात्मा के पदाधिकारियों ने कर्मात्मा है बताया । विचारणीय प्रश्न है कि कर्मात्मा कर्मात्मा किया जाता है या विपण्य कर्मात्मा पर ही ? उच्छास वास्तविक ज्ञान का ही कर उच्छास है । कर्मात्मा किमान का हीन के कर्मात्मा एवं कर्मात्मा दोनों विपण्य के नागरिकों ने ज्ञान में मतभेदों की बात पर अधिक ध्यान दिया जाता है और ज्ञान के परभाव नेताओं की बात पर अधिक ध्यान दिया जाता है" है यह प्रसिद्ध कर्मात्मा प्रसन्न किया । यह स्पष्ट है स्पष्ट होता है कि ज्ञान में कर्मात्मा का कर्मात्मा यह के ईश्वर द्वारा विपण्य रूप है होता है और ज्ञान कर्मात्मा ही जाने पर नागरिकों द्वारा राजनीतिक वर्गों है उच्छास नहीं है ईश्वरों का कर्मात्मा होता है । राजनीतिक वर्गों की कर्मात्मा के प्रति उत्तर देने के लिए प्रगाढ़ एवं स्पष्ट कर्मात्मा विचार्य है ।

" वाप किन्तु उद्देश्य है कि कर्मात्मा करने वाली है ? के उत्तर में " उच्छास कर्मात्मा जीधरों के पदाधिकारियों ने " कर्मात्मा ज्ञान तथा उच्छास ज्ञान", " परिणाम" कर्मात्मा एक कहा है , " यह की कर्मात्मा के लिए" और राजनीतिक नेता के रूप में ज्ञान के लिए ^{१२२} उच्छासों की स्पष्ट किया किन्तु कर्मात्मा एवं कर्मात्मा शिष्टों के साथ

कार्य की परिहृति होना है ; मण्डल समितियों के पदाधिकारियों के, कार्य की रचना की, यह का प्रभाव नहीं, कार्य का प्रचार की और विद्यार्थी का प्रचार करने के उद्देश्यों को बताया जिसे राष्ट्रीय विचार पर विशेष ध्यान ला प्रतीय होना है और यह भी बिलम्ब होना है कि वे ही कार्य का अपनी पुनर्निर्माण के कार्य की पुनर्निर्माण की और राष्ट्रीय कार्य के पदाधिकारियों के अपने कार्य के उद्देश्यों की ' विचार एवं वास्तविक की वास्तविक ' , यह का एक कार्य ' कार्य ' कार्य है स्पष्ट किया किसे पण्डित एवं कार्यकारी के प्रति सम्बन्धित मिलती है । कि राष्ट्रीय पण्डित के उद्देश्य में राष्ट्रीय विचारों की हीन प्राथमिकता की जाती है उन्हें वास्तविक जीवन-जीवन कार्य है और किसे कार्य की हीन प्राथमिकता की जाती है उन्हें वास्तविक जीवन-जीवन कार्य है । वस्तुतः उद्देश्य का है किसे वास्तविक एवं वास्तविक जीवन-जीवन का जान ही किन्तु विचार काव है ।

वास्तविक दृष्टि है कि राष्ट्रीय पण्डित का पवित्र वस्तु विचारों के रहा है और कार्य के उद्देश्य में कार्य कार्य कार्य के ५० प्रतिशत पदाधिकारियों ने अपने कार्य का नाम बताया तथा उद्देश्य ५० प्रतिशत ने भारतीय कार्य का नाम उद्देश्य बताया कि कार्य की नीतियाँ हैं उद्देश्य काव का है और उद्देश्य पवित्र वास्तविक है । मण्डल समितियों के ५० प्रतिशत पदाधिकारियों ने अपने कार्य का वस्तु पवित्र देता किन्तु २५ प्रतिशत ने उद्देश्य विरोधी कार्य के उद्देश्य के कारण उद्देश्य का तथा २५ प्रतिशत ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कारण भारतीय उद्देश्य का पवित्र वस्तु देता राष्ट्रीय कार्य के ५० प्रतिशत पदाधिकारियों ने अपने कार्य का वस्तु पवित्र देता तथा उद्देश्य ५० प्रतिशत ने भारतीय कार्य का पवित्र वस्तु देता किसे उद्देश्य कार्य कार्य वस्तु उद्देश्य और किन्तु किन्तु वही के जान बताया की । उद्देश्य विचारण है स्पष्ट है कि प्रत्येक कार्य के पदाधिकारियों में अपने कार्य के २५ प्रतिशत उद्देश्य पवित्र की उद्देश्य की उद्देश्य की है । भारतीय कार्य के वस्तु पवित्र की उद्देश्य का कार्य कार्य कार्य एवं राष्ट्रीय कार्य के पदाधिकारियों में है । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों कार्य एवं भारतीय उद्देश्य विचारों का वस्तु पवित्र देती हैं किन्तु अपने कार्य है का ही ।

राजनीति में आपके तीन दृष्टि बिन्दु ज़रूरी हैं के उधार में व्यापक ज़रूरत ज़रूरतों के पदाधिकारियों ने ६६, ७ प्रक्रिया स्वतन्त्र, मण्डल दृष्टियों के पदाधिकारियों ने ६६, २ प्रक्रिया स्वतन्त्र तथा राष्ट्रीय नीति के पदाधिकारियों ने ६६, ७ प्रक्रिया स्वतन्त्र व्यक्तियों के नाम बताये । इससे स्पष्ट है कि व्यापक राजनीतिक दृष्टि में प्रवेश करने पर अन्य व्यक्तियों के व्यक्तियों के है जो नैतिक भाव रखे जाता है किन्तु स्वतन्त्र भावना का छाप नहीं होता है । राष्ट्रीय नीति के पदाधिकारियों में फिर कानून की प्रक्रिया में लक्ष्यवादी दृष्टि प्रतीत होती है ।

क्या वापस विश्वास है कि कला के सभी कार्य वैयक्तिक एवं औपचारिक हों वे ही कार्य हैं ? के उत्तर में आर्य कवि कौटिल्य के पदाधिकारियों ने ६६, ७ प्रतिकृत नहीं" तथा ३३, ३ प्रतिकृत "हाँ" क्या, मन्त्र उपाधियों के पदाधिकारियों ने ७५ प्रतिकृत "नहीं" तथा २५ प्रतिकृत "हाँ" क्या, क्या राजीय कविता के पदाधिकारियों ने ७५ प्रतिकृत "नहीं" तथा २५ प्रतिकृत "हाँ" क्या । इसी स्पष्ट होता है कि यहाँ के अधिकांश पदाधिकारियों में औपचारिक प्रणाली है सभी कार्यों की छिद्र में पूर्ण विश्वास नहीं है । वैयक्तिक एवं राजीय प्रणाली है कला के सभी कार्यों की पूर्ण करनेवाली पद्धतियों का राजनीतिक पक्षों की पूर्ण करना चाहिए तथा कला के क्षेत्र में प्रविष्ट व्यक्तियों की उन्हें प्रशिक्षित करके बाहर बन्धना औपचारिक है प्रति कलात्मक व्यवस्थाएं एवं कलात्मक के माध्यमों से ही और राजनीतिक दल "प्राथमिक व्यक्तियों" में परिवर्तित हो जाता है ।

साप्ताहिक र्वि दुर क्सापिकारिर्वा का कर्ीकृत विवरण :

१- दूरकृत कर्ीकृत

<u>वर्गीकृत कर्ीकृत का नाम</u>	<u>कृत का नाम</u>	<u>साप्ताहिक क्सापिकारिर्वा कर्ीकृत</u>
वर्गीकृत कर्ीकृत कर्ीकृत	वर्गीकृत भारतीय राष्ट्रीय कर्ीकृत	६
वर्गीकृत कर्ीकृत	वर्गीकृत भारतीय कर्ीकृत	४
वर्गीकृत कर्ीकृत	वर्गीकृत भारतीय कर्ीकृत	४
योग -		१४

२- वर्गीकृत कर्ीकृत

<u>वर्गीकृत का नाम</u>	<u>प्रतिफल</u>
वर्गीकृत	७५. २ प्रतिफल
वर्गीकृत	७. २ ११
वर्गीकृत	७. २ ११
वर्गीकृत	७. २ ११
वर्गीकृत	७. २ ११
योग -	१००

३- वर्गीकृत के क्सापिकारिर्वा कर्ीकृत

<u>वायु विस्तार</u>	<u>प्रतिफल</u>
२२-२२ वर्ग	२५. १७
२२-४२ वर्ग	४०. ००
४४-४४ वर्ग	१४. २६
४४-६४ वर्ग	७. १४
	<hr/>
	१००
योग-	

३- राजनीतिक वायु के अनुसार वर्गीकरण

<u>वायु विस्तार</u>	<u>प्रतिशत</u>
२-१० वर्ग	४२, ८०
११-१६ "	३५, ०१
१७-२८ "	०, १४
२९-४० "	—
४०-४६ "	१४, २८
<hr/>	
योग -	१००

४- शैक्षिक योग्यता के अनुसार वर्गीकरण

<u>स्तर</u>	<u>प्रतिशत</u>
कक्षा ५ तक	०, १४
कक्षा ८ तक	२१, ४३
कक्षा १० तक	३५, ०२
स्नातक + विधायिकाधि + पदवीधारी	२१, ४३
स्नातकोपर + " + "	१४, २८
<hr/>	
योग -	१००

५- शिक्षा के सन्तान-क्रम के अनुसार वर्गीकरण

<u>श्रेणी</u>	<u>प्रतिशत</u>
प्रथम सन्तान	१४, २८
द्वितीय सन्तान	४२, ८०
तृतीय सन्तान	०, १४
चतुर्थ सन्तान	२८, ४०
पंचम सन्तान	०, १४
<hr/>	
योग -	१००

७- विभिन्न धान्यान्तों की संख्या के अनुसार वर्गीकरण

<u>वर्ग</u>	<u>प्रतिशत</u>
सूअ	१४. २८
रु	७. १४
दी	७. १४
दीप	१४. ७२
पार	७. १४
पारि	१४. २८
वः	७. १४
वस्त	७. १४
	<hr/>
योग -	१००

८- वैवाहिक जीवन के अनुसार

<u>प्रकार</u>	<u>प्रतिशत</u>
वध्याति	६२. ८६
विधुर	७. १४
	<hr/>
योग -	१००

९- पदार्थाधि के अनुसार वर्गीकरण

<u>वर्ग</u>	<u>प्रतिशत</u>
२ मास से २ वर्ष तक	७१. ४४
३ वर्ष तक	१४. २८
४ वर्ष तक	१४. २८
	<hr/>
योग -	१००

१० - व्यवसाय के अनुसार वरीकरण

<u>नाम व्यवसाय</u>	<u>प्रतिशत</u>
कृषि	७१, ४४
व्यापार	१४, २८
व्यापार	७, १४
व्यवसाय	७, १४
	<hr/>
योग -	१००

११- कृषि के सीमकट के अनुसार वरीकरण

<u>कृषि सीमकट विस्तार</u>	<u>प्रतिशत</u>
५ - १० बीघा	२८, ५७
११- २० "	२८, ५७
२१- ३० "	१४, २८
३१- ४० "	७, १४
४१- ५० "	७, १४
कमी जिनका स्थापित नहीं	१४, २८
	<hr/>
योग -	१००

१२- गौण व्यवसाय के अनुसार वरीकरण

<u>नाम व्यवसाय</u>	<u>प्रतिशत</u>
कृषि	२१, ४२
गौण	१४, २८
ठीका	१४, २८
व्यापार	७, १४
कौन नहीं	४२, ८४
	<hr/>
योग -	१००

११- राजनीति में प्रवेश के समय की वायु के अनुसार कृषि

<u>वायु</u>	<u>प्रतिशत</u>
११-१७ वर्ष	२८, ५८
१८-२२ वर्ष	१४, २८
२३-२७ वर्ष	३५, ७२
२८-३२ वर्ष	१४, २८
३३-३७ वर्ष	७, १४
<hr/>	
योग -	१००

जारीत कृषि में निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं :-

- (१) प्रायः पदाधिकारियों का प्रतिशत कम है ।
- (२) २८, ५७ प्रतिशत पदाधिकारियों की वायु २२-४३ वर्ष तक है जो कि नई पीढ़ी की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिकाओं का लेता है ।
- (३) ७१, ४७ प्रतिशत पदाधिकारी कदा १० या उससे कम की उमिर में कार्यरत होते हैं । इस की अधिकतर पदाधिकारी नहीं हैं ।
- (४) पदाधिकारियों में शिक्षा की दूसरी स्तर का प्रतिशत कम है । उच्च शिक्षा की स्तर का कम है ।
- (५) पदाधिकारियों में तीन स्तरों के प्रतिशत कम है जिनकी वायु का विस्तार २६-३८ वर्ष तक है जिन पर परिवार नियोजन का प्रभाव प्रतीत होता है । कुल ६४, २८ प्रतिशत पदाधिकारियों के पास एक से तीन की संख्या नहीं है ।
- (६) ६२, ८६ प्रतिशत पदाधिकारी सामान्य जीवन व्यतीत करनेवाले होते हैं जो कि उचित होता है कि विपुल जीवन पदाधिकारी अपने में बाक है ।

- (७) दो वर्ग है यह वर्ग तक किसी राजनीति में प्रवेश किए हुए हुआ
ऐसे पदाधिकारियों का प्रविष्टता अनिवार्य है । राजनीति में प्रवेश के
काल की न्यूनतम आयु १३ वर्ष तथा अधिकतम ३३ वर्ष निम्नी ।
- (८) ३५, ७२ प्रविष्टता पदाधिकारियों में २३-२७ वर्ष की आयु में राजनीति
में प्रवेश किया और २८, ५८ प्रविष्टता पदाधिकारियों में २९-३३ वर्ष
की आयु में राजनीति में प्रवेश किया यह प्रकार ६४, ३ प्रविष्टता पदाधिकारियों
में ३३-३७ वर्ष की आयु में राजनीतिक वर्गों में अपना समय बीता है।
- (९) ७१, ४३ प्रविष्टता पदाधिकारी २ पाठ है २ वर्ष तक अपने एक पद पर बने
रहनेवाले निम्नी और तीन पदों अधिक वर्गों में अपने पद पर वापस है ।
- (१०) ७१, ४३ प्रविष्टता पदाधिकारियों का मुख्य व्यवसाय नृपिण है ।
- (११) ५०, १४ प्रविष्टता पदाधिकारियों के पाठ पाठ है बीस बीस तक नृपि
निम्नी । नृपिणीन नृपिणों की पदाधिकारी नहीं निम्नी । ५०, १२ प्रविष्टता
पदाधिकारी नृपिण व्यवसाय में करनेवाले निम्नी । उन वर्गों में स्पष्ट है
कि राजनीतिक वर्ग में अग्र्य रहने या पदाधिकारी होने के लिए
नृपिण व्यवसाय करते नृपिणिक संनमता रहना अधिक आवश्यक है ।

- १- राबर्ट माउन्ट - जॉर्जियाई - २ वॉशिंग्टन वाफ़् वाणिज्यिक बैंक
जॉर्जियाई - वॉशिंग्टन वाफ़् बैंक वी०एन०एन०, १९७० पृष्ठ २५ ।
- २- राबर्ट माउन्ट - वॉशिंग्टन वाफ़्, १९५८ पृष्ठ ३७ ।
- ३- ए० कुवतूर - वॉशिंग्टन वाफ़्, १९५५, पृष्ठ ४ ।
- ४- ए० कुवतूर, वॉशिंग्टन वाफ़्, १९५५, पृष्ठ १०६ ।
- ५- डब्ल्यू० वी० रन्धीनेन, वॉशिंग्टन वाफ़् वॉशिंग्टन यूनिवर्सिटी, १९५५, पृष्ठ ८६ ।
- ६- ए० कुवतूर, वॉशिंग्टन वाफ़्, १९५५, पृष्ठ ६१ ।
- ७- वाशाट्सावर के वावावर पर ।
- ८- ए० कुवतूर - वॉशिंग्टन वाफ़्, १९५५, पृष्ठ ८० ।
- ९- पूवार्क, पृष्ठ ८५ ।
- १०- जॉर्जियाई वाफ़् वी० वॉशिंग्टन बैंक जॉर्जियाई, २१ जुलाई, १९७४, अनुच्छेद ८(४) पृष्ठ ६१ ।
- ११- पूवार्क, अनुच्छेद ५ (ब) (२) (३) पृष्ठ ५-६ ।
- १२- वॉशिंग्टन वाफ़् वॉशिंग्टन बैंक जॉर्जियाई - ७ जून, १९७४ पृष्ठ ६-८ ।
- १३- वॉशिंग्टन वाफ़् वॉशिंग्टन बैंक जॉर्जियाई अनुच्छेद ७(२) के अंतर्गत २ पृष्ठ १० ।
- १४- जॉर्जियाई वाफ़् वी० वॉशिंग्टन बैंक जॉर्जियाई, २१ जुलाई, १९७४, अनुच्छेद ५(ब) -५
- १५- भारतीय वाणिज्य बैंक वॉशिंग्टन बैंक, मई १९७२ पृष्ठ १२-१३ ।
- १६- वॉशिंग्टन वाफ़् वी० वॉशिंग्टन बैंक जॉर्जियाई - ७ जून, १९७४, अनुच्छेद ७(१) के अंतर्गत, पृष्ठ ६
- १७- वाफ़् जॉर्जियाई वॉशिंग्टन, वॉशिंग्टन बैंक वॉशिंग्टन के फ्याक्टोरिंग्स वी०
वाशाट्सावर ।
- १८- पूवार्क ।
- १९- जॉर्जियाई वाफ़् वी० वॉशिंग्टन बैंक जॉर्जियाई, अनुच्छेद २, पृष्ठ १-२ ।
- २०- भारतीय वाणिज्य बैंक वॉशिंग्टन बैंक, अनुच्छेद ८-१५ पृष्ठ १-६ ।
- २१- भारतीय वाणिज्य बैंक वॉशिंग्टन वॉशिंग्टन, पृष्ठ १-२
- २२- वॉशिंग्टन वाफ़्, वॉशिंग्टन बैंक वॉशिंग्टन वी०

- २३- प्रतापपुर विभाग कृषि के कुछ ग्राम बीछा किसान समा नियमन नीति में सम्मिलित है ।
- २४- १२ कुन, १९७७ ई० के निर्वाचन के समय ।
- २५- नहीं
- २६- नहीं
- २७- श्री प्रदीप चन्द्र मिश्र, महामंत्री हैं सादातकार निर्वाच १-६-७६ तथा बीछा मंत्री के रूपपर कुछ है सादातकार निर्वाच ६-१०-७६ ।
- २८- श्री कन्हैया ठाकुर जी, अध्यक्ष हैं सादातकार निर्वाच २०-६-७६ तथा महामंत्री श्री बीनामाय पाण्डेय हैं सादातकार निर्वाच १०-६-७६ ।
- २९- काँचीचूड़न बाबा की बाठ बीछा कृषि, अनुसूच ६ (ब) पृष्ठ ८ ।
- ३०- बाबा कृषि कीछियाँ हैं सादातकार के बाजार पर ।
- ३१- २२ अनुसूच ६ पृष्ठ ७ ।
- ३२- श्री रामचंद्र जयराज, जिन उत्तर ज्योतीछिष्ट कृषि, ज्योती, सादातकार निर्वाच २०-६-७६ ।
- ३३- ठाकुर बाबा बीछा मंत्री कृषि १(ग) पृष्ठ १६ ।
- ३४- पूजा, पृष्ठ ३०-३१ ।
- ३५- २२ अनुसूच २० (ए) पृष्ठ २७ ।
- ३६- २६ अनुसूच १० (ब) के कृषि पृष्ठ १३ ।
- ३७- २२ अनुसूच ५ (ब-६) पृष्ठ ५ ।
- ३८- श्री ठाकुर मिश्र, बीछाबाबा हैं सादातकार निर्वाच २०-६-७६ ।
- ३९- भारतीय जनक बीछाबाबा एवं निम्न पृष्ठ ३ ।
- ४०- भारतीय जनक बीछाबाबा एवं निम्न अनुसूच १६(४) ब के जनक १(क) पृ० १२ ।
- ४१- " " " " ३(क) पृ० १३ ।
- ४२- ज्योती ३(ड) ।
- ४३- श्री राधाकृष्ण मिश्र, मण्डल मंत्री बीछा हैं सादातकार निर्वाच २०-६-७६ ।
- ४४- ३४ अनुसूच ६ (ब) पृ० ४ ।

- ४५- १४ अनुच्छेद २२ पुच्छ ११ ।
- ४६- श्री हुसैन बन्तु भिम, मंत्री, देवाबाद मण्डल समिति, बादासाकार विनादि १-८-७५
- ४७- भारतीय जनसंघ संविधान एवं विमल अनुच्छेद १(१) पुच्छ २ ।
- ४८- उपरीक्षा अनुच्छेद ६ (क) पुच्छ ३ ।
- ४९- भारतीय जनसंघ संविधान एवं विमल, अनुच्छेद ६ (क) पुच्छ ३
- ५०- श्री राय पिछौर भिम, बीरापुर, जमिन, मंत्री, मण्डल समिति, बीछ्या,
बादासाकार १६-२-७५ ।
- ५१- श्री विमल नारायण दुई, ज्योतीरा, ज्योतीरा, मण्डल समिति, बीछ्या है
बादासाकार विनादि १०-८-१९७५ ।
- ५२- श्री दुर्गेश रावेंद्र प्रसाद सिंह, ज्योतीपुर ज्योतीरा मण्डल समिति, ज्योतीपुर, है
बादासाकार विनादि १४-६-१९७५ ।
- ५३- भारतीय जनसंघ संविधान एवं विमल अनुच्छेद १२ (क) पुच्छ ५
- ५४- उपरीक्षा, १२(क) पुच्छ ५ ।
- ५५- श्री विमल नारायण दुई, ज्योतीरा, ज्योतीरा, मण्डल समिति, बीछ्या है
बादासाकार विनादि १०-८-१९७५ ।
- ५६- भारतीय जनसंघ संविधान एवं विमल अनुच्छेद १२ (क) पुच्छ ५ ।
- ५७- उपरीक्षा अनुच्छेद ६ (ग) पुच्छ ४ ।
- ५८- उपरीक्षा अनुच्छेद १२ (क) पुच्छ ६-७ ।
- ५९- भारतीय जनसंघ संविधान एवं विमल अनुच्छेद १० पुच्छ १० ।
- ६०- उपरीक्षा, अनुच्छेद १५(४) है व के वन्दगी २ (१) वा पुच्छ १२ ।
- ६१- उपरीक्षा, अनुच्छेद १५ (४) व के वन्दगी ५(क) पुच्छ १५ ।
- ६२- श्री जलेश फैदरानी, देवाबाद मण्डल समिति बीछ्याबाद है बादासाकार
विनादि १-८-१९७५ ।
- ६३- भारतीय जनसंघ संविधान एवं विमल ३(क) पुच्छ १२ (अनुच्छेद १५(४) व के वन्दगी ।
- ६४- भारतीय जनसंघ संविधान द्वारा ६ (क) पुच्छ २ ।
- ६५- उपरीक्षा ६(क) पुच्छ २ ।
- ६६- उपरीक्षा ६(क) पुच्छ २ ।

- [illegible]

- ६०- श्री सुरेशचन्द्र मिश्र, समाचार मन्त्रालय की वे साप्ताहिकार के दिनांक १-१०-७६ ।
- ६१- ए० हुसैनार, पोलिटिकल पार्टी, १९६५, पृष्ठ १९४।
- ६२- वही, पृ० १०० ।
- ६३- वही, पृ० १०६ ।
- ६४- "हस्त बाक" हीडल निडल कट्टि, मिडिफिकल = पृष्ठ ३१ ।
- ६५- उपरोक्त, मिडिफिकल ६, पृष्ठ ३१ ।
- ६६- ए० हुसैनार, पोलिटिकल पार्टी, १९६५, पृष्ठ ३१ ।
- ६७- श्री कौशल चन्द्र मिश्र, महापरी मुक्त कट्टि-समाचार वे साप्ताहिकार दिनांक ७-१०-७६ ।
- ६८- श्री विजयनाथ पाण्डेय, व्यवसायिक उक्त विद्यालय एवं प्रत्यक्षा यती ।
- ६९- भारतीय जनक हीडल एवं निडल, अनुषेय १४(क) ४-५ पृष्ठ ७ ।
- १००- उपरोक्त, अनुषेय १४ (क) पृष्ठ ८ ।
- १०१- एन्डिडा कल कलैण्ड बरार, कौशल एवं ए कानिपेण्ट पार्टीविडल, पृ० ६४
- १०२- भारतीय विधान एवं उतर प्रदेय, उदेय व कानिपेण्ड रवेण्ड प्रिड, रावेण्ड नार (पूर्व) उत्तर ४, मुक्त पृष्ठ ।
- १०३- भारतीय हीडल, हीडल वारा ५ (१) पृष्ठ २ ।
- १०४- कलैण्डियल बाक वे हीडल निडल कट्टि, अनुषेय १५, पृ० १५ ।
- १०५- उपरोक्त, अनुषेय २५(ब) पृष्ठ २४ ।
- १०६- उपरोक्त, अनुषेय २५(ब) पृष्ठ २४-२५ ।
- १०७- "हस्त बाक" हीडल निडल कट्टि, अनुषेय १२(ब) उव कल (द) के वपीन १-४ पृष्ठ १४ ।
- १०८- भारतीय जनक हीडल एवं निडल अनुषेय १६, पृष्ठ ६ ।
- १०९- उपरोक्त, निडल ४ (ड) पृष्ठ १४ ।
- ११०- श्री कलैण्डियल पाण्डेय कलैण्डियल, कलैण्डियल कुन व विल कलैण्डियल, हीडल, वे साप्ताहिकार दिनांक ७-१०-७६ ।
- १११- भारतीय हीडल हीडल वारा १३ ब, व, व, पृष्ठ ७ ।
- ११२- उपरोक्त, वारा १६, ब, व, व ।
- ११३- ए० हुसैनार, पोलिटिकल पार्टी, १९६५ पृष्ठ ३१ ।

- ११४- स० हुजूर, पॉलिटेक्निक पाटील, १६६५ पुस्तक ४१५ ।
- ११५- स० के० बलरामलाल, पॉलिटेक्निक पाटील ए बिस्वीसिस्स एसासिस्टिड,
१६७६, पुस्तक ४१२ ।
- ११६- श्री कृष्ण चन्द्र मिश्र, मयामयी, प्लास कन्ट्रिब क्रीटी, सीड्या है शासनात्कार ।
- ११७- श्री कृष्ण चन्द्र मिश्र, कच्छक मयी, सीमावाद, शासनात्कार ।
- ११८- क्राष्टीपुस्तक बाक बाक सीड्या नेशनल कन्ट्रिब, क्युप्येन १६(५) पुस्तक १० ।
- ११९- भारतीय कलकत्ता सीड्याम एम मिश्र, क्युप्येन १६ पुस्तक १० ।
- १२०- शासनात्कार है बावार पर ।
- १२१- श्री कलकत्ता सीड्या, सीमावद्धता
- १२२- श्री कृष्ण चन्द्र मिश्र, मयामयी, प्लास कन्ट्रिब क्रीटी, सीड्या ।

नैतत्व

राज्य की संस्थाओं की पूर्ति का केवल ध्यान रहता है। सरकार का ध्यान केवल व्यवसायिक, कार्यवाहक तथा न्याय याचिका में ही रहता, मानव का मानव कर्तव्य ही प्रकट होता है। ऐसे मानव का मानव कर्तव्य का प्रत्येक राज्य में सरकार के दायित्वों का भार प्रकट करने का एक निष्कर्ष करने के लिए निर्धारित विधि, विचार एवं कार्यवाही होती रहती है।

असौख्य प्रक्रिया औद्योगिक राज्यों में प्रकटित है और व्यापक स्तर पर होती है जिसका प्रतीक, परिवर्तन एवं नीति होता है। नेता एक वह है जो एक या और मानव कर्तव्य द्वारा निर्धारित परिस्थिति एवं नीति में किसी विशिष्ट उद्देश्य है व्यक्ति की कार्यवाही प्रदान किया जाता है। नेता एक प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति जो प्रेरणा दहते कर्म में विभाजित है यही नैतत्व है। नैतत्व एक व्यक्ति और कर्तव्य के साथ हुए उद्देश्यों की प्रार्थना के लिए में स्थापित होती है। नैतत्व का तीन धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक एवं राजनीतिक धर्मों को करता है और विस्तार परिवार के राष्ट्र का ही करता है तथा साथ ही साथ न्यूनतम है अधिकतम को करता है। चौकस किया का तीन के राजनीतिक तीन में नैतत्व की तीव्रता किसी है। यही विचारणीय प्रत्यक्ष है। राजनीतिक नेता वह है जो कि नेता का प्रार्थना है, जिस कारण में उत्पन्न हुआ है उसी नेता की संस्थाओं की नीति करता है और सरकार की दस्तक एवं उसके अन्तर्गत करने में का रहता है। राजनीतिक वह का एक है अधिक अन्तर्गत राजनीतिक नेताओं में आज हुए उमाठने की कला एवं दायता का विकास करने में होता है। जो व्यक्ति किसी भी मन कर्तव्य के निर्णय, मुक्तों एवं यहाँ की अधिकतम के निर्णय, विचारधारा तथा मानवता के प्रति दृष्टि, प्रत्यक्षीक एवं दृष्टिकोण दिखायी देता है वह नेता वह का उत्पन्न प्राप्त है। राजनीतिक नेता की नैतत्व की प्रेरणा निम्नलिखित के लिए

युव वनिवासीय है की :- व्यक्तिक वाचस्पक युवा, युवाभिर्वा का युवा,
युवाभिर्वा का विस्वात अं युवायुवा, विविष्ट उदित, विविष्ट परिस्थितियाँ
या परिस्थि ; निवारित जीव और अन्य की पुनार । अतीत वार वनिवासी
वर्षों में किसी एक का अन्तर्गत का प्राप्ति में बाधक किन्हीं चीजों । इन वर्षों की
अवस्थिति में की कभी कभी की विस्वायता में विविष्टता होने के कारण केवल
का अन्तर्गत प्रभावित होता है । राजनीतिक कल का अन्तर्गत कल में भी ऐसा है
यह उचित कल में की ही यह वाचस्पक नहीं, की प्राप्ति वार का ही यह विस्वात
कल वार का ही ही यह वाचस्पक नहीं ; की राजनीतिक कल के अन्तर्गत कल युवा का
ऐसा ही नहीं कभी युवा का ही यह अन्तर्गत नहीं ; की एक राजनीतिक कल का ऐसा
ही नहीं दूसरी कल का भी ऐसा ही ही यह अन्तर्गत नहीं , एक ऐसा किसी प्रवृत्ति
उत्पत्ति कल के बाहर कल कल बाधी है और की कभी कल के अन्तर्गत वाचस्पक के लिए
अवस्थिति नहीं है, अन्तर्गत है कल का अन्तर्गत कर अन्तर्गत है की युवा परिस्थि का
ऐसा ही नहीं अन्तर्गत का भी ऐसा ही यह अन्तर्गत नहीं ।

अतीत वारों के स्पष्ट है कि केवल की युवा एक निरिक्त
स्थिति में ही निवासी बाधी है की वारों वनिवासीयों का पुनरिन्तर्गत होता
है , इन वर्ष निरिक्त स्थिति स्थिर है इन कल की केवल की स्थिर है और
परिस्थि होने पर ऐसा का परिस्थि अन्तर्गत बाधी है ।

यु १९५२ ई० से १९५२ ई० तक विविष्ट कल में की वनिवासीर
प्रभाव युवा की विवाचक प्रवृत्ति वनिवासी वार वार विविष्टी युवा में उन्हीं की १९५२
के सामान्य निवाचि में प्रवृत्तिवृत्ति की नहीं युवा युवा । की की अन्तर्गत वाचस्पक
यु १९५०-५१ तक वनिवासी वनिवासी है विवाचक रहे वनिवासी यु १९५१ में अन्तर्गत प्रवृत्तिवृत्ति
के कारण वनिवासी की नहीं । भारतीय वनिवासी के विविष्ट विवाचक प्रवृत्तिवृत्ति की राम
ऐसा किन्हीं निवाचि की यु १९५१ के निवाचि में १९५२ तक किन्हीं उन्हीं की १९५३
के निवाचि में १९५३ तक प्राप्ति युवा ।^{११}

इन वर्षों के स्पष्ट ही बाधी है कि केवल की वनिवासी
निरिक्त स्थिति परिस्थि है वनिवासी अं वनिवासी रनिवासी है की किन्हीं कल है कि
केवल वनिवासी है । राजनीतिक कल के अन्तर्गत कल की व्यक्तिक वनिवासी, वनिवासी,

प्रशासिकारी एवं नैतिकी सुविधायें निहित स्थिति में रहती हैं। सभी सुविधायों का प्रयोग भी सभी व्यक्ति करता है। प्रत्युत सम्पूर्ण में राजनीतिक नेता के उत्साह, वास्तविक बुद्धि, कार्य एवं नीतियों की भी बहुत कुछ होती होती होती है। नेता के जीवन में उत्साह है प्रशासिकारी का विवरण दिया था बुद्धि है और सभी नेता का जीवन का विवरण भी है जीवन पूर्ण ही होती है।

राजनीतिक नेता राजनीतिक सब का प्रमुख एवं पब्लिक सीमा है। प्रमुख के रूप में वह पब्लिक सीमा की सीमा के समस्त सीमा पर प्रभाव है और पब्लिक सीमा है कि समस्त प्रभावों का उत्साह, उत्साह, प्रमुख एवं वास्तविक सभी की निमित्त होती है। समाज के विभिन्न सीमा में प्रभाव की पब्लिक सीमा है सभी प्रकार के नेता वन पब्लिक प्रभावों की है किन्तु सीमा की पब्लिक सीमा में राजनीतिक नेता की पब्लिक सीमाओं का केन्द्रीय प्रभाव है।

राजनीतिक नेता के उत्साह :

उन उत्साहों है उन सीमा की पब्लिक के विचारों में सब विचारों का सभी किं का सब राजनीतिक नेता है

(१) नेता सभी सम्पूर्ण है पब्लिक रहता है और सभी सुविधायों के राजनीतिक विचारों का प्रभाव एवं प्रभाव केन्द्र होती है।

(२) वह राजनीतिक विचारों पर पब्लिक पब्लिक, वास्तविक रहता है, उत्साह का यह नहीं है कि सभी विचारों की सभी में सब बुद्धि होती है, पब्लिक उत्साह सभी वास्तविकों का केन्द्र राजनीतिक सम्पूर्णों की होती है।

(३) वह राजनीतिक सब या सीमाओं या सामुदायिक सीमाओं में प्रशासिकारी की या रहती है या सभी के लिए प्रभावों की।

(४) वह पब्लिक सम्पूर्णों के उत्साह की पब्लिक है उत्साह उत्साह सामुदायिक सम्पूर्णों के उत्साह में पब्लिक की।

(५) वह सभी सम्पूर्णों में राजनीतिक सब एवं सम्पूर्णों की उत्साह सम्पूर्ण प्रभाव का सभी प्रभाव प्रभाव रहता है किन्तु सम्पूर्ण

“ केड सम्परिणवाय परचरण पुस्ति मेकल कम्हर काठे, सीका
 में बाई लुठ का काय था, उस समय विवाह में विवाही के नाम की उस समय
 की विवाह प्रत्येक सम्पाद में कीर्त व कीर्त कायेन के बाय-विवाह, पीप प्रतियोगिता,
 कवापी प्रतियोगिता बाय सीका रत्न था । की बाय-विवाह में नाम ठिका है
 और कवाय नामण के के कारण कवायलीं द्वारा में प्रतीत का काय का । फिर
 काय का कवाय नाम ठिका और उस विवाही के का कवायल में कवाय की
 विवाही पुका । एव १८५२ ई० के सामान्य विवाह में की कवायल प्रत्येक पुका
 काय विवाह प्रत्येक के काय में काय काय ठिका और उन्हीं कवायल निरु काय
 है कवाय प्रतीत है कवाय सामाजिक प्रियाकायों में नाम ठिका, एव काय में एक
 कम्हर काठे का प्राचार्य हूँ और कवाय परिणय का काय की हूँ ।” जरीका
 विवाह की विवाय पुका मे कवाय ।

“ में प्रमाण विवायविवाह में की० काय का काय का, की
 काय कवायल सामान्य उचर प्रतीत कवाय कवायल सामाजिक पुका में कवाय
 है कवाय एक कवायल कवाय । की कवाय के उच कवायल के विवाय में कवाय
 काय विवायविवाह के मुक्ति काय में कायल कवाय । विवाय में की काय प्रतीत
 की । की कवायल कायल विवाय कवाय के प्रतीत के काय में पुका कवाय है
 की विवाय में मुक्ति कवाय काय में कायल कवाय काय कवायल है काय पर कवाय ।
 कवाय पर की कवाय विवायल की कवायल के कवाय के के उच कवाय । कवाय
 में कवायल कवाय का उच कवायल सामाजिक कवाय कवाय की और मुक्ति काय ।

जरीका विवाह की सामान्य प्रमाण विवाय में कवाय की
 कि कवाय कायल कीटी, कायल कवाय कवाय कवाय उचर प्रतीत कवायल कवाय के
 कवाय कवाय पर कवाय के की और कवाय काय कवाय कवाय कायल कीटी है कवायल कवाय
 पर है ।

“ की की काय की कवायल प्रमाण पुका एव १८५२ के काय कवाय
 में काय के और कवाय की के कवायल कवाय के एक कवायल में सामान्य पुका ।
 कवाय है कवायल है कवायल प्रमाणों की कवाय कवाय पर पर है कवाय, उन्हीं कवाय

यै अब काम काम था । नाथि के लोनों की कलह करके, कभी-काल का विहीन,
कभी काय्य होता है नाथ है किया। कलहकाल उसी नाथिकियाँ लकी वीर
पैरी काय्यकाय की काय्य निकल गई । लकी काम है राक्षसीय की वीर प्रीति पुनः,
अपरीत्य विरहण के विनाय विहीन कलह गयी, नाथीय कलह है किया ।

सु १५४२ ई० में मैं प्रभाव विरहविवाह्य मैं काम था । नवाका
नाथि के करी या गरी के गरी के काम विरहविवाह्य है एक पुनः काम । एक पुनः
मैं मैं की कलहकाल था । कलहकाल कलह कलह था री की वीर पुनः
विहण कलहकाल की वीर का री था । पुनः के कलह है कलहकाल पुनः कलह की
री की कि कलह काय्य करके एक पुनः कलह की कलह कलह विहण काय्य कलह
वीर कलहकाल के काय्य काय्य कलह का । लकी की पुनः विहणकाल के कलह पर कलह,
पुनः मैं नाथीय कलहकाल वीर कलह कलह विहण कलह गयी कलह, कलह गरी कलह
कलह प्रभाव कलह कलह राक्षसीय मैं कलह गयी कलह । अपरीत्य विरहण
की कलहकाल विहण काय्य, कलहकाल मैं किया की कि विहण कलहकाल, विहण कलह
के कलहकाल, कलह प्रीति कलहकाल मैं कलह की री वीर कलहकाल, कलह कलह-
काय्य कलह नाथीय कलहकाल के कलह मैं विहण के कलहकाल की री पुनः मैं ।

अपरीत्य विरहणों है एक कलह कलह कलह है कि कलह
की कलहकाल कलहकाल मैं पुनः कलह है ।

(१) राक्षसीय कलहकाल काम (Political Orientation) :

राक्षसीय कलहकाल काम कलहकाल का प्रभाव कलह है, कलह
कलह कलह कलह कलह के कलहकाल कलहकाल मैं है कलह राक्षसीय कलहकालों
के प्रीति कलहकाल कलह है कलहकाल कलह है । एक कलहकाल के कलह के कलह मैं
कलहकाल, कलहकाल वीर कलह के कलहकाल कलहकाल कलह है । प्रीति कलह कलह कलह
पर कलहकाल, कलहकाल कलह कलह है कलह कलह कलहकाल मैं कलहकाल, कलहकाल,
कलहकाल, कलहकाल कलह राक्षसीय कलहकालों कलह कलहकाल कलह कलहकाल कलह है
कलह कलह है, कलह कलह कलह कलह कलह की वीर कलह कलह कलह कलह कलह
कलह । कलह कलह कलहकाल कलहकाल है कलह कलहकाल कलह कलहकाल कलह
कलह कलह कलहकाल है कलह कलहकाल कलह कलहकाल कलह कलह है ।

यदि यह उचित राक्षीतिक प्रवृत्ति का है तो इसी राक्षीतिक व्युत्पत्ति ज्ञान करी । क्या कि प्रायः पिछड़ीयों केा है कि एक ज्ञान परिस्थिति एवं परिदृष्टि में समेकाते व्यक्तियों में राक्षीतिक व्युत्पत्ति ज्ञान ज्ञान की है । कीया है या पिछड़ु वही की कीया है । की नागरिक राक्षीतिक केा का एक प्राप्ति करता वास्तव है उसे कम्पार का है वही राक्षीतिक व्युत्पत्ति ज्ञान कीया अभिवर्ध प्रप्त वांछा है ।

कीया विधान का नीचे के राक्षीतिक केाओं का राक्षीतिक व्युत्पत्ति ज्ञान एक एवं कात्त ४ प्रविष्टि परिवार, १० प्रविष्टि विद्यालय, २ प्रविष्टि निम्, १० प्रविष्टि कर्माई, १० प्रविष्टि वास्तविक, १०, १ प्रविष्टि वास्तविक, १०, १ प्रविष्टि केाओं है केाई एवं १०, १ प्रविष्टि स्वयं पर हुए वास्तविक रहे । राक्षीतिक व्युत्पत्ति ज्ञान की कि राज्य के नागरिकों में प्रायः पुत्राव, विधेय राक्षीतिक यत्ना वही केा का वस्तुत्व, पराव, पुत्र, वास्तव, वस्तु वादि है वास्तव कीया है और फिर वस्तुत्व व वस्तुत्व का का का व्यक्त वादि की और नहीं बढ़ प्रजा । की राक्षीतिक व्युत्पत्ति ज्ञान के उचित है है की राक्षीतिक समाधीकरण के व्यक्तियों है वही परिवार का वस्तुत्व, विद्यालय का वस्तुत्व, निम्, राक्षीतिक केा वादि । राक्षीतिक व्युत्पत्ति ज्ञान के लिए राक्षीतिक एक एक विधि विधीनी हुए नीचे का प्रतिनिधित्व करता है ।¹⁰

(२) राक्षीतिक सम्प्लुक्ताता : (Political Involvement) :

राक्षीतिक व्युत्पत्ति ज्ञान की स्वाधिक्य प्रप्त करने के लिए व्यक्त की उचित कार्यों के प्रति रुचि और भाग प्रप्त करना वास्तविक है । वही भाग प्रप्त करने की यत्ना की राक्षीतिक सम्प्लुक्ताता करी है । राक्षीतिक सम्प्लुक्ताता के का कारण विविधिका किया है ।¹¹ १- राक्षीतिक है प्राप्ति कीयाते वास्तविकताओं का भूत्वावक व्यक्तिकार की २- केाधिक विविधिका में राक्षीतिक में बहुत परवत्पूर्ण की ३- राक्षीतिक परिणामों में वास्तविक कर केा का व्यक्तिकार विस्तार की ४- यदि कार्य व विधी वही व्यक्तिकार कीयावत्त परिणाम के विस्तार की ५- कर्माधीन प्रदेन पर उचित कम्पार व्यक्तिकार ज्ञान या पुत्रता की । ६- कार्य करने के लिए कर्माधीन पर विज्ञान प्राप्ति कर करता की । उपर्युक्त कार्यों

जान ली कराका नामा बाधिए ? के ऊपर में 'जिज्ञास', 'प्रजिज्ञास', 'अभिकारी' के अन्वीय पर छूट कम कर्मियों की कमीलता पर पण्डे नीतिज कमीटी पूरा करे', 'बापई प्रचुल करे', 'बापिके पुनार', 'बापई पुनः प्रजास ल' प्रतिनिधित्व' बाधिए कमीटी की वीर लीज किया गया । एन्वे की यह प्रचुल प्रण्ट ही बाधिए है कि बापई जिज्ञास, प्रजिज्ञास, प्रजास, बापिके प्रचुल ल' प्रतिनिधित्व के अन्वीय में कर्मियों ल' अभिकारी का जान की नहीं ही कमील ।
 छा: राजनीतिक बाधिकरण में अन्वीय की कमी कर्मियों ल' अभिकारी है लीज बाधिक का स्कॉ की जान ही बाधिए है वीर एव जान की अन्वीय का अन्वीय लीज में बाधिका बाधिकों की की लीज कमील है की कि अन्वीय, प्रजिज्ञास, अन्वीय, अन्वीय, अन्वीय, अन्वीय, अन्वीय बाधिए बाधिका है अन्वीय एन्वे प्रण्ट किया बाधिए है ।

पैसावों में कर्मियों ल' अभिकारी का जान कराने का बाधित्व जिज्ञास लीज बाधिका, प्रजासिक कर्मियों ल' राजनीतिक कमी के ऊपर लीज वीर एन्वे जिज्ञास के लीज अभिकारी जान जिज्ञास, जान लीज पर जिज्ञास जिज्ञास नीतिज, लीज लीज का कमील ; कमील बाधिका है ऊपर एन्वे लीज की बाधिका का कमील ल' कमील पुनः प्रजास, प्रजिज्ञास जान में बाधिका बाधिका ल' पुनः प्रजास, पुनः प्रजास लीज बाधिका की कमील की लीज की ।

एन लीज है यह बाधित्व प्रजिज्ञास लीज है कि बाधिए अन्वीय स्कॉ कमील बाधिकरण कर है वीर जान जिज्ञास, राजनीति ल' जिज्ञास के लीज कमील कमील बाधिका है प्रजिज्ञास कमील कर बाधिका राजनीतिक बाधिका की बाधिए लीज की वीर पुनः बाधिका ।

(v) राजनीतिक प्रजिज्ञास (Political Manifestation) :

यह राजनीतिक प्रजिज्ञास का अन्वीय ल' लीज बाधिए है । की कि लीज के जान लीज लीज की स्कॉ प्रजास कराने है । प्रजास: लीज बाधिका की की प्रजिज्ञास लीज कमील बाधिए है । कमील लीज जान में बाधिका कमील, राजनीतिक लीज बाधिका में बाधिका, बाधिका, बाधिका, पुनः लीज बाधिका

प्राधिकारवादी नेतृत्व

प्राधिकारवादी नेतृत्व में कई भाष्य पराजय पर होता है जिसके कारण कुछ या सब के उद्देश्यों एवं नीतियों का पालन न किया जा सके।^{१३} नेतृत्व ही होता है।^{१४} वह कुछ के प्रति एक व्यवस्था को अपने पुरस्कर्ता एवं पीछे छोड़ता है और दूसरे व्यवस्था को अपना करता है। वह कुछ कभी को प्रोत्साहित करता है और प्रतिकूल कुछ को बाध में बिना अधिक विचार के छोड़ कर भी देता, यदि उसे देना ही है तो अपने अधिकार में।^{१५} वह अपने कुछ को बाध में छोड़ देता है जिससे भाष्य में कुछ की संख्या पराजयी हो जाती है।^{१६} प्राधिकारवादी नेतृत्व में संघर्ष, नीची नीचा एवं निर्दोष का भाव अधिक रहता है और अधिक का सम्पूर्ण होता है।^{१७} बाध में ही संघर्षों एवं उनके निर्णयों की सीढ़ी में पड़ाने का काम होता है,^{१८} क्योंकि सामुदायिक संस्था के अनुसार कुछ नहीं कहा जा सकता कुछ को ही अपनी संस्था के अनुसार बनाने की बजाय संस्था रहता है जिसके कारण उसे द्वारा दिए गये निर्णय अनुमानित है परन्तु पालन नहीं होता है।

उपरोक्त चीजों प्रकृतियों का परीक्षण होता है किन कारणों के राजनीतिक नेताओं के आधार पर है किन। आधार पर में कुछ प्रत्यक्ष मतदाताओं के अपने प्रतिनिधियों की बाध में होने का अधिकार मिल जाने को देता रहेगा ; के नेताओं के उद्देश में २१ प्रतिशत बहुत अच्छा तथा १६ प्रतिशत बहुत बुरा बताया। बाध में है कि बहुत बुरा करनेवाले को नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हैं।^{१९} बहुत बुरा करनेवाले नेता कभी सब को प्राप्त करने के परभाव उस पर को रचना जाती है और दूसरों को छोड़ देने के फल में किन्तु ही नहीं प्रतीत होती। यह मनीषा प्राधिकारवादी नेतृत्व का लक्षण है। जो २१ प्रतिशत बहुत अच्छा कहते हैं वे औद्योगिक नेतृत्व का चिह्न देते हैं और कारागारियों में कारावासी प्रतीत होती हैं।

“राजनीतिक सब में कुछभी नहीं देना ही जाती है ? के उद्देश में नेताओं के ३ प्रतिशत अधिकतर राय-देण, ३ प्रतिशत भारतीय स्वाभिमान ७ प्रतिशत नेताओं द्वारा कारावासी, ७ प्रतिशत अधिकतर कारावासी, ७ प्रतिशत

एक ही पैसा समय, स्थान, कसरत, अनुयायी, औरत

यह धरा पकड़नेवाले प्रभाव तथा परिणामों की एक बली हुई है। बहुत कुछ पिता स्वयं के हाथों है। जब लोकशासन नियुक्त का प्रयत्न करता है जब प्रतिकूल बाधा है और उसे निश्चायक चीजा है कि उसके स्वयं है परिणाम उनके बहुत कुछ पिता हीना एवं प्राप्तिपरवादी नियुक्त का प्रयत्न करता है। 'राजनीतिक वर्गों की बाधित कि वे एक बली की ही नियुक्त प्रभाव करने की निर्दिष्ट पैटर्न की पिता प्रयत्न लोकशासन ची।

क्या है प्रणय

मैत्रा में किन्- किन् विशेषताओं का होना आवश्यक है ? के उत्तर में मैत्राय के बीच, कम, परिस्थिति के अनुसार का कर्माओं का प्रतिविधि व्यवस्था^{१६} उत्तर मैत्राई मैत्रा कि प्रवृत्ति विस्तृत व्यवस्थादी प्रतीय होती है । यह मैत्रा के मैत्राओं पर कर्मा का विस्तार व्यक्तित्व रहता है क्योंकि स्वार्थ विस्तार किसी व किसी केन्द्रावास में वन्द्य हो जाती है ।

राष्ट्रीय कर्माओं के प्रति कर्मा आवश्यक मैत्रा माय रहती है , के उत्तर में ६२ , ५ प्रतिष्ठित मैत्राओं में कुला के माय ' स्पष्ट रूपों में व्यक्त किया किसी प्रमुख कारणों के रूप में कर्माओं परित् एवं व्यक्तित्व , राष्ट्रीय की व्यवस्था कर्मा, उदा, पर एवं कर्माओं के लिए राष्ट्रीय कर्मा, प्रतीय कादि निरूपित किया : ३०, ५ प्रतिष्ठित मैत्राओं में वन्द्य एवं दुरी पौर्ण मायों का अनुभव कर्मा की मैत्रा कर्माचारी है उनके प्रति वास्तव, विस्तार, निःस्वार्थ, विस्तार, मदा एवं सम्मान के अनुभव कर्मा रहती है क्योंकि निरूपित एवं निःस्वार्थ मैत्रा में जीन हो करती है, की मैत्रा नहीं करती उनकी उद्योग व्यक्त है । यह कारण छोटी मैत्राओं की कर्मा प्रवृत्ति, पूर्ण, कर्माओं का दृष्ट^{१७} कर्माचारी है । पदान वास्तव यह माय का है कि का राष्ट्रीय कर्माओं के प्रति कर्मा के कुलापूर्ण व्यक्तियों है ये मैत्रा कुलास्थित है किन् की राष्ट्रीय में कर्मा व्यक्तित्व है । का राष्ट्रीय कर्मा की एक व व्यक्त है । किसी स्वभाव में राष्ट्रीय कर्माचारी हो नहीं है का निरूपित की व्यवस्थादी होने के लिए वास्तव है क्योंकि कर्मा राष्ट्रीय किसी ऊँचा व्यक्तित्व कर्माचारी वास्तव मैत्रा का उद्योग उन्हें प्रतिष्ठित फिर है ।

मैत्रा के वास्तविक प्रतीय के आधार पर मैत्राओं के दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है १-वास्तविक मैत्रा २- नाम माय मैत्रा ।^{१८}

वास्तविक मैत्रा : किसी की राष्ट्रीय एक या कर्मा का का व्यक्तित्व किसी कर्मा में कर्मा की निरूपित कर्माचारी छिद हो वास्तविक मैत्रा है । वास्तविक मैत्रा के व्यवस्था मैत्रा की विशेषताओं का कर्मा व्यक्तित्व होना है और उनके कर्माओं एवं कर्माचारी कर्मा कर्मा की वास्तविक है । वास्तविक मैत्रा में कर्मा कर्मा कर्मा व्यक्तित्व रहती है उनके की निरूपित में एक की छोटी प्रियार्थ

होती है । यह सभी सम्मानार्थक व्यक्तियों को प्राप्त होना चाहिये ।
 वास्तविक सेवा कार्यकर्त्ता, प्राधिकाता, कर्मचारी तथा कर्मियों पर कर्म
 करने वाला है, जो सभी को सम्मान प्रदान करने का ही ध्येय है जो सब है
 जीवन को सभी को (सेवा) में लाना है ।

[illegible][illegible]

पान पान फल :

नाम नाम का कैसा बस है जो अपनी छवि का प्रयोग करने
 विवश है व करते दूसरे के परापूर्व पर करता है जिसके नाम पर अन्य लोग जान
 करते हैं और वह वह प्रशिक्षण की क्षमता व समझता है, जिसमें वह शिक्षा की
 प्रशिक्षण की क्षमता कार्य निष्ठा अत्यन्त हीनता है, जो निष्ठा की प्रशिक्षण में
 निष्ठा प्रशिक्षण होता है तथा जो दूसरे की प्रशिक्षण पर अपनी क्षमता की व्यक्तित्व

रखा है । क्या वैदुष्य प्रेम जीपान में नाम मात्र का होता है जिन्हु पीरे पीरे कर्षी के कलम से कलम के पिताप के साथ वास्तविक पैदा की कीर्ति में पूर्ण बाधा है ।

कम और नाम कम का पैसा वास्तविक पैसा की कीमत में
 पहुँची का प्रमाण करने लगा है कम का पार के वास्तविक पैसा में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न
 होगी है, कम चीनी का बिक्रय का ही और मुद्रा बाजार है कम चीनी का वास्तविक
 होगा है । कम का (कम की) के निम्न का का प्रस्तावी करने के लिए वास्तविक
 की भारतीय राष्ट्रीय कृषि की और है वास्तविक बाजार का और निम्न की निम्न
 बाजार का है राष्ट्रीय प्रसार विपरीत, के कृषिवास्तविक विपरीत के कम का
 की वास्तविक बाजार के कम-कम वास्तविक का कृषि प्रस्तावी के कम में वास्तविक की,
 नाम वास्तविक का निम्न की वास्तविक बाजार के कम में ही कम का है राष्ट्रीय
 प्रसार विपरीत है ही कम वास्तविक बाजार है कम निम्न की कम वास्तविक
 प्रस्तावी के कम में प्रसार बाजार में कम है और की वास्तविक का वास्तविक का ।

उस प्रियाकाश के लम्बे ली की छाया तब ही किन्तु स्वतः
ती स्पष्ट हो ही जाता है कि कि संसृति में प्रतीय अनुशासन की परिधि है बाहर
निपलब्ध अज्ञेय के वास्तविक प्रत्यासी के लला रीत्या माय का अभिन्न विद्या । २१

अनुभव के आधार पर निम्न दो प्रकार के होते हैं :-
 १- वैयक्तिक अनुभव
 २- साहित्यिक अनुभव ।

१- संसाधन नीति :

बंदापुत्र नेता वह होता है जिसके पूर्वजों के रूप में नेतृत्व का पुत्र प्रतिष्ठित हो पुत्र होता है जिसके परिवार का लक्ष्य क्या वर्तमान सज्जन वातावरण राजनीतिक परिस्थितियों का केन्द्र होता है । बंदापुत्र नेता की अपनी पूर्वजों की प्रतिष्ठा उत्तराधिकार के रूप में उत्तरण होती है और रही है बहुत चौड़ा ना, समय जब कम कम करने पर भी लक्ष्यप्रिया क्षणिक भिन्न जाती है । उत्तराधिकार के रूप में जीवनी शक्ति वाली बंदापुत्र नेता है, क्योंकि उनके पिता की उत्तराधिकार बहुत बड़ा क्या पितापुत्र की नीतिगत एक सत्य भारतीय राजनीति के पुरी है ।

प्राच्य एवं वाक्य वैचारिकों की बहुलता है । वे भारतीय वाक्य कथानक विचारक एक वाक्यप्रिय नेता की कक्षा में अवलोकित प्रवृत्तियों द्वारा उनकी कक्षा में एवं की 'राष्ट्रीय विवेक' पिछले एक वाक्य नेता की कक्षा में वाक्य है वे किन्तु उनका प्रभाव अन्य वाक्यों पर भी है । वे केवल पुस्तक के - सीधे, वे परिवर्तनशील जीवन सीधे की जीवितप्रता कभी वाक्यों की परिधि में ही है ।

४- उत्पीड़न नेता :

यह नेता किसी जीवितप्रता मुट, कभी एवं वाक्य की परिधि में ही पार करते कभी विचारकों के कथनकरण एक कथनी है यह उत्पीड़न नेता है । उत्पीड़न नेता के कथनी प्रवृत्त कभी एवं वाक्य कथा कथनी कथनी पुस्तक, प्रवृत्त कथा मुट, विचारक कथा विचारक, कभी एवं पुस्तक सीधे हैं । उत्पीड़न नेता सीधे वाक्य कथन एवं कथन प्रवृत्त सीधे है ; यह सीधे में सीधे नेता कभी सीधे के कथन कथनी में प्रवृत्त, पुस्तकानी एवं एवं पुस्तक कथनी, प्रचार एवं प्रचार वाक्यों है प्रवृत्त कथ कथनी है । सीधे विचारक कथा सीधे में उत्पीड़न नेताओं का कथन है ।

कथाकथनी के वाक्य पर नेताओं की सीधे कथनी में विचारक विचार का कथनी है ? कथाकथनी नेता २- कथाकथनी नेता ।

कथाकथनी नेता :

यही नेता कथन का कथा कथनी में किसी व किसी कथ पर पुस्तकप्रवृत्त विचारक सीधे है यह कथाकथनी नेता है । कथाकथनी नेता कभी कथ की परिधि में कथनी रक्षी के लिए कथन कथा कथनी कथनी कथनी का कथन कथनी है । उनके कथन कथनी में कथनक विचार कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी, कथाकथनी एवं उनके लिए विचारकनीय सीधे हैं । कथाकथनी नेता कभी कथ है कथनी वाक्य कथनी की विचारक कथनीय रक्षी है कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी है । विचारक एक कथ कथनी कथनी के लिए कथनीकथनी का कथन कथनी कथनी है ।

सीधे विचारक कथा सीधे में भारतीय राष्ट्रीय कथनी के ही कथाकथनी प्रचार कथनी कथनी १९५२ है १९५२ तक विचारक रक्षी, कथनी १९ वर्ष

कन्याकुट्टु नेता यह है जो कन्या नेतृत्व पदों के कान्ध में भी प्रदान करता है । ये नेता या तो कर प्रवण के लिए जिम्मे दानेवाले कार्य उपकरणों में कर्मों की कान्ध पाते हैं या प्रति शिक्षा में विषय का विश्वास ही पुके है या राजनीतिक परिवेश में कर्मिता की कर्मिता कर किया है । कन्याकुट्टु नेता की दृष्टि कन्याकुट्टु नेता की दृष्टि, कर्मिता, कर्मिता, कर्मिता, कर्मिता, कर्मिता पर कर्मिता टिक जाती है कर्मिता कर्मिता, कर्मिता, कर्मिता एवं कर्मिता के कर्मिता है कर्मिता कर्मिता करती है । यदि कन्याकुट्टु नेता का कर्मिता कर्मिता एवं कर्मिता कर्मिता का कर्मिता प्रभाव कन्याकुट्टु नेता के प्रभाव है कर्मिता है कर्मिता कर्मिता, कर्मिता एवं कर्मिता के कर्मिता की कर्मिता कर्मिता की कर्मिता है ।

संविदा किया गया जो कि मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्पत्ति डा० मेहराब सिंह सेठान के जिम्मे भी अब पर नहीं है किन्तु उनका प्रभाव नेताओं को प्रभावित करता है ; भारतीय कांग्रेस में कि राधाराम प्रसादी, पौरुषराज तथा कि राधेशति यादव, सम्पाद, ये सभी नेता अन्तर्गत हैं किन्तु जो कि पर तथा वह मैं उनके व्यक्तित्व को स्वीकार किया जाता है ।

राजनीति में क्या क्या ची ची काम राजनीति में काम करता है किसे कह सकते हैं लोकप्रियता, सामाजिक एवं आर्थिक विकास, पद, प्रतिष्ठा, प्रभाव एवं सत्ता का राजनीति प्राप्त होता है । प्रश्न यह है कि राजनीति में प्रभाव काम का उपयोग होता किन किन कार्यों के सम्पादन में करता है ? क्या है

की कार्य जहाँ करीब की है ? क्या वे की कार्य जहाँ कोषिका के कार्य की है ? भारत के प्रायः प्रत्येक राज्य में ग्रामिणता (देशी) की प्रकृति कायदा ने क्या राजनीति के राज्य की की प्रभावित किया है ? क्या ग्रामिणता ने की राजनीतिक वातावरण की प्रभावित किया है ? भारत के राजनीतिक पक्ष का मुख्य विचारकी नीतिगत दार क्या जहाँ प्रकृति करने के बाद अन्य की काया है या अनुप्राण प्रकृति सीता है ? राजनीतिक नेताओं पर है अन्य का विचार की उन सीता का रण है क्या हमारी कार्य की देशी ग्रामिण का प्रभावित है ?

अतः हमें जहाँ प्रकृति का उत्तर राजनीतिक नेताओं के कार्य पद्धतियों जहाँ जहाँ अन्य नीतिगत परिणामों की नीतिगत करने है यह सीता। राजनीतिक नेता विचारित कार्य की करते हैं ।

१- जहाँ पक्ष की छवि-छाती जहाँ प्रमुख ^{बनाना} अन्य :

प्रत्येक राजनीतिक नेता जिन्हीं न जिन्हीं छोट या बड़े ; नवीन या प्राचीन ; सीधीय या व्यापक ; बहादुर या विस्मयी ; कभीय या कभीय या अन्य जिन्हीं प्रकार के राजनीतिक पक्ष की अन्य सीता है या अनुप्राणी बनाया है । का नेता का पक्ष है अन्य स्थापित की काया है उन का जहाँ पक्ष की छवि-छाती जहाँ प्रमुख अन्य करता है । नेता का पक्ष है अन्य-प्राप्ति के विविध निमित्त वास्तविक कार्य करता है । यह कार्य के अन्यति पक्ष के उत्पन्न का स्वयं कहा जाता है । उत्पन्न की अन्य, अनुप्राण, अन्यपूरक, अन्यपूरक, अन्य , गतिपूरक, अनुपूरककारी, अन्य वास्तविक परिस्थिति निर्दिष्ट वाधि बनाया नेता का कार्य है । उत्पन्न की मुख्य मातृका में किसी की पुनर तथा पुनरित पुनर अन्य जहाँ का जहाँ अनुप्राण में विस्तारक सीता ।

पक्ष की छवि-छाती बनाने के लिए क्या-क्या करते हैं ?

के उत्तर में नेताओं ने १४ प्रकृति ' उत्पन्न' १४ प्रकृति ' जहाँ कीजियों का प्रकार प्रकार' १२ प्रकृति करता की अन्यताओं का कायाप , ३ , ५ प्रकृति ' का छवि ५ प्रकृति ' कार्यपद्धतियों की प्रत्येक नीति पर बनाया' तथा उत्तर अन्य उपायों-पक्ष के प्रतिनिधित्व वास्तविक उत्पन्न की नीति है कार्य करता , जहाँ की वाधि, उत्पन्न की

है कार्यकर्ताओं का ऐसा स्थापित करना, जमींदार वर्ग के कार्यों को पूरा करने के लिये
विधायक का कार्य बनाना, ऐसा केन्द्रों के स्थापना, परिवर्तन के लिए कार्य, सम्पत्ति
का विरोध, जलियत के बहाली, मुक्ति के लिये कार्य, जमींदारों को अपनी नीति
मिलाकर तथा विधायक स्थापित करना जो उत्थापित करना, प्रत्येक पर एक प्रविष्टि
का प्रदान किया गया ।

[illegible]

राष्ट्रीयता का एक नया पैर की यमान का लक्षणों के
उपर संश्लेषण के एक नया रूप है। इसे अपने लोगों के पराक्रमों की प्रशंसा करते
हुए एक निष्ठावान है या उसका प्रभाव होता है। उन लक्षणों की बढ़ती निष्ठा
की बढ़ती जा परिभाषा है। नया हमें लक्षणों की एक नई की नीति
बनाता है और नीति के अनुसार कार्यवाही की निर्धारण की करता है। स्वामी
लक्षणों के लक्षणों की एक के लक्षणों एवं नीतियों तथा कार्यवाही में निष्ठा
बनाता है किन्तु स्वामी, सामाजिक, स्वामी एवं विभिन्न लक्षणों के
लक्षणों के लिए वास्तविक नीति, नीतियों एवं अन्य कार्यवाही की नीतिगत नीति
है। इस लक्षण एवं नीतिगत है एक के लक्षण एवं नया एक नीति की लक्षणों तथा एवं
बनाता है वास्तविक नीति का लक्षण निष्ठा है कि एक एवं नया में नीति की
लक्षणों, नीतियों, नीतियों एवं नीतियों की नीतिगत तथा नीतिगत
है किन्तु लक्षण लक्षण प्रदान करने की लक्षण नीति नीति, एक लक्षण है
नीति एक नीति नीति नीति लक्षण लक्षण में नीतिगत नीति नीति। नया नीति
का प्रमुख कार्य पूर्ण नीतिगत नीति, सामाजिक लक्षण में नीति एवं नीतिगत
नीति का एक की नीति नीति में नीति प्रदान की नीतिगत नीति है।

छोटी बच्चा बड़ी, सामाजिक, वार्षिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए हमें द्वारा एक मान्य हो नीति एवं उपाय प्रस्तावों करते हैं । राजनीतिक कद के अंदर वैयक्तिक के लिए विद्वान्मय नीति संस्कारात्मक कल्याण का विचार है ।^{११}

छोटा विमान का नौ विचार पुनः राजनीतिक

नेताओं का जिस तरह एक विद्वान्मय नीति पुनः है वही एक पक्ष का अनुमान लगाया जा सकता है । इन नेताओं के सामान्यतः नौ नौ प्रश्न पर चर्च करने पर आपका क्या विचार है ? के उत्तरों से एक प्रकार, निम्नी है । एक चर्च करने की नेताओं के ६, २५ प्रतिशत 'बच्चा', ६२, ५ प्रतिशत 'पुत्र' तथा २९, २५ प्रतिशत 'मित्र' विचार व्यक्त किया । क्या: एक स्पष्ट है कि एक चर्च करने की पुनः विचारणीय, इन मामलापारों एवं महाप्राय संकल्पनाओं नेताओं की संस्था छोटा विमान का नीति में अधिक है , संस्था: वही का परिणाम रहा कि उनकी ही राजकारण पारम्पर्य अनुगत सामान्यता के प्रत्यागो के रूप में विचारक पुनः फिर करें, किन्तु एक एक चर्च करने करें अन्तर्गत अन्तिम के एक १९७७ ई० में प्रत्यागो पुनः एक पराजित हो नये ।

३२

एक चर्च करने की बच्चा मामलापारों नेता ने 'आत्मसीध' का प्रतिबन्ध किया । 'मित्र' कर्मातु बच्चा और पुनः दोनों कर्मापारों नेताओं ने ही प्रतिबन्ध उत्तर दिया कि स्वायत्त पक्ष एवं प्रतिष्ठा के लिए किया गया एक चर्च करने 'पुनः' है और विद्वान्मय, नीतियों, कार्योन्माँ एवं व्यक्ति के कारण सीमापारों एक चर्च करने 'बच्चा' है । 'मित्र' उत्तर देनेवाले नेताओं में २० प्रतिशत वता एक अन्तिम तथा २० प्रतिशत 'अन्त' अन्तिम के नेता रहे । क्या एक समझ था कि भारतीय राष्ट्रीय अन्तिम की प्रवर्तिकादी विचारधारा का प्रभाव एक चर्च करने की राजनीतिक नीति पर भी पड़ा है ?

जिन नेताओं का विद्वान्मय नीति पुनः 'रूप' की बात है और पुनः पक्षीकरण की भी बात है, वे एक चर्च करने की 'पुनः' मानते हैं । क्योंकि उन्हें आत्म विचारक अनुभव की बात है । दोनों के आश में उपाय

ज्ञान विचार :

राष्ट्रनीतिक कल का नेता मानसिक एवं भावार्थिक ; भावार्थिक एवं कर्तव्य ; कर्तव्य एवं कर्तव्य ; कर्तव्य एवं कर्तव्य ; कर्तव्य एवं कर्तव्य ; के पारम्परिक व्यवहारों में क्या की ज्ञान उत्पन्न हो जाता है कि उसी व्यवहारों या विचारों ज्ञान है किन्हीं पुनः ज्ञान उत्पन्न हो गई । राष्ट्रनीतिक नेता ज्ञान की विस्तृत ज्ञानवादी ज्ञानों का वन्दन करता है और उसी दूर दूर की स्थापित करता है । ये ज्ञान प्राप्तः ज्ञानवादी होते हैं जो कि कृष्णान्तर्गत होकर ग्रंथि का वाते हैं किन्हीं भारतीय स्तर पर हैं । यदि उन्हें विचार कर दिया कि व्यवहारों की उत्पत्ति एवं उत्पत्ति फिर एक बाती है । नेता कर्तव्य कल के भावार्थिक ज्ञानों की भी दूर या विचार करता है जैसे ज्ञान एवं ज्ञान फल में किन्हीं कल की प्रत्येक गतिविधि उत्पन्न करती रहती है । भारतीय राष्ट्रनीतिक कल के ज्ञान के ज्ञान किन्हीं भारतीय स्तर पर हैं ।

क्या की ऐसी स्थिति का बाती है कि नेता के प्रति कर्तव्यार्थियों में वाक्यपूर्ण करने जाता है और उसी कर्तव्य के बीच प्रतीत होता है कि नेता स्वयं ज्ञानों की जन्म होता है जो कि एक पूर्णतः कार्य है । सन् १९६० ई० के विधान सभा निर्वाचन में क्या की राष्ट्रियतावादी भावों पराजित हो गयी किन्हीं की सन् १९६१ ई० के निर्वाचन में भावों के विरोध में ज्ञानों ज्ञानों की बाती ^{१४} का बाती किन्हीं ज्ञान उत्पत्तिवादी की दूर किन्हीं प्राप्त कर दिया और की ज्ञानवादी भावों पराजित हो गयी । ज्ञान की किन्हीं विधान सभा की ज्ञानों में ज्ञानों एवं भावों जातिओं के ज्ञानों में बदलकर विरोधी-भावात्ता ग्रंथि का कर्तव्य है । ज्ञान विचार के लिए नेता मन्त्रालय, उद्योग, निवेश, गतिशीलता आदि के रूप में कार्य करता है । ज्ञान विचार के लिए ज्ञान ज्ञानों का उत्तरा होता है किन्हीं किन्हीं प्रत्यक्ष विचार किन्हीं की किन्हीं ज्ञान विचार है किन्हीं ज्ञान ज्ञानों है । ज्ञान विचार की ज्ञान एवं भावों का भी विस्तृत हो जाता है । युद्ध की ज्ञान विचार का एक भाग है किन्हीं की ज्ञानों की ज्ञानों है ।

कर्तव्य में ज्ञान उत्पन्न :

राष्ट्रनीतिक कल का नेता भावों की प्रतीति के लिए ज्ञानवादी किन्हीं

जीनेवाले नहीं कीं कारीरिह और मानसिक ; शारीरिक एवं वाय्वात्मिक , शारीरिक एवं वैचारिक , प्राकृतिक एवं कृत्रिम , मानवीय एवं शारीरिक आदि में का परस्पर विरोध की विचारों विचारणीय होती है का नेता हम हम के नम्य सम्मेलन सम्मेलनकार है । सम्मेलन सम्मेलन की प्रक्रिया विचारणा, प्रतिपाद के सम्मेलन सम्मेलनकार के रूपों में बदली रहती है । राजनीतिक वह का नेता सभी वह की सम्मेलन रूप प्रदान करने की उद्देश्य पैदा करता है जिसके लिए परस्पर विरोधी नीतियाँ, कार्यक्रमों एवं विचारों पर संश्लेषात्मक चिन्ता करके देश की परिस्थितियों के अनुसार ही देश होता है उसी प्रणालीय मुक्ति सम्मेलन करता है । परस्पर विरोधी नहीं में सम्मेलन स्थापित करना बहुत ही एक कठिनाई है । वर्तमान में मीन एवं तैमर के नहीं में बहुत होता है ।^{१५}

श्रीमान विमान का नीच के नेताओं है साधारणतः के समय पूर्व पर प्रत्येक की नहीं के नेता आपस में मिली जुली रहे तो देश पर का प्रभाव होता १ के उत्तर में ७०, ५ प्रतिशत बन्धन तथा १२, ५ प्रतिशत पुरा संस्थान बताया । बन्धन प्रभाव का अनुमान करनेवाले नेताओं ने इसी देश विदेश एक दूसरे की विचारणाओं की आवश्यकता एवं प्राप्ति का नाम, विचारों की कार्य प्रणाली तथा देशविदेश के विचारों का आचार-प्रदान होने की कार्य कल्पना किया और एकात्मिक नीति की आवश्यकता पर का किया । बन्धन प्रभाव बताते वाले नेताओं में १८, ७५ प्रतिशत ने देश के कई प्रश्नों पर, पंडीय अनुशासन में रखकर का देश विदेश है विचार बन्धन होने, देश प्रतिक्रिया की बताया । पुरे प्रभाव का अनुमान करनेवाले नेता इसी अनुशासकीयता, पंडीय कार्यवाही की उद्देश्य का कारिह की अनुपेक्षित नीति की कल्पना किया ।

वे नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं भारतीय जनता के ही रहे कार्य का कार्य नहीं । ऐसा प्रतीत होता है कि पुरे प्रभाव का अनुमान करने वाले नेता वह विचार की कारिह है शक्ति महत्व प्रदान करती है तथा देशविदेश के साथ कारिह का सम्मेलन स्थापन हमी प्रकृति के प्रतिकूल है । ७०, ५ प्रतिशत नेता सम्मेलन कारी है कि परस्पर विरोधी नहीं की ही देश विदेश के लिए एक-दूसरे कोकर कार्य

बिरोधी यह का नेता ऐसे प्रशासन का यह बिरोधी करता है
 भी करता पर क्या का कार्य स्थापित करना चाहता है । प्रशासन का क्या की
 और करना स्थापित है क्योंकि जो के कार्यकर्ता को कार्यकर्ता बना उठा
 प्रत्येक कार्य है, परन्तु यह बात का ज्ञान होने रहे कि प्रत्येक की सेवा करना ही
 उठा उठा है न कि जोही सामान्य उपायों का काम करना । राजनीतिक नेता
 का कार्य है कि प्रशासन को कैम्प्युट रहे, उठा बिन्दु न ही उठा फिर यह पर
 निर्माण का बहुत उठा और यह कार्य में कार्यकर्ता कार्यकर्ता को क्या उठा निर्मित करे ।
 क्या में नवान्न प्रशासनिक कार्यकर्ताओं एवं कार्यकर्ताओं को यह बीच करना राज-
 नीतिक नेता का कार्य है कि उठा कार्यकर्ता करता की सेवा है ही पुराणित रह
 उठा है न कि जो उठाने, पकाने, कुकाने, पकाने, पकाने, कुकाने करना
 नीति है, उठाने कार्य है । यह प्रशासन करता की सेवा है कि उठा ही उठा
 है यह करता का परिमाण करना और प्रशासन के कैम्प्युट करना नेता का कार्य है ।

एक विचार क्या चीज में लक्ष्मी केन्द्र, विचार केन्द्र, धारा,
व्यवस्था, विचार केन्द्र क्या कहेंगे उन कुछ बातें व्यक्त होने हैं राष्ट्रीय
नेतृत्व की प्रशंसा की है। उनमें से एक बात यह है कि विचार केन्द्रों
के व्यक्तियों या व्यक्तियों का क्या है कि वे विचार केन्द्रों में एक नेता बना लें
विचार में क्या एक प्रकार में धाराधारा का एक व्यवस्थापक, विचार केन्द्र
कहेंगे हैं । श्री डा० देवराज सिंह ने भी भी प्रचार किन्तु लक्ष्मी केन्द्रों को

राष्ट्रीयता का जो भाव हमें राष्ट्रीयता के द्वारा जो है
 के माध्यमों से वास्तविकता में लाने के लिए जो प्रचार जो प्रचार
 करना है । प्रत्येक राष्ट्रीयता के माध्यमों में यदि हमारे पास राष्ट्रीयता की भाव
 तत्त्व को प्रोत्साहित करने की एक ही प्रचार के ही माध्यमों के माध्यमों से प्रचार
 करना ही है । राष्ट्रीयता के द्वारा जो प्रचार जो प्रचार है वास्तविकता का
 प्रचार करना है कि हमारे राष्ट्रीयता का भाव वास्तविकता के लिए
 राष्ट्र-राष्ट्रीयता, प्रजातन्त्र, लोकतन्त्र, लोकतन्त्र, लोकतन्त्र, लोकतन्त्र,
 लोकतन्त्र के द्वारा राष्ट्रीयता के द्वारा जो प्रचार जो प्रचार है ।

यदि मज्झिमासाली को बरीयता का देने का व्यवहार किन्तु यदि
 का विधान का विधान पर का प्रभाव होता ? के उपर में मैत्राणी में २० प्रतिशत
 वस्था, ४४ प्रतिशत दुरा का ६ प्रतिशत कीर्ति काय नहीं बताया । वस्था
 प्रभाव मज्झिमासाली में वस्तुतः के जीवन की प्रतिनिधि के होने की वीर विषयका
 लक्ष्मी के जीवन की स्पष्ट विधा की कि स्पष्ट रूप है प्रतिनिधित्व का
 मानका के मूल्यों पर आधारित है । इस मैत्राणी में प्रतिनिधित्व वस्था बताया
 का कि मज्झिमासाली विधान का प्रतिनिधित्व को । दुरा प्रभाव मज्झिमासाली मैत्राणी
 में जीवन की उत्पत्ति, वैश्व की विद्याका, प्रत्यक्ष विधान, नदीय प्रत्यक्षी
 प्रभाव नहीं कीरत होने का वैश्व विधान में न होना के विधानों का कारणों
 के आधार स्पष्ट की विधान प्रभाव: स्पष्टता, वाच्यता, कीर्ति प्रतिनिधित्व
 कीरत वाच्यता के मूल्यों की काय प्रभाव होती है ।

एतु १९७४ ई० के विधान का विधान में बापके पद की बीच या बार कि स्थितियों में पुर्न १ के उधर में वता कप्रिय के नेता कने पद की पराभव के कारणों में ४४ प्रविष्ट प्रत्यादी का मुटि पयन १० प्रविष्ट बापकी मुठमन्दी , १२ प्रविष्ट वसुधाका का वनाव , ६ प्रविष्ट बापि पता , ६ प्रविष्ट कपकेवर्षों का वनाव तथा ६ प्रविष्ट रहितों एवं मुठमन्दी का वनाव न मिलना वताया विष्टे पद के वान्धित कारणा का प्रविष्ट का बार बापुय कारणों का प्रविष्ट १२ रता । नातीय वनाव के नेताओं ने वने पद के पराभव के उधर १४ प्रविष्ट ' प्रत्यादी की मुठमन्दी ' ११ प्रविष्ट वनाव का वनाव , ११ प्रविष्ट

निम्नांकित १ - १- कृष के लिए बाह्य कार्यों के सभी वस्तु सामग्री
 कीमतों के बाप-बाप होने की एक प्रणालि २- निम्नांकित कार्यों का एक मूल्य
 स्तर ३- कृष की अनुपस्थिति की कि परिस्थितियों के परिणामी के सामग्री, जमा-
 योक्त में कार्यों की निम्नीकरण की । ४- कृष के कार्यों में कर्मचारी जमायों
 ५- प्रत्येक कार्यों के जमा में सामुदायिकता ६- कृष के कार्यों जमा निम्नीकरण के
 प्रति कार्यों में कर्मचारी कीमत ७- कृष के कार्यों में कृष की कमाई होने जमा
 उनके निम्नीकरण मुक्तों की सम्पादित करने की बात ।

क्या कार्यों निम्नीकरण सामग्री सामग्री कीमतों, मूल्य
 निम्नांकित, अनुपस्थिति, कर्मचारी जमायों, निम्नीकरण सामुदायिकता,
 कार्यों एवं कार्यों के प्रति निम्नीकरण जमा कृष में होने की उत्पत्ति कार्यों, का
 निम्नीकरण, प्रत्येक कार्यों के निम्नीकरण केता होने है । राजनीतिक कृष की निम्नीकरण
 का स्तर होने होने के लिए केता कार्यों के निम्नीकरण करने है, कार्यों
 कार्यों के निम्नीकरण है, कार्यों की और प्रत्येक प्रमाण करने है, कार्यों
 एवं कार्यों में निम्नीकरण करने है, कार्यों पर होनेवाले कार्यों की निम्नीकरण प्रमाण करने
 है, कार्यों, कार्यों एवं कार्यों के निम्नीकरण के
 बात करने है और कृष की निम्नीकरण की उत्पत्ति करने है ।

यदि राजनीतिक केता का निम्नीकरण राजनीतिक केतिक स्तर निम्नीकरण
 की कार्य तब उनके मुक्त, कृष कार्यों में निम्नीकरण, निम्नीकरण, कार्यों,
 निम्नीकरण, कार्यों, कार्यों निम्नीकरण, कार्यों, कार्यों, प्रमाण
 कार्यों परता एवं कार्यों की परता कृष कार्यों । राजनीतिक केतिकता के
 निम्नीकरण के लिए कृष के निम्नीकरण करने कार्यों है और उनके कार्यों पर निम्नीकरण
 का निम्नीकरण करने है । कृष का निम्नीकरण कृष की राजनीतिक केतिकता का
 निम्नीकरण निम्नीकरण है ।

कार्यों में निम्नीकरण करने होने के लिए कार्य क्या-क्या उपयोग
 करते हैं ? प्रमाण है प्रमाण कार्यों का निम्नीकरण करने पर स्पष्ट होने है कि
 १५ प्रमाण कार्यों निम्नीकरण उपयोग - की प्रमाण कृष पर निम्नीकरण, निम्नीकरण,
 निम्नीकरण, कार्यों का निम्नीकरण, कार्यों के मुक्त-मुक्त में निम्नीकरण

जब यह समझना चाहिए कि जो नेता का पूर्ण प्रतीकीकरण हो गया है। वही प्रतीकीकरण के कारण ही नेता का सम्मान, कमान, शक्त, सम्पत्ति, विभव, पराक्रम, उत्थान, कान्ति आदि उसके साथ साथ वह का ही माना जाता है। राजनीतिक नेता वह है प्रतीकीकरण के लिए पूर्ण जिज्ञासु बनकर सभी श्रियाओं में सम्पृक्त होता है, अधिकाधिक ज्ञान उस जगह पर बाधित पूर्ण मार्ग पर बाधित रहता है और वह ही जीवन्मुक्त का अभिप्रेत करता है।

बापट राजनीतिक नेता सभी क्षेत्रों में बाधित श्रियाओं पर वह की विवेकताओं का अभिव्यक्ति करता है किन्तु वह ही क्षुब्धताओं की वीरता बुद्धि होती है। यदि नेता विद्वान्मानी, धृष्टिहीन, बाधितवादी, विद्वान्मानी, पूर्ण बाधित, सभी जगह बाधित सभी श्रियाओं का पूर्ण ज्ञान उस जगह बाधित वह ही सम्पूर्ण श्रियाओं का प्रतीक समझने लगता है और अपना सभी नेता बन कर बैठता है। बाधित स्वामीय विधान का हीन में बाधितवादी वह है प्रमुख स्वामीय नेता के सम्पूर्णों के कारण जो नीचे, ऊपर, बाधितों का वह सम्पूर्ण बाधित रहा और बाधित सम्पूर्ण में ही नीचे के ही नीचे की बाधितों का प्रतीक समझना जाता है। एक नेता सभी श्रियाओं करने के लिए बाधित क्षेत्रों का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व करता है।

७- नीति-विधान एवं श्रियाम्पन्न :

राजनीतिक नेता नीचे क्या वह सम्पूर्ण क्षेत्र के सम्पूर्णों का सम्पूर्णों के लिए, सम्पूर्णों के सम्पूर्णों के लिए, बाधित श्रियाओं के लिए एवं बाधितवादी श्रिया, धृष्टता एवं धृष्टता के लिए, नीतिवादी श्रिया, कान्ति, सम्पूर्ण एवं विचार विनिमय के परमाणु, बाधित का बाधित सम्पूर्ण का श्रियाओं की प्रतीकात्मक करनेवाली बाधित, बाधित, राजनीतिक, बाधित, बाधित, बाधित एवं वही प्रकार की सम्पूर्ण श्रियाओं का विधान करता है या सभी परमाणु, बाधित, बाधित, सम्पूर्णों के मार्ग में विनिमय है। राजनीतिक क्षेत्रों में नीति-विधान नेता है। राजनीतिक क्षेत्रों में नीति-विधान श्रिया सम्पूर्णों के बाधित-विधान का मान करता है।

‘वह ही नीतिवादी का निर्धारण किसी क्षेत्र में है ? के अन्त में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं में’ सम्पूर्ण - नीति विधान क्षेत्र है,

व्यवहारों में विचार, प्रवृत्तियाँ तथा प्रमाणित वेदार्थ, कला की कलाओं के प्रति प्रवृत्ति करें, नदी की पूर हो, कंच नीच का कंच भिटे, वेद भाषणा वेद की भाषा, कवी राजनीतिक का एक कवीमान्य विद्वान्य पर राजात्मक कार्य करें कला भाषा का कलावीर्यवादी, कला किसी भीति एवं नीति निरिक्त विद्वान्य का परिणम भिक्ता है ।

उपरोक्त उद्देशों का विवेचन करने से प्राप्त होता है कि नीति निर्माण में त्रिभुवीय (राज्य, शासन एवं शासक) दृष्टि अनिवार्य है । राज्य के रूप में राष्ट्रीयता, व्यावस्थिकता, नदी की उन्मुख तथा कंच-नीच के भावों का शासन, शासक के रूप में योजनाओं का ठीक कार्यान्वयन, वन्द्यनीय शासन, प्रवृत्तता, कवीय निष्ठा एवं कलावीर्यता, तथा शासक के रूप में राजनीतिक, वेद चत्वार तथा कला का कलाया जाना सब बात की दृष्टि करता है कि नीतियों के निर्माण में त्रिभुवीय दृष्टि अनिवार्य है । कला भारतीय राष्ट्रीय कवि के नेताओं के उद्देशों है यह कल्प स्पष्ट नहीं हो जाता कि भारत की वर्तमान अवस्था में राष्ट्रीय प्रगति के लिए वे कौन कौनसे कार्यवाही हैं ?

भारतीय जनता के नेताओं ने के उपनिषद् प्रगति के लिए उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में प्रामाणिक कर्माती- नीतिधार है राष्ट्रपति का, जीवन विधीय कला में कवि का विकेंद्रीकरण^{५१} भारत कला की कलाओं पर कार्य करें, 'राजनीतिक शासनिक, धार्मिक, नीतिमय एवं कवीय जीवन के प्रचारों की एक कृत्य परिणाम हो गया है कवी न्यूनतम वाचक पर कार्य करें^{५२} बताया । इन उद्देशों में की त्रिभुवीय दृष्टि की कला निम्नी है । राज्य के रूप में जीवननिधीय कला तथा भारत की कला निम्नी है, शासन के रूप में कला का विकेंद्रीकरण एवं न्यूनतम कार्यकाल पर कला है तथा शासक के रूप में प्रामाणिक कर्माती, विभिन्न जीवन के प्रचार तथा कृत्य परिणाम है । इन नेताओं के उद्देशों है प्रामाणिक कर्माती, कवि के विकेंद्रीकरण तथा कवी विद्वानों में कवीय नेताओं की कृत्य परिणाम के कलाओं पर प्रभाव पड़ता है ।

भारतीय जीवन के नेताओं ने उपनिषद् प्रगति के लिए उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में कृष्ण जीवन की, भारतीय दृष्टि यौन्य काचर वाली ,

४- राक्षसीछिन्न कायुक्तकायु विस्तार

७ - १६ वर्ग
२० - ३२ वर्ग
३३ - ४५ वर्ग
४६ - ५८ वर्ग

प्रतिफल

२५, ००
२५, ००
३१, ००
१६, ००

कुल योग -

१००

५- शैवालक यौग्मकायकस्तर

कक्षा १० तक
कक्षा १२ तक
स्नातक + अन्य विधीपाठ + परीक्षापाठ
स्नातकोत्तर + ०० + ००

प्रतिफल

२५, ००
१२, ५
३०, ५
२५, ००

कुल योग -

१००

६ - व्यवसायिकव्यवसाय

कृषि
विधि
व्यापार
राक्षसीछि
काम के
विधि
व्यापार
विधि

प्रतिफल

२५, २५
२५, ००
१२, ५
१, ५२
१, ५२
१, २५
१, २५
१, २५

० वर्ग १५, ०५ प्रतिफल पूर्णकालिक

कुल योग -

१००

૭- ગાંધી અવસાનકાળ

અવસાન

પ્રતિભા

કુળિય

૨૦, ૫

આપાર

૬, ૨૫

કુલ યોગ -

૨૬, ૭૫

૮- વાંચક

કર્મ

પ્રતિભા

ચિન્મય

૨૦, ૫

ચોંટ

૬, ૨૫

હસ્તાવ

૬, ૨૫

કુલ યોગ -

૩૨

૯- માળાવલ

માળા

પ્રતિભા હાથ

ચિન્મય

૨૦

ચોંટ

૨૦, ૫

હસ્તાવ

૨૨, ૦૦

કર્મ

૫૦, ૦૦

વેળા

૧૨, ૫

કુલરાણી

૬, ૨૫

કાળી + કાળી

૬, ૨૫

માળી

પ્રતિભા

૧૦ માળી

૦

૫ માળી

૨૦ ૫

पाणी

पीपे हे

दीस पाणी

चार पाणी

पाच पाणी

छा पाणी

प्रतिशत

२०, ५

१२, ५

६, २५

६, २५

कुल पाप -

१००

१०- पारिवारिक व्यवस्थापन

व्यवस्था

धन्य

विपन्न

प्रतिशत

६२, ५

२०, ५

कुल पाप -

१००

११- परिवार उत्पन्न उत्पन्न

उत्पन्न विस्तार

५ - १०

११ - १६

१७ - २०

इतर उत्पन्न

प्रतिशत

५०, ००

११, २५

१२, ५

६, २५

कुल -

१००

१२- परिवार में भूमिका का

भूमिका

उत्पन्न

विपन्न

पारिवारिक

प्रतिशत

६, २५

६, २५

१२, ०५

१३- राक्षीय व प्रत्युक्त व्यय

<u>प्रत्युक्त व्यय</u>	<u>प्रतिशत</u>
वापस कटौती व वी पन्ना का	३९, २५
वीय व वापस कटौती का	२५, ००
अन्तराल व पोषीय कटौती	३०, ७५
	<hr/>
कुल योग -	९४

क + क, ७५ प्रतिशत कटौती का १२, ५ प्रतिशत कटौती
 घ + २५ प्रतिशत कटौती, १२, ५ प्रतिशत वास्तविक लक्ष्य का
 ६, २५ प्रतिशत कटौती ।

१४ - फर्मा व प्रत्युक्त व्यय

<u>फर्मा की संख्या</u>	<u>प्रतिशत</u>
१	३९, २५
२	२५, ००
३	६, २५
४	१२, ५
५	३०, ७५
६	१२, ५
	<hr/>
कुल योग -	९४

अर्थात् वास्तविक व निम्नलिखित व्यय प्रत्युक्त

की व है :-

- (१) उक्त फर्मा व वैयाकी का प्रतिशत व्यय है ।
- (२) ३९, २५ प्रतिशत वैया की व्ययता व पूर्ण व है का २५ प्रतिशत वैयाकी की वास्तविक व्यय व व्यय है ।

- (१) ७५ प्रतिशत नेताओं की राजनीतिक आयु २० वर्ष से अधिक है ।
- (२) स्नातक, स्नातकोत्तर स्नातकियों तथा अन्य विधीयावित्तों या कमीयावित्तों की योग्यताप्राप्ति, नेताओं की प्रतिशत ६२, ५ है । क्षेत्रीय योग्यता से कनाय बाधा कीर्त नेता नहीं मिल ।
- (३) कुल्लि का कुल्लि व्यवसाय करनेवाले नेता १२, ५ प्रतिशत की मिले कीर कुल्लि का कुल्लि व्यवसाय करनेवाले ७७, ५ प्रतिशत है । पूर्ण रूपेण कुल्लि पर बाधाविश्व व्यवस्था में केवल राज्या का कनाय मिल ।
- (४) नेताओं में का प्रतिशत विन्दी बाधा का कनाय मिल, उन्ने परवाह कीर्त बाधा का ; ७५ प्रतिशत नेताओं की दो या तीन बाधाओं का कनाय है का बाध एक बाधा बाकीबाधा कीर्त की नेता नहीं मिल ।
- (५) ५० प्रतिशत नेताओं के परिवार में घरवालों की संख्या ५-१० तक मिले का ६२, ५ प्रतिशत नेताओं के परिवार केवल मिले । केवल परिवारवाले नेताओं की राजनीतिक आयु एवं क्षेत्रीय योग्यता अधिक निम्न कीर है राजनीति में अधिक कनाय प्रयुक्त करते हैं ।
- (६) ६३, ७५ प्रतिशत नेता अपने परिवार में परामर्शीबाध, निदेश या स्वाधी की प्रयुक्त विन्दी हैं ।
- (७) तीन पण्टे है अधिक कनाय राजनीति में प्रयुक्त करनेवाले नेताओं की दो या दो है अधिक फाँ का कुल्लि है ।

का: कनाय केवल नेरी कनाय परिवारवाले की प्रमाणित करते हैं कि केवल परिवार नेता के कीर कनाय कनाय प्रदान करता है कनाय कनाय कनाय, अधिक कनाय कनाय कनाय विन्दी की पूर्ण रूप की का कनाय केवल परिवार प्रणाती में विन्दी कुल्लि बाधा है ।

सन्दर्भ - संकेत:-

- १- ई० बी० वेरिन, एच० एच० डायरेक्ट : एच० बी० वेरिन : द्वारा संशोधित
काउन्सिलर बाफ बाउलीडापी, १९६३, पृष्ठ ६०० ।
- २- डेक्टर बी० डेलाने, ए चडी बाफु पीजिटिव डीडरडिन : संशोधित
पीजिटिव विडिफर, एच० एच० एच० बी० एलडील एच पीजिटिव
पीजिटिव, १९७२, पृष्ठ १०० ।
- ३- एच० बाएनर, पार्टी पीजिटिव इन डीडिया, १९६० पृष्ठ २५० ।
- ४- निवाडि बाधाडि एडाबाबाड के डीजिट के बावार पर ।
- ५- एच० बाएनर, पार्टी पीजिटिव इन डीडिया, १९६० पृष्ठ २५१ ।
- ६- २ पृष्ठ १०८ ।
- ७- एच० एलडील, पीजिटिव पार्टीवि : ए विडिवाडि एडाडिडि, १९७६, पृष्ठ १०६-८२ के बावार पर ।
- ८- एच० पीजिटिव, विवार नलीड, पृष्ठ ४१० में उद्धृत ।
- ९- बी० डिलडरी, पृष्ठ ३६६ : डेवर्डी डिलडरी, पृष्ठ ७५५ ।
- १०- एच० बाएनर, पीजिटिव डीडियाडिडि, १९५६, पृष्ठ २० ।
- ११- बाए० ए० डल, पार्टी पीजिटिव एडाडिडि, पृष्ठ ८५ ।
- १२- बी० डीरडिड डिलड, डीडिया - डिलडिडिड डी डेवर्डी डी ।
- १३- बी० बाडिराय बाडिबाड, उडर ड्रिड डीजिट डीजिट के डेवर्डी, युडवी० डीवी, उडर ड्रिड डेवर्डी डी बावारडर ।
- १४- डीजिट डी डल डिलड एच० डीजिट, डीजिट डल डीजिट बाफु डीजिट
बाउलीडापी, पृष्ठ ४१६-२० ।
- १५- डीजिट, पृष्ठ ४३-४३३ ।
- १६- एच० डीजिट, पीजिटिव पार्टीवि, पृष्ठ १४२ ।

- १०- १६ पुष्ठ १०० ।
- ११- ल० कुवत्तर, पीछिटिष्ठ पाटीपु, १६५, पुष्ठ ११४ ।
- १२- श्री रावेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी के साक्षात्कार के विनांक २८-६-७६ ।
- १३- श्री कै० मुन्नाय मजी, विना प्रविशपि, मुन्नाय मन्त्रि, राजावाय के साक्षात्कार विनांक ६-६-७६ ।
- १४- ल० कुवत्तर, पीछिटिष्ठ पाटीपु, पुष्ठ ११६ ।
- १५- डा० एबी०, मन्त्रि विन्दी विन्नी ।
- १६- श्री कल्याण त्रिपाठी, कल्याण के साक्षात्कार विनांक १५-११-७६ ई० श्री श्री पाण्डेय श्री के कल्याण कल्याणी २६ ।
- १७- श्री महावीर प्रसाद कुवत्तर के साक्षात्कार विनांक १८-६-७६ ।
- १८- ल० श्री० कल्याण, पीछिटिष्ठ पाटीपु, ए विन्नीविष्ठ साठीपिष्ठ, पुष्ठ ११६ ।
- १९- मुन्नाय, पुष्ठ २०१ ।
- २०- श्री कल्याण त्रिपाठी- विना विन्नीय कल्याण श्री महावीर कल्याण विना कल्याण श्री०, राजावाय के साक्षात्कार के विनांक १-८-७६ ।
- २१- श्री० श्री० कल्याण विन्नीय कल्याण, मुन्नाय कल्याण विन्नीय कल्याण श्री०, १६५६, पुष्ठ ११६-२० ।
- २२- श्री० श्री० कल्याण, विन्नीय, ए विन्नीय विन्नीय कल्याण २, १६५६, पुष्ठ ११६ ।
- २३- श्री० श्री० कल्याण विन्नीय विन्नीय कल्याण कल्याण कल्याण विन्नीय, १६५६, पुष्ठ २६८ ।
- २४- ल० श्री० कल्याण, पीछिटिष्ठ पाटीपु : ए विन्नीय विन्नीय साठीपिष्ठ पुष्ठ २३८ ।
- २५- श्री रावाकल्याण पाण्डेय मुन्नायपुर (श्री० कल्याण कल्याण कल्याण कल्याण कल्याण कल्याण कल्याण) के साक्षात्कार विनांक २८-६-७६ ।

- ३३ - मार्केट प्रेस, पोलिटिकल डिपार्टमेंट ऑफ इंडिया, दिस लाइब्रेरिय बायु-
एलाइट, एडी-एल्यूम, १९५६, पृष्ठ ३३ ।
- ३४- श्री राबिन्द्र प्रसाद त्रिपाठी (जू १९५६ ई० में बना कटिब के फायर
प्रकाशी) है वापसात्कार विचारि २८-६-१९०५ ई० ।
- ३५- ए० ए० डिप्टी, पोलिटिकल नै, पृष्ठ २४ ।
- ३६- श्री राबिन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, बना कटिब ।
- ३७- वापसात्कार के वापार पर ।
- ३८- मार्केट प्रेस, पोलिटिकल डिपार्टमेंट ऑफ इंडिया, दिस लाइब्रेरिय बायु-
एलाइट एडी-एल्यूम, १९५६, पृष्ठ ४२ ।
- ३९- मकरासाधों है वापसात्कार के वापार पर ।
- ४०- डा० पैराथ सिंह है वापसात्कार विचारि १५-१२-०५ ।
- ४१- डा० हरिद्वार राम एवं डा० मोठा प्रसाद सिंह, वायुनिक राजनीतिक
विश्लेषण, १९५४, पृष्ठ १०२ ।
- ४२- प्रिंसा की फेस्टल, प्रेस पृष्ठ एल पोलिटिकल कलर, १९५४, पृ० १३ ।
- ४३- श्री कर्ताराम बाबू कर्मान चौथीय फायर ।
- ४४- निवाधि कलाधि, एलासावाद के वापिरी है
- ४५- २८, पृष्ठ ४०४-५ ।
- ४६- डा० हरिद्वार राम एवं श्री मोठा प्रसाद सिंह, वायुनिक राजनीतिक
विश्लेषण, पृष्ठ ११२ ।
- ४७- ए० ए० डिप्टी, पोलिटिकल नै, पृष्ठ ३१ ।
- ४८- श्री कलासाध विवारी कल के वापसात्कार है विचारि ८-१३-०५ ।
- ४९- डा० पैराथ सिंह है वापसात्कार (विचारि २८-६-०५ (वापसात्कारीन
वीकणा कलाधीन है) ।
- ५०- श्री महावीर प्रसाद मुक्त, मुजुई रीम एल ।

- ५१- श्री राधाचरण बिनाडी के धारास्कार है
- ५२- श्री विनाय शिंदी के धारास्कार है
- ५३- श्री राधाकान्ध पाण्डेय के धारास्कार है
- ५४- डा० कैवराय शिंदे
- ५५- श्री महावीर प्रसाद शुक्ल, पूर्ववर्ती पीपीय बिनासक एवं पूर्ववर्ती जेल जज (राज्य जमा)
- ५६- श्री नरसदा प्रसाद शिंदे पूर्ववर्ती बिनासक प्रत्यादी तथा बिना कार्य व्यक्ता ।
- ५७- श्री दाम महापुर शिंदे, काक प्रमुख, सीड्या, बिना मी ।
- ५८- रा० ज० लिमिटेड, पीपिडिड के, मुख ४१ ।

राष्ट्रीयता का भी भूमिकाएँ एवं कार्य

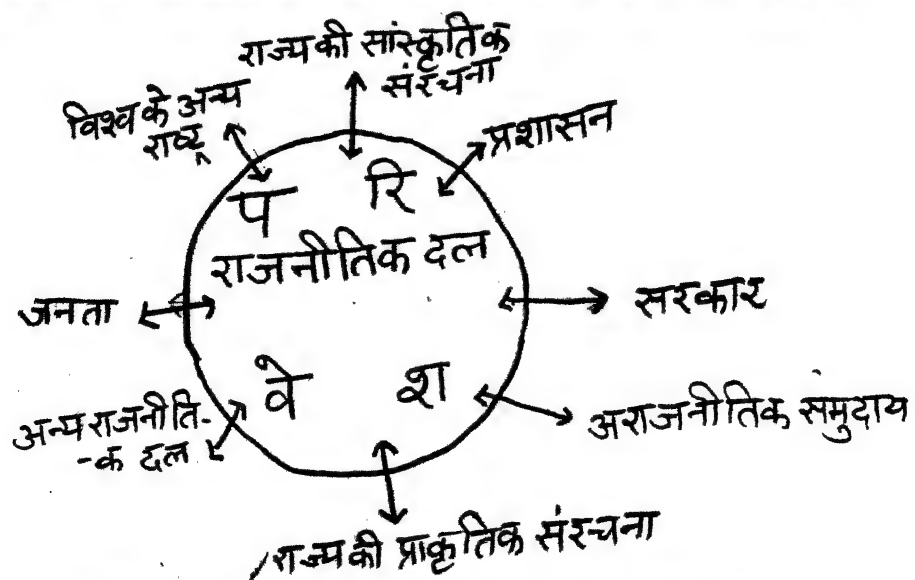
विशेष प्रतिपादन के पूर्व भूमिकाएँ एवं कार्य इसमें है
व्यक्तिगत भावों का स्वच्छीकरण आवश्यक प्रतीत होता है। किसी भाषा
में भूमिका के लोच एवं है, जैसे राष्ट्रीय, वक्तव्य विशेष के पूर्व प्रस्ताव, प्रस्ताव
की प्रस्तावना, व्यक्तियों की भूमिका (भाव) ; आदि। किन्तु यहाँ पर भूमिका
का कार्य परिचित (परिचय) के लोच स्थापना है। यह परिचित में
किसी प्रकार का परिचित भी जाता है यह भूमिका में भी परिचित भी जाता
है और परिचयस्वरूप भूमिका स्थापक में भी परिचित भी जाता है अतः
भारतीय राष्ट्रीय राष्ट्र की भारत- स्वतंत्रता के पूर्व एवं परभाव की भूमिकाएँ
में स्पष्ट और वक्तव्य प्रमाण है। एक ही परिचित में लोच भूमिकाएँ लोच है। एक
ही व्यक्ति की भूमिका निम्न एवं परभाव भूमिका के लोच भिन्न भिन्न होती है किसी
और का निम्न भूमिका भी भिन्न है लोचिक करता है वक्तव्य वाक्य नहीं।

एक ही देश का विचारधर्म, धर्म, धर्म, व्यापारिक
एवं सरकारी कर्मचारियों में वाक्य एवं विचार के लोच भी लोचिक करता है
एवं लोचिक विचार धर्म के लोच भूमिका विचार है और का लोच एवं एक
ही लोच में लोचिक होती है एवं लोच एवं लोचिकारी की भूमिका के
लोच लोच वाक्य भी जाता है। भूमिका स्थापक का प्रभाव पर परिचित के लोच
में जाता है एवं लोच लोच पर परिचित में लोच, लोच एवं लोचिक परिचयों
का लोचिक होता है किसी लोचिक में लोचिकारी लोचिक लोच के लोचिक
ही लोच स्थापना की प्रभाव होती है। यदि लोचिक लोचिकारी नहीं होती एवं
लोचिक, लोचिक, लोचिक एवं लोचिक के लोचों में लोचिक होती है।
भूमिका का वाक्य लोचिक, स्थापक, लोच एवं लोचिकों के लोचिक में
लोचिक जाता है किसी का लोचिक लोचिक लोचिक लोचिक की लोच है। लोचिक भूमिका

में उद्देश्य एवं पद्धति दोनों की पर्याप्त स्पष्टता, व्यापकता, एवं व्यावहारिकता दिखानी होती है कि सम्पूर्ण भूमिका में इनकी वांछित क्षमता होती है यदि सम्पूर्ण भूमिका में अनुपलब्धता होती है कारण उसी केन्द्राधीन समय तक की कार्य कीर भीका का नाम बना दिया तो वह कार्य का स्वतन्त्र चरण कर लेती है । उही प्रकार राजनीतिक कल की सम्पूर्ण भूमिकाएँ काकाचर में कार्य ही जाती है ।

राजनीतिक प्रणाली की सीमाएँ करनेवाले राज्यों में राजनीतिक कल कला एवं सरकार के मध्य ही है किन्तु निर्माण केन्द्र एवं वहा सभी की सम्पूर्ण पर हुआ है । केन्द्र का स्वतन्त्र कला की वीर तथा वहा का स्वतन्त्र सरकार की वीर स्थित होती है । एकीय केन्द्र के क्षेत्रीय भूमिकाओं एवं कार्यो में नामाङ्की का प्रवृत्ति, प्रतिपत्ति, केन्द्र, प्रतिनिधित्व एवं अन्य मन्त्रालय का निर्माण बाध का अनुचित विवरण किन्तु सम्पूर्ण में किया जा हुआ है । वहा या राज्य के क्षेत्रीय भूमिकाओं एवं कार्यो का विवरण ही वह सम्पूर्ण का किन्तु बाध है किन्तु प्रभाव कला, राजनीतिक निर्माण-प्रमाण, राजनीति का वास्तु-निर्माण, किन्तु वीर वीर एवं अनुत्त प्रवृत्ति है ।

किन्तु एक में राजनीतिक कल के परिवर्तन के मुख्य तीन कला, सम्पूर्ण राजनीतिक कल, वराजनीतिक सुचारु, सरकार, प्रणाल, विरल के सम्पूर्ण राज्य, राज्य की प्राकृतिक वरणा तथा वास्तुतिक वरणा है किन्तु निर्माण होने वाली भूमिकाओं एवं कार्यवाहियों का विवरण व्यापक किया गया है ।



चित्र १ : राजनीतिक कल के परिवर्तन के मुख्य तीन ।

१ - निर्वाचन कक्षा

राजनीतिक का कक्षा प्राप्त करने के लिए निर्वाचन कक्षा है।
 औद्योगिक प्रणाली में निर्वाचन कक्षा वस्तुस्थिति का प्रतिबिम्बित चित्र है।
 निर्वाचन राजनीतिक का वह चरित्र है जो प्रति जमीन के निर्वाचन का चरित्र
 द्वारा प्राप्त है। निर्वाचनों की कक्षा के अनुसार चरित्र की कक्षा है
 निर्वाचनों की कक्षा करने का निर्वाचन एक प्रकार है। निर्वाचन कक्षाओं
 का निर्वाचन की कक्षा है। निर्वाचन कक्षा की एक प्रणाली कक्षा निर्वाचनों
 है प्राप्त निर्वाचनों का प्रतिनिधित्व द्वारा प्राप्त करने की कक्षा की एक रीति है।
 निर्वाचन राजनीतिक कक्षा की प्रतिनिधित्व का चरित्र करनेवाली औद्योगिक
 कक्षा है। निर्वाचन कक्षा की कक्षा का परिचायक कक्षा प्राधिकारियों के
 कक्षा की प्रणाली है। निर्वाचनों का चरित्र की कक्षा पर निर्वाचन करने
 का निर्वाचन एक चरित्र है। एक या कक्षा प्रणाली पर निर्वाचनों की कक्षा प्राप्त
 करने की कक्षा का निर्वाचन है। कक्षा का निर्वाचन का चरित्र करने
 है निर्वाचन के आधारकृत चरित्र चरित्र चरित्र है :-

- (१) एक कक्षा के लिए दो या दो से अधिक प्रतिनिधियों हैं।
- (२) प्रति निर्वाचनों की कक्षा का निर्वाचन करने के लिए एक
 कक्षा का कक्षा है।
- (३) का कक्षा एवं प्रति निर्वाचनों के कक्षा कक्षा निर्वाचन
 के लिए कक्षा कक्षा है।
- (४) निर्वाचन का कक्षा स्वयं कक्षा है।
- (५) निर्वाचन-कक्षा, कक्षा एवं कक्षा की कक्षा कक्षा
 कक्षा है।
- (६) प्रति निर्वाचनों एवं का कक्षा में परस्पर कक्षा कक्षा है।
- (७) कक्षा का कक्षा की कक्षा में कक्षा न कक्षा है।

कक्षा: कक्षा कक्षा की कक्षा में कक्षा कक्षा कक्षा कक्षा

में प्रान्तीय संसदीय अधिकरण तथा केन्द्रीय संसदीय अधिकरणों और भारतीय लोकसभा में भारतीय संसदीय बोर्ड प्रस्तावी का निर्णय किया है ।

‘ वापस का विचार क्या है कि प्रस्तावी का निर्णय किया गया है ? के उद्देश में वापस का निर्णय बोर्डों के प्रस्तावित होने के लिए सार पर नाम का प्रस्ताव पारित करने के लिए है, ‘ वापस, बोर्डों के वापस का निर्णय का नाम प्रत्येक निर्णय बोर्ड के पास दिया जाता है, ‘ बोर्डों के निर्णय पर ही उम्मीदवार का नाम होता है, किन्तु निर्णय बोर्ड के निर्णयों का अन्तिम फैसला नहीं है ‘ किन्तु बोर्डों के निर्णयों का निर्णय प्रान्त की, प्रान्त वापस होने के लिए निर्णय बोर्डों के पास दिया है ; भारतीय-संसदीय बोर्डों में निर्णय पारित होता है और ही प्रस्तावी पारित किया जाता है, ‘ किन्तु प्रान्त, प्रान्त के वापस होने के लिए निर्णय बोर्डों के पास दिया है, १९५२ ई० के निर्णय के लिए कहा है ‘ वापस ही नहीं है, ‘ निर्णय बोर्डों के निर्णय द्वारा ।’

उपरोक्त उद्देशों के स्पष्ट हो जाता है कि वापस निर्णय बोर्डों का प्रस्तावी निर्णय में प्रस्ताव अन्तिम निर्णय की पुष्टि है कि निर्णय पारित होता है निर्णय अन्तिम निर्णय एक निर्णय या प्रस्ताव या निर्णय के द्वारा होता होता है । उद्देश प्रान्त के उद्देश में भारतीय संसदीय के प्रस्तावित होने के लिए है कि या बोर्डों के नाम दिया है, निर्णय प्रान्त होता है, निर्णय किन्तु होता है, ‘ निर्णय स्पष्ट निर्णय नहीं है ‘ किन्तु प्रस्तावी बोर्डों के लिए है, ‘ किन्तु सार के लिए करने के लिए है ही प्रान्तों नाम दिया है, ‘ किन्तु निर्णय के माध्यम से निर्णय अन्तिम में आता है ।’

उपरोक्त उद्देशों के स्पष्ट है कि निर्णय निर्णय की पुष्टि माध्यम है । उद्देश प्रान्त के उद्देश में भारतीय लोकसभा के प्रस्तावित होने के लिए है प्रस्ताव, किन्तु निर्णय प्रान्त के राष्ट्रीय सार के निर्णय, ‘ किन्तु निर्णय निर्णय करता है, ‘ कहा है प्रस्तावित किया जाता है, ‘ तब ही निर्णय निर्णय की, किन्तु निर्णय प्रान्त की निर्णय द्वारा निर्णय किया है ।

उपरोक्त उद्देशों के स्पष्ट है कि निर्णय निर्णय की प्रस्तावी निर्णय में निर्णय

कर दी गयी है । ----- हमारा भी है उक्त नियम के अन्वये
जतिष्ठ पुत्र संजन्म कि सामन्तवादी परम्परायें बनाये गयीं, गरीबी
दूर गयी, अन्त्यान्ता मिटिनी और उस राज्य की वास्तविक प्रगति हो
गयी। उस कार्य की उकलना के लिए जतिष्ठ का पुनर्जाति में वापसी
पूर्ण अन्त्यान्त का वापस करती है ।

कम विन्द

मन्त्रीय

केलाय पुरीत

अन्त्यान्त, केलाय मन्त्रिय, केला जतिष्ठमन्त्रिय का
(१० अन्त्य प्रमुख केलायों के नाम हैं)

केलाय केलाय प्रि, उल्लस

(४) ' यह कमू करावी केलायों '

पिता जतिष्ठकारी परिवन्त के कार्यकर्तियों की अतीत
जतिष्ठ होनी के नाम प्रमुख सामाजिक कार्यकर्तियों का वापस
का का स्थान अतीत वापस मिटिस्तु ।

पिता ६ करावी

अन्त्य ३ गरी

प्रि मन्त्रियों एवं कर्तों,

गरीबी छावी केलायों के बारे में कला को पुनरावर्तन
वाली, केलायों एवं गरीब वापसी करानेवालों की पुनरावर्तन
पीछित करनेवाली, यह कमू करावी के द्वारा उत्तर बनाकर कला को
पीछित करनेवाली जतिष्ठ है २० कला, १९०४ है अन्त्य मिन्त्रिय कर कम
सामाजिक कार्यकर्तियों के पिता जतिष्ठकारी परिवन्त, उल्लसवापस
का कम कर की कला प्रगति के, केलाय, मिन्त्रियवापस, वापसी
रत्न के केलाय में यह कमू करावी केलायों का वापस कर

[illegible]

(६) पिछनी कभीय पठा है - कभी पैर की ।

कहाँ पैरों । कुछ है कभीय जीव । पिछनी पाछ, कभीयों की
पीट पर पीट, कभीय कभीयों की कभीय पुनार । कभी यन का का कैय
कभी-कभी की पैरों रहीं ?

मेरी कभीय पैरों ।

मेरी कभीय पैरों ॥

कभी । कभी कभीय पैरों की कभी है । कभीय
की कभी है - कभीय कभीय कभीय की कभी है । कभीय
कभीय की कभी है,

कभी कभीय कभीयों की कभी है कभीय । कभी कभीय कभीय
की कभीय कभी है । कभीय कभीय कभीय कभीय कभी है । कभी पर
कभीय पर कभीय कभीय कभीय कभी है । कभी कभी की कभी है ।
कभी कभी कभी कभीय पर । कभी कभीय है ॥

कभीय कभीय कभीय

(कभीय कभीय कभीय, कभीय)

(७) कभीय की कभी

- कभीय में कभीय कभीय कभीय
- कभीय कभीय कभीय कभीय की कभीय
- कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय
- कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय

कभीय कभीय कभीय

कभीय :

कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय
कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय कभीय - कभीय
- कभीय -

(कभीय कभीय, कभीय कभीय कभीय)

(८) 'कम की बात कम चुने

कम नीति कम नीतिपर

- कम निवारी बाधनी

कमनी के घर उन्नीयवार की निवारी

(कीलना बाध है प्रेम, केनी)

(९) नाथी की है राखी पर बल्लर की पैर की समस्याओं का समाधान
कम है - नीति पर निधि

- भारतीय ग्रामिणों का कल्याण -

- १- प्रजापति की निवारी व बल्लर बनाया बाधनी । प्रेम राखीनिधि
व बल्लर की निवारी के निवारी बाधनी करी करी बाधनी की बाधनी
- २- नाथी प्रजा की कम करने के निधि प्रजापति कम कटाये बाधनी ।
- ३- बल्लर नाथी बाधनी बाधनी बाधनी में बाधनी की ।
- ४- (कीलना) बाधनी नीति के निवारी पर निधि कम निधि बाधनी
बाधनी बाधनी एवं बाधनी के नीति की निधि बाधनी कम नी । बाधनी की
बाधनी बाधनी है बाधनी की निधि बाधनी की बाधनी ।

बाधनी बाधनी की बाधनी बाधनी के निधि बाधनी पर
निधि बाधनी भारतीय ग्रामिणों के उन्नीयवारों की निधि बाधनी ।

भारतीय ग्रामिणों उन्नीयवारों द्वारा प्रजापति एवं बल्लर निधि प्रेम,
कमनी है निधि ।

(१०)

कीलना निवारी कम है

बाधनी राधनी

की

बाधनी बाधनी कम कम निधि निधि पर बाधनी बाधनी निधि बाधनी ।

नी निधि बाधनी प्रेम, बाधनी बाधनी

ज्वारीय प्रचार सामग्री के वितरण के निम्नलिखित सूत्र स्पष्ट करते हैं कि चुनाव अभियान में राजनीतिक दल अपने कार्यकर्ता के माध्यम से जनता को सूचित करने पर प्रकाश डालते हैं :-

- (१) विरीचियों के पिष्टान्धों, पीचियों एवं कायिकों के पुष्पस्थानों
- (२) हास्य की पीचियों के कायिकों में एकछायाओं एवं बहकछायाओं
- (३) विरीचियों के नासिकी मेषधों
- (४) विरीचियों के कुटीरिचिक पाठों
- (५) विरीचों प्रत्याधियों के पारिचिक या अन्य पुष्पस्थानों
- (६) वनमान पुष्पस्थानों, वन्यवस्थाओं, वनाओं एवं वायव्यवस्थाओं
- (७) वन्य वन के वायव्यिक पाठों
- (८) वन्य वन के प्रत्याधियों के वन में वायव्य के वनस्थानों
- (९) वनस्थान वनस्थानों के वनस्थानों के वन वनस्थानों

उपरोक्त शब्दों पर प्रकाश डालकर ही राजनीतिक यह कह जाया नहीं करते कि कदावाता उनके यह है किता में ही कदावाता का निर्माण किया या निर्माण कर ही पर ही जीवन राज यह बहुत रमना । राजनीतिक शब्दों के कदावाता कदावाताओं के बार-बार शब्दों का व्याख्यान प्रयास करते हैं और व्यक्तित्व: लेखों में करते हैं । व्यक्तित्व लेखों में ग्राम एवं शीत के सम्मानित, प्रभावशी, कार्यकारी, यह के कदावाता कदा के विरोधी शिष्टियों के व्यक्तियों की मान-कारी लक्षित करते हैं । यह प्रकार के व्यक्तियों के पुस्तकों, जायदों एवं नाम नाम के लेखों पर लेख कदावाताओं के कदा-निर्माण प्रभावित ही जाते हैं - हमें 'कदा शिष्टियों', 'कदा शीत', 'ग्राम शीत', 'कदावाता', 'निर्माण शिष्टियों' पुस्तकें, 'कदावाता', 'नाम के शीत', 'ग्राम शीत' जादि के शब्दों में विनिष्ठा-विनिष्ठा किया जाया है ।

उत्तर निर्दिष्ट प्रकार के व्यक्तियों के राजनीतिक पक्ष विशेष

का वास्वाहन किया गया। बताया वीर हुए नहीं, बलवत् नहीं भी कहा। कमल समिति के महापितामहों ने एक स्वर से कोई नहीं कहा तथा राष्ट्रीय कौशल के एक महापितामहों ने बीच पारस्परिक विवादों को एक किया बताया है कि कोई नहीं भी कहा। अतः वास्तविक रूप से स्पष्ट है कि वरदान एक वरदान की राष्ट्रीय पुष्पावली की वास्तविक प्रकृति को बताया है वीर नहीं कभी कभी नहीं कर दिया है काकि विरोधी यह कहा नहीं कर पाये।

बाप महापितामहों की अपनी वीर होने के लिए किन किन चीजों का उच्चारण की है ? के अन्त में आठ कठिन कौटिल्यों के महापितामहों ने १६ प्रतिशत विद्वान् १४, ५ प्रतिशत वास्तविक, ६, ५ प्रतिशत वातिवाद ६, ५ प्रतिशत वापसी केराव का उद्दीपन, ६, ५ प्रतिशत वन्द्य पदों की वातीपना ६, ५ प्रतिशत नेताओं द्वारा उम्मीद ६, ५ प्रतिशत उनके महापितामहों कार्य करते ४, ७५ प्रतिशत प्रतीक ४, ७५ प्रतिशत वातीक तथा ४, ७५ प्रतिशत अपने यह है वीर का विवरण बताया। कमल समितियों के महापितामहों ने ४४, ५ प्रतिशत विद्वान्, २२, २५ प्रतिशत वन्द्य पदों की वातीपना २२, २५ प्रतिशत नेताओं द्वारा उम्मीद ११ प्रतिशत वास्तविक ११ प्रतिशत वापसी केराव का उद्दीपन तथा ११ प्रतिशत वाता वापसी का उच्चारण बताया। वही प्रश्न के अन्त में राष्ट्रीय कौशल के महापितामहों ने ३० प्रतिशत विद्वान् २० प्रतिशत वास्तविक, २० प्रतिशत वन्द्य पदों की वातीपना १० प्रतिशत वातिवाद १० प्रतिशत नेताओं द्वारा उम्मीद तथा १० प्रतिशत उम्मीदकर्ता के उम्मीदकर्ता एवं कार्य का उच्चारण बताया। अतः वास्तविक रूप से स्पष्ट है कि वरदान एक वरदान का प्रत्यक्ष प्रश्न वापस एक प्रश्न विद्वान् वन्द्य पदों की वातीपना वास्तविक नेताओं द्वारा उम्मीद तथा वापसी केराव का उद्दीपन है।

महापितामह के अतिरिक्त उपाय है प्रभावित होता है ?

के अन्त में आठ कठिन कौटिल्यों के महापितामहों ने ३४ प्रतिशत वास्तविक ज्ञान २२ प्रतिशत वास्तविक ११ प्रतिशत विद्वान्, ११ प्रतिशत वातिवाद ११ प्रतिशत नेताओं द्वारा उम्मीद तथा ११ प्रतिशत वास्तविक विज्ञान पर यह किया। वही

स्पष्ट होता है कि कश्चित् की दृष्टि में वास्तवता की प्रमाणिक करने में वास्तविकता
 लाभ एवं वास्तविकता की प्रमुख भूमिका है । कश्चित् धर्मिकियों के प्रमाणिकार्यों में
 १०, २५ प्रमाणिक 'वास्तविक' २५, ५ प्रमाणिक प्रमाणिक 'प्रमाणिक' तथा १०, २५ प्रमाणिक
 'वास्तविक' पर यह किता । कश्चित् स्पष्ट होता है कि कश्चित् की दृष्टि में वास्तविकता
 एवं प्रमाणिकता की वास्तविकता किन्ति में प्रमुख भूमिका है । वास्तविकता की प्रमाणिकार्यों
 में १०, २ प्रमाणिक 'वास्तविक' १५, ० प्रमाणिक 'प्रमाणिक' १५, ० प्रमाणिक किता
 १५, ० प्रमाणिक 'वास्तविक' एवं १५, ० प्रमाणिक 'प्रमाणिक' पर यह किता ।
 कश्चित् स्पष्ट है कि वास्तविकता, वास्तविकता, प्रमाणिकता एवं प्रमाणिकता की प्रमाणिक
 वास्तविकता की दृष्टि में वास्तविकता है ।

[illegible][illegible]

एक के मध्य कीर्ती का आचरण करना अशुद्ध, भारतीय जनता का स्वार्थ नहीं
का यह १९३१ ई० का 'महाभारत' है ।

कीर्तन विधान का बीच में यह १९३३ के निर्देश में
भारतीय ज्ञानि क, किन्तु अनापनायी यह का मुक्ति का मुक्ति का विधीय
कीर्ती कीर्ती का एक आचरण है किन्तु प्रत्यक्ष के रूप में कि अन्तर्गत का
होने हुए है । कीर्तियों के अन्तर्गत का यह के प्रत्यक्ष की विधीय करने के लिए
'कीर्तिय प्रत्यक्ष' किन्तु यह या किन्तु प्रत्यक्ष के रूप में प्रत्यक्ष स्वीकार में
जारी जारी है । ऐसा क का जारी है कि यह १९३३ ई० के विधान का निर्देश
में कि अन्तर्गत का विधीय किन्तु प्रत्यक्ष की अन्तर्गत ने 'कीर्तिय प्रत्यक्ष'
के रूप में अन्तर्गत का या कीर्ती विधीय' (१९३३) जारी के मन्त्रालयों की
अन्तर्गत कीर्ती अन्तर्गत है । अन्तर्गत है कि अन्तर्गत के मन्त्रालय का यह भारतीय
ज्ञानि क के रूप में जाने की जारी की ।^{१९}

कीर्तन विधीय विधीय प्रत्यक्ष विधीय की विधीय में
का जारी की अन्तर्गत का जारी है । के अन्तर्गत में अन्तर्गत कीर्तियों के अन्तर्गत-
कारियों में प्रत्यक्ष कीर्ती, मुक्ति अन्तर्गतों की का जारी, विधीय अन्तर्गतों
का जारी अन्तर्गत कीर्ती की विधीय^{२०} प्रत्यक्ष के अन्तर्गतों की
कीर्ती है कीर्ती कीर्ती है , अन्तर्गत कीर्ती जारी है ।^{२०} कीर्ती अन्तर्गतों
प्रत्यक्ष है अन्तर्गत^{२०} की विधीयों की जारी । ऐसा प्रतीत होता है कि
अन्तर्गत (१९३३) अन्तर्गत, प्रत्यक्ष कीर्ती अन्तर्गतों की अन्तर्गत अन्तर्गत
मुक्ति अन्तर्गत की जारी है । अन्तर्गत के अन्तर्गत में अन्तर्गत कीर्तियों के
अन्तर्गतों में कीर्ती प्रत्यक्ष , अन्तर्गत प्रत्यक्ष^{२०} अन्तर्गत प्रत्यक्ष कीर्ती तथा
'कीर्ती कीर्ती' की विधीयों की अन्तर्गत विधीय अन्तर्गत है कि प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष
के अन्तर्गत अन्तर्गत कीर्ती अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत में अन्तर्गत प्रतीत होता है कि
अन्तर्गतों की अन्तर्गत अन्तर्गत जारी है । कीर्ती कीर्ती के अन्तर्गतों में
अन्तर्गत विधीय की विधीय अन्तर्गत, प्रत्यक्ष जारी है , अन्तर्गत अन्तर्गत नहीं करे
की विधीय विधीय जारी है की अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत भारतीय ज्ञानि क के अन्तर्गत^{२०}

सम्मान अधिकारी अधिकारियों में होते भी यहाँ की सेवा की पूर्ण क्षीय प्र
मान्यता करते अधिकारियों पर नाम मुद्रा दीक्षा कर दी है। यह अधिकारियों की
पुरस्कार का भी ध्यान करते कभी कभी उनके कुछ काम पर पुरस्कार भी दी है।

सम्मान का के लिए राजनीतिक सब कमी कमी अधिकारियों
की नियुक्त करते हैं जो कि केवल एवं कभी यहाँ के नियमित पर मुद्रित होते हैं और
केवल यहाँ की कमान का निरीक्षण भी करते हैं। यह कमान के समय की अधिकारियों
यहाँ पर बहुत खूब कमान नियमित प्राप्त करने की पर पूर देखा की जाती है। किन्तु
यहाँ की पराक्रम होने होती हैं उन्हीं अधिकारियों या तो सम्मान का सब है सम्मान कर
जाते हैं या किसी किसी में कमानुक्ति होती है उन्हीं कमानुक्तियों में सम्मान नामावली
का सम्मान अधिकारियों के अधिकारों की बहुत कम नियमित कर जाता है।^{१३}

नियमित परिवर्तन की योजना के पूर्ण पराक्रम प्रत्यक्षी
किसी प्रत्यक्षी की कमान केर यहाँ है सब दी है। यह १९०४ ई० के नियमित
परिवर्तन पर भी राजनीति राम चन्द्रिका ने कहा किन्तु यहाँ के पूर्ण एवं राम की
न राजनीति राम होती। कभी राम होती।^{१४} नियमित परिवर्तन की अधिकारिता
एवं अधिकारिता कमानुक्ति के पराक्रम किसी सब कमान मुद्रित निराकर नियमित
की नियमित प्रक्रिया पूर्ण करता है। किन्तु यह के प्रत्यक्षी की केवल यहाँ की कुछ
सेवा का कमान केवल नहीं किन्तु जाता उन्हीं कमान की कभी प्रतिक्रिया (कमान)
पुनः कमान द्वारा पराक्रम कर दी जाती है। प्रत्यक्षीयों की कमान कमान, भारतीय
औरक एवं भारतीय कमान की कमानुक्ति कमान सब प्रत्यक्षीयों की प्रतिक्रिया
यह १९०४ ई० के नियमित में ही कभी।

राजनीतिक सब नियमित में कमान कमान पूर्ति के केवल कमान वितीय
नियमित के कमान का सब करते हैं। नियमित के पराक्रम एक निरपेक्ष विधि २० दिन
के कमान प्रत्यक्षीयों की नियमित सब कुछ निरपेक्ष नियमित अधिकारी के कमान
पुनः कमान के नियमित कमान करता है। किसी कमान कमान के लिए
नियमित कमान नियमित है। कमान कमान सब निरपेक्ष है।^{१५} जो प्रत्यक्षी निरपेक्ष
कमान के कमान सब कुछ नहीं कमान उन्हीं कमान कमान के लिए कमान के कमान

पौष्टिक कर दिया जाता है। पौष्टिक विभाग का विकास अब बहुत ही में
 राशीतिक नहीं है मुनाय में विभाग अब जिस तरी जाये उद्योग नहीं ही ही
 किन्तु यह है पदाधिकारियों की जानकारी एवं मुनाय के बाजार पर बहुत विचार
 दिया जा रहा है ।

०. विमान का है निम्नलिखित (अनु ७४) में अनुमानः
 वायु के दबाव का विमान का चक्र हुआ होता है के ऊपर में वायु का दबाव नीचे के दबाव
 विचारों पराधिकास्त्रों में क्या नीचे, एक विचार में १०० पदारु रक्की क्या
 है एक एक विचार में २० पदारु है २५ पदारु रक्की का क्याया । यही प्रत्यक्ष के ऊपर
 में मण्डल विचारों के पराधिकास्त्रों में २५०० र०, १ पदारु रक्की ६ पदारु
 रक्की क्या ६ पदारु रक्की क्याया । सीरीय सीरीय के पराधिकास्त्रों में
 ६ पदारु रक्की ६ पदारु रक्की ६ पदारु रक्की क्या १० पदारु रक्की
 क्याया । ऊपरीय अनुमानों के ऊपर है कि काष्ठ के पराधिकास्त्रों में अनुमान
 राशि का नीचे ऊपरीय है नीचे काष्ठ प्रत्यक्ष का चक्र के ऊपरीय है । का है
 अनुमान चक्र भारतीय चक्रों के प्रत्यक्ष का रहा । काष्ठ का भारतीय चक्रों
 के प्रत्यक्षों का ऊपरीय अनुमान निम्नलिखित वायु के चक्र होता है वायु के
 किर्ण काष्ठ का ही ऊपरीय हीय हुआ विचार है ।

यह पत्रातिथि किम किम वाक्यों है और किमही प्राप्त
हुई थीकी ? के उत्तर में अत्रिह कीही के पत्रातिथियों में ५० प्रविष्ट है यह प्रविष्ट
यह वह एवं वह के पत्रातिथि है प्राप्त किया । कि अन्तीकर्म किम में कि कि २०-२५
अन्तर अन्ती किम का अनुमान किम अन्ती पूर्ण अन्ती वह है ही किया । अन्तर
अन्ति के पत्रातिथियों में ५५ प्रविष्ट - ५५ प्रविष्ट यह वह है किम प्राप्त की
अन्ती अन्तीकर्म, अन्ती, अन्तीकर्म वादि है प्राप्त किया । अन्तीकर्म अन्ती के
पत्रातिथियों में ५०-५० प्रविष्ट यह किम अन्तीकर्म, अन्ती, अन्तीकर्म
अन्ती प्राप्त है प्राप्त किया । यह अन्ती है अन्ती है कि अन्ती अन्ती अन्ती
अन्तीकर्म अन्ती की अन्ती अन्ती प्राप्त की अन्ति पत्रातिथि प्राप्त कही है ।
अन्ती अन्ती अन्ती यह अन्ती अन्ती के अन्ती ही अन्ती पत्रातिथि में है अन्ती अन्ती
अन्ती ही अन्ती पत्रातिथि है ।^{५५} यह अन्ती अन्ती अन्ती में अन्ती अन्ती अन्ती है यह

कि प्रत्यक्षी की यह पुनः विचार ही वाच्य कि विचार की व्यवही किन्तु विचार
में व्यवस्था नहीं मिलेगी ।

विरोधी यह है किन्ना व्यवस्था १ नाम और काराधि
का अनुसंधानिक १ के उतर में व्यवस्था कतिपय कीटियों के पदाधिकारियों में भारतीय
क्रान्ति यह २ प्रकार है २० प्रकार रुपये का व्यापार विचार कीका २४ प्रकार की
की रुपये है, भारतीय काराधि २ प्रकार है २२ प्रकार रुपये का व्यापार विचार
कीका २० प्रकार रुपये है और कीटन कतिपय : २० प्रकार है २० प्रकार रुपये का
व्यापार विचार कीका २४ प्रकार काय की व्यापार रुपये है । यह पदाधिकारी है व्यवस्था
कि विरोधी यह बात है कि वेला व्यवस्था है ।^{४२}

व्यवस्था कतिपयों के पदाधिकारियों में व्यवस्था -

२० - ३० प्रकार रुपये विचार कीका २२ प्रकार काय की रुपये है, भारतीय क्रान्तिक
२-२२ प्रकार रुपये विचार कीका २० प्रकार काय की रुपये है तथा कीटन कतिपय
२०-२२ प्रकार रुपये , विचार कीका २० प्रकार पाप की रुपये है व्यवस्था । भारतीय
कीटन के पदाधिकारियों में, व्यवस्था कतिपय : २० -२२ प्रकार रुपये, विचार कीका
२० प्रकार काय की रुपये है । भारतीय काराधि : २-२२ प्रकार रुपये विचार कीका
२ प्रकार रुपये है तथा कीटन कतिपय : २२-२२ प्रकार रुपये विचार कीका २२ प्रकार
पाप की रुपये है, व्यवस्था ।

पदाधिकारियों द्वारा कपी यह व्यवस्था विरोधी यह है विचार
में विचार के विचार व्यवस्था की यह काराधि का प्रत्यक्ष विचार का व्यवस्था कतिपय है
व्यवस्था कतिपय का अनुसंधानिक व्यवस्था २०, २२ प्रकार रुपये, कीटन कतिपय का २२, २ प्रकार
रुपये ; भारतीय क्रान्ति यह का २०, २२ प्रकार रुपये तथा भारतीय काराधि का
२, २ प्रकार रुपये काय है । काय : यह व्यवस्था स्पष्ट ही वाच्य है कि व्यवस्था कतिपय
में काय है कतिपय का भारतीय काराधि में काय है काय का कतिपय विचार का विचारिक
व्यवस्था की में व्यवस्था । यह काराधि किन्तु-किन्तु वाच्य है और किन्ना प्राप्त
हुई कीका १ के उतर में कतिपय भारतीय राष्ट्रीय कतिपय (व्यवस्था) के उतर यह व्यवस्था
भारतीय काराधि के उतर यह, व्यवस्था, का कतिपय व्यवस्था प्रत्यक्षी , भारतीय क्रान्तिक

के लिए वह, राष्ट्रीय कक्षा, प्रत्येकी कक्षा कीवरी के कारण किंवा कक्षा केवल कक्षा के लिए तथा की सम्प्रदाय पुष्प के कारण कक्षा के । इसी स्पष्ट है कि कक्षा कक्षा के कक्षा प्रत्येकी की विभाजन के लिए कक्षा का विभा विभा के कारण प्रत्येकी के कक्षा कक्षा की कक्षा कीवरी न किंवा है कक्षा की कक्षा की कक्षा के ।

कक्षा का विभाजन विभाजन कक्षा विभाजन (कक्षा के विभाजन कक्षा)

कक्षा के विभाजन विभाजन की विभाजन है	कक्षा का विभाजन		विभाजन (कक्षा के विभाजन है)
	कक्षा का नाम	विभाजन विभाजन (कक्षा के विभाजन है)	
कक्षा कक्षा कीवरी (कक्षा कक्षा)	राष्ट्रीय कक्षा (कक्षा)	५ - २०	५, २
	राष्ट्रीय कक्षा	५ - २५	५, ०
	कक्षा कक्षा	२० - २०	२०, ०
	कक्षा कक्षा	२० - २५	२५, २५
विभाजन विभाजन (विभाजन विभाजन)	कक्षा कक्षा	२० - २०	२५, ०
	राष्ट्रीय कक्षा	५ - २५	२०, ०
	कक्षा कक्षा	२० - २५	२०, ५
	राष्ट्रीय कक्षा	२, ५ - ५	५, ५ २५
राष्ट्रीय कक्षा (राष्ट्रीय कक्षा)	कक्षा कक्षा	२० - २५	२०, ५
	राष्ट्रीय कक्षा	५ - २५	५, ००
	कक्षा कक्षा	२५ - २५	२५, ५
	राष्ट्रीय कक्षा	५ - २०	०, २५

२ - राजनीतिक निष्पत्ति - प्रभाव

निष्पत्ति युद्ध में किस कम्पन पराक्रम का चार कारण होती है परन्तु
जहाँ पूर्व राजनीतिक पक्ष संस्थाओं द्वारा उभरे जायेवाले राजनीतिक निष्पत्तियों की अपनी
कड़ीय नीतियों के अनुसार हाली के लिए प्रभाव डालती हैं ।^१ यद्युक्त निष्पत्ति-निष्पत्ति
मानवीय जीवन का चार कारण है ; उन चार कारण किसी न किसी प्रकार का निष्पत्ति
होती रहती हैं, राजनीतिक निष्पत्ति-निष्पत्ति हमारी संपूर्ण निष्पत्ति प्रक्रिया का एक भाग
है जिसका मुख्य राजनीतिक जीवन में जायेवाली संस्थाओं, उद्देश्यों का परिचालन
के प्रथम प्रतिक्रियाशील होता है ।^२ निष्पत्ति का जहाँ निष्पत्तियों में है एक का
प्रभाव होता है, प्रभाव स्वरूप है केवल केवल स्वरूप का ही संस्थाओं पर राजनीतिक निष्पत्ति
होनेवाली संस्थाओं (प्रभाव संस्था है केवल एक) में जायेवाले निष्पत्तियों की राजनीतिक
पक्ष प्रभावित होती है ।

निष्पत्ति का के मुख्य हैं जो कि सामुहिक उत्पत्तियों के साधन-सम
क्या सामुहिक साधनों के अधिकतम कारण के लिए मुख्य रहती हैं ।^३ ऐसी स्थिति
में कौमान युद्ध में का कि राज्य संस्थापककारी साधनों का अधिकतम कर्म होती
की ओर कूटनीति ही रहा है जो अन्य सामाजिक, जातीय, सामुहिक, वैश्विक ,
वैज्ञानिक एवं राजनीतिक साधन निष्पत्तियों के कर्म के लिए में राजनीतिक निष्पत्ति प्रमुख
प्रकार केन्द्र हुई है । निष्पत्ति- निष्पत्ति एक प्रक्रिया है जो कि सामाजिक रूप है
परिणामित्व का अपना प्रभाव निष्पत्ति अधिकतम अधिकतम (अधिकतम) की संस्था की
दीर्घाव होती एक अधिकतम है अधिकतम साधन अधिकतम के लिए अधिकतम अधिकतम
के कर्म में निष्पत्ति निष्पत्तियों के साधन अधिकतम होती है । राजनीतिक निष्पत्ति का
के द्वारा संस्थाओं के निष्पत्ति संस्थाओं^४ में है अधिकतम, अधिकतम अधिकतम, अधिकतम
क्या अधिकतम निष्पत्ति संस्था है । राजनीतिक निष्पत्तियों की प्रक्रिया में संस्था के
संस्थापक कार्यों एवं संस्थाओं का अधिकतम का निष्पत्ति एक संस्था में संस्था की
विस्थापन का प्रभाव होती है ।

राजनीतिक निष्पत्ति की संस्था - के अधिकतम संस्था संस्था का
पर राजनीतिक निष्पत्ति होती है उन्हें राजनीतिक निष्पत्ति की संस्था होती है । संस्थापक,

कायान, न्याय, प्रशासन तथा संरक्षण की संस्थाएँ प्रमुख नियुक्ति हैं। कानून की राजनीतिक यह विभाजिका के उत्तरों के निष्पत्ति में प्रभावित करती हैं यदि कोई अन्य प्रभावक बाध, कई, नाश, बाधित कर, विना एवं राजनीतिक क्षेत्र तथा अन्य संरक्षण की है।

राजनीतिक यह विभाजिका द्वारा जिन बाधित विधियों की प्रभावित करने के निमित्त की प्रमुख एवं है निष्पत्ति में प्रभावित प्रदान करती हैं। और और विधान मण्डलों के निष्पत्ति में निम्नलिखित प्रभावित के निम्नलिखित होने की छात्र प्रमुख का होती है। संवैधानिक सरकार की प्रभावित में यह के निम्नलिखित उत्तरों में है की यह यह जन्मा 'संवैधानिक नेता' का काम करता है। संवैधानिक नेता जन्म यह के प्रतीक पर निष्पत्ति का प्रतिनिधित्व का प्रतिनिधित्व करता है। जन्म यह है का प्रतिनिधित्व के निम्नलिखित व्यवस्था में संरक्षण या संरक्षण काये रखने के लिए उत्तरदायी तथा उत्तरों का काम राजनीतिक यह के द्वारा किया जाता है। राजनीतिक यह जन्म संवैधानिक प्रतिनिधित्व की संरक्षण रखने की परंपरा कोष्ठ करती है किन्तु और का प्रदान की द्वारा यह प्रमुख प्रमुख करती प्रती है। यह है संरक्षण संवैधानिक प्रतिनिधित्व यह का त्याग संरक्षण है कर नेता है नेता कि की सीपरी परण सिंह ने जू १९६० ई० में उच्च प्रेषित विधान का में जस्टिस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की त्याग कर का यह बनाया।

का व्यवस्थापिका जिन राजनीतिक नियमों की प्राप्ति करना चाहती है तब उनके उत्तर जन्म जन्म यह की नियमित नीतियों के अनुसार जन्मों की प्रमुख करती हैं किन्तु कायें संरक्षण संरक्षण है।^{५१} एक ही राजनीतिक यह के जन्म राजनीतिक नियमों के पूर्व या परवाह कायें संरक्षण है किन्तु प्रत्यक्ष प्रमाण संरक्षण कांग्रेस के की संरक्षण कायें संरक्षण एवं परिवार नियोजन नीति उच्च प्रेषित सरकार जू १९७७ का का ह: संरक्षण के प्रस्तावितों की प्रमुख है प्रमुख प्रदान के लिए का है त्याग का है।^{५२} राजनीतिक यह का प्रभाव सीपरी का विभाजिका में प्रमुख की बाधित प्रमुखों का प्रम संरक्षण का जन्मों पूर्ण परिवार प्रदान करता है।

जब विवायिका किसी विषय पर विचार-विमर्श करती होती है तब राजनीतिक कर्मी के विचारों का प्रतिनिधित्व, नेता, कार्यकर्ता, क्रांतिकारी, कर्मज एवं कर्मज, विवायिका की कमी कोपित नीतियों के अनुसार उन्ही वाक-विचार हैं, प्रकाश, धीरे-धीरे, धीरे-धीरे (कमी) वापि ज्ञात है तब वापि का विचार प्रकाश करती हुए कमी अनुसार राजनीतिक- विचारों का प्रकाश करती हैं । विचार कर का विवायिका में अनुभव होता है किन्तु उन्ही के कमी में होता है, यदि अनुभव का प्रकाश करने के लिए किसी अन्य कमी है उन्ही की कमी है तब उन्ही की दीर्घ बोली करने के कमी की सकार किन्तु होता ।

विवायिका में अनुभव स्थापित करने के लिए परस्पर विरोधी विचार वाराणसी कमी की वापि में मुख्य अङ्कल धीरे (Bell and Socratic Joint) का होता है विचार ज्ञान उन्ही प्रविष्ट की विवायिका में तब १२६० ई० में भारतीय कर्मज एवं भारतीय वाक्यवादी कमी का धीरे-धीरे विचार कमी का कमी कमी है । विचार कर का विवायिका में अनुभव नहीं कि वापि का विरोधी कमी की प्रविष्ट विचार है किन्तु कमी वाक्यवादीनुसार कमी की एवं कमी की कमी का कमी है । राजनीतिक कर्मी द्वारा विवायिका में अनुभव - स्थापना का ज्ञान - कमी है प्रकाश राजनीतिक किन्तु ज्ञान का विचारित ज्ञान होता है ।

उत्तारक ज्ञानाधी में विवायिका के कर्मज अनुभव स्थापना है राजनीतिक कमी किन्तु की कार्यवाहक करने का वापि कार्यवाहक पर कमी विचारों का प्रकाश कर होता है किन्तु कमी के कमी में नीति परिचय के ज्ञान विचारों है कमी उन्ही विचारों की तब किन्तु (टीडी) होती है । कार्यवाहक की किन्तु में राजनीतिक कमी के कमी , प्रकाश एवं उन्ही धीरे-धीरे विचार होती है किन्तु कारण कमी प्रकाश होती , धीरे, प्रकाश वापि में विचार होती है । राजनीतिक कमी विवायिका एवं कार्यवाहक के कमी तब होता है । कार्यवाहक में प्रविष्ट किन्तु पर राजनीतिक कमी विचार कमी है वापि का कमी है क्योंकि है की राजनीतिक किन्तु के अनुसार होती है और कमी प्रकाश पर पूर्ण विचार होती है । ऐसा विचारों होता है कि राजनीतिक कमी का कमी कमी राजनीतिक किन्तु ज्ञान ज्ञानों का प्रकाश का वापि है ।

३- राक्षसीय जल वाष्पनक्षेत्र

[illegible]

वास्तुनिकीकरण का प्रक्रिया है किसी कर्तव्यपूर्ण तथा व्यक्तिगत दृष्टि
का व्यक्तिगत रूप में वास्तुनिकीकरण की प्रक्रिया, व्यक्तिगत, सामाजिक,
धार्मिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, प्रौद्योगिक, सांस्कृतिक वैज्ञानिक तथा राजनीतिक
क्षेत्रों में व्यक्तिगत क्षेत्रों में होती रही है जिसका प्रभाव एक दूसरे क्षेत्र पर भी
पड़ता है। यहाँ पर राजनीति के क्षेत्र में होनेवाले वास्तुनिकीकरण में राजनीतिक
क्षेत्रों की व्यक्तिगत पर भी विचार करना चाहिए है। कर्तव्यपूर्ण तथा व्यक्तिगत
राजनीतिक दृष्टि का व्यक्तिगत राजनीति का वास्तुनिकीकरण है। वर्तमान युग
में राजनीतिक क्षेत्रों की व्यक्तिगत प्रभाव करने की क्षमता बहुत ही उत्पन्न
करता, सामाजिक क्षेत्रों पर व्यक्तिगत प्रभाव करना, धार्मिक क्षेत्र पर है किन्तुकरण
की प्रोत्साहन देना, भी निरक्षरता को दूर करना, कर्म के आधार पर
करा का प्रभाव या स्थापन करना, व्यक्तिगत व्यक्तित्वों के कल्याण के
साधना करना व्यक्तिगत क्षेत्रों में प्रभाव करनेवाले दृष्टिकोण का
ही उत्पन्न करने में राजनीतिक क्षेत्रों की प्रमुख व्यक्ति है।

ज्ञानवादी यह देखते हैं कि राजनीतिक कार्य के सम्बन्धी प्रविष्ट हो जाता है यह उन के हाथ निकल चुकता होता, पैसा, धान, धान, कपड़ा कपड़ा, सम्पत्तियों का आभाव, सामाजिक नियम की प्रेरणा की कमी है। भारत में व्याप्त वस्तुस्थिति के प्रति ज्ञानाचार्य, सामाजिक के प्रति विवेक, प्राधिकाता के प्रति अज्ञानता, जो है प्रति अज्ञानता जो राजनीति के प्रति अज्ञानता जो राजनीतिक कार्य में विवेक है जो करने में योग्य किया है।

राजनीति के वास्तुनिरीक्षण से ही राजनीतिक विकास होता है, यदि वास्तुनिरीक्षण की प्रक्रिया सम्भव है ही ही राजनीतिक विकास की सम्भवा होती है। राजनीतिक विकास वास्तुनिरीक्षण का अभाव है। सुविज्ञान सम्पूर्ण कार्य में राजनीतिक विकास में अभाव की पूर्णता, राजनीतिक प्रगति की सम्भवा, क्या किस्तीकरण और विवेकीकरण की विवेकीकरणों का उचित किया है।⁴² राजनीतिक यह अपनी नीतियों, कार्यक्रमों, उद्देश्यों, अर्थों आदि में अज्ञानता पर यह है ही क्या सम्भवा जारी राज्य की सम्भवा सम्भव करते हैं और सम्भवा के अनुसार प्रत्येक कार्य की पूर्णता के लिए नीति सम्भवाओं की सम्भवा ही है।

ए० पी० एम्प्लेन⁴³ के अनुसार राजनीतिक वास्तुनिरीक्षण के तीन महत्वपूर्ण चरण हैं १- प्राधिकार की सुविज्ञानता - जहाँ परिस्थान सामाजिक, सांस्कृतिक, और राष्ट्रीय राजनीतिक प्राधिकारियों का प्रतिस्थापन एक सामाजिक राष्ट्रीय राजनीतिक प्राधिकारी के द्वारा होता है। २- विवेकीकरण और विवेकीकरण - इसके सम्बन्ध में राजनीतिक कार्य में विवेक किया जाता है तथा प्रविष्ट संस्थाओं का उन कार्यों को पूरा करने के लिए किया किया जाता है। ३- राजनीतिक मान प्रगति में अन्तर्गत - जहाँ अभाव का प्रत्येक कार्य राजनीति में मान होता है।

राजनीतिक यह अज्ञानता हीनों चर्चा पर अपने ध्यान, जो, उचित एवं सुविज्ञान की सम्भवा करते हैं किन्तु अनुसार उनकी प्रविष्टता, जीवन-विकास तथा सुविज्ञान में सुविज्ञान होती है। ही ही राजनीतिक यह राजनीति के वास्तुनिरीक्षण पर सुविज्ञान का हीनों पर यह है कि नीति नीति की सम्भवा हीनों का पता और सम्भवा में प्रविष्ट ही जाता है।

मनुष्य प्राणि संसार का सर्वोत्कृष्ट प्राणी है उसी वही चित्तों के लिए बुद्धि वस्तुओं की कल्पना है वास्तव तथा के लिए उत्पत्तियों, प्रवृत्तियों, चिकित्सा शास्त्रों, राजनीतिक सुधारों एवं संस्थाओं का मनुष्य ही विकास देकर प्रत्यक्ष प्राण है । मनुष्य द्वारा निर्मित उपकरणों का उद्देश्य उसी चित्तों की सुरक्षा है । पूर्व है मनुष्यिक तत्त्व का वास्तविक मनुष्य के चित्तों की प्रगति का विस्तार है । ^{अतः} कल्याणकारी राज्य की भावना ने कल्याणिक देशों में राजनीतिक वर्गों के नायित्व में वास्तविक बुद्धि किया है । राजनीतिक तत्त्व का यह कार्य है कि वह प्रत्यक्ष नागरिक के सर्वोत्तम चित्तों में है शास्त्रीय चित्तों का अध्ययन करे और जी संस्थापित करने के लिए राजनीतिक विचारों के समुचित प्रसार करे ।

कार्यक्रमों के लिए जो व्यवस्था है, उस में परिवर्तन करना राजनीतिक दल की अंतिम जिम्मेदारी होगी है। 'व्यक्तिगत' दल लोगों के द्वारा राजनीतिक निर्णय निर्धारणों के ऊपर किस विधा के माध्यम से की जाती है, उस में यह विशेषता होती है।⁴⁵ राजनीतिक निर्णय निर्धारणों के साथ उस या उनके लिए समय उस कमी नहीं की पहुँचाने के लिए माध्यम: 'सामूहिक' प्रणाली रूप में व्यवस्था की जाती है, जिसे व्यक्ति विशेष के द्वारा अपनी भागी प्रणाली

करवाना, का ईश्वर नाममात्र है प्रसार का प्रसारण क्या राक्षसीयक यह है ।
राक्षसीयक यह की ईश्वरनामक ईश्वरीय वाच्य है ईश्वर का वाच्यत्व यह,
कीय यह वा राक्षसीय यह वा अन्य प्रकार के चिह्नों की सीधुली है ।

यह ईश्वर सीधुली का कार्य ज्ञान के अन्तर्गत चिह्नित रूप है
पठित, यह कार्य करते हैं की वाच्यत्वक विचारक ईश्वर, नारदीय नक्षत्र ईश्वर,
सीधुली ज्ञानी कर्माती ईश्वर, विचार्य ईश्वर वाच्यकारी ईश्वर वा अन्य अन्तर्गत पर
वाच्यत्वक ईश्वर वाच्य, किन्तु राक्षसीयक यह इन इन है निम्नलिखित सभी पुर की
निम्न है । वाच्य नामक के अनुसार राक्षसीयक यह ईश्वर यह कार्य है ईश्वरीय
यह ईश्वरीय के अन्तर्गत अन्य राक्षसीयक कार्य की इनके लिए निर्दिष्ट है ।
राक्षसीयक यह यह ईश्वर सीधुली के कार्य की विभिन्न ज्ञान में करते हैं चिह्नों
है प्रमुख प्रमाण वाच्य करना , राक्षसीयक किन्तु कार्य के पाठ प्रथम निम्नलिखित
मेका, का करता, चिरीय वा यत्ना में प्रयत्न करता, पैराय करता, परना पैरा,
उत्पाद्य करता वाच्य है किन्तु सीधुली, अन्तर्गत ज्ञान प्रामाण्य की अन्तर्गत
की की किया वाच्य है ।

७ मार्च, १९७७ की अन्तर्गत वाच्य में कार्य के राक्षसीयक
कार्यकर्तव्यों में एक का है नामक है किन्तु अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत
कीमती कला अन्तर्गत है यह किया कि चिह्न अन्तर्गत पाठ पर सीधुली का
पुनः ज्ञान वाच्य चिह्न के लिए अन्तर्गत है वाच्यत्वक किया ।^{११}

राक्षसीयक यह द्वारा प्रमुख की वाच्यकारी नाम वाच्यत्वक
वा सीधुलीय, सीधुलीय वा वाच्यक, सीधुली वा वाच्यत्वक वाच्य प्रकार की ईश्वर
है । है नाम एक कार्य की अन्तर्गत अन्तर्गत चिरीय की सीधुली है की अन्तर्गत के
मूल्यों में अन्तर्गत, किन्तु अन्तर्गत अन्तर्गत के लिए में है ज्ञान अन्तर्गत अन्तर्गत
के चिह्नों का चिरीय है । अन्तर्गत चिरीय चिह्नों के अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत की
राक्षसीयक यह अन्तर्गत सीधुली की सीधुलीय करते हैं । राक्षसीयक यह द्वारा
निम्नलिखित सीधुली अन्तर्गत अन्तर्गत में है एक सीधुली है । इन सीधुलीय में वाच्यत्वक
चिह्नों का अन्तर्गत करने का प्रमाण किया वाच्य है चिह्न अन्तर्गत ज्ञान में अन्तर्गत,

आधीनता, विहीन या अविकार की पिछारी प्रणयनिका न हो पाये।

आ: नीति निर्माण का कार्य अत्यन्त विवेकी, व्युत्पत्ती, विचार्य पीछा की विस्वास प्राप्त नेताओं के द्वारा किया जाना है। उही नीति निर्माण की 'विषय समूह' की रीति की सी० ए० वाजपेयी ने किया है किन्तु 'व्युत्पत्ती' नामों की सामान्य नीति निर्माण में सहस्यता करने की प्रिया की विषय समूह नहीं है।^{१०} किन्तु कि का पुच्छों में दिए गये निर्माणों से स्पष्ट है कि विषय समूह की प्रिया विचार का निर्माण स्तर पर नहीं होती है न ही यहाँ की राजीव जीति, मन्त्रालय विधायि या मन्त्रालय कर्मियों की अविकार की है किन्तु स्थानीय विचारों के लिए स्वीकृति होनी चाहिए।

कार्यक्रमिक विषय के बीच बीच में कार्य वापस दाता हुए हैं ? के अन्त में मन्त्रालय कर्मियों के कार्याधिकारियों में 'छुट्टी का निर्माण', 'विचारों की स्थापना एवं वास्तविकता' एक उन्मुख वास्तविक विचारों के सम्पादन की उचित विचारणा^{११}, 'राजकीय का दूर की उन्मुख', 'केय का प्रिया का विचार' ४० एक पुनः विचारों में वापस आना तथा 'जावान है छुट्टी का निर्माण करना' बताया। मन्त्रालय विधायि के कार्याधिकारियों में उही प्रणय के अन्त में, विचारों की स्थापना, 'मन्त्रालय का पुनः निर्माण', राजकीय मन्त्रालय का उन्मुख, 'कीर्ति की' ११ 'मानव सम्पदा' तथा 'पुनः विचारण में पुनः विचारों की स्थापना' बताया।^{१२}

राजकीय जीति के कार्याधिकारियों में 'मन्त्रालय का दूर सूरों की स्थापना', मन्त्रालय विचारों की रीति तथा जीति, वासी प्रामाण्य की स्थापना, का दूर का उन्मुख, वासी वास्तविक के वापस का स्थापना स्तर ३०^{१३} के लिए उन्मुख, मन्त्रालय विचार की वास्तविकताओं की दूर करने के लिए उन्मुख, तथा ४२ सम्पादन की विचार विचारण में विचार तथा प्राप्त का रीति की पक्की छुट्टी का निर्माण बताया।

अन्तर्गत अन्त में स्पष्ट है कि मन्त्रालय कर्मियों के कार्याधिकारियों में कार्यक्रमिक विषय विचारों के लिए विचार निर्माण

केन्द्र प्रशासन रहा । मन्त्रालय समितियों के कार्याधिकारियों ने ऐसी कार्य व्यवस्था की है । विदेश विभाग स्वयं या वह ने केन्द्र में किया है शासन के लिए सीधे सीमा का किया है । सीमाय समितियों के कार्याधिकारियों ने स्वयं विभाग के द्वारा कार्य कार्य किया है कि सीमा या कानून बनाना किन्तु सम्बन्धों की विधिवत्ता और सीमाय का आचरण प्रत्यक्ष करता है ।

कह की सीमाय सीमाय के लिए वह सीमाय एवं सीमा कार्य करता ही करता है ? के द्वारा वे कारक समितियों के ५३, ५ प्रसिद्ध कार्याधिकारियों में ही कार्या, मन्त्रालय समितियों के ७५ प्रसिद्ध, कार्याधिकारियों में ही कार्या और सीमाय समितियों के ७५ प्रसिद्ध कार्याधिकारियों ने ही कार्या । इन द्वारा है स्पष्ट है कि अभी वह या स्वयं की कार्याय करती है और राक्षसीय वह है कार्याय सीमाय सीमाय करती की स्वयं में सीमा एवं सीमाय कार्य करती है। वह फिर सीमा सीमा में प्रत्यक्ष की कार्याय सीमाय सीमाय एवं सीमाय नहीं सीमा सीमा ? ऐसा प्रतीत होता है कि कार्याय द्वारा सीमाय सीमाय सीमाय में कार्याय कार्याय सीमाय सीमाय सीमाय किन्तु राक्षसीय वह द्वारा सीमाय सीमाय सीमाय में ही सीमा ।

५- राक्षसीय कार्याय

राक्षसीय कार्याय

सीमाय कार्याय के द्वारा वे कार्याय प्रशासी करते राक्षसीय में राक्षसीय वह का कार्याय कार्य राक्षसीय कार्याय है । राक्षसीय कार्याय कार्याय (कार्या) है किन्तु द्वारा राक्षसीय कार्याय कार्याय (बनाने ही) कार्या कार्याय की कार्या है । राक्षसीय कार्याय के कार्य पर सीमाय कार्याय कार्याय है किन्तु कार्याय कार्याय कार्याय में कार्याय कार्याय है ।

सन्दर्भ- संकेत:- २४०

- १- ए० ए० डिप्टि, पोलिटिकल मैड, पुस्तक २२० ।
- २- पोलिटिकल मैडिस्ट्रिक्ट एंड पार्सन्स कन्स्टीट्यूटिड ग्रेडर एंड डिमिनिशुड कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन पोलिटिकल विडिफिकेट, पुस्तक २०१ ।
- ३- कन्स्टीट्यूटिड ग्रेडर व सीडल मैडल कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट २१ व पुस्तक २०-२१ ।
- ४- भारतीय कानून सीडल व सीडल, पुस्तक ६, एडुकेट १५।
- ५- भारतीय कानून सीडल व सीडल पुस्तक ६ एडुकेट १५।
- ६- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट एंडीयन सीडल व सीडल, एडुकेट २-६-०५ ।
- ७- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट, एडुकेट २३-६-०५ ।
- ८- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट २०-८-०५ ।
- ९- एडु १६०४ ई० ।
- १०- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट ६-१०-०५ ।
- ११- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट ३०-८-०५ ।
- १२- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट ६-८-०५ ।
- १३- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट २१-११०५ ई० ।
- १४- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट २२-१२-१६०५ ई० ।
- १५- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट २३-१२-०५ ।
- १६- सी एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एंडीयन कन्स्ट्रिक्ट, एडुकेट २४-१२-०५ ।

- १०- श्री अम्बिका प्रसाद मिश्र, पुस्तक संग्रहक श्री राम झा सिंह मिश्र, पारसीय काली, दिनांक २०-१२-७६ ।
- ११- एच० के० मुखर्जी, लखनऊ हू पि हाक्का बाउलियापेटरी जम्पटीज्जुन्दी १९७६, प्रकाशित १९७६, पृष्ठ ७० ।
- १२- पा० रा० ज्ञा० द्वारा लिखित का है ।
- १३- एच०बी० झा, कलाउ नारायण जीर ज्ञापी, बीटिंग पिरीफर ज्ञा पीपी ज्ञापी, १९७७, पृष्ठ २७५ ।
- १४- एच० ज्ञा० लिखित, बीटिंग ज्ञा, पृष्ठ १६५ ।
- १५- श्री ज्ञा नारायण मिश्र ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा, ज्ञापाद, ज्ञापाद ज्ञापाद दिनांक २०-७-७५ ।
- १६- श्री ज्ञापाद ज्ञा, ज्ञापाद, ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद दिनांक २०-५-७६ ।
- १७- एच०बी० झा, कलाउ नारायण जीर ज्ञापी, बीटिंग पिरीफर ज्ञा पीपी ज्ञापी, १९७७, पृष्ठ ३७० ।
- १८- श्री ज्ञा राम ज्ञापाद ज्ञापाद श्री ज्ञापाद है ज्ञापाद पारसीय ज्ञापाद ज्ञा १९७४ है ।
- १९- श्री ज्ञापाद ज्ञा, ज्ञापाद ज्ञा, ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद, ज्ञापाद ।
- २०- श्री ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद, ज्ञापाद, ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद, ज्ञापाद ।
- २१- श्री राधाकृष्ण ज्ञापाद ज्ञापाद, ज्ञापाद, ज्ञापाद ज्ञापाद, ज्ञापाद ।
- २२- श्री ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद, ज्ञापाद, ज्ञापाद ज्ञापाद, ज्ञापाद ।
- २३- श्री ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद है ज्ञापाद है ।
- २४- ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद ज्ञापाद, ज्ञापाद है ज्ञापाद ज्ञापाद ।

- १२- श्री शांतिराम बाबुबाबु, प्रयाग है शांतात्कार दिनांक १०-४-७६ ।
- १३- डा० सुनील, उन्नाव, पुस्तक १९७१ ।
- १४- श्री देवचर सुंदर, कलकत्ता नवी, आर्य कविता कौटी, चौथी ।
- १५- श्री कल्याण बाबु बाबु, कलकत्ता, आर्य कविता कौटी, चौथी ।
- १६- श्री सुनील बाबु बाबु, कलकत्ता नवी, चौथी ।
- १७- श्री शांतिराम नवी कलकत्ता, चौथी कौटी, चौथी ।
- १८- श्री रामचरण बाबुबाबु, कलकत्ता, चौथी कौटी चौथी ।
- १९- नवलोकन कलकत्ता, कलकत्ता, कलकत्ता दिनांक, श्री ०००००० कौटी, कलकत्ता
शांतिराम दिनांक, दिनांक बाबु बाबु, कलकत्ता, १९६३, पुस्तक १९७० ।
- २०- सुनील है बाबु बाबु पुस्तक १९७० ।
- २१- राबर्ट डा० है कल कौटी कौटी, ५ कौटी श्री बाबु बाबु, कौटी
श्री ०००००० दिनांक दिनांक, १९६३, पुस्तक १९७०-१९७०, कलकत्ता श्री ०००
कौटी, कौटी दिनांक, १९७०, पुस्तक १९७० ।
- २२- सुनील कलकत्ता बाबु, कौटी बाबु श्री ००००००, १९७० पुस्तक १९७० ।
- २३- कौटी कौटी, श्री ०००००० बाबु है श्री ००००००, १९७० पुस्तक १९७० ।
- २४- श्री ००००००, कौटी दिनांक १९७०, पुस्तक ७० ।
- २५- सुनील, ७०
- २६- श्री रामचरण दिनांक, कलकत्ता है शांतात्कार दिनांक ००-३-७७ ।
- २७- श्री ००००००, कौटी दिनांक १९७० पुस्तक ७० ।
- २८- श्री कौटी बाबु बाबु, श्री, आर्य कविता कौटी, चौथी है शांतात्कार
दिनांक ५-६-७६ ।
- २९- श्री देवचर सुंदर, कलकत्ता नवी, आर्य कविता कौटी, चौथी, शांतात्कार
दिनांक ६-१०-७६ ।

- ७०- श्री कल्याण लाल शर्मा, बम्बला, चारक जमिंदार जीटी, बीछा,
बापताखार दिनांक २०-६-७६ ।
- ७१- श्री रामेन्द्र प्रसाद सिंह, बम्बला, मण्डल जमिंदार पट्टाट, बापताखार
दिनांक १५-६-७६ ।
- ७२- श्री सुनन्दन सिंह जीजाय्या, दिनांक १२-६-१९७६ ।
- ७३- श्री ब्याजेंद्र कुंभ, ब्याजेंद्र है बापताखार दिनांक १०-२-७६ ।
- ७४- श्री रामलाल बालबहादुर ज्ञान्या, बापताखार दिनांक २०-७-७६ ।
- ७५- श्री ० ३ बाजानाथ, कर्माटिन बाजिटिन, १९७६, पुस्त ६४ ।

[illegible][illegible]

का लक्ष्य देता हुआ व्यक्ति वन्द्य में वैदिक मूल्यों को प्रामाण्य करता है। वन्द्य है ठीकर मूल्यों के काठ तक व्यक्ति अपनी जीवन में सामाजिक जीवन के साथ वादात्मक-स्थापना का प्रयास करता है। अन्त में साथ वादात्मक-स्थापना का दृष्टान्त व्यक्ति में सामाजिक जीवन का वास्तविक करता है।

कई विद्वानों ने समाधीकरण की परिभाषा किया है। 'समाधी-करण का प्रक्रिया है जिसमें द्वारा वास्तविक व्यक्तिगत, वस्तुतः तथा व्यक्तिगत को प्रामाण्य करता है।' समाधीकरण एक प्रकार की शक्ति है जो शक्ति वाले को सामाजिक मूल्यों को करने योग्य बनाती है। समाधीकरण का प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य दूसरे मनुष्यों और जगत् में वन्द्यः प्रिया कर सामाजिक परिस्थितियों और संस्कृति के अनुसार व्यवहार करता हुआ एक सामाजिक मनुष्य बन जाता है। समाधीकरण है व्यक्ति में वास्तविक, वास्तविक, वन्द-पावना, सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक उत्तरदायित्व के गुण का वादी है जो उसी व्यक्तिगत को संपूर्ण बनाती है।

यह प्रामाण्यः प्रस्तावित किया जाता है (कि) समाधीकरण शक्ति की एक प्रक्रिया है जिसमें माध्यम है एक व्यक्ति अन्त में वन्द्य व्यक्तियों द्वारा नियंत्रित व्यक्तियों को, व्यक्तियों की विभिन्नता में एकताओं की मनुष्यिक भाषा के साथ, पूरा करनेवाले व्यक्ति व्यवहार के क्षेत्र निर्मित होता है। समाधीकरण उत्तर एक ही रचना का निरूपण करता है जिसमें माध्यम है व्यक्तिगत वस्तुओं, प्रेरणों, ज्ञान तथा मूल्यों को, जो कि एक विशिष्ट सामाजिक संस्था में मान्यता की भाँति उनके जीवन की विभिन्न वस्तुओं में वास्तविक उनकी सभी मूल्यों को विमान के लिए वास्तविक जिन वादी, शक्ति है। समाधीकरण की उत्तराधिकार परिभाषाओं है निम्नलिखित सूत्र स्पष्ट होती है।

(१) यह एक प्रक्रिया है जिसमें निरंतरता तथा पुनरिक्तिशीलता होती है।

(२) इसी वन्द्यता संस्कृति (जिसमें वस्तुता, विस्तार, मूल्य, ज्ञान वादि निर्मित है शक्ति वादी है)।

- (३) सबसे अधिक या कम में सामाजिक जीवन विकसित होती है ।
- (४) सबसे अधिक का अन्तर्गत सामाजिक वास्तविकताओं के अनुसार समाज सुव्यवस्था परिवर्तित होती है ।
- (५) सभी समाज की परिवर्तितताओं के आधार में एक ही मूल्यों का अनुसरण होता है तथा आवश्यक मूल्यों का समाज जीवन मूल्यों के द्वारा ही दूर किया जाता है ।

“ समाजीकरण ” शब्द के निहित अर्थों का स्पष्टीकरण होने के पश्चात् “ राजनीतिक समाजीकरण ” का अन्तर्गत अर्थ स्पष्ट हो जाता है । समाज में निवास करनेवाला मनुष्य एक दूसरे के साथ या समुदाय के साथ वृद्ध प्रकार के संबंध स्थापित करता है जैसे व्यापारी है वार्षिक संबंध, वैकी वैकावों है वार्षिक संबंध, परिवार एवं वंश है एक संबंध तथा राज्य के साथ राजनीतिक संबंध स्थापित । राजनीतिक संबंध राज्य की नहीं वृद्ध प्रकार की राजनीतिक संस्थाओं जैसे राजनीतिक मंडल, संघ, न्यायालय आदि के साथ स्थापित किये जाते हैं ।

“ राजनीतिक तथा अन्य संस्थाओं के मध्य संबंध की राजनीति के सामाजिक का विशेष विषय होता है । बी० हास्टींग ने कहा है “ राजनीतिक सामाजिक नहीं है एक बौद्धिक वातावरण है - प्रतिनिधित्व होता है, जिसे भी प्रकार है राजनीतिक सामाजिक का राजनीति के सामाजिक का अर्थ नहीं समझा गया है । न वास्तव में इन दोनों के बिना ही परस्पर विरोधी मान-अर्थों का प्रयोग प्रस्तावित करता है । राजनीतिक सामाजिक एक अन्तर्निहित संरचना है, सामाजिक एवं राजनीतिक आस्थात्मक परिवर्तितताओं जो सम्पन्न करने का यत्न है जो सामाजिकताओं द्वारा सुझाये गये वादों के साथ राजनीतिक वैज्ञानिकों द्वारा सुझाये गये (Issues) वादों के हैं । ” उपरोक्त वाक्यांशों है स्पष्ट है कि “ राजनीतिक समाजीकरण ” एक वैज्ञानिक विषय “ राजनीतिक सामाजिक ” की परिधिमें ही अन्तर्गत सम्पन्न है ।

राजनीतिक सामाजीकरण की परिभाषा

- (१) 'जब राजनीतिक सामाजीकरण की परिभाषा की है तब किसी प्रतिभाषी (विभाषी) एक प्रतिभाषी की किसी किसी द्वारा व्यक्तिगत राजनीतिक अनुभविकताओं का व्यवहार के प्रति रुचों की बर्णन करती है ।'

We shall define political socialization restrictively as those developmental processes through which persons acquire political orientations and patterns of behavior.

David Easton, Jack Dennis, Children in Political System, 1969, page 7.

- (२) राजनीतिक सामाजीकरण - नवी पीढ़ी के सम्बन्धित परिवार, विद्यालय एवं वीरु (Peer Groups) समूहों के द्वारा राजनीतिक मूल्यों का सम्बन्धित ; व्यवहार विवेक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की राजनीतिक मनीषिकताओं तथा बरीकतों का वीरण (पारण) (Transmission) (१)

Political Socialization. The inculcation of political values into younger generations by family, school and peer groups, more specifically the transmission of political attitudes and preferences from one generation to the next.

Stephen L. Vashy - Political Science - The Discipline and its Dimensions - and the Introduction - 1972, page 46.

- (३) 'राजनीतिक समाधीकरण एक प्रक्रिया है जिससे द्वारा राजनीतिक संस्कृतियाँ संभर (Maintained) तथा परिवर्तित की जाती हैं ।'^{१०}

Political Socialization is the process by which political cultures are maintained and changed.

G.A.Almond- Comparative Politics, page 64.

- (४) (राजनीतिक समाधीकरण) एक प्रक्रिया(एँ) जिससे माध्यम है जिसके द्वारा राजनीतिक दृष्टि है प्रमुख मनोवृत्तियाँ, विश्वास, धर्म, धर्म और मूल्यों की वास्तविकता बना है ।'^{११}

Political Socialization a process through which the individual internalizes politically relevant attitudes beliefs, cognitions and values -Roder Gerald "Political Socialization and political changes". Western Political Quart (1967) 20 page 392.

(Quoted Public Opinion 419 and Political attitude page 419.)

- (५) 'राजनीतिक समाधीकरण सीखने की एक विधा (प्रक्रिया) की विशेषता है जिससे एक प्रणाली राजनीतिक प्रणाली की स्वीकार्य राजनीतिक प्रक्रियाएँ एवं व्यवहारों की सीढ़ी पर सीढ़ी तक पहुँचाया जाता है ।'^{१२}

Political Socialization refers to the learning process by which the political norms and behaviour acceptable to an ongoing political system are transmitted from generation to generation.

(Sigel Roberts "Assumes about the learning of

Political Values * Annals American Academy
 Politien and Social Sciences-1968, page 1.

- (4) **राजनीतिक समाधीकरण** - राजनीतिक ज्ञान, मूल्यों एवं विस्मयों की जड़ों विचारों। प्रारंभिक उम्र में, यहाँ तक कि पक्ष के पूर्व की पक्ष के अधिष्ठान की विरासत करने का कारण बनता है। बाद में, १३ पक्षों का विचारों समाधीकरण तथा पक्ष-अधिष्ठान के द्वारा होता है।

Political Socialization - the process of acquiring political knowledge, values and beliefs - causes party identification to develop at an early age, even before opinion. Later opinions are determined by socialization and party identification.

Allen R. Wilson - Public opinion and political attitudes, page 685.

राजनीतिक समाधीकरण की परिभाषाएँ हैं निम्नलिखित रूप से स्पष्ट होती हैं -

- (1) राजनीतिक समाधीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें निरन्तरता तथा पुनरिर्गन्भीरता है।
- (2) इसके अन्तर्गत राजनीतिक संस्कृतियों सीखी जाती हैं।
- (3) सभी समाज एवं सभी व्यक्तियों का राजनीतिक व्यवहार राजनीतिक मान्यताओं के अनुसार अपना भुक्ति भुक्त परिष्कृत होता है।
- (4) सभी राजनीतिक अवस्थाओं के समाधान में लायक जानों, मूल्यों एवं विस्मयों का व्यवहार होता है और जिसमें वे नवीनों का प्रवेश भी होता है।

(४) इसके परिणाम स्वयं व्यक्ति, कुछ और राष्ट्र में राजनीतिक पैना विकसित होती है ।

अतः राजनीतिक कारीकरण राजनीतिक संस्कृति के द्वारा व्यक्ति, कुछ और राष्ट्र में राजनीतिक पैना की विकसित करने की प्रक्रिया है जिससे जीवन का सभी राजनीतिक आय में उनकी सुविधाएँ सुनिश्चित की जाएँ या परिवर्तित की जाती है ।

संक्षेप किमान उमा चीन में राजनीतिक कठ और राजनीतिक कारीकरण के व्यवस्था के निमित्त व्यवस्थापित विधेयताओं से मुख्य ७६ नागरिकों से साक्षात्कार किया । प्रत्येक के नागरिक से नागरिकों में राजनीतिक मान प्रकाश, राजनीतिक विचारधाराओं की प्रभावशाली का सामाजिक व्यवस्थाओं पर प्रभाव और राजनीतिक संस्थाओं से जीवन जीवन के व्यवस्था का प्रभाव किया है । राजनीति क कठ राजनीतिक कारीकरण के प्रमुख व्यक्तियों के रूप में प्रतिपादित है ।

साक्षात्कृत नागरिकों का विवरण

१- व्यक्ति

<u>व्यक्ति का नाम</u>	<u>प्रतिफल</u>	<u>वर्ष</u>
प्राज्ञ	२१, २०	१६
राज्य	१७, १५	१०
वैश्य	१७, १५	१०
विश्वी व्यक्ति	२६, २०	२०
व्यवस्था व्यक्ति	१७, १५	३०
मुक्तमान	१७, १५	१०
	<u>१०० - ००</u>	<u>७६</u>

२६२

१ - जायु गज

<u>जायु विस्तार</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>तस्ता</u>
१६ व २० वर्ग	१०, ५४	८
२१ - २५ वर्ग	१६, ७१	१५
२६ - ३५ वर्ग	१६, ७१	१५
३६ - ४५ वर्ग	१६, ७१	१५
४६ - ५५ वर्ग	१६, ७१	१५
५६ - ७० वर्ग	१०, ५४	८
योग	१००-००	७६

२- डिना गज

<u>डिनाक सार</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>तस्ता</u>
निस्तार	१०, ५	८
काचार	१५, ८	१२
प्राथमिक	२४, ०	१८
चार्ड स्तूप	१६, ७	१५
स्नातक है नीचे	१५, ५	११
स्नातक एवं स्नातकीपर	१५, ८	१२
योग	१००-००	७६

४ - मुख्य व्यवसाय गज

<u>कार्य का नाम</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>तस्ता</u>
व्यवसाय	१०, १	१३
व्यवसाय	५, ३	४

रु०

भूमि	४४, ७	४४
पक्कुरी	६, २	७
बाँकरी	२, ६	२
आधार	१४, ५	११
अन्य	६, ६	५
	<hr/>	<hr/>
योग	१००-००	७६

५- गीता व्यवसाय

<u>कार्य का नाम</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>हस्ता</u>
भूमि	४४, २	४४
अन्य	२६, २	२०
बाँकरी नहीं	२६, ५	२२
	<hr/>	<hr/>
योग -	१००-००	७६

६- भूमि वित्तकट का

<u>वित्तकट विवर</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>हस्ता</u>
एक बीघा एक	१०, ५	८
दोन बीघा एक	१५, ५	१४
चार बीघा एक	६, २	७
सब बीघा एक	१२, ७	१५
बीघ बीघा एक	१०, १	१३
हस्तोय बीघा के ऊपर	१५, ५	१२
भूमिहीन	६, २	७
	<hr/>	<hr/>
योग-	१००-००	७६

७- परिवार व्यवस्था का

<u>परिवार व्यवस्था</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>वस्था</u>
पति	१४, ५	६९
पुत्र	१०, ५	४
पुत्र	२६, ३	२०
पुत्र	२२, ४	६०
पुत्र है कथर	२६, ३	२०
योग -	१००-००	७६

राष्ट्रीयता का प्रश्न

(क) राष्ट्रीयता का है कार्य

जापान का राष्ट्रीयता का प्रश्न है १ के उत्तर में नागरिकों के ६५, ६ प्रतिशत की वृद्धि का नहीं, २५ प्रतिशत कात्रि, ७, = प्रतिशत कार्य का १, २ प्रतिशत " नागरिक प्रान्ति" बताया । कात्रि के वित्तगत व्ययों की ऊ १५-२० वर्ष के बीच है तथा कार्य के वित्तगत व्ययों की ऊ २६ है २५ वर्ष के पूर्व के नव्य है । कात्रि के व्यवस्था की बातों में है किन्तु उच्च जाति में वित्तगत है किन्तु कार्य का वित्तगत बातों एवं मुक्तमार्गों में एक भी व्यवस्था नहीं मिला । कात्रि के ३०, ३ प्रतिशत व्यवस्था कात्रि है प्राथमिक शिक्षा, ५२, ७ प्रतिशत कार्य स्कूल है स्वातंत्र्य के शिक्षा को मिला के पिछे की कार्य के २३, ३ प्रतिशत व्यवस्था प्राथमिक शिक्षा का ६६, ७ प्रतिशत कार्य स्कूल है स्वातंत्र्य के शिक्षा

योग्यता के बिना ।

अंग्रेज के इससे व्यवस्थापन, पुलिस, मजदूरी, नौकरी, व्यापार आदि व्यवसायों में बिना यह कि मजदूरी एवं नौकरी के व्यवसाय में कार्य के एक भी कार्य नहीं बिना । अंग्रेज के ५२, ७ प्रचिन्ना तथा कार्य के ५७ प्रचिन्ना सभी को इससे स्वीकार करनेवाले नागरिकों के साक्षात्कार बाधाएं अखीन मौजजा की काकायाय में लिये गये हैं । इन उपरों से स्पष्ट है कि अंग्रेज की व्यवस्था व्यवस्था में उपचारित अंग्रेजता है ।

बायका कोई दिखेदार क्या नियम क्या किसी एक का व्यवसाय या सेवा है ? के अन्त में नागरिकों ने ५६, १ प्रचिन्ना नहीं तथा ५३, ६ प्रचिन्ना " वा " क्या । वां करनेवाले नागरिकों में स्वयं किसी न किसी एक के व्यवसाय वालों का २१, १ प्रचिन्ना है तथा केवल २२, ८ प्रचिन्ना के नागरिकों का है जो स्वयं किसी एक के व्यवसाय नहीं है । " नहीं " करनेवाले नागरिकों में किसी एक व्यवस्थापन आदि के नागरिकों का प्रचिन्ना अधिक है । स्पष्ट होता है कि कर्माध्य नागरिक राजनीतिक वर्गों के अन्त बाह्य है बाहर भी हुए हैं । सामाजिक वर्ग के अन्त में नियम तथा रक्त वर्ग के अन्त में दिखेदार जो कि वर्गों की व्यापक बनाते हैं, इन वर्गों में है किसी का भी न मिलना राजनीतिक वर्गों की बाधकता एवं एक पिछा में निश्चिन्ता का प्रमाण है ।

" किसी राजनीतिक वर्गों के नेताओं के बाकी बायका हुने हैं " के अन्त में ५५, २ प्रचिन्ना नागरिकों ने विभिन्न वर्गों के नाम लिये किये हैं १३, ५ प्रचिन्ना एक वर्ग ; २१, १ प्रचिन्ना दो वर्ग, २५ प्रचिन्ना तीन वर्ग, १६, ७ प्रचिन्ना चार वर्ग, २, ६ प्रचिन्ना पांच वर्ग तथा ५, ३ प्रचिन्ना छः वर्गों के नाम बताये । इन राजनीतिक वर्गों में कर्माध्य प्रचिन्ना अंग्रेज, फिर भारतीय कार्य के भारतीय लोक वर्ग का है । बाधाएं अखीन मौजजा की साक्षात्कार के बाधाएं बाधाएं हुए २२, ३ प्रचिन्ना नागरिकों में है ५५, ५ प्रचिन्ना ने कर्माध्य पार्टी का भी नाम बताया ।

तैल ११, २ प्रचिन्न नागरिकों में मान तक किसी की एक के पैसा का नाशना नहीं हुआ है किन्हीं के उच्च वर्ग के १, २ प्रचिन्न पिछड़ी जाति के ५, ३ प्रचिन्न तथा अनुसूचित जाति के ५, ३ प्रचिन्न नागरिक हैं। कर्ज विस्तार एवं व्यापार की विशेष रूप से ही और किसी बाध ३६ है ३५ वर्ग के मध्य की अधिकतर हैं। इसी स्पष्ट है कि राक्षसीय वर्ग के नाशना में ३५, २ प्रचिन्न नागरिकों में मान दिया है किन्हीं के तीन वर्गों की कुलियों का प्रचिन्न कर्जाग्रह अधिक है की प्रमाणित करता है कि तीन वर्ग की वर्गों अधिक क्षीय हैं।

बापने किसी प्रचिन्न, कुल, कर्जाग्रह, पैसा जाति राक्षसीय नाशनाओं में कर्ज मान दिया है १ के ऊपर में १६, ३ प्रचिन्न नागरिकों में कर्ज " कर्ज किन्हीं ११, २ प्रचिन्न कर्ज के, १ ६ प्रचिन्न नाक्षीय वर्ग के कर्ज हैं तथा ५, ३ प्रचिन्न किसी की एक के कर्ज नहीं हैं। कर्ज कर्जाग्रह नागरिकों में १३, २ प्रचिन्न की बाध ३६ है ३५ वर्ग के मध्य है, ३, ६ प्रचिन्न की बाध ५६ है ३० वर्ग के मध्य है और मात्र २, ६ प्रचिन्न की बाध २१ वर्ग है ३५ वर्ग के मध्य रही। जरीय राक्षसीय प्रमाणितों में मान कर्जाओं में है १०, ६ प्रचिन्न उच्चजाति, ३, ६ प्रचिन्न पिछड़ी जाति, ३, ६ प्रचिन्न अनुसूचित जाति तथा १, ३ प्रचिन्न मुसलमान है, १०, ६ प्रचिन्न चर्च स्तुत है नाक्षीय, ३, ६ प्रचिन्न प्राथमिक शिक्षा २, ६ प्रचिन्न व्यापार तथा २, ६ प्रचिन्न विस्तार, क्षीय योज्यता है है तथा १०, ६ प्रचिन्न पूर्ण, ३, ६ प्रचिन्न व्यापार तथा तीन मधुरी, व्यापार या अन्य व्यवसायों में क्षीय है।

इसी स्पष्ट है कि उच्च जाति के क्षीय तथा प्रचिन्न वर्ग जाति, पूर्ण एवं व्यापार कर्ज कर्जाग्रह, नाक्षीय विशेष रूप से प्रचिन्न, कुल, कर्जाग्रह, पैसा जाति में मान कर्ज हैं। कर्ज पर राक्षसीय वर्ग के कर्जता प्रमाण कर्जाओं का प्रचिन्न ३३, ६ और जरीय प्रमाणितों में मान कर्जाओं का प्रचिन्न १६, ३ है कर्ज पर स्पष्ट की जाता है कि कर्ज कर्ज इन प्रमाणों में मान नहीं कर्ज और मान कर्जाग्रह कर्ज कर्ज की नहीं जाति है कर्ज ५, ३ प्रचिन्न नागरिकों में

किन्ती भी यह है क्या व्यवस्था- संकेत नहीं बताया । २०, ३ प्रविष्ट नागरिकों ने प्रत्येक के ऊपर में " नहीं" क्या किन्ती स्पष्ट है कि बहुत बड़ा नाम इन प्रविष्टों से बहुत रहना चाहता है ।

क्या आपके पास पुनः अनिवार्य में और राक्षसीयिक यह नाम भी नागरी बताया ? यदि किन्ती की किन्ती ? के ऊपर में १०, ५ प्रविष्ट नागरिकों में " हाँ" क्या किन्ती है ५, ३ प्रविष्ट किन्ती का, २, ६ प्रविष्ट उच्च का किन्ती क्या उच्च मुसलमान हैं, इन दोनों में ६, ६ प्रविष्ट मुसलमान, १, ३ प्रविष्ट व्यवस्था क्या २, ६ प्रविष्ट व्यवस्था व्यवस्था करते हैं । इन दोनों में ६, ६ प्रविष्ट का किन्ती ३, ६ प्रविष्ट व्यवस्था यह के नाम किन्ती । की नागरी का किन्ती ५१- ५० है १००१- ५० यह की है । इसी स्पष्ट है कि का किन्ती प्रविष्ट नागरिकों से भी व्यवस्था करते हैं ।

(४) राक्षसीयिक का किन्ती के प्रति व्यवस्था

क्या का किन्ती, किन्ती एवं मुसलमानों पर किन्ती व्यवस्था की है यह कम है ६३, ४ प्रविष्ट नागरिकों ने व्यवस्था प्रत्येक की किन्ती २, ६ प्रविष्ट मुसलमानों ने नाम किन्ती के किन्ती की कम की व्यवस्था । ६, ६ प्रविष्ट नागरिकों ने व्यवस्था प्रत्येक किन्ती किन्ती है १, ३ प्रविष्ट का किन्ती क्या १, ३ प्रविष्ट नागरीय का किन्ती के व्यवस्था है उच्च ४ प्रविष्ट किन्ती की यह के व्यवस्था नहीं है । कम है व्यवस्था नागरिकों में है ४ प्रविष्ट उच्च का किन्ती, १, ३ प्रविष्ट व्यवस्था का किन्ती क्या १, ३ मुसलमान का किन्ती के है क्या किन्ती व्यवस्था की मुसलमान के विरुद्ध, साधारण एवं व्यवस्था यह की व्यवस्था है । इसी स्पष्ट है कि कम है की का किन्ती का किन्ती, व्यवस्था, व्यवस्था क्या का किन्ती ६३, ४ प्रविष्ट नागरिक व्यवस्था है किन्ती- का किन्ती व्यवस्था का विरुद्ध है ।

का किन्ती में व्यवस्था की और उच्च का किन्ती के किन्ती का किन्ती है ? यह कम है ३५ प्रविष्ट नागरिकों ने व्यवस्था प्रत्येक की, १५, ८ प्रविष्ट ने व्यवस्था

वीर ६, २ प्रविष्ट १० उपर ही कीं किन्तु वीर राखीविषय यह है कि वीर का अन्त
 कहा है । १५, ८ प्रविष्ट अन्तर्गत प्रष्ट करनेवालों में है ७, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत
 के अन्त १, २ प्रविष्ट अन्तर्गत के अन्त ६, ६ प्रविष्ट किन्तु वीर का है अन्त
 नहीं है, १० ६ प्रविष्ट अन्तर्गत के २, ६ प्रविष्ट किन्तु वीर का है अन्त
 मुक्तमान है किन्तु है १६, ८ प्रविष्ट, अन्त २, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त
 व्यापार करनेवाले हैं वीर अन्तर्गत वीर का है अन्त २, २ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त
 अन्तर्गत अन्त २, २, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत, २, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त अन्त
 अन्त अन्त है । उपर १० अन्तर्गत में है ६, ६ प्रविष्ट किन्तु वीर १, २ प्रविष्ट
 अन्त अन्त १, २ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त के अन्तर्गत है । ७५ प्रविष्ट अन्तर्गत
 प्रष्ट करनेवाले अन्तर्गत में की वीर, अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
 अन्तर्गत है किन्तु अन्त है कि अन्त में अन्तर्गत अन्त है ।

अन्त अन्त में अन्त अन्त अन्त है, अन्त अन्त है ७२, ४ प्रविष्ट
 अन्तर्गत में अन्त अन्त अन्त है, १२, ७ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त अन्त ७, ६ प्रविष्ट
 अन्त अन्त अन्त अन्त । अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
 वीर अन्तर्गत के अन्तर्गत में वीर अन्तर्गत वीर अन्त १०, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत
 २, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त २, ६ प्रविष्ट किन्तु वीर २, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत
 (अन्त) अन्त मुक्तमान है । अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
 वीर अन्तर्गत के अन्तर्गत में अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
 अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
 अन्त अन्त है कि अन्त अन्त में अन्तर्गत अन्त अन्त अन्त है ।

अन्तर्गत अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत का अन्तर्गत है, अन्त
 है ७५, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत में अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
 अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
 ६, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत, २, २ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त अन्त २, ६ प्रविष्ट
 किन्तु वीर है, ६, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त २६ है २५ अन्त २, ६ प्रविष्ट अन्तर्गत अन्त

३६ है ३५ वर्गों का क्षेत्र ५, ३ प्रतिशत की जायदादों के एक भाग है और ६, ६ प्रतिशत विभागी, ६, ६ प्रतिशत कुम्हक का ९, ३ प्रतिशत पक्कुर है । ६, ६ प्रतिशत नागरिक कर्म के कर्मचिन्ता का विभाग करने में अर्द्ध वर्गों के कारण उत्तर नहीं है जो किन्हीं है २, ६ प्रतिशत पिछड़ी जाति २, ६ प्रतिशत अनुसूचित जाति का क्षेत्र अन्य जाति (क्षेत्र) है । इसी स्पष्ट है कि भारतीय लोकतांत्रिक में छोटी जातियों का बोलबाला अधिक है ।

हिन्दू महाकाव्य एवं रामराज्य परिचय की एक और वाचस्पत्य नहीं है अन्य है नागरिकों का २४, २ प्रतिशत कर्म का ३६, २ प्रतिशत अनुसूचित रण । इसी स्पष्ट है कि इन दोनों राजनीतिक वर्गों के विभाग में ३३, ६ प्रतिशत नागरिकों की ही वाचस्पत्य है जो इन दोनों वर्गों की बोलबाला विभाग का में निश्चित का एवं भाग का परिचय देता है । पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति का अन्य जाति में क्षेत्र वर्ग का एक ही नागरिक हिन्दू महा काव्य का राम राज्य की वाचस्पत्य का अनुसूचित नहीं करता है किन्तु २, ६ प्रतिशत मुसलमान कर्मचारी में सम्मिलित हैं ।

मुसलमान कर्मचारी मुसलमानों की विशेष वर्ग विभाग वाचस्पत्य है नागरिकों का ३६ प्रतिशत कर्म, ६, ६ प्रतिशत कर्म का ३३, ६ प्रतिशत अनुसूचित रण । मुसलमान नागरिकों का ६० प्रतिशत कर्म का ३० प्रतिशत कर्म का क्षेत्र अनुसूचित रण । इसी स्पष्ट है कि मुसलमान कर्मचारी के विभागकर्ता है कर्माध्य नागरिक कर्मचारी हैं क्योंकि वह एक में की अपने एक का प्रत्यागती विभाग का भागी में लड़ा नहीं किया । अन्य में कर्माध्य अधिक प्रतीत होता है ।

जाय किन्तु एक है प्रभावित है और क्यों ? के उत्तर में नागरिकों में ३३, ३ प्रतिशत कर्म, २६, ३ प्रतिशत कर्म, ३३, ३ प्रतिशत कर्म पाटी, २, ६ प्रतिशत भारतीय लोकतांत्रिक ६, ६ प्रतिशत किन्हीं है नहीं २, ३ प्रतिशत कर्म और कर्मचारी है का ५, ३ प्रतिशत अनुसूचित रण । किन्हीं एक का नाम में कर्मचारी की वर्गों का नाम किन्हीं एवं अनुसूचित कर्मचारी एक प्रकार कुछ ३३, २ प्रतिशत नागरिकों का वाचस्पत्य वाचस्पत्य का में किया गया है । कर्मचारी है प्रभावित किन्हीं नागरिकों में २६, ३ प्रतिशत एक के कर्मचारी है का

२५ प्रविष्टता पत्र के अन्तर्गत नहीं है किन्तु वर्गों १, २ प्रविष्टता भारतीय संरक्षण के अन्तर्गत भी सम्मिलित हैं। वर्गों के प्रभावित नागरिकों में ७, ८ प्रविष्टता पत्र के अन्तर्गत हैं और १८, १९ प्रविष्टता पत्र के अन्तर्गत नहीं हैं किन्तु २, ६ प्रविष्टता पत्र के अन्तर्गत भी हैं किन्तु पत्र की अनुसन्धान नागरिक नहीं हैं।

कनका पाटी है प्रभावित नागरिकों में १. ३ प्रचलित अंग्रेज के समय की है । २. ६ प्रचलित भारतीय लोकप्रिय है प्रभावित नागरिकों में नाच पिछड़ी पाति है । अंग्रेज है प्रभावित होनेवाले कारणों में कनका' बरीवा' की राख भिड़ी', 'स्वराज्य पिछावा' , 'बच्चा काम किया', 'साधन है', 'मुक्तिदायें किया', 'न्याय करती है' पर यह किया कना' विचार मुम्बर', 'बच्चे नाचिय की वाडा' 'नवजन्म में बसत नहीं' एवं पिता की कनकाप्रती है, कारणों पर एक समान यह किया । इसी स्पष्ट है कि अंग्रेज है प्रभावित होनेवाले कारणों में उसका बलीव समा करीबन काठ के काथीन एवं बच्चे नाचिय की वाडा है । कनका है प्रभावित होनेवाले कारणों में कर्मांक यह, हिन्दू-बर्-रदा, पर किया कना' फिर' किरी का पिनाहूँ नही' कनका की अधिक मछार', 'प्राचीन भारतीय विचारधारा' बच्चे निम्न' ठेवा की वाडा' , 'काम बच्चे', 'ज्वारी बाँवें मुनी है', 'मुसलमानों का विरोधी है' , 'बाम्बान्तर विकास पर बत' इस यह में न्याय है, 'कीर्त्ति' बच्ची है' उच्च अनुशासन एवं राष्ट्र प्रेम है' कना' इसी प्रकाशनी जीन नहीं है' वादि की बताया ।

उसके स्पष्ट है कि कर्तव्य विचारों, नीतियों और
उसके कार्यवाहियों का व्यवहार ही नागरिकों को प्रभावित कर रहा है । कलक
पाटी है प्रभावित होनेवाले कारणों में, " कठिण को छटाया ", " नीतिगत अपेक्षाओं
को बाधित कराया " " हीनता भावी है और पुनः के सिद्धांत व्यापक किया " १६
इसका कारण है कि " वायव्यमय व्यवस्था " को बताया । किसी की पक्ष है
प्रभावित न होनेवाले नागरिकों ने " सभी और है ", " कोई प्रस्ताव नहीं ", और
इस में जाने पर सभी पक्ष कार्य करते हैं " के कारणों को बताया । कठिण
सर्व कर्तव्य भावी है प्रभावित नागरिक ने " कठिण ने स्वतन्त्रता दिखायी तथा

कार्य भारतीय संसुचित का पीछा है^{१०} बताया ।

जाय जिस एक की एक है दुरा समकक्ष हैं वीर काँ ? के उतर में नागरिकों ने १७, १ प्रतिक्रिया 'कटिब', ७, ६ प्रतिक्रिया कार्य, ६, २ प्रतिक्रिया भारतीय संसुचित, १७, १ प्रतिक्रिया सम्पुनित '७, ६ प्रतिक्रिया वीरकृत ' १, ३ प्रतिक्रिया वीरकृत सम्पुनित पीपी १, ३ प्रतिक्रिया ' विन्दु यकायना वीर मुकाम वीर पीपी ३, ६, ३ प्रतिक्रिया यकायना, १, ३ प्रतिक्रिया प्रिकु मुनीकाम, १, ३ प्रतिक्रिया वीरकृत ' १, ३ प्रतिक्रिया रायराज्य वीरकृत १, ३ प्रतिक्रिया वीरकृत कृत १, ३ प्रतिक्रिया ' कार्य के उकावा वीर कर्त, के नाम कर्त वीर २३, ७ प्रतिक्रिया ' कितो की नहीं' जै ७, ६ प्रतिक्रिया ने उतर की नहीं किया । कटिब की दुरा समकक्ष वाली में ६, २ प्रतिक्रिया कार्य ३, ६ प्रतिक्रिया यकायना, १, ३ प्रतिक्रिया भारतीय संसुचित है प्रभावित नागरिक हैं वीर केय कितो है नहीं । सम्पुनित वासि का एक की नागरिक कटिब की दुरा नहीं समकक्ष ।

कार्य की दुरा समकक्षियों में ६, ६ प्रतिक्रिया कटिब का १, ३ प्रतिक्रिया कितो की यक है नहीं, प्रभावित नागरिक हैं किमें उक्त वासि का एक की नागरिक नहीं है । भारतीय संसुचित की दुरा समकक्षियों में ६, ६ प्रतिक्रिया कटिब, १, ३ प्रतिक्रिया कार्य का १, ३ प्रतिक्रिया निमित्त कर्त है प्रभावित नागरिक हैं किमें निमित्त वासि का एक की नागरिक नहीं है । सम्पुनित की दुरा समकक्षियों में ६, ६ प्रतिक्रिया कार्य, ३, ६ प्रतिक्रिया कटिब, १, ३ प्रतिक्रिया भारतीय संसुचित का १, ३ प्रतिक्रिया यकायना पाटी है प्रभावित नागरिक हैं किमें एक की मुकामान नागरिक नहीं है । वीरकृत की दुरा समकक्षियों में ६, ३ प्रतिक्रिया कार्य का २, ६ प्रतिक्रिया कटिब है प्रभावित नागरिक हैं किमें एक की मुकामान नागरिक नहीं है ।

कला पाटी की दुरा समकक्षियों में पूर्ण उक्त कटिब है प्रभावित उक्त वासि जै सम्पुनित वासि के नागरिक हैं । कितो की यक की दुरा न समकक्षियों में १७, ६ प्रतिक्रिया कटिब, ७, ६ प्रतिक्रिया यकायना पाटी का

१. ३ प्रतिक्रिया विधी की वजह से नहीं प्रभावित की जायगी के नाशितक है ।
नवसंस्कार, प्र० पु० का, शीघ्रता का, रामराज्य परिवर्तन एवं संसद का विधायी
पुरा संसदनेवाले की वजह से प्रभावित है किन्तु इसी अन्य वजह से विधायी
वजह के नाशितक है ।

कांग्रेस की पुरा संसदने के प्रमुख कारण, कार्य न होना,
पुरा विधायी का प्रवृत्त होना, कसबा पर ध्यान देना, कार्यकर्ताओं का हीनकारी
है कार्य न करना, २९ मसौदा का बहाना, अनुसूचित की सुविधाएँ न देना, नीतिगत
व्यवस्थाओं का होना २९ हीनकारी का बहाना तथा पुनः करना, बताया की ।

कांग्रेस की पुरा संसदने के प्रमुख कारण, कीदारी माफ़ा,
बासीय विचार, की की वजह, पुरानी राज्य कल्याण २९, कीदारी का बहाना २९
तथा पुनःकरणों का विरोधी २९ बताया की । भारतीय हीनकारी की पुरा संसदने के प्रमुख
कारण बासीय प्रभावता, काविकाएँ एवं पुनःकरण के मसौदा के साथ वीरता २९ बताया
की । अनुसूचित पार्टी की पुरा संसदने के प्रमुख कारण, बासीयता एवं राष्ट्रीयता
का बहाल, का की वजह से होना, नामों की वजह से का : मान्यता, संसदीय का
विनाश, की वजह की वजह, की एवं का का व्यवस्था, ग्रामिण की माफ़ा,
तथा प्रभावता के विरोधी २९ होना बताया की । हीनकारी की पुरा संसदने के कारण
बासीय एवं बाधकारीय व्यवस्थाओं का वजह से होना, हीनकारी कांग्रेस में मिल
माना, कसबा के बहाल तथा काविकाएँ २९ बताया बताया की ।

प्रतिक्रिया पुनःकरणों की पुनः राज्य की माँग एवं वजह
कीदारी की वजह प्रभावित वजह पुरा संसदने के कारण बताया की । कसबा पार्टी
की पुरा संसदने के कारण वीर, मसौदा, हीनकारी वजह में वजह होना बताया २९
उपरोक्त वजहों से स्पष्ट है कि काविका में वजह से वजह से प्रभावित नाशितक वजह
वजह की हीनकारी वजह वजह वजह की पुरा संसदने हैं वीर विरोधी वजह-वजह प्रमुख
प्रति वजहों की पुरा संसदने हैं ।

की वजह का राष्ट्रीयता वजह वजह में वजह काविका वजह से ती

बापकी स्थिति बहुत बची सी १ के ऊपर में नामांकों में ३५, ६ प्रविष्ट "कट्टि" ३४, २ प्रविष्ट "काली" ११, ६ प्रविष्ट "काला पाटी" , ५, ३ प्रविष्ट भारतीय लोक, ३, ६ प्रविष्ट "वीरचरित" ३, ६ प्रविष्ट पारिवर्तनी सीता री २, ६ प्रविष्ट की दुरि री, तथा २, ६ प्रविष्ट "अनिरुद्ध" कहाया । कट्टि की उता के कुछ पता-परा में १४, ५ प्रविष्ट उन्म वाधि, ६, ६ प्रविष्ट पिछड़ी वाधि, ६, २ प्रविष्ट अनुप्राप्ति वाधि तथा ५, ३ प्रविष्ट पुस्तकान के किर्न उपाधिक संख्या २१ से २५ वर्ष की वायु वाधि की है । काली की उता में उता के कुछ पता परा में १६, ७ प्रविष्ट उन्मवाधि , ११, ६ प्रविष्ट पिछड़ी वाधि, १, ३ प्रविष्ट अनुप्राप्ति वाधि तथा १, ३ प्रविष्ट पुस्तकान के किर्न उपाधिक संख्या २६ से ३५ वर्ष की वायु वाधि की है ।

भारतीय लोक की उता के पतापरा में प्राचन , किस्म तथा अनुप्राप्ति वाधियों का एक ही नामांक नहीं मिला । बापाकुल के पूर्व के बापाकुल पूरा नामांकों के कुछ १६, ७ प्रविष्ट में १४, २ प्रविष्ट "काली" ३, ६ प्रविष्ट कट्टि तथा २, ६ प्रविष्ट भारतीय लोक के पतापर रहे । बापाकुल के अन्य बापाकुल पूरा नामांकों के कुछ २७, ६ प्रविष्ट में २४, ७ प्रविष्ट कट्टि, २१, १ प्रविष्ट काली २, ६ प्रविष्ट भारतीय लोक तथा उन्म उन्म परा के पतापर रहे हैं । बापाकुल के पतापर बापाकुल पूरा नामांकों के कुछ २२, ४ प्रविष्ट में ११, ६ प्रविष्ट काला पाटी ७, ६ प्रविष्ट कट्टि तथा उन्म अनिरुद्ध परा के रहे हैं । वही स्पष्ट सीता है कि कट्टि से प्रभावित नामांकों का प्रविष्ट १४, ३ या परानु कट्टि उता में रहे वही पता में वह प्रविष्ट नाम ३५, ६ एक गया और काली की उता में उता के पता में कुछ गया किस्म काली से प्रभावित पतापरा का प्रविष्ट २६, ३ से बढ़कर काली उता में वायु वही पता में ३४, २ प्रविष्ट सीता गया । वही यह भी स्पष्ट सीता है कि वी नामांक एक एक से प्रभावित है वी उता की उता के पतापर नहीं वी वी वही है ।

(ग) राजनीतिक परा के उन्म के नामांकों की प्रविष्टों पर प्रभाव

का उपाधिक उन्म उन्म के पाठ सीता वाधि १ के ऊपर

में नागरिकों में ६५, १ प्रतिशत 'हाँ' तथा ३, ६ प्रतिशत 'नहीं', तथा १ 'हाँ' करनेवाले नागरिक सभी नागरिकों, वायुमार्ग, जिला जमा, व्यवसायी, सभी एवं वायुमार्गों के ३ तथा 'नहीं' करनेवाले १, ३ प्रतिशत निम्नलिखित नागरिकों के साथ, १, ३ प्रतिशत मुनिदीन, मुनिदीन (जो जटिल का उत्तर है) तथा १, ३ प्रतिशत एक बीपे की सीमा स्तर का कयोबुद वसुधुषि नागरिक का जटिल का उत्तर है । सभी स्पष्ट है कि जटिल के २५ प्रतिशत उत्तर में है २, ६ प्रतिशत ही व्यक्तिगत सम्पत्ति के विरोधी हैं और केवल २२, ४ प्रतिशत पदावर हैं । भारतीय जनसंघ एवं भारतीय लोकमत से प्रभावित नागरिक व्यक्तिगत सम्पत्ति के पूर्ण विरोध पदा में है ।

जबकि मकान, भूमि और व्यवसाय का सरकार के कार्यों में बाध देना देना चीना १ के उत्तर में नागरिकों में ६, २ प्रतिशत बहुत अच्छा, ५, ३ प्रतिशत 'अच्छा', ६, २ प्रतिशत 'अच्छा', ७३, १ प्रतिशत 'बुरा' तथा ६३, २ प्रतिशत 'बहुत बुरा' तथा । इस प्रकार २९, ७ प्रतिशत नागरिक इसकी अच्छी दृष्टिकोण से और ७६, ३ प्रतिशत नागरिक इसकी बुरा दृष्टिकोण से देखते हुए प्रतीत हो रहे हैं । सरकार के कार्यों में उन कुछ बाधों की अच्छी दृष्टिकोण से देखनेवाले कुछ नागरिकों में ६, २ प्रतिशत उत्तर नागरिक ५, ३ प्रतिशत निम्नलिखित नागरिक ७, ६ प्रतिशत वसुधुषि नागरिक तथा १, ३ प्रतिशत 'मुक्तमान' है, १०, ५ प्रतिशत की आयु १६ है २५ वर्ष, ३ प्रतिशत की आयु २६ है ३५ वर्ष और ६, २ प्रतिशत की आयु ३६ है ७० वर्ष के मध्य है, ७, ६ प्रतिशत 'विवाही' १०, ५ प्रतिशत 'कुमक' ३, ६ प्रतिशत 'मकूर' तथा ६, ३ प्रतिशत व्यापारी है, ३, ६ प्रतिशत 'मुनिदीन' तथा १, ३ प्रतिशत 'एक बीपे मुनिदीन' परिवारों के उत्तर है ।

१०, ६ प्रतिशत कुमक की अच्छी दृष्टिकोण से देख रहे हैं उन्हें १, ३ प्रतिशत उन बड़े व्यापारी का भी है किन्तु वायुमार्ग जटिल में जबकि मुख्य व्यवसाय भूमि बताया क्योंकि यह उनके लिए ही व्यवसाय होना चाहिए, केवल ६, २ प्रतिशत कुमक उन परिवारों के उत्तर है किन्तु परिवार में प्रति उत्तर भूमि १०, ५ प्रतिशत

विश्वास ही है । ज्योतिष विवेचन के स्पष्ट है कि इन जायदादों की छी छी व
कमी सम्पत्ति सरकार को लपटा गया नहीं जानते हैं । २७ ७ प्रतिशत की माग
है वही मुचलान के वही है जहाँ १४, ६ प्रतिशत काटि २, ६ प्रतिशत बचने
२, ६ प्रतिशत 'कमपाटी' १, २ प्रतिशत भारतीय लोकता है प्रभावित करा
२, ६ प्रतिशत 'कमुचलान' है जहाँ यह के अनुसार कुछ प्रभावित जगहों का ११० काटि
११० काटि, ११५ कमा पाटी के है । स्पष्ट है कि काटि, काटि, कमा
पाटी है प्रभावित जगहों का बहुत कम कुछ सरकार के बाकी में लपटे के पता में
नहीं है । क्या जायदादी प्रगति मात्र २७, ७ प्रतिशत मागियों में ही किमान है ?

कमा बिना कर देने के लिए क्या लुट्टी और लुट्टी की
स्वतन्त्र कर देना चाहिए ? के उत्तर में मागियों में ७६, ६ प्रतिशत नहीं क्या २७, ७
प्रतिशत का कमा । बिना के लिए स्वतन्त्र के जगहों में है १२, २ प्रतिशत सम्पत्ति
२, ६ प्रतिशत पिछड़ी बाकि २, ६ प्रतिशत कमुचलान बाकि क्या २, ६ प्रतिशत मुचलान
है किन्तु १२, ४ प्रतिशत की लागु होकर है बचने बचने, ६, ५ प्रतिशत की लागु
होकर है पीछाछि बचने क्या २, ६ प्रतिशत की लागु बिनाछि है उत्तर बचने कमा
तक की है । बिना में स्वतन्त्रता की जगह रत्नवादि ६, २ प्रतिशत बिनाची ५, २
प्रतिशत 'पुष्पक', ५, २ प्रतिशत 'क्यापारी' २, ६ प्रतिशत 'मकुदूर' क्या १, २ प्रतिशत
जगहों है किन्तु बाई रत्न है स्नातकीपर बिना बाकि का प्रतिशत १५, ६ प्रतिशत
प्राथमिक है बाई रत्न का बाकि का प्रतिशत २, ६ प्रतिशत क्या देख २, ६ प्रतिशत
निरादर एवं उत्तर है ।

जायदाद कुछ २७, १ प्रतिशत बिनाछि में है ६, २ प्रतिशत
स्वतन्त्रता बाकि है देख ७, ६ प्रतिशत स्वतन्त्रता नहीं बाकि । स्नातक है नीचे क्या
स्नातकीपर जगहों बिनाछि जायदाद कुछ २७, २ प्रतिशत मागियों में है १५, ६ प्रतिशत
बिना में स्वतन्त्रता के जगहों है क्या १४, ४ प्रतिशत विरोधी है । इन जगहों है
स्पष्ट है कि बिना बचने में बिना के प्रति लोकतांत्रिक माका बढ़ रही है और
हुओं में जायदादी प्रगति कुछ बढ़ रही है किन्तु मुचलान बाकि का मागियों
मुचलान जायदादी ही निज । क्या बिना में स्वतन्त्रता का विरोधी रहा ।

जाय जमीन बाधित स्थिति का मूल्यांकन करते हुए जमीन की केंद्रा
उत्पत्ति है ? के उत्तर में नागरिकों ने ६, २ प्रतिशत बहुत बन्धा, १३, १ प्रतिशत
साधारण है बीचें तथा ७७, ७ प्रतिशत साधारण कहा । बहुत बन्धा अनुपम
करनेवाले नागरिकों में है २, ६ प्रतिशत उच्च जाति २, ६ प्रतिशत पिछड़ी जाति
२, ६ प्रतिशत अनुपम जाति तथा १, ३ प्रतिशत मुसलमान है जो जमीन बाध
का प्रतिनिधित्व करते हैं । जमीन की बहुत बन्धा अनुपम करनेवाले अनुपम जाति
के जाय एवं मजदूर ; पिछड़ी जाति के कुम्हार ; उच्च जाति के कुम्हार एवं व्यापारी
तथा मुसलमान जाति के भी कुम्हार, काँटे के हैं ।

उसी स्पष्ट है कि अनुपम जाति के साधारण रूप १३, १ प्रतिशत
नागरिकों में है २, ६ प्रतिशत जमीन की बहुत बन्धा उत्पत्ति है । साधारण
है बीचें अनुपम करनेवाले नागरिकों में है ३, ६ प्रतिशत उच्च जाति २, ६ प्रतिशत
पिछड़ी जाति १, ३ प्रतिशत मुसलमान तथा १, ३ प्रतिशत अनुपम जाति के
हैं किन्हीं के जायें लीगों की बाध २१ है २५ वर्ष का है और देश में जमीन बन्धा बाध
का प्रतिनिधित्व मात्र है । जमीन की साधारण है बीचें अनुपम करनेवाले उच्च
जाति के जाय कुम्हार एवं व्यापारी, पिछड़ी जाति के कुम्हार एवं मजदूर फर्कने का
कार्य करनेवाला, मुसलमान जाति का फल करनेवाला तथा अनुपम जाति के
वर्षाव मजदूर तथा बन्धा जाय है । उसी स्पष्ट है कि सामान्य बीचें स्तर है
बीचें का बीचें व्यतीत करनेवाले जमीन जातियों एवं व्यवसायों के लीग हैं किन्तु उच्चतर
माध्यमिक विद्यालयों के बन्धाक ही नहीं मिले बरन्तु अनुपम जाति के नागरिकों
में इनका प्रतिशत अधिक है ।

साथ में यह है जमीन बीचें व्यतीत करने के लिए जाय जमीन का
कार्य करने १ के उत्तर में नागरिकों ने ५१, ४ प्रतिशत 'कुम्हार' १३, १ प्रतिशत
व्यापार, ६, २ प्रतिशत व्यवसाय ६, २ प्रतिशत राजनीति ५, ३ प्रतिशत
डाक्टर, १, ३ प्रतिशत 'कारखाने में मजदूर', १, ३ प्रतिशत कारखाने की
बाधित, १, ३ प्रतिशत कलाकार १, ३ प्रतिशत बिना कारखाने, १, ३ प्रतिशत
जाति के जायें है १, ३ प्रतिशत कलाकार के कार्यों की बताया ।

पुष्पक के जीवन की हम है मुझे समझनेवाले नागरिकों में है वर्तमान काल में हमने अपने कार्य में हमें हुए २२, ३ प्रविष्ट, पुष्पक ६, ३ प्रविष्ट कलाकारी, ७, ६ प्रविष्ट विचारों, ५, ३ प्रविष्ट अन्य (जहाँ में हमें हुए) ३, ६ प्रविष्ट मजदूर तथा २, ६ प्रविष्ट व्यवसाय हैं । कारणों यह है कि पुष्पकों में है ७, ६ प्रविष्ट व्यापार, ६, ५ प्रविष्ट राखीति, २, ६ प्रविष्ट, व्यवसाय, १, ३ प्रविष्ट जिम्मा कलाकारी, १, ३ प्रविष्ट डाक्टरों, १, ३ प्रविष्ट कारखाने में मजदूरों तथा १, ३ प्रविष्ट साहित्य के पत्रकार रहे हैं । १७, ५ प्रविष्ट व्यापार में हमें हुए नागरिकों में है ३, ६ प्रविष्ट व्यापार में, ६, ३ प्रविष्ट कृषि में तथा १, ३ प्रविष्ट कलाकारी में मुझे जीवन देखी है और डाक्टरों, राखीति एवं व्यवसाय की शिक्षा के भी पत्रकार नहीं किया ।

व्यवसाय कार्य करनेवाले ५, ३ प्रविष्ट नागरिकों में है २, ६ प्रविष्ट व्यवसाय तथा है पुष्पक का जीवन पत्रकार रहे हैं । व्यवसाय कार्य की पत्रकार करनेवालों में देखीं एवं मुकामानों का प्रतिनिधित्व नहीं है बल्कि स्पष्ट होता है कि वह कार्य में हमने कृषि बहुत कम है । राखीति में हमें व्यक्तियों की मुझे अनुभव करने बाहों में ३ प्रविष्ट उष्णता के १३ वर्ष है ऊपर की वायु के २, ६ प्रविष्ट पिछड़ी जाति के १२ है ३६ वर्ष की वायु के तथा २, ६ प्रविष्ट अनुसूचित जाति के १३ वर्ष है ५३ वर्ष की वायु के नागरिक हैं किन्तु मुकामान कोई नहीं है । अनुसूचित जाति की एक महिला की राखीति में हुए का अनुभव करती है । डाक्टरों के जीवन की हम है मुझे समझनेवालों में पिछड़ी जाति एवं मुकामान एक काम है अन्य जातियों का प्रतिनिधित्व ही नहीं है ।

कारखाने में मजदूरों एवं कलाकार अनुसूचित जाति, साहित्य की वायु निरी पिछड़ी जाति, कलाकारी देख जाति, जिम्मा कलाकार साहित्य जाति तथा साहित्य के प्राध्यापक जाति के नागरिकों ने पत्रकार किया है । १७, १ प्रविष्ट विचारों में है ७, ६ प्रविष्ट कृषि १, ३ प्रविष्ट " राखीति" २, ६ प्रविष्ट व्यवसाय, २, ६ प्रविष्ट व्यापार १, ३ प्रविष्ट कलाकारी तथा

१, २ प्रविष्टा 'सावरी' पण्य कर रहे हैं। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि राजनीतिक व्यक्तियों की भूमि कुल्लुन करीबाई पाथ १, २ प्रविष्टा नागरिक हैं। क्या राजनीति कष्ट राज्य एवं व्यवसायिक है ?

जिसे नेता की धीरे धीरे की राह बापकी व्यक्ति प्रिय छी ? का उतर २१, ६ प्रविष्टा नागरिकों ने जिसे धीरे २२, ३ प्रविष्टा नागरिक कुल्लुन रहे। उन्ही स्पष्ट है कि व्यक्तित्व कसा नेताओं के विचारों की कमी की सम्बन्ध रखती है। २२, २ प्रविष्टा नागरिकों की कठिण है नेताओं की धीरे प्रिय छी किन्हीं २३, १ प्रविष्टा नागरिकों की स्वीयि पीछे कसाधर छल पैरु की 'पैर की स्थापना', कसीधारी उन्मुल, छल की बराबर कसा, कसा की मुक-बाकी, बरीयों का कसा रा कुल्लुन की उन्मुल एवं पैर की कसा, है कसीय धारें हैं, २३, १ प्रविष्टा नागरिकों की कमी की धीरे बापकी की, बरीयों धूर कसे कान्दोलन क कसे, कसीय का धीरेय, क्या बरिस्वले कसा पैर के विचार है कसीय धारें हैं क्या पैर २४ प्रविष्टा नागरिकों की की कसीय काम का बरि-कसीयान कसा की कमीय कन्दन कुल्लुना, कमीय कल कुल्लुना, की बरीराम गीछे, कमीय किन्व कमी पीछे, की बरिस्वले प्रयाय छिं, की बराबीर प्रयाय कुल्लु, स्वीयि राखिराम बाकीय एवं की राखिर प्रयाय विषाडी का कमी नेताओं की की धारों का प्रचार प्रिय है।

२५ प्रविष्टा नागरिकों की कमीय के नेताओं की धारें प्रिय छी किन्हीं २६, २ प्रविष्टा नागरिकों की की कल्लु विचारी बाकीय (बरीय पद राखु नीकी) की 'बरीय भिटाने के छी, राखु छिं, मुक व्यापार, उन्मों के बरिस्वलेय, 'भूरी' बरी' कसीय' कल्लु बास, बाक मुक एवं बाकीय नीति, है कसीय धारें हैं धीरे पैर ६, ७ प्रविष्टा नागरिकों की स्वीयि दीनकल्लु उन्मुल्य का कान्दोलन विचार, का० मुल्लु बरीय कीछी का विन्वी बाबा छिं कसा की कल्लुय विषाडी, की बरिस्वले प्रयाय विन्व एवं राखिर छिं विन्व का कसीय कल्लुय पद मुकल्लु, की धारें प्रिय छी।

२७, ३ प्रविष्टा नागरिकों की भारतीय कल्लु के नेताओं की धारें प्रिय छी किन्हीं २८, ६ प्रविष्टा नागरिकों की की बरीय प्रयाय विन्व

(वर्तमान केंद्रीय राज्य मंत्री कैबिनेट) की" सेपती सेपत माघी की वासीपता सरकार की वासीपता एवं वायाव काठ में पुन वायावपारी का विवरण है कीपिच २, ६ प्रविचन नागरिकों की की सीपरी पता रिच (वर्तमान सरकार मंत्री) की" सेपरी काठ एवं पुन विचार है कीपिच काठ में कीर केच २, ६ प्रविचन नागरिकों की सीपिच काठ राम मनीचर कीपिच की" मन्चूर की ३ की कीर माछि की ४ का एवं की राय माराका रिच (वर्तमान सरकार एवं सीपिचर कल्याण मंत्री, भारत सरकार) की पुन वायावपार है विरीच है कीपिच काठ प्रिय की ।

काठ के नेताओं की काठों की प्रिय कनेवाठ नागरिक ४१, = प्रविचन कने ४५ प्रविचन, पिचकी ५० प्रविचन कुपुचिच का ५० प्रविचन मुकमान काठों में है की की वायु काठ (पिचिचकर २६-२५ वर्ष एवं २६-३० वर्ष) केपिच सरा (पिचिचकर काठ एवं प्रापिच) एवं कनेवाच काठ (कनेवाच एवं कीकी कीचकर) का प्रतिनिचिचर करती है । कने स्पष्ट है कि काठ की नेताओं की वायु कुपुचिच एवं मुकमान काठ के प्रापिच केपिच कीचरा काठ नागरिकों की कीच प्रिय कनेवाठ है ।

काठ के नेताओं की काठों की प्रिय कनेवाठ नागरिक २०, = प्रविचन कने, ४० प्रविचन पिचकी, १० प्रविचन कुपुचिच का २० प्रविचन मुकमान काठों में है की की वायु काठ (कनेवाच की कीचकर एवं पिचिचकर २६-२५ वर्ष) केपिच सरा (पिचिचकर काठ एवं काठ एवं काठ का काठकाचर) एवं कनेवाच काठ (मन्चुरी कीचकर) का प्रतिनिचिचर करती है । कने स्पष्ट है कि कुपुचिच काठ एवं मन्चुरी कनेवाठ नागरिकों की काठ के नेताओं की वायु वायु का प्रिय कनेवाठ है ।

भारतीय कीचकर के नेताओं की काठों की प्रिय कनेवाठ नागरिक ६६, ४ प्रविचन कने, २० प्रविचन पिचकी का २० प्रविचन मुकमान काठों में है की की वायु काठ (२६-३० वर्ष कीचकर पिचिचकर ३६ है ३५ वर्ष)

क्या २१, ७ प्रचिन्न बायीं मुख्य बुद्धि की रीखा बायीं है का: कुछ १३, = प्रचिन्न बायीं मुख्य बुद्धि है व्यापक प्रतीय बायीं है । स्थिति के पदा में बायायु कुछ १३, १ प्रचिन्न बायायु बायीं में है १३, २ प्रचिन्न है बायीं १, ३ प्रचिन्न पदार्थ के पदा में है ।

स्वतंत्रता के पदार्थ बायीं मुख्य भेदाय में क्या परिवर्तन हुआ है ? (वक्रा : पदा : कान :) के ऊपर में नागरिकों में १०, १ प्रचिन्न ' पदा ' २१, १ प्रचिन्न ' वक्रा ' क्या ७, १ प्रचिन्न ' कान ' क्या । बायीं मुख्य भेदाय के पदार्थ का मुख्य प्रचिन्न बायीं, बायायु, जिनायत एवं व्यापक के नागरिकों में क्या । बायीं मुख्य भेदाय में बुद्धि का मुख्य १०, ४ प्रचिन्न ' उच्च बायीं ' ७, १ प्रचिन्न ' पिच्छी बायीं ' क्या १, २ प्रचिन्न ' मुख्यान ' बायीं के नागरिक कति हैं किन्हीं है १३ = प्रचिन्न का कम स्वतंत्रता के पदार्थ क्या ११, = प्रचिन्न का कम स्वतंत्रता के पूर्व हुआ है । स्थिति एवं राजनीतिक व्यवस्था का स्पष्ट प्रभाव यह है कि व्यवस्था बायीं का एक ही नागरिक किन्ना कम स्वतंत्रता के पूर्व या पदार्थ हुआ है बायीं मुख्य भेदाय में बुद्धि का मुख्य नहीं करता ।

व्युत्पन्न बायीं के बायायु कुछ १३, १ प्रचिन्न नागरिकों में है ११, = प्रचिन्न ' पदार्थ ' क्या १, २ प्रचिन्न ' कान ' बायीं का मुख्य कति हैं । बायीं मुख्य भेदाय में कानता का मुख्य करनेवालों में प्रचिन्न बायीं एवं व्यापक के नागरिक हैं किन्हीं बायीं निरन्तर एवं बायायु स्वतंत्रता के पूर्व कम उन्माद क्या बायीं बायीं स्तुति के ऊपर स्वातंत्र्य है बायीं की शिष्टाय बायीं एवं स्वतंत्रता के पदार्थ कम उन्माद है) कति स्पष्ट है कि बायीं मुख्य भेदाय पदार्थ का एक है बायीं मुख्य व्युत्पन्न बायीं, फिर पिच्छी बायीं के नागरिकों की हुआ है । क्या पदार्थ के राजनीतिक पदार्थ एवं बायायु द्वारा किन्हीं बायीं उन्मादिक प्रभावों की क्या उचित न बायीं ?

क्या बायीं मुख्य भेदाय में हुआ, बायायु, यह बायीं दान करना बायीं है ? के ऊपर में नागरिकों में १०, २ प्रचिन्न ' नहीं ' क्या ११, = प्रचिन्न ' बायीं ' क्या ।

उन पार्षिक प्रियाओं की जहाँ समझनेवालों में ७, ६ प्रविष्ट, अनुसूचित जाति २, ६ प्रविष्ट, उच्चजाति तथा १, ३ प्रविष्ट निम्नी जाति के नागरिक हैं । एक ही प्राकृत्य की मुकामान जाति के नागरिक ने उन प्रियाओं की जहाँ नहीं जाई । जहाँ समझनेवालों में बीच बर्ग एक जाति की समीप है बीच बर्ग एक ही जाति का एक ही नागरिक नहीं है और एक ही जाति का के साथ एक ही जाति समीप है समीप बर्ग की जाति जाति का प्रविष्ट ६, ३ प्रविष्ट है ।

पार्षिक प्रियाओं की जहाँ समझनेवालों में विशेष रूप है अनुसूचित जाति के नागरिक हैं जो कि बच्चन, मजदुरी एवं शुचि जाति में ही की किया स्वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । इसी रूप है कि अनुसूचित जाति के नागरिकों में पार्षिक जाति का है जो है कि राक्षसीति का प्रभाव समझ का समझ है । का राक्षसीति, जहाँ की प्रभावित करने में ही समझ नहीं ही की है ?

यदि राक्षसीति के ही पार्षिक महापुरुष दोनों एक ही समय जापके बरबाद पर जाई ही पड़े जाप किन्ही निम्नी ? के उतर में नागरिकों ने ८२, ६ प्रविष्ट पार्षिक महापुरुष १६, ८ प्रविष्ट राक्षसीति के का १, ३ प्रविष्ट दोनों है, पड़े पिछा स्वीकार किया । राक्षसीति के का पड़े स्वागत करनेवाले कुछ नागरिकों में ६, ७ प्रविष्ट " अनुसूचित जाति", ३, ६ प्रविष्ट प्राकृत्य जाति ३, ६ प्रविष्ट निम्नी जाति तथा १, ३ प्रविष्ट मुकामान जाति के हैं किन्ही ६, ७ प्रविष्ट कुण्ड ३, ६ प्रविष्ट मजदूर ३, ६ प्रविष्ट निम्नी तथा १, ३ प्रविष्ट नाका निम्नी हैं जो ही जाति का तथा किया स्वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं ।^{३३}

ऊपर लिखित दोनों प्रश्नों के उत्तरों में जहाँ की निम्नी माननेवाले नागरिक ७६, ३ प्रविष्ट है का राक्षसीति की निम्नी माननेवाले जाति ३, ६ प्रविष्ट हैं जो कि अनुसूचित जाति के ही हैं । एक १६, ७ प्रविष्ट नागरिक निम्नी जाति के हैं किन्ही ७, ६ प्रविष्ट राक्षसीति के पर्म की और का ११, ८ प्रविष्ट जहाँ है राक्षसीति की और मुकामान है । राक्षसीति है जहाँ की और जाति की जाति में जाति अनुसूचित जाति का जाति में उच्च एवं निम्नी जाति के नागरिक हैं ।

जहाँ वे राजनीति की और प्रभावित होना चाहें व ३, ६ प्रविष्टता काटना, ३, ६ प्रविष्टता
 निष्कृति काटने २, ६ प्रविष्टता अनुसूचित जाति तथा १, ३ प्रविष्टता मुख्यतः जाति
 है। इन सबकी वे स्पष्ट है कि जातिवाद की धार्मिक भावना का बोझ है जिसका
 प्रमुख कारण राजनीतिक नहीं बल्कि धार्मिक है।

विष्णु स्तोत्र की कर्ण व्यसथा की क्या स्तोत्र कर दिया बाप ?
 के स्तोत्र में नागाली ने यह प्रमाण नहीं लगा सके प्रमाण - जै - का । कर्ण
 व्यसथा की कर्ण स्तोत्र के पदा में ही बाजियाँ, बाहु कर्ण, विनाशकारी का
 व्यसथा की नागाली हैं । कर्ण व्यसथा की स्तोत्र करने के पदा में ६, ३ प्रमाण
 अनुष्ठित बाधि ६, ६ प्रमाण - पिन्दी बाधि ६, २ प्रमाण उच्च बाधि का
 ३, ६ प्रमाण मुक्तान बाधि के नागाली हैं किन्तु ६, ३ प्रमाण, विनाशी ,
 ६, २ प्रमाण मङ्गूर , ६, २ प्रमाण वृणक २, ६ प्रमाण व्यापारी
 ६, ३ प्रमाण उच्चान का ६, ३ प्रमाण - उच्च कार्य करनेवाले हैं । उन स्तोत्रों
 में स्पष्ट है कि अनुष्ठित बाधि, पिन्दी बाधि, उच्च बाधि एवं मुक्तान काः कर्ण
 व्यसथा में स्तोत्र करने के पदा में ही और उल्लेखनीय है कि कर्ण स्तोत्र एवं बाजियाँ
 नागाली का प्रमाण २, ६ ही है । राक्षसीक कर्ण के १६, ४ प्रमाण उच्च
 कर्ण व्यसथा की स्तोत्र करने के पदा में है ।

जुमाव के समय मजदूरों की भाँती पर अधिक ध्यान दिया जाता है और बाद में नेताओं की भाँती पर क्या यह सच है ? के उत्तर में यह प्रतिक्रिया नागरिकों ने दी है। इसी स्पष्ट सीमा है कि इस राज्य के प्रति किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं है कि जुमाव काठ में मजदूरों के प्रति राजनीतिक नेता विशेष विनम्रता रखते हैं। मजदूरों के प्रति किसी कामकाज या जुमाव में वेन वेन प्रकारका विचार प्राप्त करने के निमित्त होती है ? जुमाव के परभाव मजदूरों की नेताओं के साथ बार-बार मौजूदा सच्चाई है इस बात की पुष्टि भी हो रही है। जुमाव काठ के परभाव मजदूरों के साथ राजनीतिक नेताओं के व्यक्तियों है मजदूरों के मन में इनके प्रति सभी जगहों पर भाव फैले हैं। इसी बात की स्पष्ट है कि जुमाव के परभाव राजनीतिक पक्ष नेता के साथ बाहर बहुत जगह फैले हैं जो कि राजनीतिक क्रांतिवाद की प्रक्रिया में फटार पड़े हो रहा है।

विशिष्ट उपायों वाले १९ = प्रविष्ट नागरिकों में विन्ध्यवि कल
कल राखीतिक कलों के नेताओं की बातों पर अपना विश्वास कल कल प्रकट
किया है । उन नागरिकों में ७, ६ प्रविष्ट उच्च नागरिक २, ६ प्रविष्ट पिछड़ी
नागरिक तथा १, ३ प्रविष्ट अनुसूचित नागरिक के हैं और उनी धातु कलों का प्रवि-
धिकार करते हैं किन्हीं विस्तार एवं स्नातकीय उपायों के बिना स्तर का कोई
नहीं है । उन १९, = प्रविष्ट नागरिकों में है कटिब के नेताओं की बातों पर
३, ६ प्रविष्ट में मुख्य प्रविष्ट २, ६ प्रविष्ट में पक्ष प्रविष्ट १, ३ प्रविष्ट में
पक्षीय प्रविष्ट १, ३ प्रविष्ट में पक्षीय प्रविष्ट, १, ३ प्रविष्ट में ' पक्षीय
प्रविष्ट ' तथा १, ३ प्रविष्ट में उच्च प्रविष्ट विश्वास प्रकट किया है । उनी
स्पष्ट है कि कटिब के नेताओं की बातों पर १९, = प्रविष्ट नागरिकों में है ७ =
प्रविष्ट नागरिकों में वाया है उन, ' बहुत उन' तथा ' विस्तृत नहीं' विश्वास
प्रकट किया ।

उनी १९, = प्रविष्ट नागरिकों में है भारतीय जनता के
नेताओं की बातों पर १, ३ प्रविष्ट में पक्षीय प्रविष्ट ६, ६ प्रविष्ट में
' पक्षीय प्रविष्ट' विश्वास प्रकट किया । उनी स्पष्ट है कि १०, ६ प्रविष्ट नागरिकों
में वाया वाये है अधिक एवं पूर्ण विश्वास भारतीय जनता के नेताओं की बातों
पर किया है कि वह के प्रति अनुमान का आधार स्वयं पित ही करता है ।
उनी विशिष्ट उपायों वाले नागरिकों में है ७, = प्रविष्ट में भारतीय लोकता के
नेताओं की बातों पर कल कल विश्वास की, २, ६ प्रविष्ट में मुख्य प्रविष्ट
१, ३ प्रविष्ट में पक्ष प्रविष्ट १, ३ प्रविष्ट में पक्षीय प्रविष्ट १, ३ प्रविष्ट
में पक्षीय प्रविष्ट १, ३ प्रविष्ट में पक्षीय प्रविष्ट ' है प्रकट किया ।

उनी स्पष्ट है कि ६, २ प्रविष्ट नागरिकों में ' विस्तृत नहीं',
बहुत उन' एवं ' उन' विश्वास भारतीय लोकता के नेताओं की बातों पर किया ।
उन विशिष्ट १९, = प्रविष्ट नागरिकों के कल विवेक है स्पष्ट होता है कि उनी
६, ३ प्रविष्ट ' विस्तृत नहीं', बहुत उन एवं ' उन' के कल में का उच्च ६, ६ प्रविष्ट
' वाया' वाये है अधिक एवं पूर्ण की कल में वाये है ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ६१.६ प्रतिशत नामनिर्वाचन राजनीतिक नेताओं की बाजी पर बहुत कम विश्वास करते हैं और वही वही नामनिर्वाचन का विचार का स्तर बहुत कम है कम विश्वास पड़ता कम है । नेताओं की बाजी पर काता का विश्वास पड़ना राजनीतिक उपाधीकरण के लिए राजनीतिक कर्ज के काल का पुनर्जी है । क्या यह नेताओं के वास्तविकता, वास्तविकताओं एवं वास्तविक विचारों का दुष्प्रमाण है ?

यों राजनीति में बहुत सक्रिय रहता है कमजोर उद्देश्य है ? के प्रत्येक उपरोक्त नामनिर्वाचन में ३० प्रतिशत 'नामांकी' ३१.६ प्रतिशत प्रतिष्ठा के साथ 'वार्षिक सुधार' ३१.६ प्रतिशत सामाजिक प्रतिष्ठा, १०.१ प्रतिशत 'देव देवा' तथा ७.८ प्रतिशत 'स्वार्थ छिंद' का उद्देश्य बताया । (पारशीयों का उपाधीकरण करें)

सारणी -१

वाचि	नामांकी (क)	प्रतिष्ठा के साथ वार्षिक सुधार (ख)	सामाजिक प्रतिष्ठा (ग)	देव देवा (घ)	स्वार्थ छिंद (ङ)
उप्य	१६.६५	१७.६५	३.६५	६.६५	६.६५
विश्वी	१०.६५	६.२५	३.६५	२.६५	-
व्युत्पन्न	६.६५	३.६५	२.६५	-	-
मुक्तनाम	३.६५	३.६५	२.६५	६.६५	६.६५
योग	३०.५	३९.६५	११	१०.५५	७.५५

२००

सारिणी - २

वायु विस्तार	क	ख	ग	घ	ङ
१६-२० वर्ष	१. ८५	१. ८५	२. ६५	३. ६५	१. ३५
२१-२५ वर्ष	१०. ६५	-	३. ६५	३. ६५	१. ३५
२६-३५ वर्ष	७. ६५	६. ६५	३. ६५	१. ८५	३. ६५
३६-४५ वर्ष	६. ६५	६. २५	२. ६५	-	-
४६-५५ वर्ष	६. ६५	७. ६५	-	१. ३५	१. ३५
५६-६० वर्ष	३. ६५	६. ६५	-	-	-
योग	३६. ६५	३१. ६५	१३. ५	१०. ४५	७. ८५

सारिणी - ३

वैयक्तिक स्तर	क	ख	ग	घ	ङ
निरस्तार	७. ६५	-	२. ६५	-	-
साधार	२. ६५	६. २५	२. ६५	-	१. ३५
प्राथमिक	१२. १५	७. ६५	१. ३५	२. ६५	-
साविकुल	७. ६५	६. २५	१. ३५	-	१. ३५
स्वायत्त व वीथ	२. ६५	२. ६५	२. ६५	३. ६५	२. ६५
स्वायत्त एवं स्वायत्तीयर	२. ६५	२. ६५	२. ६५	३. ६५	२. ६५
योग	३७. ५	३१. ६५	१३. ५	१०. ४५	७. ८५

रुपय

सारिणी - ४

मुख्य व्यय	क	ख	ग	घ	ज
व्ययन	२. ६	१. ६	२. ६	७. ६	२. ६
व्यापन	-	२. ६	१. ६	-	१. ६
कुनि	६. ६	१०. ६	१. ६	१. ६	२. ६
मकदूरी	५. ६	२. ६	१. ६	-	-
नौकरी	२. ६	-	-	-	-
व्यापार	३. ६	५. ६	२. ६	१. ६	१. ६
वन्द्य	३. ६	२. ६	-	-	-

सारिणी - ५

वस्तु व प्रमाणिक	कापाची	प्रमाणिक कापाची	कापाची प्रमाणिक	कापाची	कापाची	कापाची
	(क)	(ख)	(ग)	(घ)	(च)	(ज)
कापाची	१४. ६	१५. ६	६. ६	२. ६	१. ६	५४. ६
कापाची	१९. ६	६. ६	-	२. ६	२. ६	२६. ६
कापाची पार्टी	२. ६	१. ६	२. ६	२. ६	२. ६	६. ६
कापाची कापाची	१. ६	१. ६	-	-	-	२. ६
वन्द्य	६. ६	२. ६	-	१. ६	१. ६	१०. ६

पुनः पुनः पुनः के बाध क्या किसी को यह समझना चाहिए ?
 के उतर में ६८, ७ प्रश्नोत्तर नागरिकों में नहीं क्या १, २ प्रश्नोत्तर में नहीं क्या ।
 इस उतरों से स्पष्ट है कि राजनीतिक कर्तों में जो यह परिवर्तन की व्याप्ति है उसकी
 ६८, ७ प्रश्नोत्तर नागरिक व्यक्तिगत समझते हैं । यह परिवर्तन के पक्ष में अग्रिम के
 अग्रिम प्रत्यक्ष हैं जो कि 'कैलाश' नदी की पश्चिम में भीषण स्थिति करते हैं ।
 ' जो पुनः पुनः ' यह कभी क्या उल्लास कर सकता है कि क्या बाध ? के
 उतर में ६९, ४ प्रश्नोत्तर नागरिकों में नहीं क्या २, ६ प्रश्नोत्तर में नहीं क्या ।
 इससे स्पष्ट है कि ६९, ४ प्रश्नोत्तर कमानस इस पक्ष में है कि निवारित प्रतिनिधि
 यदि यह परिवर्तन करे तो उसे पुनः कमान के कमान बाध कर सकता प्राप्त करता
 चाहिए । दोनों प्रश्नों के उतरों से स्पष्ट है कि कमान निवारित प्रतिनिधियों को
 अपने हाथ की कभी प्रवृत्ति समझती है और उन्हें ऐसा समझ देना चाहती है कि
 किसी निवारित का अधिकार पुनः कमान के ही हाथों में आवे । के उतर कमान की
 'कैलाश' की व्यक्ति के परिवर्तन है जो कि राजनीतिक कर्तों द्वारा राजनीतिक
 कमानकरण का पुनर्निर्माण है ।

क्या वल वल बीका या बीका बीका में जाये नाम दिया है ?
 के उतर में नागरिकों में ६६, ४ प्रश्नोत्तर ' नहीं ' क्या २९, ६ प्रश्नोत्तर ' हाँ '
 क्या । इससे स्पष्ट है कि कमान की इन बीकाओं में ६६, ४ प्रश्नोत्तर नागरिक
 समझते हैं । इन बीकाओं से कमाना कि जाने के बीच कारण अन्य है कि निवारित,
 प्रचार का कमान, कमाना पूर्ण अधिकार, कमाना, कमान के मन्त्रालय अधिकार
 बाध । यदि राजनीतिक कमानकरण की प्रक्रिया व्यापक स्तर पर हो तो
 कमान के ही बाधित कमान में प्रवृत्ति बाधित नाम प्रवृत्ति कर सकती है । बाधित
 नाम प्रवृत्ति करनेवाले २९, ६ प्रश्नोत्तर नागरिकों में २४, ६ प्रश्नोत्तर उच्च बाधित
 ६, २ प्रश्नोत्तर पिछड़ी बाधित , २, ६ प्रश्नोत्तर व्यक्तिगत बाधित क्या ६, २ प्रश्नोत्तर
 मुक्तमान बाधित के हैं किन्हीं २४, ८ प्रश्नोत्तर प्राथमिक के बाधित स्तर , १०, ६ प्रश्नोत्तर
 स्नातक के बीच स्नातक एवं स्नातकोत्तर क्या ६, २ प्रश्नोत्तर निवारित एवं बाधित

सौम्यता के हैं और भी व्यवसायों के सब प्रसिद्ध के साथ साथ सभी व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन सौम्यताओं में नाम प्रदत्त करनेवाले नामांकों में ७०, २ प्रसिद्ध कट्टर, ६, २ प्रसिद्ध कर्म, २, ६ प्रसिद्ध कर्म, १, ३ प्रसिद्ध भारतीय उद्योग, तथा १, ३ प्रसिद्ध अन्य वर्गों के प्रभावित हैं। उपरोक्त विवरण है स्पष्ट है कि यह है प्रभावित (३८ प्रसिद्ध कट्टर, ३६ प्रसिद्ध कर्म तथा २० प्रसिद्ध कर्म पार्टी) नामांकों इन सौम्यताओं में नाम लिये हैं।

“हस्ताक्षर के लिए कानून है वाक्य और या जान हुआ है ?

के उपर में ६०, ६ प्रसिद्ध नामांकों में जान तथा ३६, ६ प्रसिद्ध में कोई जान नहीं बताया गया है, २ प्रसिद्ध अनुसर रहे। हस्ताक्षर के किसी न किसी कानून है सामान्यतः होनेवाले नामांकों में ३०, ४ प्रसिद्ध कर्मन्दी तथा २०, ५ प्रसिद्ध। ने विभिन्न विभिन्न कानूनों के नाम दिए किन्हीं अनुसूचित जाति के नामांकों में “हरिजन आवासी”, “मृगि वाक्य”, “मि: मुल्लिका”, “हरिजन आवासी की जन मुक्ति”, “कैमारन्दी”, “वस्तुसत्ता उन्मुख”, “वस्तुसत्ता” तथा “कर्मजान का अधिकार” बताया। सामान्यतः होनेवाले नामांकों में २६, २ प्रसिद्ध “उच्च जाति” १५, ८ प्रसिद्ध “मिडली जाति” ७, ६ प्रसिद्ध अनुसूचित जाति तथा ७, ६ प्रसिद्ध मुख्यतः जाति के नामांकों हैं किन्हीं कुछ एक भारतीय नामांकों में उच्च जाति का प्रसिद्ध एवं है जो है। सामान्यतः होनेवाले नामांकों में ३०, ४ प्रसिद्ध कर्म १०, ५ प्रसिद्ध “विपक्षी” ६, ६ प्रसिद्ध “व्यापारी” ३, ६ प्रसिद्ध “व्यवसाय” ३, ६ प्रसिद्ध मकूर तथा २, ६ प्रसिद्ध “नौकर” है। स्पष्ट है कि सभी व्यवसाय के नामांकों की कानून में प्रभावित किया है। किसी कानून है कोई जान न अनुभव करनेवाले ३६, ६ प्रसिद्ध नामांकों में १८, ४ प्रसिद्ध उच्च जाति, ६, ३ प्रसिद्ध “मिडली जाति” ५, २ प्रसिद्ध मुख्यतः तथा २, ६ प्रसिद्ध अनुसूचित जाति के हैं किन्हीं ११, ६ प्रसिद्ध कर्म, ७, ६ प्रसिद्ध व्यापारी ५, २ प्रसिद्ध मकूर ३, ६ प्रसिद्ध विपक्षी “१, ३ प्रसिद्ध व्यवसाय” तथा ६, ७ प्रसिद्ध अन्य व्यवसायी” हैं। हस्ताक्षर का कानून राजनीतिक जातीयकरण का एक अच्छा माध्यम है किन्हीं नामांकों तथा में स्थापित या परिवर्तन के लिए अपनी मनोबुद्धि पनाता है और सभी ऐसे राजनीतिक वर्गों में नाम प्रदत्त करता है।

सरकार के कुछ कानून के अन्तर्गत जिन की शानि हुई १ के अन्तर्गत १५, ४ प्रतिशत नागरिकों में कोई शानि नहीं तथा २६, ६ प्रतिशत में शानि हुई यथाथा है ७, ८ प्रतिशत में शानि हुई है । सरकार के किसी कानून के अन्तर्गत कानून करनेवाले नागरिकों में २६, ४ प्रतिशत उच्च शानि, ७, ८ प्रतिशत पिछड़ी शानि तथा २, ६ प्रतिशत मुसलमान शानि के हैं किन्तु उनी व्यवसायिक वर्ग का प्रतिनिधित्व है किन्तु दूसरों का व्यवसायिक प्रतिशत है । शानि का अनुमान करनेवाले नागरिकों में दूसरों ने व्यवसायिक शानि विकसित कर है अनुमान किया कि रजिस्ट्रार मुनि बीमा निरीक्षण, पञ्चमी, १९३१-३२ प्रति शानि पावर रजिस्ट्रार, विचार कर तथा अधिकाधिक अधिनियम हैं । व्यापार पर प्रतिशत तथा शानि परिवर्तन कर का व्यापारी वर्ग ने बहुत अनुमान किया । अनुमानित शानि ने कुछ मुक्ति है जहाँ शानि इसलिए अनुमान किया कि जहाँ उच्च शानि में कुछ नहीं मिल पाया ।^{३४} सरकार के किसी कानून के अन्तर्गत शानि का न अनुमान करनेवाले में उच्च प्रतिशत मुसलमान ६० प्रतिशत अनुमानित तथा ५५ प्रतिशत पिछड़ी शानि का प्रतिनिधित्व है किन्तु उनी व्यवसायिक के नागरिक हैं ।

अधिकाधिक शानि प्रदान के अन्तर्गत है स्पष्ट है कि २५ प्रतिशत नागरिकों की सरकार के अन्तर्गत है जन्म-शानि शानि का अनुमान है, २२, ६ प्रतिशत नागरिकों की मात्र शानि का अनुमान है, ११, ६ प्रतिशत नागरिकों की मात्र शानि का अनुमान है, २०, ६ प्रतिशत नागरिकों की जन्म-शानि में है एक ने भी प्रभावित नहीं किया है तथा २, ६ प्रतिशत शानि में अनुमान है । राजकीय आधीकरण के माध्यम के रूप में कानून २०, २ प्रतिशत नागरिकों के लिए अनुमानित शानि दी रहा है ।

जहाँ बर्तमान सरकार के बीच, जो वीर प्रतिष्ठा की सुरक्षा अनुमान करते हैं १ के अन्तर्गत में नागरिकों ने ६८, ४ प्रतिशत नहीं तथा २९, ६ प्रतिशत शानि का । उच्च शानि पर शानि का अनुमान करने वाले नागरिकों में २९, ६ प्रतिशत उच्च शानि २९, ६ प्रतिशत पिछड़ी शानि ७, ६ प्रतिशत अनुमानित शानि तथा

७, ६ प्रचिन्ना पुस्तकानां काव्य के हैं विभिन्न जमी छिपाव सारों के साथ जो प्रचिन्ना सारें मूल की सीम्मा काटे हैं जो जमी व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु नीचरी, मधुरी, वय्यावन, व्यापार, तथा कृषि काटे प्रत्यक्ष व्यवसाय हैं । यहीनाम वस्तुतः वे पुस्तका का अनुसन्ध करनेवाले नागरिकों में १६ प्रचिन्ना वय्य उय्य काव्य ५, १ प्रचिन्ना पिछड़ी काव्य, ५, १ प्रचिन्ना अनुसन्धित काव्य तथा ५, १ प्रचिन्ना पुस्तकानां काव्य के हैं विभिन्न सारें मूल सार के अतिरिक्त वय्य छिपाव सारों काटे हैं और जमी व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

वापाककाठीन सीम्मा के पूर्व सादास कुल १६, ७ प्रचिन्ना नागरिकों में १७, १ प्रचिन्ना पुस्तका का अनुसन्ध नहीं करते, वापाककाठ में सादास कुल २०, ६ प्रचिन्ना नागरिकों में हैं २६, ६ प्रचिन्ना पुस्तका का अनुसन्ध नहीं करते तथा वापास काठ काव्य सीमे के परसास वापास कुल २२, ४ प्रचिन्ना नागरिकों में ११, ६ प्रचिन्ना पुस्तका का अनुसन्ध नहीं करते हैं । वापाककाठ के पूर्व पुस्तका का अनुसन्ध करनेवाले नागरिकों में १०, ५ प्रचिन्ना कार्य १, ६ प्रचिन्ना काव्य, १, १ प्रचिन्ना भारतीय छिपाव तथा १, १ प्रचिन्ना वय्य पठ से प्रभावित है । वापाककाठ में भी पुस्तका का न अनुसन्ध करनेवाले नागरिकों में १०, १ प्रचिन्ना काव्य, ११, ६ प्रचिन्ना कार्य, १, १ प्रचिन्ना भारतीय छिपाव तथा २, ६ प्रचिन्ना वय्य पठ से प्रभावित है । वापाककाठ के परसास भी पुस्तका का न अनुसन्ध करनेवाले नागरिकों में ७, ६ प्रचिन्ना काव्य तथा १, ६ वय्य पाटी से प्रभावित है । वापाककाठ में सादास कुल २२ प्रचिन्ना काव्य से प्रभावित व नागरिकों में २६, ८ प्रचिन्ना वे पुस्तका अनुसन्ध नहीं किया कहीं पर कार्य से प्रभावित २५ प्रचिन्ना नागरिकों में हैं २२, ४ प्रचिन्ना वे पुस्तका का अनुसन्ध नहीं किया । सबसे स्पष्ट है कि कार्य से प्रभावित नागरिकों में वापाककाठ का छिन्ना वापाककाठ के पूर्व एवं वापाककाठ में एवं से अधिक रहा ।

यहीनाम काठ में सीमा, का एवं प्रचिन्ना ही वापाककाठ अनुसन्ध करने के कारणों की विभिन्न नागरिकों में बताया उनकी यदि प्रचिन्ना में नकल किया वाक्य जो २५, ६ प्रचिन्ना छिन्ना ६, ७ प्रचिन्ना नीची ८ प्रचिन्ना वस्तुतः की सीम्मा एवं उनके कानून ८ प्रचिन्ना हाथ की कमीरी ४, ८ प्रचिन्ना प्रस्ताव १, १ प्रचिन्ना नीचा १, १ प्रचिन्ना

नागरिकों में उच्च शिक्षा एवं व्युत्पन्न शक्ति के प्रतिनिधि हैं किन्तु एक ही मुखजान नहीं हैं । राजनीतिक वर्गों के ६६, २ प्रतिशत सदस्यें कार्य में विचार में विश्वास नहीं करते हैं ।

(ब) मतदान :

जापान का एक नियम होता है किनी चुनावों में अपना बहुमत मत दिया है ? के उतर में नागरिकों ने १७, १ प्रतिशत मतदाता नहीं ६, २ प्रतिशत एक बार २२, ४ प्रतिशत दोबार ६, २ प्रतिशत तीन बार ११, ६ प्रतिशत चार बार ३, ६ प्रतिशत पांच बार २२, ४ प्रतिशत छः बार तथा ३, ६ प्रतिशत सातबार मतदान करना बताया । साधारण रूप नागरिकों में जो १७, १ प्रतिशत मतदाता नहीं हैं उन्हीं में १०, ५ प्रतिशत जो वास्तव में मतदाता होना ही नहीं चाहते किन्तु ६, ६ प्रतिशत की आयु २१ से २३ वर्ष हैं किन्तु उनका नाम ही मतदाता सूची में नहीं है । १, ३ प्रतिशत भी नागरिक हैं जो उम्मीद करते हुए भी मतदाता सूची में सम्मिलित हैं और मतदान में भी भाग लिया । ८२, ६ प्रतिशत नागरिक जो मतदान में भाग ग्रहण नहीं हैं उन्हीं में ५६, ४ प्रतिशत ने वांछित सभी मत दावों में भाग लिया है तथा शेष ६, २ प्रतिशत में एक बार ७, ८ प्रतिशत में दोबार ३, ६ प्रतिशत में तीन बार तथा १, ३ प्रतिशत में पांच बार । वांछित सभी जाती संख्या में भाग नहीं लिया । यह प्रकार स्पष्ट है कि २२, २ प्रतिशत मतदाता मतदान की अन्य कार्यों की जैसा प्रसन्न तरीकता नहीं प्रदान नहीं । राजनीतिक वर्गों के ८०, २ प्रतिशत सदस्यों ने वांछित पूर्ण मतदान किया है । इससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक वर्गों के सदस्य सामान्य नागरिकों की जैसा मतदान में अधिक भाग लेते हैं जो राजनीतिक छापीकरण का परिणाम है ।

मतदान के पहले किसी भी दिन मत मांगी जाती क्या उन्हें वाशवाक देना चाहिए ? के उतर में ६३, १ प्रतिशत नागरिकों ने हाँ तथा ३६, ६ प्रतिशत ने नहीं कहा । इससे स्पष्ट है कि बहुत ही मत दातवों को वाशवाक देने के फल में है । वाशवाक देनेवाले २, ६ प्रतिशत नागरिकों ने कहा कि

केवल २७ वर्षों की वास्तव्यता देना चाहिए । प्रत्येक पक्ष के मतदाताओं की वास्तव्यता देने के पक्ष में २८, ६ प्रतिशत उच्च वाधि ९८, ४ प्रतिशत पिछड़ी वाधि ६, २ प्रतिशत मुसलमान तथा ६, ६ प्रतिशत अनुसूचित वाधि के नामांकित हैं जो की वाधु वर्ग, शैक्षणिक स्तरों तथा व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं । की मत वाधु की वास्तव्यता न देने के पक्ष में ९८, ४ प्रतिशत उच्च वाधि ७, ६ प्रतिशत पिछड़ी वाधि , ६, ६ प्रतिशत अनुसूचित वाधि तथा २, ६ प्रतिशत मुसलमान वाधि के नामांकित हैं । राजनीतिक दलों के ५७, ७ प्रतिशत सदस्यों ने की मतदाताओं के पक्ष में मतदान का वास्तव्यता देने की प्रवृत्ति का परिष्कृत प्रस्तुत किया है । राजनीतिक दलों के ४२, ३ प्रतिशत सदस्यों ने की की वास्तव्यता देने का विरोध प्रकट करके पक्ष के प्रति अनमन्यता प्रकटित किया है जो कि सामान्य नामांकितों की औसत वाधि है ।

सारणी - ६

सारणी - ७

वाधु वर्ग	वास्तव्यता के पक्ष में	वास्तव्यता के विपक्ष में	शैक्षणिक स्तर	वास्तव्यता के पक्ष में	वास्तव्यता के विपक्ष में
१६-२० वर्ष	८७, ५५	१२, ५५	निरक्षर	६२, ५५	३७, ५५
२१-२५ वर्ष	६८, ५	३२, ५	साधारण	५८, ३, ५	४१, ७, ५
२६-३५ वर्ष	७६, ५	२४, ५	प्राथमिक	५०, ५	५०, ५
३६-४५ वर्ष	६९, ५	३१, ५	प्राथमिक	७१, ६, ५	२९, ४, ५
४६-५५ वर्ष	५३, ५	४७, ५	साधारण	६०, ६, ५	३९, ३, ५
५६-६० वर्ष	३७, ५, ५	६२, ५, ५	साधारण एवं उच्च स्तर	५०, ५	५०, ५

२४५

छाहणी - ४

व्यय	वास्तव्य के फल	वास्तव्य के फल
व्यय	६६. ५	३०. ५
व्यय	२५५	७६५
व्यय	६५. ५५	३४. २५
मकुरी	७९. ५५	२५. ५५
नीकरी	१००५	-
व्यापार	६३. ६५	३४. ४५
व्यय	४०५	६०५

छाहणी - ५

व्यय	वास्तव्य के फल	वास्तव्य के फल
व्यय	६३. ५	३०५
व्यय	२५. ५५	३९. २५
व्यय	६६. ३५	३०. ७५

छात्रिणी ४ है स्पष्ट है कि (२५-२६ वर्ष की आयु वाले नागरिकों के अभाव के साथ) कि कि आयु में पूर्ण होती है नागरिक मतदाताओं की आवश्यकता उन करते करते हैं । छात्रिणी ७ है स्पष्ट है कि स्नातक है पीएचडी के विषय में शिक्षा प्राप्त करने वाले नागरिक मतदाता देने के पता में उन है अधिक है कि कि प्रत्यक्ष कारण मतदाता की नागरिक अधिकारों के अभाव का अभाव प्रतीत होता है । छात्रिणी ८ है स्पष्ट है कि नीचरी में उनी हुए नागरिक उन प्रत्यक्ष आवश्यकता के देने के पता में है उनके परभाव मजदूरी एवं अभाव करनेवाले नागरिक हैं । अभाव में उनी हुए नागरिक मतदाता देने के किता में उन है अधिक है । छात्रिणी ९ है यह स्पष्ट है कि कि नागरिक एक ही बार मतदान में भाग नहीं लिए हैं है उन है अधिक मतदाता देने के पता में है और उनके परभाव उन नागरिकों का ही अभाव है कि प्रत्यक्ष बार मतदान नहीं हैं । क्या प्रत्यक्ष निवास में मतदान करनेवाले नागरिक उनी मतदाताओं की आवश्यकता देने के लिए कि कि या अन्यथा ही करता है ?

मतदान में भाग कि कि छात्र की उन है अधिक मतदाता देने हैं ? के प्रत्यक्ष उधारी में नागरिकों में एक, ८ प्रत्यक्ष सर्व २९, २ प्रत्यक्ष परिवार ९, २ प्रत्यक्ष " निम्न ५, २ प्रत्यक्ष ग्राम प्रभाव ३, ६ प्रत्यक्ष मजदूरी " ३, ६ प्रत्यक्ष राजनीतिक नेता " २, ६ प्रत्यक्ष बासीय नेता , २, ६ प्रत्यक्ष नीचरी बासा , १, ३ प्रत्यक्ष रिस्कार का १, ३ प्रत्यक्ष अन्य की काया । उन उधारी है स्पष्ट है कि मतदान में सर्व निर्णय करने का प्रत्यक्ष उधारी की अभाव अधिक है कि कि २९, २ प्रत्यक्ष नागरिक धुरारों के निर्णयों पर आधारित है । अतः यह है कि ३, ६ प्रत्यक्ष नागरिक की उधारी बासा, पिछड़ी बासा एवं अनुपस्थित बासा के है, राजनीतिक नेताओं की छात्र की अभाव मतदाता देने हैं । उन उधारी है स्पष्ट है कि मतदान की कि राजनीतिक व्यवहार का एक अंश है यह ४२, ८ प्रत्यक्ष राजनीतिक अभावों कि परिवार, निम्न, मजदूरी, बासीय नेता, नीचरी बासा, रिस्कार बासा है प्रभावित होता है ।

" सर्व " एवं " परिवार " की मतदान के लिए अभाव मतदाता मतदाता

नामनिवाडे की काठियाँ, बाहु काँ, जिता सार, व्यापारी (मीठरी के
 अतिरिक्त) एवं काँ के नामरिक्त है । ' भिद' की छात्र की छात्रिक मरुत
 केनाडे, की काठियाँ के २१-२२ वर्ष की बाहु के , की छात्र सार के
 बिनायी, पुनक एवं व्यापक नामरिक्त है । ' ज्ञान प्रदान' की छात्र की मरुत
 में छात्रिक मरुत प्रदान केनाडे, पिछड़ी एवं अनुपिक्त काँ के २१-२२ वर्ष
 की बाहु के, साधार एवं प्राथमिक जिता सार के तथा पुनक मरुत एवं
 व्यापारी नामरिक्त है । ' कड़ीसी' की छात्र की छात्रिक मरुत केनाडे उच्च
 एवं मुकमान काँ के, २१-२२ वर्ष एवं ३६ से २२ वर्ष की बाहु के निरसार ,
 साधार एवं प्राथमिक जिता सार के पुनक एवं व्यापारी नामरिक्त है । ' राजनीतिक
 सेवा' की परामर्श की छात्रिक मरुत केनाडे उच्च, पिछड़ी एवं अनुपिक्त काँ
 के २६ से ३२ वर्ष की बाहु के, निरसार , प्राथमिक एवं साक्षरीतर जिता
 सार के, पुनक एवं व्यापक नामरिक्त है । ' वादीय सेवा' की छात्र की मरुत
 में छात्रिक मरुत केनाडे, पिछड़ी काँ के २६ से २२ वर्ष की बाहु के निरसार
 तथा साधार जिता सार के नामरिक्त एवं पुनक नामरिक्त है । ' मीठरीपासा' के
 परामर्श है प्रभावित होने वाली में, पिछड़ी काँ के , २१ से ३० वर्ष की बाहु
 के चार स्रुत जिता सार के, मीठरी केनाडे नामरिक्त है । ' रिस्तेदार' की
 छात्र की मरुत में छात्रिक मरुत केनाडे मुकमान नामरिक्त है की चारस्रुत
 जिता सार एवं ३२ वर्ष की बाहु का व्यापारी है । इन किरणों के स्पष्ट
 है कि मरुत का व्यवहार राजनीतिक कर्तों के अतिरिक्त अन्य किरणों द्वारा
 की निर्दिष्ट होता है ।

पिछड़े विभाग का चुनाव में किस किस राजनीतिक
 पक्ष के कार्यकर्ता बापडे नहीं पिके ? के उत्तर में ३०, ७ प्रविष्ट नामरिक्तों में
 कहा कि सभी पिके कर्तों ५, २ प्रविष्ट ये नामरिक्त सम्मिलित हैं की मरुता
 नहीं है, २१, २ प्रविष्ट है कहा कि कोई नहीं पिके कर्तों ७, २ प्रविष्ट ये
 नामरिक्त हैं की मरुता नहीं कर्तों १३, ३ प्रविष्ट मरुताकर्तों है किसी की
 पक्ष के कार्यकर्ता में चुनाव में कोई नहीं किया ; ६, ३ प्रविष्ट है अन्य कर्तों

(कटिब, कर्तव्य एवं भारतीय लोकसभ के वित्तिय) के नाम न मिलनेवालों में
 निम्न वर्गों की १, ३ प्रतिलिखत मसदावाची नहीं है, २, ३ प्रतिलिखत में भारतीय लोकसभ
 का नाम न मिलनेवालों में कटिब, ३, २ प्रतिलिखत में न मिलनेवालों में कटिब का
 नाम दिया वर्ग १, ३ प्रतिलिखत मसदावाची नहीं वर्ग २, ६ प्रतिलिखत में कटिबवादी
 नहीं मिले ; ३, २ प्रतिलिखत में कटिब एवं भारतीय लोकसभ दोनों के नहीं मिले
 २, ६ प्रतिलिखत में कर्तव्य एवं भारतीय लोकसभ दोनों के नहीं मिले मसदावाची ;
 १, ३ प्रतिलिखत में कटिब एवं कर्तव्य दोनों के नहीं मिले मसदावाची और केवल ६, २ प्रतिलिखत
 नामान्वित जुद्ध रहे । कुल १६, ७ प्रतिलिखत मसदावाची हैं कटिब, १६, ७ प्रतिलिखत
 में कर्तव्य तथा २६, २ प्रतिलिखत में भारतीय लोकसभ के कार्यकर्ता मिलते विधान का
 निष्पत्ति में नहीं मिले । इससे स्पष्ट है कि भारतीय लोकसभ के कार्यकर्ता का नहीं
 है का का ही नहीं मिले । भारतीय लोकसभ के कार्यकर्ता मिलीय कर उच्च जाति के
 मसदावाची हैं ही नहीं मिले ।

किन्तु यह का प्रत्याक्षी वापके दस्तावेज पर जाया ? के उत्तरों में
 स्पष्ट हुआ कि २२, ६ प्रतिलिखत नामान्वितों के दस्तावेजों पर कटिब प्रत्याक्षी पुनः के
 उच्च पहुँचा किन्हीं की जातियों, जायु वर्गों, श्रेणिक स्तरों एवं उच्च व्यवसाय वर्गों
 के नामान्वित हैं । ३४, २ प्रतिलिखत नामान्वितों के पास कर्तव्य का प्रत्याक्षी पहुँचा
 किन्हीं की जातियों, जायु वर्गों, श्रेणिक स्तरों एवं व्यवसाय वर्गों के प्रतिनिधि हैं ।
 २६ प्रतिलिखत नामान्वितों के दस्तावेजों पर भारतीय लोकसभ का प्रत्याक्षी पहुँचा किन्हीं
 की जातियों, जायु वर्गों श्रेणिक स्तरों (विधेयकर १०, १ प्रतिलिखत वापार एवं
 प्राथमिक) व्यवसाय वर्गों (मजदूरों की होकर) के प्रतिनिधि हैं । १५, ८ प्रतिलिखत
 नामान्वितों के द्वार पर दोनों वर्गों के, २५ प्रतिलिखत के द्वार पर कटिब एवं कर्तव्य के,
 २६, १ प्रतिलिखत के द्वार पर कटिब एवं भारतीय लोकसभ के १८, ४ प्रतिलिखत के द्वार
 पर कर्तव्य एवं भारतीय लोकसभ के तथा ७, ८ प्रतिलिखत के द्वार पर कटिब काता है,
 प्रत्याक्षी पुनः में पहुँच । १०, ५ प्रतिलिखत नामान्वितों के द्वारों पर केवल कटिब
 ६, २ प्रतिलिखत के दस्तावेज पर केवल कर्तव्य तथा १, ३ प्रतिलिखत के दस्तावेज पर केवल
 भारतीय लोकसभ के प्रत्याक्षी पहुँच । १०, ५ प्रतिलिखत नामान्वितों के दस्तावेजों पर
 का नहीं के मसदावाची उच्च वर्गों में ही ही नहीं किया । कटिब का प्रत्याक्षी ५५ प्रतिलिखत
 और कर्तव्य का प्रत्याक्षी ३०, ८ प्रतिलिखत अपने अपने वह है प्रत्याक्षित नामान्वितों के

परवाचों पर नहीं। इन विवरणों से स्पष्ट है कि जटिल के प्रत्याक्षी ने उन के व्यक्तिगतताओं के बारे में बाहर दुताओं में कोई किया बिना ५५ प्रतिशत का यह है प्रभावित हो रहे। क्या राखीतिक वर्गों के प्रत्याक्षी अपने समर्थकों के ही दुताओं में व्यक्तिगतता करते हैं? कुछ ६५, = प्रतिशत नागरिकों के परवाचों पर किसी न किसी यह का प्रत्याक्षी खुद का देना ३४, २ प्रतिशत के साथ कोई नहीं पहुंचा बिना है २६, १ प्रतिशत है किसी भी यह के कार्यकर्ता को नहीं मिले। क्या यह राखीतिक वर्गों के लिए कर्मियों के विभिन्न उन दुताओं नहीं है? प्राकृत एवं व्यक्तिगतताओं के परवाचों पर देना वाक्यों की अपना प्रत्याक्षी का है व्यक्तिगत है। ६० प्रतिशत 'समुचित वाचि' के नागरिकों के परवाचों पर किसी भी यह का प्रत्याक्षी नहीं गया जो कि अपना का परिभाषक है।

राखीतिक वर्गों के अलावा क्या अन्य कोई व्यक्तिगतताएं दुताओं के बीच में बिना १ के उधर में नागरिकों ने ६६, ६ प्रतिशत नहीं का ३६, २ प्रतिशत 'वा' का का देना ६, २ प्रतिशत नागरिक समुदाय रहे। इसी स्पष्ट है कि समाज के विभिन्न को प्रभावित करने के विभिन्न राखीतिक वर्गों के प्रत्यक्ष व्यक्तिगतताओं के अलावा अन्य व्यक्तिगतता भी प्रभाव करते हैं। दुताकाल में अन्य व्यक्तिगतताओं के राखीतिक प्रतिशत अंतर्गत को स्वीकार करनेवाले नागरिकों में कुछ मुख्यताएं वाचि के ६० प्रतिशत पिछड़ी वाचि के ६० प्रतिशत, अन्य वाचि के २६, ७ प्रतिशत का 'समुचित वाचि' के १० प्रतिशत प्रतिनिधि हैं। इसी स्पष्ट है कि मुख्यताएं एवं पिछड़ी वाचि के नागरिक अंतर्गत राखीतिक वर्गों के व्यक्तिगतता होती हैं। क्या यह समुदाय वाचि-यं अंतर्गतता को अंतर्गतता नहीं करता? अन्य व्यक्तिगतताओं के बीचों में न स्वीकार करनेवालों में प्राकृत: अन्य वाचि, 'समुचित वाचि', पिछड़ी वाचि एवं मुख्यताएं नागरिक हैं।

और है अन्य वर्गों के अलावा और है १ के उधर में स्पष्ट हुआ कि ६६, ६ प्रतिशत नागरिकों के अन्य वर्गों के बीच हैं। कुछ वर्गों के अंतर्गत नागरिकों में १६-२० वर्ष की आयु वाले का है का है और ३६-४५ वर्ष की आयु वाले का है व्यक्तिगत हैं। वहीं व्यापकों का ४५ प्रतिशत, दुताओं का ६५ प्रतिशत एवं व्यापारियों का ६५ प्रतिशत अंतर्गत है और का है का ३० प्रतिशत विभागीय हैं। वे अंतर्गत, प्रीम पंचायत, सरकारी समिति, विभागीय प्रबंध समिति, युनि विभागीय

पिछड़ी काचि' तथा २५ प्रतिशत मुळमान काचि' के हैं जो कुल ५० वर्ग की वायु, कुल छैसाठ सयों एवं बिघावीं, बच्चापन, ज्वापारी तथा बूचक काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । 'ज्वापार' पर अधिक ध्यान देनेवाले नागरिकों में कुछ प्रतिशत का ६६, ० प्रतिशत पिछड़ी काचि' तथा ३३, ३ प्रतिशत मुळमान काचि' के हैं जो कुल चार वायु काँ (बिछेनकर ३६-४५ वर्ग) का कुल छैसाठ सयों (प्राथमिक की होकर) तथा बिघावीं, पीकर नखूर, बूचक एवं अन्य काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुल पर ध्यान देनेवालों में बिछेन उल्लेखनीय है कि बीसवीं की बाढ़ों पर जो प्रतिशत अनुसूचित काचि , 'पुरुष' पर कुल काचि तथा 'छिटा' पर पिछड़ी काचि के छिटास नागरिकों का बिछेन ध्यान है ।

झानदारी' पर बिछेन ध्यान देनेवाले नागरिकों में है ६० प्रतिशत कट्टिब तथा ४० प्रतिशत कर्तव्य तथा कसा पाटी' है प्रभावित नागरिक हैं । 'चरित' पर बिछेन ध्यान देनेवाले नागरिकों में है ६७, ६ प्रतिशत कर्तव्य एवं कसा पाटी' तथा ३६, ४ प्रतिशत कट्टिब है प्रभावित नागरिक हैं । 'छिटा' पर बिछेन ध्यान देनेवालों में ६२, ५ प्रतिशत कर्तव्य एवं कसा पाटी', २५ प्रतिशत कट्टिब है प्रभावित तथा २५ प्रतिशत किसी भी कट है नहीं प्रभावित नागरिक हैं ।

यदि इन कुल आवश्यक कर्तव्यों का कुछ उपराँ है प्रतिशत में मूल्यांकन किया जाय तो ३२, ५ प्रतिशत झानदारी, २४, ० प्रतिशत 'चरित', १५, ० प्रतिशत 'छिटा' ६ प्रतिशत 'ज्वापार' १० प्रतिशत 'छिटास', ३ प्रतिशत 'छिटा' २ प्रतिशत बीसवीं की बाढ़ों २ प्रतिशत पुरुष तथा १ प्रतिशत निर्वान पीप के निवासी' की मरत्य भिन्नता है । इन विरहेनणों है स्पष्ट है कि मरदाताओं का २५ प्रतिशत ध्यान मरदाता की झानदारी , चरित, छिटा, छिटास एवं ज्वापार पर जाता है जो कि प्रत्याक्ष के अधिकतम बीका है उल्लेखित है । राखीतिक कर्तव्य है उल्लेखित मात्र १५ प्रतिशत ध्यान छिटास , बीसवीं की बाढ़ों एवं पुरुष पर दिया जाता प्रतीय हो रहा है । क्या राखीतिक कट कर्त प्रभाव पीप में जानिवाले नागरिकों पर भी वही कुल में ध्यान देते हैं ? क्या मर याचकों में इन कुणों का क्वाय मरदाताओं की ध्यान देने के छिर बाध्य कर रहा है? राखीतिक कर्तव्य द्वारा प्र

करी करी निम्नलिखित ध्यान का प्रसिद्ध यह उद्धृत है कि राजनीतिक मानकपत्रों के लिए आवश्यक है ।

आप अपना मत निम्नलिखित रूप करते हैं ? के प्रश्न उत्तरों में नामांकितों में ४४, ७ प्रतिशत पुनः के पूर्व ६, २ प्रतिशत पुनः के मध्य २२, ४ प्रतिशत पुनः के मध्य तथा २२, ७ प्रतिशत हीन मतदाता के पूर्व * करी मत निम्नलिखित का उत्तर बताया । इसी स्पष्ट होता है कि ४४, ७ प्रतिशत नामांकित किसी उत्तरा मत देना है वरन् निम्नलिखित पुनः प्रारंभ होने से हीन हीन मत दाता के उत्तर तक करते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि ये 'आपका मतदाता राजनीतिक कर्तों की गतिविधियों, देशों की विकासाधीन, वास्तविकताओं की प्रतिक्रिया, कर्तव्यों में संलग्न, ज्ञान प्राप्त के उद्देश्य के साथ सामाजिक सुधारों के प्रति विशेष ध्यान रखते हैं किन्तु मत निम्नलिखित में विद्यमान होता है ।

पुनः के पूर्व मत निम्नलिखित करनेवालों में ११, ८ प्रतिशत उत्तरदाता नामांकित सम्मिलित हैं और मतदाताओं का मत २२, ६ प्रतिशत ही है । व्युत्पन्न वाचि के नामांकितों का ५० प्रतिशत उत्तर वाचि के ३६, ५ प्रतिशत निम्नलिखित वाचि के ३० प्रतिशत तथा मुसलमान वाचि के ३० प्रतिशत नामांकितों में पुनः के पूर्व अपना मत निम्नलिखित काट बताया । ये नामांकित सभी वायु कर्त, देशीय स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोत्तरों का २२, ४ प्रतिशत) एवं व्यवसाय कर्त (३५ प्रतिशत व्यवसायों तथा ३०, ८ प्रतिशत युवकों) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

पुनः के मध्य में मत निम्नलिखित करनेवालों में १, ३ प्रतिशत उत्तरदाता नामांकित हैं और मतदाता ७, ६ प्रतिशत ही हैं । इस समूह में उत्तर वाचि (केवल हीन) तथा उत्तर वाचियों के, सभी वायु कर्त (२६-२० वर्षों और ३६ से ४५ वर्ष की हीन) सभी देशीय स्तरों (साईन्स से ऊपर स्नातक से नीचे हीन) तथा विभाजित, युवकों एवं मजदूरों का प्रतिनिधित्व है ।

* पुनः के मध्य में मत निम्नलिखित करनेवालों में २, ६६ प्रतिशत उत्तरदाता हैं और १६, ८ प्रतिशत ही मतदाता हैं । इस समूह में सभी वाचियों

(पिछेकर देस, पिछड़ी एवं अनुपस्थित) के सभी वायु नहीं के सभी छिपाकर रखीं (स्नायक एवं स्नायकीपर की छिपाकर) के तथा सभी स्नायक नहीं (स्नायक छिपाकर) के वायुओं का प्रतिनिधित्व है ।

ठीक मतदान के पूर्व ' मत निगमि करीवाले वायुओं में १, ३ प्रतिशत व्यक्तता तथा २२, ४ प्रतिशत व्यक्तता है । यह तब में कुछ मुकामान वायु के वायुओं का ४० प्रतिशत उच्च वायु के २५ प्रतिशत पिछड़ी वायु के २० प्रतिशत अनुपस्थित वायु के १० प्रतिशत ; का प्रतिनिधित्व है । यह तब में सभी, वायु नहीं, छिपाकर रखीं तथा स्नायक नहीं का प्रतिनिधित्व है ।

राजनीतिक नहीं के व्यक्तता की व्यक्तता प्रकट करती व्यक्तता के प्रति पूर्ण निष्ठा की व्यक्तता है वे के मतदान का निगमि कर करते हैं इसकी वायु की स्वाभाविक उत्पत्ति वायुओं में है व्यक्तता की व्यक्तता का व्यक्तता प्रकट करती है ४२ प्रतिशत पुनः के पूर्व १६ प्रतिशत पुनः के मध्य १०, ४ प्रतिशत पुनः के मध्य तथा २१, ५ प्रतिशत ठीक मतदान के पूर्व ' मत निगमि काउ स्वीकार किया । भारतीय व्यक्तता के व्यक्तता में ६० प्रतिशत पुनः के पूर्व १६, ५ प्रतिशत ' पुनः के मध्य तथा १६, ५ प्रतिशत पुनः के मध्य में मत निगमि काउ स्वीकार किया । यह तब है स्पष्ट है कि राजनीतिक नहीं के व्यक्तता की मत निगमि करने में उत्पत्ति की स्थिति का अनुभव करती है । क्या यह राजनीतिक नहीं द्वारा किये जानेवाले राजनीतिक व्यक्तताकरण की व्यक्तताओं का परिचायक नहीं है ?

यह है वायु मतदान का तब है वायु का निगमि तथा और उत्पत्ति पुनः में किये नहीं की मत दिया है ? के तब में वायुओं में ४०, ८ प्रतिशत ' मत नहीं २४, २ प्रतिशत की नहीं, ६, ६ प्रतिशत तीन नहीं तथा १, ३ प्रतिशत बार नहीं के मतों में मतदान किया जाता है और १०, १ प्रतिशत के तब प्रत्यक्ष नहीं व्यक्तता । स्पष्ट है कि ४२, १ प्रतिशत व्यक्तता वायु मतदान में मत परिचायक किये की कि ' व्यक्तता मतदान ' (कलौटिंग बोटर) व्यक्तता का व्यक्तता है । ' मत नहीं के मतों में मतदान करीवाले मतदानों में अनुपस्थित वायु के ४०, ५ प्रतिशत उच्च वायु के ४६, ३ प्रतिशत पिछड़ी वायु के ४१, ८ प्रतिशत

क्या मुसलमान जाति के ३०, ५ मसदादा हैं जो सभी जायु कर्मी, छिपाक स्तरीं एवं व्यवसाय कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं। दो वर्गों के पदा में मतदान करने वाले मसदादाओं में पिछड़ी जाति के ५२ प्रतिशत, उच्च जाति के ४२, ६ प्रतिशत मुसलमान, ३०, ५ प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति १२, ५ मसदादा हैं जो व्यवसाय कर्मी के सभी जायु कर्मी, छिपाक स्तरीं, व्यवसाय कर्मी (विभागी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। तीन वर्गों के पदा में मतदान करनेवाले मसदादाओं में मुसलमान जाति के २५ प्रतिशत उच्च जाति के १०, ८ प्रतिशत (सभी ब्राह्मण) तथा पिछड़ी जाति के ६, २ प्रतिशत मसदादा हैं जो सभी २० वर्ष से ३० वर्ष के मध्य के जायु कर्मी, सभी छिपाक स्तरीं, कुलक, व्यापक एवं शिक्षित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। चार वर्गों के पदा में मतदान करनेवाले नागरिक में कुछ चार चार मतदान किया है और प्रत्येक चार चार परिवर्तन किया है।

यदि जातिगत आधार पर मसदादाओं द्वारा किये गये वोट परिवर्तन का अध्ययन किया जाय तो इन मुसलमान, पिछड़ी उच्च एवं अनुसूचित जाति का होता है किन्तु आश्चर्य यह है कि उच्च जाति में नागरिकों का प्रतिशत वोट परिवर्तन में कम है अपेक्षित है। कन्नड़ के ५६ प्रतिशत तथा कर्णटक के ३३ प्रतिशत क्षेत्रों में वोट परिवर्तन किया है। इससे स्पष्ट सिद्धता है कि कर्णटक के क्षेत्रों में कम वोट परिवर्तन किया है। क्या राजनीतिक वर्गों के संगठन के लिए उनके क्षेत्रों द्वारा वोट परिवर्तन नीति प्रश्न है ? क्या मतदान में मसदादाओं द्वारा वोट परिवर्तन करना उनके प्रतिनिधियों के लिए अनुकूलनीय है ? क्या वोट परिवर्तन राजनीतिक विकास का एक पदा है ?

जायकी दृष्टि में कि जाति के किसी प्रतिशत मसदादा मतदान में भाग लेते हैं ? के प्रश्न का किसी में मतदान का प्रतिशत प्रत्येक जाति के नागरिकों में भी बताया जाता जो इस प्रतिशत निकाला गया किन्तु व्यक्तिक आधार पर भी करने से निष्कर्षित स्पष्ट स्पष्ट होते हैं -

सारणी - १०

बाति के नामांकों की पुष्टि में	बाधित मतदान में प्रत्यक्ष					राज्य	वैय
	व्युत्पन्न	मुख्यमान	बाधित	विशेष का प्रत्यक्ष	प्राप्त		
व्युत्पन्न	२३, ८	७७	२२, ३	२२	६९, ७	६०	५२
मुख्यमान	२२	७७, ६	२२	२२	५२	६६	७७
विशेष	२२, ७	२२, ४	७७, ६	६९, ६	६०	६०	६६
प्राप्त	२२, २	२२	२२, ७	७९, ७	५२	५६	५७
राज्य	२२	७७	७ ७७	७९	६२	५६, ५	७७, ५
वैय	६६, ५	६६, ५	७७	७९	६०	५२	५२

- १- व्युत्पन्न बाति के नामांकों की पुष्टि में उसी बाति के मतदाता ही एवं वे अधिक मतदान में भाग लेते हैं किसी पुष्टि अन्य बातियों के नामांकों में भी किया है ।
- २- प्राप्त, राज्य एवं वैय बाति के नामांकों की पुष्टि में बाधित बाति के मतदाताओं का मतदान में वार्षिक प्रत्यक्ष है किसी पुष्टि मुख्यमान नामांकों में भी किया है और व्युत्पन्न बाति के नामांकों में भी अन्य मतदाता उन्हीं की स्थाप किया है ।
- ३- मुख्यमान नामांकों में भी स्वीकार किया है कि उसी बाति के मतदाताओं का मतदान में भाग प्रत्यक्ष करने में सीधे स्थाप है किसी पुष्टि प्राप्त राज्य राज्य एवं वैय नामांकों में भी की है ।

४- पिछड़ी जाति के नागरिकों ने विन्य या केन्द्र मन्त्रालयों का कुरी स्थान स्वीकार किया है किन्ती शुद्ध प्राप्ति एवं वाणिज्य नागरिकों ने भी की है ।

५- जीवत प्रतिष्ठकों के बीच है स्पष्ट है कि मन्त्रालय के पास प्रत्यक्ष में इन याचक, अनुपस्थित जाति, मुक्तजान, विन्य या केन्द्र, वाणिज्य, प्राप्ति एवं केन्द्र मन्त्रालयों का है ।

इन तथ्यों से स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति, अनुपस्थित जाति एवं मुक्तजान मन्त्रालय में अधिक पास प्रत्यक्ष करते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि वे राजनीति के कार्यों के अधिक विस्तार हैं और उनके प्रति रुचि भी करते हैं ।

जो मन्त्रालय मत देने नहीं करते हैं उनका प्रमुख कारण क्या है ? के प्रत्यक्ष उत्तरों में नागरिकों ने ३३, ४ प्रतिशत राजनीति में रुचि नहीं, १७, २ प्रतिशत जीव नाराज हो जाये १४, ६ प्रतिशत निष्पक्ष पर विश्वास नहीं, १९, ६ प्रतिशत जाने में काम का मुक्तजान २, ६ प्रतिशत उन दिन मौका की व्यवस्था नहीं, २, ६ प्रतिशत सरकार से नाराज ३, ६ प्रतिशत जीव काम नहीं, १, ३ प्रतिशत वाणिज्यिक व्यवस्था का ५, २ प्रतिशत निष्पक्ष कारणों से मन्त्रालय में पास प्रत्यक्ष न करता बताये का ९, ३ प्रतिशत खुद है । निष्पक्ष कारण में १, ३ प्रतिशत जाने में काम का मुक्तजान एवं उन दिन मौका^{४२} की व्यवस्था नहीं । १, ३ प्रतिशत उन दिन मौका की व्यवस्था नहीं एवं जीव नाराज हो जाये^{४३} १, ३ प्रतिशत राजनीति में रुचि नहीं, जाने में काम का मुक्तजान तथा जीव नाराज हो जाये का ९, ३ प्रतिशत राजनीति में रुचि नहीं, जाने में काम का मुक्तजान तथा उन दिन मौका की व्यवस्था नहीं सम्मिलित है ।^{४४}

राजनीति में रुचि नहीं, जाने की मन्त्रालय में न सम्मिलित जाने का प्रमुख कारण बतायेवाले नागरिकों में ६३, ४ प्रतिशत उच्च जाति २७, २ प्रतिशत पिछड़ी जाति ६, ७ प्रतिशत अनुपस्थित जाति का ६, ७ प्रतिशत

‘मुछमान’ वाति के हैं वो कमी वायु काँ, छेपाक स्तरी (नितार की होकर) एवं व्यसय काँ (नाकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

छीन नाराय की काँ की मदान न करने का कारण कानिवाडे नानरिती में ३३, ८ प्रविज उच्च वाति ३८, ६ प्रविज पिछड़ी वाति क्या ७, ७ प्रविज मुछमान वाति के हैं वो कमी वायुकाँ, छेपाक स्तरी (नितार होकर) एवं व्यसय काँ (व्यापन होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। अनुपस्थित वाति के नानरिती छीनी की नारायनी पर ध्यान नहीं की प्रतीत हो रहे हैं वो कि उनकी राखीतिक प्रसन्नता का प्रमुख कारण है।

‘निवाफि पर बिस्वास नहीं’ की प्रमुख कारण कानिवाडे नानरिती में ३६, ६ प्रविज उच्च वाति (वैश्य होकर) ३६, ६ प्रविज मुछमानवाति ३६, ८ प्रविज पिछड़ी वाति क्या ६, ६ प्रविज अनुपस्थित वाति के हैं वो प्रम से पाँच वायु काँ, कमी छेपाक स्तरी (नितार की होकर) क्या कमी व्यसय काँ (व्यापारी एवं मकूर होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे स्पष्ट है कि व्यापारी एवं पूर्णरूपेण निवाफि पर बिस्वास करता है।

जाने में जय का मुछमान, छीना की प्रमुख कारण कानिवाडे नानरिती में २२, २ प्रविज उच्च वाति (कमी वैश्य) ४४, ५ प्रविज पिछड़ी वाति २२, २ प्रविज मुछमान वाति क्या २२, ९ प्रविज अनुपस्थित वाति के हैं वो महीन से पचास वर्ण वायु, कमी छेपाक स्तरी (स्नातक के नीचे होकर) क्या कमी व्यसय काँ (विवाही एवं व्यापक होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जब किन मोहन की व्यस्य नहीं की प्रमुख कारण कानिवाडे अनुपस्थित वाति के वाचि के वासीय वर्ण के छापार एवं प्राथमिक डिवा स्तर के छपर की छेपाक मोच्छता के मुकाब एवं मकूर नानरिती हैं। जादर्य है कि मोहन का व्याय मदान की प्रभावित करता है।

छरकार के नाराय क्यदि छरकार के नारायनी प्रकट करने का एक छापन मदान में पाय न छेना की कानिवाडे वैश्य एवं अनुपस्थित वाति के प्राथमिक

जब बाजार खिन्ना है ऊपर की छिन्नाक योन्मता के व्यापारी लब मजदूर हैं ।
 उपरोक्त विवरण है स्पष्ट है कि मजदूरों में मान न होने के कारण, = प्रचलित राखीतिथि
 तथा २१, ६ प्रचलित वार्षिक कारण हैं । विचारकों में राखीतिथि वार्षिक
 की कमी, ईश्वरों का मय तथा विचारों के मजदूर की न ऊपर ऊपर बाध का
 वास्तविक राखीतिथि यहाँ पर है । मजदूरों की वार्षिक कर्मस्थ योन्मता योने
 है राखीतिथि आधिकारण की यह विधि ।

(३०) मानवारी -

‘ कन काने की चीज में व्यक्त उचित और अनुचित का विचार
 मान रख रहा है ? के प्रत्येक उपरों में मानवारी में १५, = प्रचलित विचारों की
 ६५, ६ प्रचलित मजदूर का ‘ ३, ६ प्रचलित का ‘ ५, २ प्रचलित बाधा ‘ ५, २
 प्रचलित ‘ बाधा है व्यक्त तथा १, ३ प्रचलित ‘ पूर्ण ‘ मान रखता बताया । इन
 उपरों है स्पष्ट है कि ८५, ३ प्रचलित मानवारी का काने की राह में उचित और
 अनुचित का मान मान्य दोनों में रखी है और ११, ७ प्रचलित मानवारी ही बाधा
 या कर्म व्यक्त मान रखी है । ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वार्षिक योन्मता के
 लिए व्यक्तित्व वैयक्तिकता की विचारों के रहे हैं । ‘ विचारों की ‘ मान बताया है
 मानवारी उच्च बाधा में १६, ७ प्रचलित विचारों बाधा में १० प्रचलित अनुचित बाधा
 में २० प्रचलित तथा मुक्तमानों में १० प्रचलित है जो की वायु का (२६ है ३५ वर्ष
 होकर) छिन्नाक स्तरों । निरक्षर की होकर) लब व्यवसाय का (नीचरी
 होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । ‘ मजदूर का ‘ मान बताया है मानवारी उच्च
 बाधा में ६६, ४ प्रचलित विचारों बाधा में ६५ प्रचलित अनुचित बाधा में ६० प्रचलित
 ६० प्रचलित तथा मुक्तमानों में ८० प्रचलित है जो की वायु का , छिन्नाक स्तरों
 लब व्यवसाय का का प्रतिनिधित्व करते हैं । स्पष्ट है कि की वास्तविकों के
 मानवारी की कन काने के चीज में उचित और अनुचित का मजदूर का मान रखने
 का अनुभव हुआ है । ‘ कन ‘ मान बताया है मानवारी वैयक्तिकता में २० प्रचलित विचारों
 बाधा में ६ प्रचलित है जो २१ है ३५ वर्ष लब ४६-५५ वर्ष के वायु का , प्राथमिक
 है ऊपर के छिन्नाक स्तरों लब विचारों तथा व्यापारी का का प्रति निधित्व करते हैं

वाचा एवं उसके अधिक व्यापकतावाले नागरिक उच्च जाति (वैश्य वीरुवर) में ५, ५ प्रतिशत , पिछड़ी जाति में २० प्रतिशत अनुसूचित जाति में १० प्रतिशत तथा मुसलमानों में १० प्रतिशत हैं जो १६ से २५ वर्ष एवं ३६ से ४५ वर्ष के वायु कर्मी, स्नातक से नीचे के सभी शैक्षणिक स्तरों एवं सभी व्यवसाय कर्मी (व्यापक वीरुवर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । " पूर्ण " व्यापकतावाले नागरिक ५० वर्षीय, प्राथमिक शिक्षा प्राप्त नागरिक युवक हैं ।

कौशल समय में एवं वे कौशलधार कौशल से १ के प्रथम उपरों में नागरिकों में ३५, ७ प्रतिशत पुलिमें २२, ४ प्रतिशत " कौशल " १६, ७ प्रतिशत राजनीतिक नेता १०, ५ प्रतिशत कार्यलय का बाधू ३, ६ प्रतिशत पेशीकण " १, ३ प्रतिशत लैबीनियर १, ३ प्रतिशत राजनीतिक नेता और कौशल" तथा १, ३ प्रतिशत सभी तीनों को एवं वे कौशलधार बताया है एवं ३, ६ प्रतिशत नागरिकों में उपर ही नहीं किया । इसके स्पष्ट है कि नागरिकों की दृष्टि में पुलिमें एवं वे कौशलधार है इसके बाधू कौशल राजनीतिक नेता एवं कार्यलय के बाधू का इन कौशल हैं । " पुलिमें " को एवं वे कौशलधार बताया है नागरिक उच्च जाति में ३६, २ प्रतिशत , पिछड़ी जाति में ३५ प्रतिशत , अनुसूचित जाति में , ४० प्रतिशत तथा मुसलमानों में ३० प्रतिशत हैं जो सभी वायु कर्मी, शैक्षणिक स्तरों, एवं व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं । " कौशल " को एवं वे कौशलधार बताया है नागरिक उच्च जाति में २२, ४ प्रतिशत (कौशल नागरिकों का माथ ७५ प्रतिशत हैं) पिछड़ी जाति में ३० प्रतिशत मुसलमानों में २० प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति में १० प्रतिशत हैं जो सभी वायु कर्मी एवं शैक्षणिक स्तरों तथा विद्यापीठों और युवक कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं । एक ही व्यापक, मकूर, मीकर एवं व्यापारी में " कौशल " को एवं वे कौशलधार नहीं बताया , क्या कौशल का कौशल इनके बहुत कौशल वकाल कारण है । " राजनीतिक नेता " को एवं वे कौशलधार बताया है नागरिक २२, ४ प्रतिशत उच्च जाति में ३० प्रतिशत अनुसूचित जाति में , २० प्रतिशत मुसलमानों में तथा १० प्रतिशत पिछड़ी जाति में हैं जो सभी वायु कर्मी (विशेष कर २१-२५ वर्ष) एवं शैक्षणिक स्तरों और विद्यापीठों, युवक, व्यापारी

जैसे मजदूर वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। क्या वह समूह राष्ट्रीयतावादी वर्गों के नाते में वर्गों का टीका नहीं है? क्या वह मुठे वास्तविकताओं एवं प्रश्नों का परिणाम है?

‘आयुध के बाधू’ को हम है कम औद्योगिक व्यवस्था के नागरिक ८, ४ प्रतिशत उच्च वर्ग में, १५ प्रतिशत शिक्षित वर्ग में १० प्रतिशत अनुसूचित वर्ग में तथा १० प्रतिशत मुसलमानों में हैं जो २५ वर्ष के ऊपर के बाधू वर्गों की औद्योगिक स्तरों (निरक्षर की होकर) एवं व्यवसाय वर्गों (व्यापक होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि व्यापकों का आयुध है कोई व्यापक कम है। ‘मशीन’ को हम है कम औद्योगिक व्यवस्था के नागरिक स्तरों एवं स्वातंत्र्य के औद्योगिक वर्गों के, व्यापक एवं विपरीत हैं जो ५, ६ प्रतिशत उच्च वर्ग (उच्च श्रम) में तथा ५ प्रतिशत शिक्षित वर्ग में हैं। हम एक ही बात कि हम एक ही है श्रम एवं शिक्षित वर्ग के प्रतिनिधित्व की विचार्य पुनः की है क्या इसीलिए हम दोनों वर्गों की नीतियों है कोई का समूह है? ‘वर्गिक’ को हम है कम औद्योगिक मुसलमान वर्ग के प्रतिनिधित्व में बताया है।

किसे के लिए करना हम है अच्छा होना? के प्रत्यक्ष उत्तरों में नागरिकों में ५०, ६ प्रतिशत के १४, ५ प्रतिशत के १४, ५ प्रतिशत के वर्गों १०, ५ प्रतिशत के प्रतिशत के २, ६ प्रतिशत वर्गों के लिए करना हम है अच्छा बताया। इसी स्पष्ट है कि के लिए प्राणों के करने की कामना के लिए है जो कि के लिए नीति का प्रमाण है। के लिए करना हम है अच्छा होना ऐसा एक की नागरिक में नहीं बताया। क्या वह के लिए निम्न है कि नागरिकों का पुनर्विचार १०, १ प्रतिशत की पूर्ण नीतिस्थापना है?

‘के’ के लिए करने को हम है अच्छा व्यवस्था के नागरिक ६३, ४ प्रतिशत उच्च वर्ग में (किन्तु वर्गों में ८० प्रतिशत) ५० प्रतिशत शिक्षित वर्ग में, १० प्रतिशत मुसलमानों में तथा ४० प्रतिशत अनुसूचित वर्ग में हैं जो की बाधू वर्गों (२५ है २५ वर्ष के कम है वर्ग) की औद्योगिक स्तरों (निरक्षर की होकर) एवं व्यवसाय वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। के लिए करने को हम

ये वज्रवा समकमेवाते नामास्ति ५० प्रतिष्ठान्नुत्तमानां यं १० प्रतिष्ठान्निष्कृति वासि यं,
 १० प्रतिष्ठान्नुत्तमानां वासि यं तथा ८, ८ प्रतिष्ठान्नुत्तमानां वासि यं (येन हीकुकर)
 ये वी २६ वर्ण ये ऊपर के वायु वर्ण, उनी क्षेपक स्तरी (स्नातक के नीचे हीकुकर)
 तथा वृष्णक एवं मज्जूर वर्ण का प्रतिनिधित्व करते हैं । " वज्रवा " के छिद्र मरत्ता
 एवं ये वज्रवा समकमेवाते नामास्ति २५ प्रतिष्ठान्निष्कृति वासि यं, १४ प्रतिष्ठान्नुत्तमानां
 वासि यं (येन हीकुकर) तथा १० प्रतिष्ठान्नुत्तमानां वासि यं ये वी
 उनी वायु वर्ण, निरस्तार के वायुमूल स्तरी के क्षेपक वर्ण (निरस्तारी यं ६२, ५
 प्रतिष्ठान्) वृष्णक मज्जूर एवं व्यापारी वर्ण का प्रतिनिधित्व करते हैं । " प्रतिष्ठान् " के
 छिद्र मरत्ता एवं ये वज्रवा समकमेवाते नामास्ति ३० प्रतिष्ठान्नुत्तमानां वासि यं
 १५ प्रतिष्ठान्निष्कृति वासि यं तथा ५, ६ प्रतिष्ठान्नुत्तमानां वासि यं (उनी वेश्म) ये
 वी उनी वायु वर्ण (१६ से २० वर्ण हीकुकर) उनी क्षेपक स्तरी (स्नातक के नीचे
 एवं ऊपर हीकुकर) एवं वृष्णक, मज्जूर एवं व्यापारी वर्ण का प्रतिनिधित्व करते
 हैं । " वासि " के छिद्र मरत्ता नामास्ति १० प्रतिष्ठान्नुत्तमानां वासि तथा २, ८ प्रतिष्ठान्नुत्तमानां
 वासि (वृष्णक) यं ये वी २१ से २५ वर्ण के वायु वर्ण, स्नातक के नीचे एवं
 स्नातकीपर क्षेपक स्तरी, एवं विपारी वर्ण का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

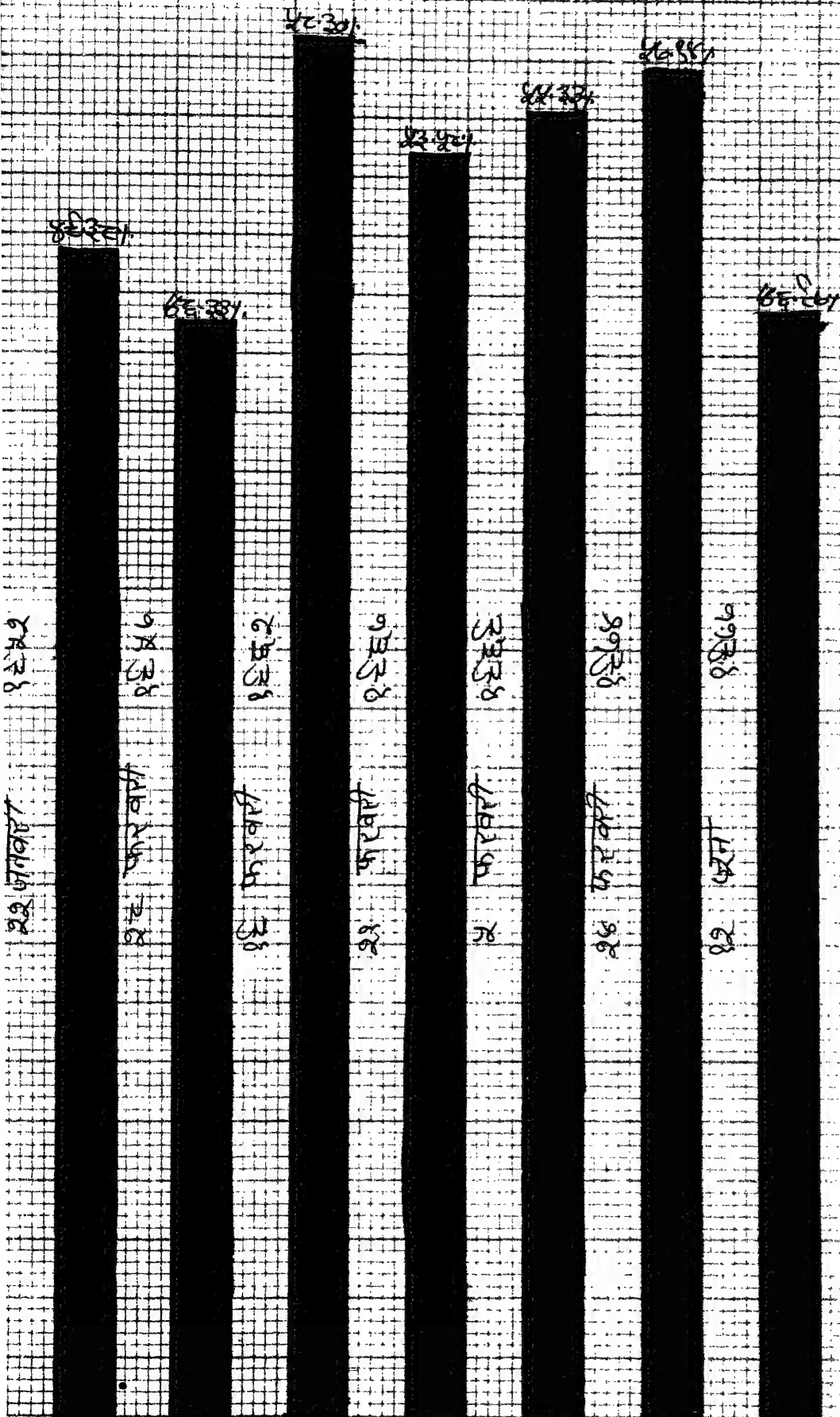
उक्तिया विधान उभा निवाप्ति के मतदान में माग प्रवृत्त
 कर्तव्याते एवं उक्त प्रति उदाहीन मतदाताओं की क्रमः ६ (१) तथा ६ (२)
 के रेखा चिह्नों में स्पष्ट किया गया है । एवं तब उक्त हुए निवाप्ति में एवं ये
 अधिक मतदान १६६२ ई० में ५८, ३० प्रतिष्ठान्नुत्तमानां तथा एवं ये अधिक उदाहीन
 मतदाता १६५० ई० में ५३, ६० प्रतिष्ठान्नुत्तमानां रहे हैं ।

(वर्ग पत्र २५ से० मी० x २० से० मी०)

३१४ प

विधान सभा चुनावों में मतदान प्रतिशत

पैमाना — इंच = ०.५१



रखा चित्र ६(१)

सन्दर्भ-संकेत:-

- १- ए० डब्ल्यू० ग्रीन 'बीछीछीछी' पुस्तक १९०, मुद्रा व्यवस्थापन एवं
सावधानता की प्रणाली, पुस्तक २१।
- २- बाम्बन, बीछीछीछी, पुस्तक १९०, प्रतीक व मुद्रा ।
- ३- प्रो० रामबाबु सिंह, सावधानता प्रणाली, १९६०, पुस्तक ५० ।
- ४- इसी पुस्तक ए० एडिन्ग्टन, प्रतीकछी छीछीछी छीछीछी छीछीछी (वाछीछी,
देख छीछीछीछी वाछी छीछीछी छीछी, पुस्तक १९०, मुद्रा द्वारा छीछी छीछी
के छीछी छीछी छीछी छीछीछी छीछीछी, १९६६, पुस्तक १० ।
- ५- टी० बार्नेट, बी छीछी छीछी, प्रतीक व मुद्रा, पुस्तक १४ ।
- ६- ए० ए० छीछी, बीछीछीछी छीछी, १९०२, पुस्तक २४ ।
- ७- बी० बार्नेट, बीछीछीछी वाछी बार्नेटछी ए० बीछीछीछी बीछीछीछी
छीछीछी, १९०२ छीछी, बार्नेटछी ए० बीछीछीछी, पुस्तक ६६ ।
- ८- छीछी छीछी, के छीछी, प्रतीक व बीछीछीछी छीछीछी, १९६६, पुस्तक ७ ।
- ९- एडिन्ग्टन ए० बार्नेट, ए० बार्नेट, बीछीछीछी छीछीछी- बी छीछीछी ए०
छीछी छीछीछी, ए० बार्नेटछी, १९०२, पुस्तक ४६ ।
- १०- बी० ए० बार्नेट, बार्नेटछी बार्नेटछी, १९०५, पुस्तक ६५ ।
- ११- बार्नेट बार्नेट, बीछीछीछी छीछीछीछी ए० बीछीछीछीछी बार्नेट
बीछीछीछी बार्नेट (१९६०) २० पुस्तक २६२- मुद्रा बार्नेट बीछीछीछी ए०
बीछीछीछी एडिन्ग्टन, पुस्तक ४६६ ।
- १२- ए० बार्नेट बार्नेट, बार्नेट बीछीछीछी ए० बीछीछीछी एडिन्ग्टन, पुस्तक ४६६
पर मुद्रा (बीछीछी बार्नेट, ' बार्नेट बार्नेट बी छीछी वाछी बीछीछीछी बार्नेट,
बीछीछी बार्नेट बार्नेट, बार्नेटछी ए० बीछीछीछी, १९६५, पुस्तक १०
छीछी बार्नेट)।
- १३- प्रतीक पुस्तक ६६६ ।
- १४- बी बार्नेट बार्नेट देखा ।

- १५- श्री सुन्नीकाठ जलार्थ प्रमाण, बरौच ग्राम पंचायत से साक्षात्कार
- १६- श्री श्रीकाठ प्रमाण, सुन्नीकाठ ।
- १७- श्री नाथिन हुसैन बन्धारी, जम्मा ।
- १८- मु० जमै बाऊ, बीछा ।
- १९- श्री हुसैन पाण्डेय, प्रमाण, ग्राम पंचायत बरौचा ।
- २०- मु० जमै बाऊ, बीछा ।
- २१- श्री पञ्च पाण्डेय, जम्मा, १६-१०-७५ ।
- २२- श्री रत्नेश सिंह - पिर्द जीट, ११-१०-७७ ।
- २३- श्री रामप्रसाद केसरी, जमैपुर, १२-१०-७५ ।
- २४- श्रीमती लक्ष्मणा देवी, पुर्न मुरावाय ।
- २५- श्री जगन्नाथ ठाकुर, टिका, २३-१०-७७ ।
- २६- मु० बाऊ, बीछा, १६-७-७५ ।
- २७- श्री जिनपारी सिंह, बीछापुर, २२-१-७५ ।
- २८- श्री तेज बहादुर सिंह, बरौचा, १७-१०-७५ ।
- २९- श्री जिनपारी बीछा १८-१०-७७ ।
- ३०- श्री तेज बहादुर सिंह बरौचा ।
- ३१- श्री जिनपारी जिनपारी, जम्मा ।
- ३२- श्री श्रीकाठ, बीछा ।
- ३३- श्री रामचन्द्र नाथी - जम्मा ।
- ३४- श्री जिनपारी हुसैन, जिनपारी, जम्मा १०-१०-७७ जिनपारी जिनपारी, बीछा, जिनपारी ।
- ३५- जिनपारी, बीछा ।

- १६- श्री मुहम्मद सुल्तान, कैलाश
- १७- श्री मुहम्मद अली खान, पिलापिया ।
- १८- श्री रामलाल, बाबुपुर ।
- १९- श्री मु० यशवीर कन्वारी, गीवालीपुर ।
- २०- श्री लक्ष्मीपुरा, लक्ष्मी, सिद्धा ।
- २१- श्री रामराव सिंह, गीवालीपुर ।
- २२- श्री लक्ष्मी (अनुष्ठीत बापि) गीवाली ।
- २३- श्री लक्ष्मी लक्ष्मी कन्वारी, टैला ।
- २४- श्री लक्ष्मी (अनुष्ठीत बापि) गीवाली ।
- २५- श्री देव नारायण सिंह, गीवाली ।
- २६- मु० लक्ष्मी लाल, गीवाली ।

३- बापि सिंह लाल बापि

राजनीतिक ज्ञान (Political Cognition)

प्रस्तुत अध्याय में सीखा किया गया चीज के नामों की राजनीतिक संस्थाओं, प्राधिकारियों एवं अधिकारों के वैश्विक ज्ञान की व्यवस्थापन का विवरण दिया गया है।

राजनीतिक जानकारी के लिए ज्ञान क्या कहते हैं ? के प्रत्येक उपरी में है नामों में ३६, ५ प्रतिक्रियां कुछ नहीं तथा ६०, १ प्रतिक्रियां आधार का, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों कहना बताया। "कुछ नहीं" कहनेवाले नामों ८० प्रतिक्रियां अनुपस्थित जाति में ३५ प्रतिक्रियां पिछड़ी जाति में, ३० प्रतिक्रियां मुसलमानों में तथा २०, ८ प्रतिक्रियां उच्च जाति में हैं जो सभी जातु काँ (विशेषकर २६ वर्ष के ऊपर के) सभी वैदिक स्तरों (विशेषकर निस्तार एवं आधार) तथा विपक्षी, कुचक (विशेषकर) मजदूर एवं व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। "आधार का, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों" कहनेवाले सभी जातियों, जातुओं, वैदिक स्तरों (निस्तारों की होकर) एवं व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक जानकारी के लिए अध्ययन करनेवालों में है ३६, ६ प्रतिक्रियां एवं ६०, १ प्रतिक्रियां की ६, २ प्रतिक्रियां तीन तथा ६, ३ प्रतिक्रियां चार आधार काँ का अध्ययन करते हैं। "एक आधार का" कहनेवाले नामों सभी जातियों एवं जातु काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। "दो" आधार का कहनेवालों में एक की मुसलमान नहीं पिछा। तीन आधार काँ का अध्ययन करनेवालों में सभी उच्च जाति (वैसे हीकर) के ६, १ प्रतिक्रियां नामों हैं, जो प्राथमिक स्नातक है नीचे तथा स्नातक एवं स्नातकोपर वैदिक स्तरों के विपक्षी कुचक एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। "जब" "मात्र" "देखते" "वैश्विक व्यवस्था" : "कमाल टाउन्स", "नार्वे सीखा पत्रिका" २०वीं. सभी का "कुल", "दिज्ञान" "साम्बन्ध" "विष्ट" "रहित बीबी" तथा "राष्ट्रपति" आधार का एवं पत्रिकाओं के नाम दिए गये। पत्रिकाओं का अध्ययन करनेवाले नामों २२, ३ प्रतिक्रियां उच्च (विशेषकर प्राकृत) १० प्रतिक्रियां अनुपस्थित, १० प्रतिक्रियां मुसलमान

तथा ५ प्रतिशत शिक्षी कारियों में से दो विपारी, व्यापक, दुष्कर एवं व्यापारी कारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि राजनीतिक जानकारी के लिए हम से अधिक उच्च कारों के नागरिक प्रवास करते हैं। राजनीतिक कारों की व्यवस्था प्रदान करनेवालों में से २४, ५ प्रतिशत उच्च व्यापारिक, पत्रकारों एवं मुक्तियों का व्यवधान करते हैं। निम्न स्पष्ट है कि व्यवस्था प्रदान करने से राजनीतिक अनिच्छा कायम होती है।

यहां आपके परिवार में रेलियों या हॉटेलर से १ के उपर में नागरिकों में ५२, ६ प्रतिशत नहीं तथा ४०, ४ प्रतिशत का क्या। रेलियों का हॉटेलर रखने वाले नागरिक ४, ४ प्रतिशत, १० प्रतिशत मुक्तमान, ३० प्रतिशत शिक्षी तथा २० प्रतिशत अनुसूचित कारियों में से दो की वायु कारों, विचारक स्तरों एवं व्यवस्था कारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। २४, ५ प्रतिशत नागरिक निम्न पाठ रेलियों या हॉटेलर की से किन्तु व्यापारिक कारों का नहीं करते हैं। ये नागरिक २० प्रतिशत अनुसूचित १६, ५ प्रतिशत उच्च, १० प्रतिशत शिक्षी तथा १० प्रतिशत मुक्तमान, कारियों में से दो की वायु कारों, विचारक स्तरों (स्वातंत्र्य से नीचे एवं ऊपर नहीं) एवं दुष्करों मजदूरों तथा व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ३२, ६ प्रतिशत नागरिक रेलियों या हॉटेलर रखने हुए की व्यापारिक एवं पत्रकारों मजदूर हैं। ये नागरिक ४१, ७ प्रतिशत उच्च, ४० प्रतिशत मुक्तमान तथा ३० प्रतिशत शिक्षी कारियों में से दो की वायु कारों, विचारक स्तरों (निरक्षरों की छोड़कर विशेषकर चार स्तर के ऊपर) एवं विपारियों, दुष्करों, व्यापारियों, नीचों तथा व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। २५ प्रतिशत नागरिकों के पास न तो रेलियों या हॉटेलर से १ के व्यापारिक कारों का नहीं करते हैं। ये नागरिक ६० प्रतिशत अनुसूचित, ३५ प्रतिशत शिक्षी, २० प्रतिशत मुक्तमान तथा ११, १ प्रतिशत उच्च कारियों में से निम्न से ६२, ५ प्रतिशत की वायु ३०-से ७० वर्ष के मध्य हैं। इन नागरिकों में ६२ प्रतिशत निरक्षर एवं व्यापारिक ३० प्रतिशत प्राथमिक एवं चार स्तर तथा ५ प्रतिशत स्वातंत्र्य, विचारक स्तरों के दुष्कर, मजदूर, व्यापारी तथा विपारियों हैं। राजनीतिक कारों के कार्यों में से ४२ प्रतिशत के पास रेलियों या हॉटेलर से। इस विवरण से स्पष्ट है कि रेलियों या हॉटेलर की मुक्तानी से अधिक कारों का

उपयोग एवं वे वार्षिक उच्च वाणिज्य एवं एवं वे कम अनुसूचित वाणिज्य के नागरिक कहते हैं ।
 क्या इसके अभाव का प्रमुख कारण वार्षिक किम्वद्वारा, राखीविक किताब का
 अभाव एवं अलग-अलग के कारणों की कमी है ? अंतराष्ट्रीय वाणिज्य के अभाव में भी राखीविक
 वाणिज्यी प्रदान करनेवाले रेडियो का हार्डवेयर के नागरिकों का उपयोग भी कहा
 किया किना अन्तर्गत के वाणिज्य के भी कम वार्षिकों में ही रहा है जो कि राखीविक
 आधीकरण में अन्तर्गत का उचित कहा है ।

जहाँ परिवार के किसी अन्य सदस्य का पता है या
 समाचार मिली है ? के प्राप्त ऊपरों के कुछ अन्य प्रमाणों होते हैं । परिवार के
 सदस्यों का २० प्रतिशत अन्य १६ प्रतिशत पिछड़ी १५ प्रतिशत मुसलमान तथा
 ६ प्रतिशत अनुसूचित जातियों में समाचार पत्र पढ़ते हैं या समाचार मिली है । परिवार
 में पढ़ाता ६२ प्रतिशत अन्य ; ५० प्रतिशत पिछड़ी ; ३३ प्रतिशत मुसलमान तथा
 २० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में, समाचार मिली है या समाचार पत्र पढ़ते हैं ।
 समाचार पत्र पढ़नेवाले या मिलनेवाले की पुरुष अन्य या पढ़ाताई क्योंकि
 श्री शिक्षा के नितांत क्वाब के तथा पिछड़े क्वाब की व्यवस्थाओं के मातियों में
 राजनीतिक उत्प्रेक्षा न्यूनतम स्तर पर है । वार्षिक तब हुआ का पुरुष नागरिकों
 के कहा मिली है पर समझते नहीं हैं । समाचार की पुनर्र पी व एकमेवाले नागरिक
 निर्दार या साधार की शिक्षक योग्यता रही है । इससे स्पष्ट होता है कि
 राजनीतिक व्यक्तित्व उत्पन्न होने के लिए शिक्षक योग्यता आवश्यक है । अनुसूचित
 जाति के नागरिकों में समाचार पत्र पढ़ने एवं मिलनेवालों की संख्या कम है कम है ।

किस समय समाचार पत्र पढ़ने या सुनने की प्रवृत्ति बच्चा उत्पन्न होती है ? के उपर में वास्तविकी में ७२, ३ प्रतिशत मुर्दे १५, २ प्रतिशत पुनाय १०, ५ प्रतिशत छेद ६, ५ प्रतिशत राक्षसीय परिवर्तन, ६, ५ प्रतिशत " छेद" ६, ५ प्रतिशत समाचार के समय, ५, २ प्रतिशत बाहु २, ६ प्रतिशत दुष्टता २, ६ प्रतिशत विवाद १, ३ प्रतिशत पीडा, ३ १, ३ प्रतिशत प्रलय १, ३ प्रतिशत क्षीयता १, ३ प्रतिशत जन्मदिन १, ३ प्रतिशत " बाबांर माय" तथा १, ३ प्रतिशत छाडी समय के समय में समाचार सुनने या पढ़ने की प्रवृत्ति बच्चा व्यक्त की है।

उपरोक्त है स्पष्ट है कि जिस समय असाधारण स्थिति उत्पन्न होती है उस समय समाचार के प्रति उत्पुष्टता वायुमय हो जाती है । मुद्दे, चुनाव एवं वास्तविक घटनाएँ राजनीतिक जाकीकरण में कभी-कभी उत्पन्न हो जाती हैं क्योंकि नागरिकों का ध्यान ऐसी परिस्थितियों में विशेष लगाने हो जाता है और राष्ट्रीयता का भाव प्रबल होता है । जाकाकरण ही प्रसारित समाचारों के समय पर धुने की प्रकृति प्रकट करनेवाले नागरिक समुदाय का है । तबकात के लोगों में प्रकट प्रकृति का उत्पन्न होता वह तबकात की प्रकृति प्रकट करता है कि व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति में नागरिक व्यस्त हैं जो देश के विनाश में बाधकारी करने का समय नहीं है । क्या कहीं-कहीं कात में बीका निवास कलित होता या रहा है ?

‘ चुनाव और राजनीतिक मुद्दा के लिए आप जिस पर अधिक विश्वास करते हैं ? के प्रश्न उपरोक्त में नागरिकों ने ३८, ३ प्रतिशत ‘रेडियो’ २०, ६ प्रतिशत समाचार पत्र’ १४, ६ प्रतिशत राजनीतिक समाचार’ ७, ६ प्रतिशत ‘पत्रिका’ १, ३ प्रतिशत का पर अधिक विश्वास प्रकट किया किन्तु ६, ६ प्रतिशत जिन्ही पर नहीं विश्वास करते हैं । और केवल ३, ६ प्रतिशत उत्तर रहे । ‘रेडियो’ पर अधिक विश्वास प्रकट करनेवाले नागरिक ३६, २ प्रतिशत उच्च ६० प्रतिशत पिछड़ी, ३० प्रतिशत मुख्यमान एवं ३० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में हैं किन्हीं के ६३, ६ प्रतिशत ने कहा कि ‘जापातकात में विश्वास नहीं’ । इसी स्पष्ट है कि नागरिकों ने जापातकात में ‘रेडियो’ पर विश्वास ही किया था । ‘रेडियो’ पर विश्वास करनेवाले नागरिक कभी जायुक्त, शैपिक स्तरों एवं व्यवसाय कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं । समाचार पत्रों पर अधिक विश्वास करनेवाले नागरिक ४० प्रतिशत अनुसूचित, ३६, २ प्रतिशत उच्च, १५ प्रतिशत पिछड़ी तथा १० प्रतिशत मुख्यमान जातियों में हैं जो कभी जायुक्त कर्तों, शैपिक स्तरों एवं व्यवसाय कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक समाचार पर अधिक विश्वास प्रकट करनेवाले नागरिक २५ प्रतिशत पिछड़ी, २० प्रतिशत मुख्यमान तथा ११ प्रतिशत उच्च जातियों में हैं । इसी स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के नागरिक राजनीतिक समाचार पर अधिक विश्वास किन्तु नहीं करते हैं किन्तु अन्य कारण यह भी है कि ४० प्रतिशत नागरिकों ने कभी जायुक्त मुद्दा ही नहीं है । राजनीतिक समाचार पर अधिक विश्वास करनेवाले नागरिक कभी जायुक्त कर्तों, शैपिक स्तरों (निरक्षर

जहाँ साधारण होकर) व्यवसाय नहीं (व्यवसाय होकर) का प्रतिनिधित्व करती हैं । यकिन पर यकिन विश्वास करनेवाले नागरिक १४, = प्रत्यक्ष उच्च तथा १० प्रत्यक्ष अनुसूचित नागरिकों में हैं किन्तु यहाँ प्रत्यक्ष राजनीतिक वर्गों के समर्थ हैं जो कोई स्तूप या स्तूपी स्तूप की क्षमता सीमितता नहीं है और विपरीत रूप से जहाँ व्यापारी हैं । किन्तु पर भी यकिन विश्वास न करनेवाले नागरिक ४० प्रत्यक्ष मुकदमा तथा २, = प्रत्यक्ष उच्च नागरिकों में हैं । इसी स्पष्ट है कि बाकी प्रत्यक्ष मुकदमा नागरिकों में, व्यापार पर, जहाँ जहाँ यकिनों पर विश्वास नहीं करते हैं । जहाँ यह राजनीतिक विश्वास है जहाँ जहाँ राजनीतिक वर्गों के लिए नहीं करती हैं । जहाँ यह विश्वास करनेवाले पिछड़ी जाति के साधारण रूप से हैं । अनुपार करनेवाले नागरिक २० प्रत्यक्ष अनुसूचित तथा ५ प्रत्यक्ष पिछड़ी जाति में हैं जो मजदूरी करते हैं । उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक सूचना प्रदान करनेवाले किन्तु भी साधारण पर नागरिकों का पूर्णरूप से विश्वास नहीं है और राजनीतिक जहाँ का सीधे साधन है ।

भारत के तीन तीन प्रमुख राजनीतिक वर्ग हैं १ के ऊपर में नागरिकों ने इस प्रत्यक्ष कटिब, ७६, ३ प्रत्यक्ष, जनसंख्या १५, २ प्रत्यक्ष, नागरिक लोकसभा ५३, ६ प्रत्यक्ष, लोकसभा ३२, = प्रत्यक्ष, अनुसूचित २१, ९ प्रत्यक्ष जनता पार्टी, १०, ५ प्रत्यक्ष लोकसभा कटिब, ५, २ प्रत्यक्ष विप्लव महासभा ३, ६ प्रत्यक्ष रामराज्य परिषद् ३, ६ प्रत्यक्ष मुकदमा लोक, १, ३ प्रत्यक्ष मुकदमा मुकदमा मजदूर तथा १, ३ प्रत्यक्ष प्रतिक मुकदमा स्तूपी जाति राजनीतिक वर्गों के नाम लिए । इसी स्पष्ट है कि राजनीतिक वर्गों में कटिब की जानकारी सभी नागरिकों की है, जनसंख्या के वैधानिक विश्लेषण के समय में ६०, ४ प्रत्यक्ष नागरिकों ने इसका नाम लिया और नागरिक लोकसभा के वैधानिक विश्लेषण के समय में ७६, ३ प्रत्यक्ष नागरिकों ने इसका नाम लिया । जनसंख्या की न जाननेवाले नागरिक १, ३ प्रत्यक्ष क्षेत्र तथा १, ३ प्रत्यक्ष पिछड़ी जाति के हैं । भारतीय लोकसभा का नाम न बताकर नागरिक २० प्रत्यक्ष अनुसूचित २५ प्रत्यक्ष उच्च, १५ प्रत्यक्ष पिछड़ी तथा १० प्रत्यक्ष मुकदमा नागरिकों में हैं किन्तु स्पष्ट होता है

कि अनुसूचित तथा अन्य वर्गों में भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली एवं प्रभाव
व्युत्पन्न है । अतः के नाम की इस प्रविष्टि नामावली की जानकारी के प्रत्यक्ष
कारण उनका अतीत, अतीत, प्रसार, प्रभाव एवं वर्तमान है । मुख्यतः हीन एवं
मुख्यतः भारतीय का नाम वर्तमाना है अतीत नामावली मुख्यतः हीन एवं वर्तमान का ही
विशेष नामावली है इन दोनों राजनीतिक वर्गों का नाम नहीं दिया ।

चौथी विधान का शीर्षक है कि यह का प्रत्याक्षिपि
विधान का प्रभाव में किसी प्रकार १ के अन्तर् में ७३, ७ प्रविष्टि नामावली में कुछ
तथा ८, १ प्रविष्टि में बहुत कुछ का नाम वर्तमान है ७, १ प्रविष्टि नामावली
अनुसार है । किसी प्रत्याक्षिपि (विधान) के अन्तर् का कुछ नाम वर्तमाना है नामावली
१० प्रविष्टि मुख्यतः २०, १ प्रविष्टि अन्य, ७० प्रविष्टि पिछड़ी तथा १० प्रविष्टि
अनुसूचित वर्गों में है जो अतीत वायु वर्ग, अतीत स्तरों एवं अन्यतः वर्गों
का प्रतिनिधित्व करते हैं । विधान के बहुत कुछ का नाम वर्तमाना है नामावली
२० प्रविष्टि अनुसूचित २० प्रविष्टि पिछड़ी तथा ११, ६ प्रविष्टि अन्य वर्गों में
(विशेषकर राज्या) हैं जो अतीत वायु वर्ग (६४ प्रविष्टि भारतीय वर्ग है अन्तर्)
अतीत स्तरों (६७ प्रविष्टि निरक्षर एवं अक्षर) एवं अन्यतः वर्गों (विधानी
लोकतंत्र) का प्रतिनिधित्व करते हैं । अनुसार वर्तमाना है नामावली ३० प्रविष्टि अनुसूचित
१० प्रविष्टि पिछड़ी तथा १० प्रविष्टि मुख्यतः वर्गों में है जो १६ है ४१ वर्गों
के वायु वर्गों, ६६, ६ प्रविष्टि निरक्षर एवं अक्षर हैं अन्य अतीत स्तरों तथा
विधानी वर्गों, यक्षुर एवं अन्य अन्यतः वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
राजनीतिक वर्गों के २०, २ प्रविष्टि वर्गों में अतीत शीर्षक के विधान के अन्तर् का
नाम कुछ वर्तमाना है राजनीतिक लक्ष्यकरण का परिणाम है ।

विधान का है पिछड़ी प्रकार में द्वितीय स्थान कि यह
के प्रत्याक्षिपि का रत्न १ का अन्तर् ७६ प्रविष्टि नामावली में कुछ तथा ७, १ प्रविष्टि
में बहुत विधान अतीत १०, १ प्रविष्टि नामावली अनुसार है । कुछ अन्तर् वर्तमाना है
नामावली २०-४ प्रविष्टि अन्य, २० प्रविष्टि मुख्यतः, ७० प्रविष्टि पिछड़ी तथा
६० प्रविष्टि अनुसूचित वर्गों में है जो अतीत वायु वर्ग, अतीत स्तरों एवं

अवसाय वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल उपर देखाते नागरिक, २० प्रतिशत अनुसूचित १० प्रतिशत पिछड़ी तथा ५, ६ प्रतिशत उच्च जातियों में है जो केवल है पौन वर्ग (हकीम है पौन वर्ग होकर) के जायु वर्ग, विस्तार, छापर प्राथमिक एवं कार्य मूल केन्द्र केन्द्र स्तरों तथा मुनि, मकुरी एवं नीकरी के अवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल देखाते नागरिक २० प्रतिशत पिछड़ी २० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत उच्च जातियों में है जो की जायु वर्गों केन्द्र स्तरों (स्नाक एवं स्नाकरी होकर) तथा विपारी, मकुर, मकुर एवं व्यापारी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के २५, ६ प्रतिशत अवसायों में विपारि में प्रतीय स्थान प्राप्त करनेवाले प्रत्याक्षि के कठ का मूल नाम बताया।

विपारि का के पिछड़े पुनर् में प्रतीय स्थान कि कठ के प्रत्याक्षि का रण ? का उपर ६०, ६ प्रतिशत नागरिकों में कुल तथा ५, २ प्रतिशत में कुल विपारि की ३४, २ प्रतिशत नागरिक कुल रहे। कुल उपर देखाते नागरिक ३० प्रतिशत मुख्यमान, ६६, ५ प्रतिशत उच्च (पिछड़कर जाऊ) ६० प्रतिशत पिछड़ी तथा २० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में है जो की जायु वर्ग, केन्द्र स्तरों एवं अवसाय-वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल उपर देखाते नागरिक २० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत पिछड़ी जाति में है जो की केवल है पौन एवं पौन के पौन वर्ग के जायु वर्ग, विस्तार, छापर। प्राथमिक एवं स्नाक केन्द्र स्तरों तथा विपारी, मकुर, मकुर एवं उच्च व्यावसायिक वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल देखाते नागरिक ६० प्रतिशत अनुसूचित, ३०, ५ प्रतिशत उच्च, ३० प्रतिशत पिछड़ी तथा ३० प्रतिशत मुख्यमान जातियों में है जो की जायु वर्गों (पिछड़कर हकीम वर्ग है कपर) केन्द्र स्तरों (स्नाक एवं इसके कपर की होकर) तथा अवसाय वर्गों (व्यापार एवं नीकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के ३० प्रतिशत अवसायों में विपारि में प्रतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रत्याक्षि के कठ का नाम मूल बताया।

अपरीक वर्गों प्रती के उपरों के विस्तीर्ण है स्पष्ट है कि कुल उपर देखाते नागरिकों में प्रम स्थान उच्च जाति, प्रतीय मुख्यमान, प्रतीय

पिछड़ी बाधित तथा पक्षीय अनुसूचित बाधित का है। राजनीतिक पक्षों के ७६, १ प्रविष्ट
जन्यों ने हृद उत्तर किया है किन्तु प्रविष्ट सभी बाधितों के भी उत्पत्ति है।
इसके स्पष्ट है कि राजनीतिक पक्षों के जन्यों में राजनीतिक उद्देश्य अधिक होती है।

प्रत्येक राजनीतिक पक्ष के एक एक पक्षीय कीर्ति भेदा
का नाम बताये है के उत्तर में बाधितों ने ६२, १ प्रविष्ट कट्टर, ६१, २ प्रविष्ट
भारतीय लोकसभा ६० प्रविष्ट जन्य, ६, २ प्रविष्ट लोकसभा कट्टर, २२, ३ प्रविष्ट
जनता पार्टी, ६, २ प्रविष्ट लोकसभा, ५, २ प्रविष्ट कम्युनिस्ट तथा २, ६ प्रविष्ट
मुख्यतः जीव के नेताओं के नाम बताये। कट्टर के नेताओं में ७० प्रविष्ट श्रीमती
श्रीमती बाधित तथा २२ प्रविष्ट श्री श्रीमती नन्दन पट्टनायक, श्री श्रीमती राम,
श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती बरुवा, श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी,
श्री श्रीमती बाधित तथा श्री श्रीमती शिवाजी शिवाजी के नाम छिपे हैं। भारतीय
लोकसभा के नेताओं में ६४ प्रविष्ट श्रीमती शिवाजी तथा १६ प्रविष्ट श्री राम
नारायण शिवाजी श्री श्रीमती शिवाजी के नाम बताये हैं। जन्य के नेताओं में
६४ प्रविष्ट श्री शिवाजी शिवाजी तथा १६ प्रविष्ट श्रीमती शिवाजी श्री शिवाजी
मुख्यतः श्रीमती शिवाजी के नाम बताये। लोकसभा कट्टर के नेताओं में श्री श्रीमती शिवाजी
शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी श्री श्रीमती शिवाजी के नाम बताये हैं। कम्युनिस्ट
पार्टी के नेताओं में श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी
श्रीमती शिवाजी श्री श्रीमती शिवाजी के नाम बताये हैं। लोकसभा कट्टर के नेताओं में
श्री श्रीमती शिवाजी श्री श्रीमती शिवाजी के नाम बताये हैं। अन्य पक्षों के
श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी के नाम बताये हैं।
श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी के नाम बताये हैं।
श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी के नाम बताये हैं।
श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी, श्री श्रीमती शिवाजी के नाम बताये हैं।

राजनीतिक पक्षों के कीर्ति नेताओं का नाम ६४, ८
प्रविष्ट बाधितों ने बताया है ५, २ प्रविष्ट अनुतर है। कट्टर के नेताओं का

नाम की बाधियाँ, वायु बर्षा, छिदाक स्तरों एवं व्यवसाय वर्गों के नामांशों में बताया । कार्य के नेताओं का नाम ३० प्रचिन्त व्युत्पन्न ३० प्रचिन्त पिछड़ी, ३० प्रचिन्त पुस्तकानां एवं ११, १ प्रचिन्त उच्च (ज्ञात नही) बाधियों के नामांशों में नहीं बताया । भारतीय लोकसभा के नेताओं का नाम ६० प्रचिन्त व्युत्पन्न, २० प्रचिन्त पुस्तकानां, २० प्रचिन्त पिछड़ी तथा ११, ६ प्रचिन्त उच्च, बाधियों के नामांशों में नहीं बताया । यह विश्लेषण है स्पष्ट है कि राक्षसीय वर्गों के नेताओं के नामों का ज्ञान हम है अधिक उच्च बाधियों एवं हम है कम व्युत्पन्न बाधियों के नामांशों का है । राक्षसीय वर्गों के १६, २ प्रचिन्त व्युत्पन्न में अपनी वर्गों के शीर्षक प्रधान नेताओं के नाम बताये ।

प्रत्येक राक्षसीय वर्ग की ओर का प्रमुख कार्य करते हैं ? के ऊपर में नामांशों में ३८, १ प्रचिन्त पुनाव करना ३२, ८ प्रचिन्त उच्च-प्रकाश, २१, १ प्रचिन्त जन समस्या समाधान ११, ८ प्रचिन्त मजदूरी-आक्रमण, ११, ८ प्रचिन्त जातीयता १, ३ प्रचिन्त नीति निर्माण १, ३ प्रचिन्त स्थायी शिक्षा १, ३ प्रचिन्त नीतिवादी १, ३ प्रचिन्त नेता निर्देश, १, ३ प्रचिन्त शिक्षात्मक प्रचार तथा १, ३ प्रचिन्त जन-समा-सुविधि के कार्यों को बताया । इसी स्पष्ट है कि राक्षसीय वर्ग के द्वारा जमावित शीर्षक प्रमुख कार्य पुनाव करना, उच्च प्रकाश (राक्षसीय निर्माण प्रभाव), जन समस्या, समाधान तथा नीति निर्माण (शिक्षा दीर्घ दीर्घ एवं उच्च) तथा शिक्षात्मक प्रचार एवं जन समा सुविधि (राक्षसीय समाधीकरण) के बिना व्युत्पन्न की बाधियाँ वायु बर्षा, छिदाक स्तरों एवं व्यवसायों के नामांश करते हैं ।

राक्षसीय वर्गों के और का बाधियों करनी बाधियों ? के ऊपर में नामांशों में १४, ४ प्रचिन्त वक्ता की सेवा १३, २ प्रचिन्त बाधियों की पूर्ति ११, ६ प्रचिन्त पैठ की प्रगति ६, ३ प्रचिन्त ज्ञान प्रसार ६, ६ प्रचिन्त अपने बाधियों (बर्षा) की पूर्ति, ३, ६ प्रचिन्त नरीनी विचारण ३, ६ प्रचिन्त पुनाव मजदूरी की कार्यवाही, २, ६ प्रचिन्त प्रवृत्ति-निवारण तथा १, ३ प्रचिन्त संशुद्धि तथा की बाधियों व्यवसायों के नामांश करते हैं ३२, ८ प्रचिन्त नामांशों में अपनी

बाह्यार्थ का विवरण नहीं किया। इन धृष्टों के स्पष्ट है कि राक्षसीय कर्तों के कर्ता की ओरता में राक्षसीय, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक चीजों में भी जो वा रही हैं जो कि कभी एक-छायाओं एवं उन्मीलितियों का असाध्य मूल्यार्थ का परिणाम है। अपने वाक्यों की पूर्ति एवं पुनरावृत्ति के परभाव 'के' का उल्लेख की ओरता में राक्षसीय कर्तों में अत्यन्त चीजों का उल्लेख किया है।

'प्रवृत्ताचार विचारण' की बाह्य की पूर्ति के लिए राक्षसीय कर्तों की व्यापक स्तर पर अभिमान ब्रह्माणा पादिर और इसके लिए सभी राक्षसीय कर्तों की वाचिक प्रदान करना चाहिए। बाह्य के प्रति वस्तुतः रचनेवाले नागरिक ६० प्रतिशत अनुप्राणित ३५ प्रतिशत पिछड़ी, २० प्रतिशत उच्च तथा २० प्रतिशत मुख्यमान, वाचिकों में है जो की बाह्य कर्तों (विशेषकर २५ वर्ष के नीचे) शिक्षक स्तरों का व्यवसायों कर्तों का (व्यवसाय छोड़कर) प्रतिनिधित्व करते हैं। वाक्यों यह है कि ६, ३ प्रतिशत नागरिकों ने कहा 'कोई बाह्य नहीं'। इसके स्पष्ट है कि राक्षसीय कर्तों की नागरिकों की ओरताओं की पूर्ण करनेवाली की अपनी समता में विचार करना चाहिए।

राक्षसीय एक पुनर्वाची में का कि कि कर्तों में व्यव करते हैं १ के उतर में नागरिकों ने ६२, २ प्रतिशत प्रचार बाधन एवं बाधनी, ५२, ६ प्रतिशत कार्यकर्ता ५२, ६ प्रतिशत 'उत्कीर्ण' तथा ६, ५ प्रतिशत दान एवं धन्य कर्तों में व्यव के प्रीति की बताया। प्रचार बाधन एवं बाधनी पर चीनवाले व्यव का अनुम ६२, २ प्रतिशत नागरिकों ने किया जो की वाचिकों, बाधुर्वा शिक्षक स्तरों एवं व्यवसाय-कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कार्यकर्ताओं पर कि वाचिक व्यव का अनुम ५२, ६ प्रतिशत नागरिक करते हैं। जो ६६, ६ प्रतिशत उच्च, ६० प्रतिशत अनुप्राणित, ४० प्रतिशत मुख्यमान तथा ४० प्रतिशत पिछड़ी वाचिकों में है और की बाधु कर्तों, शिक्षक स्तरों एवं व्यवसाय-कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'उत्कीर्ण' के रूप में कि वाचिक व्यव की जानकारी ६६, २ प्रतिशत उच्च, ५० प्रतिशत पिछड़ी, ५० प्रतिशत अनुप्राणित तथा २० प्रतिशत मुख्यमान, वाचिकों के नागरिकों की है।' की केन्द्रीय पाठ्यपत्र के कुलपुत्र केन्द्रीय उच्च विभाग १९६४,

में कार्यकर्ताओं पर अधिक का व्यय किया गया, अधिकतर शिक्षा या चरित्र कार्यों के पीछरी लोगों को का किया गया ; श्री रामस्वर पाण्डेय, स०स०सी० के चुनाव १९३७ में इस प्रकार रुपये व्यय हुए जिनमें मुख्य का है नरकाश्रम ग्राम प्रवास के विषय रुपये केने का प्रत्येक है^१ ज्ञातका है कि उपरोक्त दोनों प्रत्यासी काग्रेस के रहे हैं । चुनाव हाउसवालों एवं कलाओं को राज्य का भिन्न माने की जानकारी की नागरिकों को है ।^२ कच्छ, कच्छ, काशीका एवं ज्ञान के लोको में उत्कीर्ण दिने जाने का नागरिकों ने विवर्ण फिर की कि एकांक काग्रेस के प्रत्यासीका ज्ञात किया जाना ही पुष्ट हुआ ।^३ रुपये केकर कने फिर में प्रत्यासी कड़ा करना एवं कैडाना^४ की उत्कीर्ण की केनी में सम्मिलित है । ६० रुप रुपये का एक कटा की नरकाश्रम प्रवास भिन्न (जनक प्रत्यासी) ने विवर्ण ज्ञान निवर्ण १९३७ ई० में माकल उत्कीर्ण विवर्ण परस्वती ज्ञान केनी की ज्ञान किया ; २० रुप स्वीय राक्षसतन पाण्डेय (काग्रेस प्रत्यासी) ने विवर्ण ज्ञान निवर्ण १९३७ ई० में, केन ज्ञान ज्ञान, ज्ञानका की कुली के फिर ज्ञान किया ।^५ का की व्यय का रूप बताया गया । उपरोक्त लोको है स्पष्ट होता है कि राक्षसका का ज्ञानका निवर्ण में ज्ञान-विधि के फिर ज्ञान की पानी की तरह बताया है । यदि यही का ज्ञानाका के मन्थान्तर ज्ञान में व्यय किया जाय तो नागरिकों का प्रवर्णन अधिक एवं स्थायी ही ज्ञान है और राक्षसका ज्ञानाका में केन-विधि की ज्ञानी है ।

काग्रेस चुनाव कि कारणों है नीत जाती है^६ के प्राप्ति उपरो की ज्ञानका प्रवर्ण है :-

विषय के कारण		वागवर्तियों की दृष्टि में प्रविष्टि			
क्र.सं.	नाम	उत्पन्न काति	विपरीत काति	अनुपुनित काति	मुसमान
१	वागवर्तियों एवं मुसमानों का अन्तर्गत	४१, ६	५०	५०	४०
२	प्रातः	३६, ६	५०	५०	५०
३	उत्पन्न	३६, ६	३५	१०	२०
४	अन्तर्गत विपरीत काति	५०, ००	१५	-	२०
५	अन्तर्गत अन्तर्गत	२५, ००	१५	१०	६०
६	अन्तर्गत	१५, ००	३०	-	-
७	अन्तर्गत	१५, ००	१५	१०	१०
८	अन्तर्गत अन्तर्गत	५, ४	१५	२०	१०
९	अन्तर्गत अन्तर्गत	११, ६	५	-	-
१०	अन्तर्गत	५, ६	१०	-	-
११	विपरीत काति अन्तर्गत अन्तर्गत	५, ६	-	-	-
१२	अन्तर्गत	२, ४	-	-	-

उपरोक्त साक्ष्य के निम्नलिखित सूत्र स्पष्ट होते हैं :-

- (१) उच्च वायु के नागरिकों की दृष्टि में पुनर्वास की विषय के प्रश्न प्रायः कारणों का प्रश्न और विरोधी पक्ष, शक्तियों एवं मुकदमाओं का समीक्षा, तथा, उत्पीड़न एवं अधिक मन व्यय है।
- (२) निम्न वायु के नागरिकों की दृष्टि में पुनर्वास की विषय के प्रश्न प्रायः कारणों का प्रश्न और शक्तियों एवं मुकदमाओं का समीक्षा, तथा, उत्पीड़न, प्रतीक और (छोटी सामान्य व्यवस्था के) और विरोधी पक्ष, अधिक मन व्यय, बर्बाद एवं निर्धन-साक्षात्कार है।
- (३) अनुपस्थित वायु के नागरिकों की दृष्टि में पुनर्वास की विषय के कारणों में प्रश्न शक्तियों एवं मुकदमाओं का समीक्षा, ज़िम्मेदार, तथा, ज़िम्मेदार निर्धन साक्षात्कार एवं पूर्ण उत्पीड़न, अधिक मन - व्यय और बर्बाद की स्थिति प्राप्त है।
- (४) मुकदमा नागरिकों की दृष्टि में पुनर्वास की विषय के कारणों में प्रश्न अधिक मन-व्यय, ज़िम्मेदार- शक्तियों एवं मुकदमाओं का समीक्षा और तथा ; ज़िम्मेदार - उत्पीड़न और और विरोधी पक्ष एवं पूर्ण - बर्बाद तथा निर्धन साक्षात्कार, की स्थिति प्राप्त है।

अप्रतिष्ठा तथा के द्वारा निम्न नये उत्पीड़न, व्यवहार, कम और होता है तथा विरोधी पक्षों की यह व्यवस्थाओं ने स्वीकारण तथा स्वीकारण के लिए प्रत्यक्ष विरोधी पक्षों की वास्तविकता बिना परिणामस्वरूप ' कलहा बाटी' का अनुभव हुआ और अग्रिम की तथा केन्द्र एवं अन्य राज्यों में व्याप्त हो गई, इससे स्पष्ट हो जाता है कि और विरोधी पक्षों के कारण की अग्रिम पुनर्वास में विषय प्राप्त करती रही। शक्तियों एवं मुकदमाओं ने संवैधानिक पुनर्वास प्रायः ७० में अग्रिम की तथा समीक्षा बहुत कम किया बिना परिणामस्वरूप अग्रिम की पराक्रम हुई इसी की विवेक हो जाता है कि इन वास्तविकताओं के समीक्षा के अग्रिम की विषय मिलती रही। इन दोनों वास्तविकताओं ने यह प्रमाणित

कर दिया कि उच्च वाति के नागरिकों का कट्टर हो किन्तु के कारणों का
मुल्भावक हुए रहा ।

‘ पुनर्वा’ के कारण कदाय भी क्या बढ़ा है ? के प्रत्यक्ष
उपरी में नागरिकों ने २४, २ प्रत्यक्ष ‘ उच्च’ का ११, = प्रत्यक्ष ‘ उच्च’
की बुद्धि बताया । कदाय स्पष्ट है कि पुनर्वा है ‘ उच्च’ में बुद्धि हुई है किन्तु
कदाय उच्च प्रत्यक्ष कदाय २४ प्रत्यक्ष किन्तु, = १, ४ प्रत्यक्ष उच्च (वाति
६० प्रत्यक्ष) तथा २० प्रत्यक्ष मुल्भावक वातियों के नागरिक करते हैं जो कदाय
वातु कदाय, उच्चक सारी तथा कदाय कदाय का प्रत्यक्षित्व करते हैं । पुनर्वा
है ‘ उच्च’ में बुद्धि का कदाय कदाय वाति के नागरिक किन्तु नहीं करते जो
यह प्रमाणित करता है कि पुनर्वा के पुनर्वातियों का प्रभाव का है कदाय कदाय
वाति पर बढ़ा है । ‘ उच्च’ में बुद्धि का कदाय कदाय उच्च, किन्तु एवं
मुल्भावक वातियों के नागरिक हैं जो कदाय वातु कदाय (२४ है ११ वर्ष की होकर)
उच्चक सारी एवं कदाय कदाय (कदाय एवं कदाय होकर) का प्रत्यक्षित्व
करते हैं ।

किन्तु किन्तु का पुनर्वा में कदाय कदाय है जीव
जीव कदाय कदाय हुए के उपरी है स्पष्ट हुआ कि ६३ प्रत्यक्ष कदायकों की किन्तु
की भी कदायक का कदाय नहीं हुआ जो कदाय वातियों, कदाय कदाय के
वातु कदाय, उच्चक सारी एवं कदाय कदाय का प्रत्यक्षित्व करते हैं । २४ प्रत्यक्ष
कदायकों ने कदाय की कदायक का कदाय किया । कदाय के उच्चकियों है
कदायक का कदाय ११, २ प्रत्यक्ष कदायक के २, २ प्रत्यक्ष तथा कदाय के
१, ६ प्रत्यक्ष कदायकों की हुआ । कदाय के उच्चकियों की कदायक का
कदाय कदाय कदाय २४, २ प्रत्यक्ष उच्च वाति में तथा ११, = प्रत्यक्ष किन्तु
वाति में है । कदाय यह स्पष्ट होता है कि किन्तु किन्तु का पुनर्वा १६७४ ई० में
उच्च वातियों के कदायकों ने कदाय कदाय कदाय की राधिराम कदाय की
कदाय कदाय का किया जो कि कदाय कदाय का प्रभाव कदाय कदाय उच्च वाति

के मतों के विचारों से भी अखीराम माधव विष्णु पुर विनी अग्रगण्य का मुका
 किया । भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की अग्रगण्यता का अनुभव करनेवाले ११, =
 अधिकतम मतदाता हैं जो कि उनी पिछड़ी जाति के हैं । इससे स्पष्ट होता है कि
 ११, = अधिकतम पिछड़ी जाति के मतदाताओं ने भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली के
 विकास में महत्त्व दिया क्योंकि २२, २ अधिकतम पिछड़ी जाति के मतदाताओं ने
 भारतीय प्रणाली की महत्त्व दिया । अतः के व्यवस्थाओं की अग्रगण्यता का
 अनुभव मुझसे मतदाता ने किया । अतः विचारण से स्पष्ट होता है कि
 पराजित यह जो विष्णु यह दोनों के व्यवस्थाओं के मतदाता मतदाताओं के
 अग्रगण्यता अग्रगण्य करते हैं जो कि राजनीतिक व्यवस्थाओं का परिचायक है ।
 राजनीतिक वर्गों के ६१, ५ अधिकतम व्यवस्था ने अपने मतदान से दोनों की अग्रगण्यता
 का अनुभव किया जो कि उनकी राजनीतिक क्षमता, मानवता और प्रेरणा
 का परिचायक है ।

‘ कियाने का या लोक का के चुनाव वाक्यी जानकारी
 में क्या निष्कर्ष होते हैं ? यदि नहीं तो क्यों ? के अन्त में नागरिकों ने २०, ६
 अधिकतम जाति का ६४, ६ अधिकतम नहीं का वीर ६, ५ अधिकतम नागरिक अनुप
 रहे । इससे स्पष्ट है कि अधिकतम नागरिकों का निष्कर्षों की निष्कर्षता पर
 विश्वास नहीं है जो कि निष्कर्ष वाक्यी के लिए अमान्यता के लिए है । चुनावों
 में निष्कर्षता का विश्वास करनेवाले नागरिक ४० अधिकतम मुझसे, १०, = अधिकतम
 उच्च २५ अधिकतम पिछड़ी का २० अधिकतम अनुपस्थित जातियों में है जो उनी वाक्यी
 क्षमता स्तरों एवं व्यवस्थाओं (नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
 चुनावों में मतदाता पर विश्वास करनेवाले नागरिक ६६, २ अधिकतम उच्च, ६५ अधिकतम
 पिछड़ी ६० अधिकतम अनुपस्थित का ५० अधिकतम मुझसे जातियों में है जो उनी वाक्यी
 का, क्षमता स्तरों एवं व्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं । चुनावों में
 निष्कर्षता पर विश्वास करनेवाले नागरिकों ने ७, ५ अधिकतम जातीयता का प्रचार
 १० अधिकतम प्रभावी जातियों का स्तर १२, ५ अधिकतम उच्च २०, ५ अधिकतम
 उच्चरी क्षमताओं द्वारा वाक्यी (निष्कर्षिता) २२, ५ अधिकतम वाक्यी
 मतदान (वास्तविक मतदाता द्वारा मतदान का न किया जाना) १० अधिकतम

मन क्यों है बोरो (वास्तविक मन क्यों की निराशा या व्यथना मन क्यों का मन घटिका है रहा जाना) क्या १० प्रसिद्ध मनमनया है व्यथना के कारणों की व्यवस्था का आधार बताया । इन कारणों के वास्तविक पर ध्यान दिया काय की स्पष्ट होता है कि १२, ३ प्रसिद्ध वास्तविक क्यों क्या ३०, ४ प्रसिद्ध निराशा वास्तविक द्वारा निरुद्ध व्यवस्थाओं की लक्षणाओं का बोध है ।

* विधान तथा की कमीन विधान प्रणाली में जीन का
 परिवर्तन पायेते हैं ? के उत्तर में ५०, ७ प्रतिशत नामांकितों ने परिवर्तन का अनुमान
 दिया, ३२, ८ प्रतिशत नामांकित कोई परिवर्तन नहीं पायेते तथा १८, ५ प्रतिशत
 नामांकित अनुत्तर रहे । इससे स्पष्ट है कि परिवर्तन की दृष्टि से जीनोम नामांकितों का
 प्रतिशत कम है अधिक है । निम्नलिखित प्रणाली में परिवर्तन के दृष्टिकोण नामांकित ७० प्रतिशत
 अनुसूचित ५० प्रतिशत उच्च, ३० प्रतिशत शिक्षित तथा ३० प्रतिशत मुख्यमान, जातियाँ
 में है जो जीनो वायुकाँ, जीनोम स्तरों तथा व्यवसाय कारों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
 परिवर्तन के लिए अनिवार्य नामांकित ६० प्रतिशत मुख्यमान, २५ प्रतिशत शिक्षित तथा
 ३३, ३ प्रतिशत उच्च जातियाँ में है जो जीनो वायु कारों (विशेषकर २१ से २५ वर्ष
 के मध्य) जीनोम स्तरों (विस्तार एवं सादर होकर) एवं व्यवसाय कारों
 (व्यापक एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । तात्पर्य है कि
 ७०, १ प्रतिशत नामांकित निम्नलिखित की निम्नताता पर विश्वास करते हुए भी प्रणाली
 में परिवर्तन के दृष्टिकोण है और २१, १ प्रतिशत नामांकित निम्नलिखित प्रणाली पर अविश्वास
 करते हुए भी प्रणाली में परिवर्तन के लिए अनिवार्य है । २१, ६ प्रतिशत नामांकित
 निम्नलिखित की निम्नताता पर अविश्वास करते हुए परिवर्तन के लिए दृष्टिकोण है ।
 निम्नलिखित प्रणाली के लिए कम है अधिक अनुसूचित जाति के नामांकितों का दृष्टिकोण होना
 एक बात का परिवर्तन है कि वे ही कम है अधिक कठिनाईयों का अनुभव करते हैं ।
 परिवर्तन के लिए दृष्टिकोण नामांकितों ने जो अनुमान दिए हैं उन्हीं से १८ वर्ष मत्वाका
 वायु, जीनोम प्रकार एवं एक प्रकार की, वायु का का अर्थ, स्नातक प्रत्याक्षी,
 प्रतिनिधित्व एवं मुख्य मत्वाका, निर्दिष्ट मत्वाका बरीयता मत्वाका, ही हाकीतिक कत्वाका,
 मत्वाका पर मत्वाका के कत्वाका, कत्वाका मत्वाका मत्वाका और निम्नलिखित प्रतिनिधि
 की वायु प्रणाली की व्यवस्था जादि मत्वाका है । मुख्य मत्वाका, एक प्रकार

जिस व्यक्ति की जमीन पुस्तक में कभी सीम का विभायक पुस्तक बन्धा होना के उपर में रु. १ प्रचिन्न नामांकी में वह उस व्यक्ति का नाम बताया, रु. २ प्रचिन्न नामांकी में कहा कि पुस्तक के समय किन्हीं कति तथा रु. १ प्रचिन्न नामांकी सुपर रहे । ताकिता तात विवरण स्पष्ट किया गया है ।

क्र. सं.	व्यक्ति का नाम	पता में विवरण					
		कर्मचारी	कर्मचारी	नामांकी-०००	कर्मचारी	पुस्तक के समय	सुपर
१	कर्मचारी	रु. १ रु. २२, २ रु. ५, ६ रु. २, ० रु.				१२, ३ रु. १२, १ रु.	
२	विश्वकर्मा	१५ रु.	१० रु.	५ रु.	५ रु.	१० रु.	२५ रु.
३	कर्मचारी	१० रु.	२० रु.	१० रु.	-	१० रु.	५० रु.
४	मुकेश्वर	१० रु.	२० रु.	-	-	५० रु.	१० रु.

उपरोक्त ताकिता है निम्नलिखित सूत्र स्पष्ट होते हैं :

- (१) कर्मचारी के व्यक्तियों का नाम कभी व्यक्ति के नामांकी में बताया किन्हीं की कर्मचारी विवारी, की कर्मचारी प्रचार निम, की राखीता छिन्न "निर्देश" तथा की कर्मचारी कर्मचारी के नाम लिखे गये ।
- (२) कर्मचारी के व्यक्तियों का नाम कर्मचारी है का नामांकी में बताया किन्हीं की कर्मचारी विवारी, की कर्मचारी विवारी "कर्मचारी" (कर्मचारी कर्मचारी) की कर्मचारी प्रचार पुस्तक (कर्मचारी कर्मचारी विभायक रु. १ रु. २ रु. ५ रु. २ रु. ० रु.) की कर्मचारी प्रचार विवारी, की कर्मचारी विवारी निम रु. १ रु. २ रु. ५ रु. २ रु. ० रु. की कर्मचारी प्रचार विवारी के नाम लिखे गये ।

- (३) भारतीय लोकसभा के नेता में कार्यरत एवं सक्रिय दोनों हैं एवं सामाजिक हैं और इन्होंने एक साथ ही भारतीय समाज (राष्ट्रीय विचारधारा) का नाम बताया है । क्या भारतीय लोकसभा में अन्य नेताओं का विकास अवसर है ?
- (४) "पुनर्जाति के कार्य विचारधारा" का अर्थ एवं है अधिक पुनर्जाति कार्यधारा में किया जा रहा स्पष्ट करता है कि "अन्धकार" के अन्तर्गत भारतीय या विचारधारा करने की प्रतीति एवं है अधिक पुनर्जाति में है और लोकसभा विचारधारा का हीम में एक साथ ही प्रमुख सामाजिक विचारधारा नहीं है ।
- (५) अनुसूचित एवं पिछड़ी जातियों के सामाजिक एवं है अधिक अनुसूचित एवं विचारधारा है कि इनमें "समाज विचारधारा" की सामाजिक विचारधारा की प्रतीति में एवं है ।

' सीमा विधान का सीमा क्षेत्र क्षेत्र प्रमुख समस्याएँ
 हैं के अन्तर् में नागरिकों ने २६, २ प्रविष्टि विचारों का अभाव २०, २ प्रविष्टि
 बेकारी २८, ६ प्रविष्टि अर्थों की अर्थ एवं दुर्भाव २६ प्रविष्टि पैस का अभाव २,
 १९, ८ प्रविष्टि अस्पताओं का अभाव एवं उनकी सुविधाओं में अल्पता, ७, ६ प्रविष्टि
 यातायात के साधनों का अभाव ७, ६ प्रविष्टि विद्युत का अभाव ६, ६ प्रविष्टि
 ' मुख्य बुद्धि ६, ६ प्रविष्टि रासायनिक कार्यों का अभाव, ६, ६ प्रविष्टि शिक्षण
 संस्थाओं का अभाव (विशेषकर नारी शिक्षा) ३, ६ प्रविष्टि वाणिज्य ३, ६ प्रविष्टि
 प्रगतिशील, २, ६ प्रविष्टि सुरक्षा समस्या का अभाव २, ६ प्रविष्टि बहुसंख्यकों
 द्वारा अल्पसंख्यकों २, ६ प्रविष्टि हरित आवासीय का आवंटन न होना क्या
 २, ६ प्रविष्टि बुनियादी ढांचा क्या और एक अभाव प्रविष्टि में, शिक्षा व्यवस्था रही,
 अनुशासन होना, अन्य अभाव नृप का अभाव, बुनियादी ढांचे का अभाव,
 ' हरितों की आवश्यकता का अभाव विचार न होना १०, ' निराश्रित प्रत्यक्ष समिति
 का अभाव न होना, ' व्यापार निर्यात, ' जीवन समस्या, ' अर्थ शिक्षा,
 ' बांधों का न बनना, ' बुद्धि की अल्पता न होना क्या ' निर्वाचित व्यक्तियों का

कृषि विकास (विनिर्माणकारी) की कार्यवाही की भी प्रस्तावित किया ।
 विचार के साक्षी का अर्थ है कि अधिक धनकों में एवं पैसारी का अनुभव एवं
 है कि अधिक विविध वस्तुओं में किया । कृषि के लिए कभी नागरिकों में कभी
 पिछले देश विदेशी कीपुर (ग्रामपंच)- बुनियाद कीटी-कन्हापुर, कीटी-
 कीटीपुर, कीटी-रामपुर, रामपुर-कन्हापुर, कन्हापुर-कीटी, कन्हापुर-
 पूर कृषि, कृषि कृषि) कीटी-नीन्दीरा, कीटी - कन्हापुर, कन्हापुर
 (कन्हापुर) कीटी-कन्हापुर काज बाजार - कन्हापुर कन्हापुर - कीटीपुर,
 कन्हापुर-कन्हापुर, कन्हापुर-कीटी, कीटी - कन्हापुर, कन्हापुर-उत्तरांच,
 कन्हापुर-कन्हापुर, कीटी - कीटीपुर, कीटी-कन्हापुर, कन्हापुर-
 कीटी, कन्हापुर - कन्हापुर, कीटी - कन्हापुर, कन्हापुर-कन्हापुर, कन्हापुर-
 कन्हापुर, कीटीपुर-कीटी, कन्हापुर-कीटी, कीटी-रामपुर बाकि प्रमुख
 कृषि हैं । किन्तु एक एक का अनुभव कीटी-रामपुर के उत्तरी क्षेत्र के निवासियों
 की विशेष रूप से हुआ है ।

विकास कन्हापुर का एक है कन्हापुर अधिकारी कीन सीता है - के
 उत्तर, नागरिकों में २०, १ प्रति कन्हापुर कीटी-रामपुर (कन्हापुर विकास अधिकारी)
 १, १ प्रति कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर २, १ प्रति कन्हापुर कीटी-रामपुर (कन्हापुर विकास
 अधिकारी) कन्हापुर कन्हापुर १०, १ प्रति कन्हापुर नागरिक कन्हापुर रवि । कन्हापुर विकास
 अधिकारी कन्हापुर कन्हापुर १०० प्रति कन्हापुर कन्हापुर, २० प्रति कन्हापुर
 ७०, ७ प्रति कन्हापुर कन्हापुर (कन्हापुर के कन्हापुर) कन्हापुर ७० प्रति कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर में
 है की की कन्हापुर कन्हापुर, कन्हापुर कन्हापुर एवं कन्हापुर कन्हापुर का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
 कन्हापुर कन्हापुर की कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर ११, १ प्रति कन्हापुर कन्हापुर
 १० प्रति कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर में है की की कन्हापुर कन्हापुर (४६ है ७० कन्हापुर कीटी-रामपुर)
 कन्हापुर कन्हापुर (कन्हापुर एवं कन्हापुर कीटी-रामपुर) एवं कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर
 कन्हापुर का प्रतिनिधित्व करते हैं । कन्हापुर कन्हापुर विकास अधिकारी कन्हापुर कन्हापुर नागरिक
 २, २ प्रति कन्हापुर कन्हापुर (कन्हापुर) कन्हापुर १ प्रति कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर में है की की
 कन्हापुर कन्हापुर (१६-२० कन्हापुर एवं २६-३६ कन्हापुर) कन्हापुर कन्हापुर कन्हापुर के

क्षेत्रिक स्तरों एवं विभागीय और व्यापारी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वसुधर रत्नेवाले नामांकित ८, ४ प्रतिष्ठित उच्च (उनी वैश्य) ११ प्रतिष्ठित पिछड़ी तथा २० प्रतिष्ठित अनुसूचित जातियों में है जो उनी वायु वर्ग (१५ से २० वर्षों की उमिर) क्षेत्रिक स्तरों (स्नातक से नीचे एवं ऊपर की उमिर) एवं व्यवसाय वर्गों (विभागीय तथा व्यापारिक की उमिर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक का वसुधर रत्नेवाले नामांकितों में १४, १ प्रतिष्ठित और वसुधर रत्नेवाले में १२, १ प्रतिष्ठित राजनीतिक दल (काँग्रेस) के सदस्य हैं। इससे स्पष्ट है कि राजनीतिक दलों के २५, ६ प्रतिष्ठित सदस्यों के ऊपर 'हुद' है जो कि सामान्य है अधिक है जो यह क्षेत्र पैदा है कि राजनीतिक दलों की संख्या राजनीतिक जातीयता का दर्शन करती है।

जातीय विभाजन के दल प्रमुख (जाति प्रमुख) का नाम है १ का उमिर ४६, २ प्रतिष्ठित नामांकितों में 'हुद' तथा ३, ६ प्रतिष्ठित नामांकितों में 'गुह' किया और 'हुद' ३५, ६ प्रतिष्ठित नामांकित वसुधर रत्नेवाले में 'हुद' उमिर रत्नेवाले नामांकित ७२, ४ प्रतिष्ठित उच्च (उनी वैश्य) ६० प्रतिष्ठित पिछड़ी, ४० प्रतिष्ठित अनुसूचित तथा ४० प्रतिष्ठित मुखजान, जातियों में है जो उनी वायु वर्ग (उनी है उनी २६-२० वर्षों तथा उनी है अधिक ४६-७० वर्ष) क्षेत्रिक स्तरों एवं व्यवसाय वर्गों (उनी है अधिक कुशल एवं उनी है उनी मजदूरी) का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'वसुधर' उमिर रत्नेवाले नामांकित २० प्रतिष्ठित मुखजान तथा २० प्रतिष्ठित अनुसूचित जातियों में है जो तीन वायु वर्गों (२१ से ४५ वर्ष) वापार शर्तें स्तुत तथा स्नातक क्षेत्रिक स्तरों एवं विभागीय, कुशल एवं व्यापारी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वसुधर रत्नेवाले नामांकित ४० प्रतिष्ठित अनुसूचित ४० प्रतिष्ठित मुखजान ४० प्रतिष्ठित पिछड़ी तथा २०, ६ प्रतिष्ठित उच्च जातियों में है जो उनी वायु वर्ग (उनी है अधिक १६-२० वर्ष) क्षेत्रिक स्तरों, एवं व्यवसाय वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वसुधर एवं वसुधर रत्नेवाले नामांकितों में १२, ६ प्रतिष्ठित राजनीतिक दल (उनी काँग्रेस) के सदस्य है जो उनी जाति (वापार की उमिर) एवं मुखजानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि उनी जाति के नामांकितों की जाति प्रमुख के नाम की जानकारी उनी है अधिक है और अनुसूचित

वाणिज्य के नागरिक एवं वे व्यक्ति जिनके लिये वे काम कर विज्ञान की शिष्टताओं की पूर्णता का परिणाम है । १. पूर्णता के लिये वे व्यक्ति जिनके लिये वे काम कर लिये वे काम है कि उन्हें विज्ञान में अपना ध्यान पूर्णतः एक ही दिशा में लगा सकें तथा वे व्यक्ति जिनके लिये वे काम कर लिये वे काम है । राजनीतिक कर्तों के २०, १ प्रत्येक कर्तों में जिनके लिये वे काम कर लिये वे काम है राजनीतिक जवाबदारी का परिणाम प्रतीय होता है ।

विज्ञान के लिये विभिन्न प्रकार के कार्य हैं । का उदाहरण पूर्ण या वाणिज्य के लिये ३६, ६ प्रत्येक नागरिकों में 'हुद' किया । १, ६ प्रत्येक नागरिकों के लिये 'व्युत्पन्न' लिये काम ६६, २ प्रत्येक नागरिक जिनके लिये वे काम कर लिये वे काम है 'हुद' उदाहरण के लिये नागरिक ४४, ३ प्रत्येक उच्च ३५ प्रत्येक शिक्षा, ३० प्रत्येक मुख्यमान तथा २० प्रत्येक अनुसूचित जातियों में वे जो की नीचे जायु कर्तों (१६-२० वर्षों की उमिर तथा शिक्षणकर २६-३० वर्षों) शिक्षण स्तरों (का है का विस्तार एवं स्नातक के नीचे) एवं व्यवसाय कर्तों (का है व्यक्ति व्यवसाय एवं पूर्ण की ओर का है का विद्याभ्यास) का प्रतिनिधित्व करते हैं । 'व्युत्पन्न' उदाहरण के लिये नागरिक ५, ६ प्रत्येक उच्च तथा ५ प्रत्येक शिक्षा जातियों में वे जो तीन जायु कर्तों (१६-२० ; २१-२५ तथा २६-४५ वर्षों) विस्तार, स्नातक के नीचे एवं स्नातक शिक्षण स्तरों तथा विषाधी, प्रमुख एवं व्यापारी कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं । जिनके लिये वे काम कर लिये वे काम है नागरिक ५० प्रत्येक (का है व्यक्ति वेद्य) ६० प्रत्येक शिक्षा, ३० प्रत्येक मुख्यमान तथा २० प्रत्येक अनुसूचित जातियों में वे जो की नीचे जायु कर्तों (का है व्यक्ति १६-२० वर्षों) शिक्षण स्तरों एवं व्यवसाय कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक कर्तों के ६६, २ प्रत्येक कर्तों में पूर्ण या वाणिज्य के लिये वे काम कर लिये वे काम है कि राजनीतिक कर्तों द्वारा लिये लिये राजनीतिक जवाबदारी का प्रमाण प्रस्तुत करता है ।

व्यवसाय के काम प्रमुख कार्य हैं । का उदाहरण २२, ६ प्रत्येक नागरिकों में पूर्ण या वाणिज्य के लिये वे काम कर लिये वे काम है हुद तथा १, २ प्रत्येक में व्युत्पन्न किया और २०, १ प्रत्येक नागरिक जिनके लिये वे काम कर लिये वे काम है हुद उदाहरण के लिये नागरिक ६६, ६ प्रत्येक उच्च, २० प्रत्येक मुख्यमान, ३५ प्रत्येक शिक्षा तथा ६० प्रत्येक अनुसूचित जातियों में वे जो की नीचे जायु कर्तों (१६-३० वर्षों के उच्च प्रत्येक) शिक्षण स्तरों एवं व्यवसाय

काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत उपर देनेवाले नागरिक अनुपस्थित बाधित के १६-२० वर्ष के बाधु काँ, स्वायत्त के नीचे के क्षेत्रांक स्तर तथा विभागीय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत देनेवाले नागरिक ८, ४ प्रतिशत उच्च, २० प्रतिशत मुख्यभाव, २५ प्रतिशत पिछड़ी बाधित २० प्रतिशत अनुपस्थित बाधितों में से जो छोटी बाधु काँ (१६-२० वर्ष होकर) क्षेत्रांक स्तरों एवं व्यवसाय काँ (व्यापक एवं व्यापार होकर विशेषकर विशाखा एवं मछूरी) का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के ६२, ३ प्रतिशत वर्गों ने बहुत उपर फिर जो कि उच्च बाधितों के नागरिकों से जो अधिक है। अनुपस्थित बाधित के नागरिकों की लक्ष्यीकरण के प्रमुख कार्य का अभाव का प्रमुख कारण उनकी सुनिश्चितता प्रतीत होती है क्योंकि इस बाधित के बहुत देनेवाले ६६, ६ प्रतिशत सुनिश्चित हैं। पिछड़ा वर्ग की लक्ष्यता लक्ष्यीकरण के लक्ष्य में अधिक नागरिकों की जानकारी का प्रतिशत यह प्रमाणित करता है कि संस्थाओं के स्थायित्व एवं बाधु के साथ उनके प्रति ज्ञान का धातमक लक्ष्य है कि पिछड़ा प्रमुख कारण प्राप्ति काँ के बीच में नागरिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है।

धानाध्यक्ष का क्या कार्य है ? का उपर इस प्रतिशत नागरिकों ने पूर्ण ज्ञान जोड़कर यह है बहुत किया। इसी स्पष्ट है कि धानाध्यक्ष के कार्य हैं छोटी बाधितों, बाधुकाँ, क्षेत्रांक स्तरों, व्यवसाय-काँ एवं छोटी के नागरिक प्रतिशत हैं। मुख्य की इस प्रति नागरिकों में जानकारी होने के मुख्य कारण, अवस्था में सुनिश्चित, नागरिकों के प्रत्यक्ष लक्ष्य, सुनिश्चित का अधिक प्रमाण एवं विभागीय केन्द्रों का बहुत की धानाध्यक्ष का अनुभव है।

किसी का क्या है कड़ा अधिकारी लाने होता है ? का उपर नागरिकों ने ८४, ३ प्रतिशत लक्ष्य तथा ३, ६ प्रतिशत बहुत किया और ११, ८ प्रतिशत नागरिक बहुत रहे बहुत उपर देनेवाले नागरिक ६० प्रतिशत पिछड़ी ६० प्रतिशत मुख्यभाव, ८४, ४ प्रतिशत उच्च तथा ३० प्रतिशत अनुपस्थित बाधितों में से जो छोटी बाधु काँ, क्षेत्रांक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत उपर देनेवाले नागरिक ८, ३ प्रतिशत उच्च बाधित (प्राप्त होकर) में है

विन्धवि विजाविजारी, काफिल बल्ला^{१९} एवं विजेवार^{२०} बल्लाया है। ये नामारि वितीय, पुतीय एवं चण्डु बाहु काँ, प्रायमिक बाई रूत एवं स्नातक शैलाक स्तरीं जीर व्यापारी तथा कुमक काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं।
 कुचर रनेवाले नामारि १० प्रतिशत कुमुषि १० प्रतिशत मुखमान, १० प्रतिशत पिछड़ी तथा २० प्रतिशत उच्च कारियाँ में है जो की की बाहु काँ (१५-३० वर्ष होकर) निरदार (जब है अधिक) बादार एवं प्रायमिक शैलाक स्तरीं जीर कुमक मकूर एवं व्यापारी (ग्राम में स्थित बाजार में नहीं) काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। राक्षसिक काँ के १२, १ प्रतिशत कर्षाँ ने हृद उतर दिया। बादर्य का है कि ३४, २ प्रतिशत हृद उतर रनेवाले नामारि (विजेवार पिछड़ी कायि) ने कीकी नाम की ० एवं ० कर्षाँ कर्षार दिया। वही स्पष्ट है कि राक्षसिक काँ के कर्षाँ की पिछे के जब है कई बापकारी के कर्षाँ की बापकारी जब है अधिक है।

विजा परिणत का क्या काँ है ? का उतर नामारि में ४३, ५ प्रतिशत पूर्ण या जीलाक रूप में हृद का ३, ६ प्रतिशत 'कुमुष' बल्लाया जीर रने ५२, ६ प्रतिशत नामारि कुचर है। वही स्पष्ट है कि विजा परिणत के श्रियाकर्षाँ है बाप है अधिक नामारि कर्षाँ है। हृद उतर रनेवाले नामारि ४९, १ प्रतिशत उच्च, १० प्रतिशत मुखमान, ३० प्रतिशत पिछड़ी तथा कुमक प्रतिशत कुमुषि कारियाँ में है। मकूर बाहुर्ष है कि कुमुषि कायि है स्नातक शैलाक स्तर के नामारि की की विजा परिणत के कार्या की बापकारी नहीं है। विजा परिणत के कार्या की बापकारी की बाहु काँ (जब है अधिक १५-३० वर्ष तथा जब है कम १५-२० वर्ष) शैलाक स्तरीं ((निरदार होकर) एवं व्यवसाय काँ (नीकरी होकर) के नामारि की है। कुमुष उतर रनेवाले नामारि १० प्रतिशत मुखमान १० प्रतिशत कुमुषि का २, ० प्रतिशत उच्च, कारियाँ में है जो १५-२५ वर्ष के बाहु काँ, बाई रूत रूत एवं स्नातक है नीचे के शैलाक स्तरीं तथा विजायी एवं मकूर काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुचर रनेवाले नामारि १० प्रतिशत कुमुषि, ३० प्रतिशत पिछड़ी, ३० प्रतिशत मुखमान तथा ३५, १ प्रतिशत

उच्च वातियों में है जो छोटी वायु काँ (ज्व है अधिक २१-२५ काँ) शैलिक स्तरों एवं व्यवसाय-काँ (व्यवसाय हीनकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राखीतिक कलों के ६६, २ प्रतिकृत कार्यों ने पिछा परिवर्तन के कार्यों को हट्ट बताया बिना राखीतिक कलों द्वारा जिसे कानिवाटे राखीतिक कार्याकरण का स्पष्टीकरण होता है ।

पिछे के न्यायालयों का ज्व है बहुत अधिकारी जैन होता है ? का उत्तर ७, = प्रतिकृत नागरिकों ने हट्ट क्या ६०, ५ प्रतिकृत ने बहुत किया और ६०, ५ प्रतिकृत नागरिक खुपर रहे । उन्ही स्पष्ट है कि शिष्टिष्ट केन एक शिष्टिष्ट ज्व (वण्ड एवं दीवानी न्यायधीन) का ज्ञान बहुत का नागरिकों को है । क्या कानिवाटे का प्रमुख कारण न्यायालय के ज्व स्तर का बहुत का नागरिकों को खुपर है । हट्ट नाम कानिवाटे नागरिक १६, ६ प्रतिकृत उच्च वाति में है (जन्म वातियों के एक ही नागरिक ने हट्ट नाम नहीं बताया) जो कि प्रम, खुपर, पंच एवं जन्म वायुकाँ, वातावर, प्राणिक, चारें स्तूक, स्नाक है नीचे एवं स्नाक शैलिक स्तरों और कियापी, व्यवसाय, कुचक एवं व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत नाम कानिवाटे नागरिक ७० प्रतिकृत पिछड़ी, ६० प्रतिकृत खुपरिष्ठ ५८, ४ प्रतिकृत उच्च क्या ५० प्रतिकृत मुखजान वाति में है जो छोटी वायु काँ शैलिक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । खुपर रखेवाटे नागरिक ५० प्रतिकृत मुखजान, ४० प्रतिकृत खुपरिष्ठ, ३० प्रतिकृत पिछड़ी क्या २५ प्रतिकृत उच्च वातियों में है जो छोटी छोटी वायुकाँ, शैलिक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । राखीतिक कलों के १६, २ प्रतिकृत ने पिछे न्यायालय के ज्व है बड़े अधिकारी का हट्ट नाम बताया जो कि नागरिकों के दूने है जो अधिक है, किन्तु बर्तीनकक है । क्या राखीतिक कलों का ज्ञान न्यायशास्त्रों की और बहुत का बताया है या स्थानीय कार्यालयों के ऊपर उच्च न्यायालयों का नम्य नम्य है । ' बहुत' उपर देनेवाटे अधिकारि नागरिकों ने ' पिछापीठ' का नाम बताया ।

* मुखिष्ठ विभाग का पिछे में ज्व है बहुत अधिकारी जैन होता है ? का उत्तर ७, ७ प्रतिकृत ने हट्ट क्या ६, २ प्रतिकृत ने बहुत किया और ६०, १ प्रतिकृत नागरिक खुपर रहे । हट्ट उपर देनेवाटे नागरिक ८० प्रतिकृत मुखजान

७७. = प्रत्यक्ष उच्च, ७७ प्रत्यक्ष अनुसूचित तथा ६१ प्रत्यक्ष पिछड़ी जातियों में से जो छठी वायु काँ (७७ से अधिक १५-७७ वर्ष) शैक्षिक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत ऊपर देखाते नागरिक २० प्रत्यक्ष पिछड़ी ११, १ प्रत्यक्ष उच्च तथा १० प्रत्यक्ष मुख्यमान, जातियों में से जो छठी वायु काँ (१५-७७ वर्ष होकर) शैक्षिक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर होकर) एवं व्यवसाय काँ (व्यापक, मजदूरी एवं व्यापार होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

अनुसर रतीवाते नागरिक ३० प्रत्यक्ष अनुसूचित २५ प्रत्यक्ष पिछड़ी ११, १ प्रत्यक्ष उच्च तथा १० प्रत्यक्ष मुख्यमान, जातियों में से जो छठी वायु काँ (१५-७७ वर्ष होकर) शैक्षिक स्तरों व्यवसाय काँ (व्यापक एवं मजदूरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षसीक वर्गों के ६२, ३ प्रत्यक्ष सदस्यों ने कुछ ऊपर किया जो कि नागरिकों से अधिक है । यह स्पष्ट करता है कि नागरिक की वषेता राक्षसीक वर्ग के सदस्य की भूमिका नियमितताओं में राक्षसीक मानककता अधिक होती है । क्या प्रत्यक्ष विमान के पिछड़ा स्तर के अधिकारियों का गंभीर पटनाओं के जो जाने के परभाव पटना स्तरों पर पहुँचा इसकी जानकारी का प्रमुख प्रीत है ?

उठावावाय विधि में विचारकों की कुछ संख्या मिलती है , का

उपर ६, ३ प्रत्यक्ष नागरिकों ने कुछ तथा २५ = प्रत्यक्ष ने बहुत किया वीर ६१, ६ प्रत्यक्ष नागरिक अनुसर रहे । विचारकों की उठावावाय विधि में कुछ संख्या १४ कुछ कताववाते नागरिक ११, १ प्रत्यक्ष उच्च (वैश्य होकर) १० प्रत्यक्ष पिछड़ी तथा १० प्रत्यक्ष मुख्यमान जातियों में से जो छठी वायु काँ (१५-२० वर्ष होकर) छात्र, प्राथमिक तथा स्नातक एवं स्नातकोपर (विशेषकर) शैक्षिक स्तरों वीर विप्राधी, व्यापक, कुम्हार, मजदूर एवं व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत ऊपर देखाते नागरिक किन्हीं से अधिकार ने जाठ की संख्या बताया (विधि में लक्ष्मीजी की कुछ संख्या = है । ऐसे ३५, ६ प्रत्यक्ष उच्च २० प्रत्यक्ष पिछड़ी २० प्रत्यक्ष अनुसूचित तथा २० प्रत्यक्ष मुख्यमान जातियों में से जो छठी वायु काँ (विशेषकर २१-२५ वर्ष) शैक्षिक स्तरों (निरक्षर होकर) एवं व्यवसाय काँ

(व्यापन होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऊपर देनेवाले नामालि ८० प्रकृत्य अनुषंगित, ७० प्रकृत्य मुख्यमान ७० प्रकृत्य पिछड़ी तथा १० प्रकृत्य उच्च कारिणी में है जो की वायु कारि, छिदाक स्तरों (निरस्तार यह प्रकृत्य) एवं व्यवसाय कारि का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के १२, ४ प्रकृत्य सदस्यों ने कुछ उल्टा पलट कर प्रमुख कारण राजनीतिक दानिध है किन्तु यह प्रकृत्य यथार्थ नामालि एवं उच्च कारि के प्रकृत्य है अधिक किन्तु चिन्ताकर है। क्या राजनीतिक वर्गों के सदस्य अपनी नीति की जानकारी को प्रमुख उद्यम मान बैठे हैं? चिन्ता यह परिलगता है।

“संख्या विधान का नीति का कमान विधायक नीति है” का उतर ८८, २ प्रकृत्य नामालि में कुछ दिया गया ११, ८ प्रकृत्य नामालि ऊपर रहे। अपने नीति के विधायक का नाम बतानेवाले नामालि १४, ४ प्रकृत्य उच्च, १० प्रकृत्य अनुषंगित ८० प्रकृत्य पिछड़ी तथा ८० प्रकृत्य मुख्यमान कारिणी में है जो की वायु कारि, छिदाक स्तरों एवं व्यवसाय-कारि का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऊपर देनेवाले नामालि २० प्रकृत्य मुख्यमान, २० प्रकृत्य पिछड़ी १० प्रकृत्य अनुषंगित तथा १, ६ प्रकृत्य उच्च कारिणी में है जो की वायु कारि, छिदाक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर की होकर) एवं व्यवसाय कारि (व्यापन एवं व्यापार होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के १२, २ प्रकृत्य सदस्यों ने कुछ उतर दिया और उच्च ऊपर रहे। राजनीतिक वर्गों के सदस्यों का कुछ प्रकृत्य यथार्थ नामालि के कुछ प्रकृत्य है अधिक है किन्तु उच्च कारि के नामालि के प्रकृत्य है २, १ प्रकृत्य कम है जो यह उचित होता है कि राजनीतिक यह अपनी राजनीतिक परिचरों की जानकारी अपनी नीति सदस्यों यह अनुषंगित नहीं करते हैं। क्या विधान का धुआँ के परभाव अपनी यह के नीति सदस्यों को उचित करते निश्चय निश्चय - पराध्य के कारणों को छोड़ता राजनीतिक यह विधान का नीति स्तर पर नहीं करते ?

“वामके नीति का कमान उच्च सदस्य नीति है” का उतर ६२ प्रकृत्य नामालि में कुछ दिया ७, ८ प्रकृत्य में बहुत दिया उच्च ३०, २ प्रकृत्य नामालि ऊपर रहे। कुछ उतर देनेवाले नामालि में कुछ ने उच्च सदस्य का

वन्ध स्थान, वाति एवं उपाधि ही बताये किन्ति उनका अभिप्राय किन्तु ही काय है (पाँडा के राजा, ठाकुर की विस्फास्य प्रताप सिंह मृतपूर्व वाणिज्य राज्य मंत्री, मातल बरकार की कि माथे, ७० में कला पाटी के कीन्ती कला बहुलता है पराधि की की)। कुछ उतर देखाते नामलि ७० प्रविष्ट मुक्तमान, ७५ प्रविष्टकल्प, ७० प्रविष्ट पिछड़ी तथा ७० प्रविष्ट अनुपुष्टि वातियों में है की की वायु काँ छेदाक स्तरों (क्व है क्व विस्तार) एवं व्यवसाय-काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुछ उतर देखाते नामलि ७० प्रविष्ट पिछड़ी, १० प्रविष्ट अनुपुष्टि तथा ५, ६ प्रविष्ट उच्च वातियों में है की २१ है ३५ वर्ष के वायु काँ, विस्तार, प्रापधिरा बाईभूत एवं स्नातक है नीचे के छेदाक स्तरों कीर विवाधी, कुनक, नीकर एवं व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। अनुतर देखाते नामलि ५० प्रविष्ट अनुपुष्टि ३५ प्रविष्ट पिछड़ी, २० प्रविष्ट मुक्तमान तथा १६, ४ प्रविष्ट उच्च वातियों में है की की वायु काँ, छेदाक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकीपर हीकुवर) एवं व्यवसाय काँ (व्यापन एवं नीकरी हीकुवर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। राक्तीति बर्गों के ७५, ६ प्रविष्ट ने कुछ उतर दिये की कि की वातियों के नामलि के प्रविष्ट है वायिक है।

उपरोक्त विवरण है स्पष्ट है कि दीधीय विवायक के नाम की वाक्कारी छेद कल्प की क्वेदाकृत वायिक नामलि एवं राक्तीतिक बर्गों के कद्यों की है। इसका प्रमुख कारण दीधीय विवायक का कम प्रत्यक्ष कार्यकर्ता तथा उच्च तात्कालिक प्राप्ता है। क्या इसके एक स्पष्ट होता है कि वातियों में कुछ प्रत्यक्ष का कार्य के बर्गों में वायिक है।

वायु कि प्रवेश के विवाधी है १ का उतर ७६, ५ प्रविष्ट नामलि ने कुछ (उतर प्रवेश) दिया तथा १, २ प्रविष्ट ने कुछ (दत्तावादाय) किवा कीर ६, २ प्रविष्ट नामलि अनुतर रहे। अपने प्रवेश का कुछ नाम क्वेदाते नामलि का प्रविष्ट मुक्तमान ६०, २ प्रविष्ट उच्च ७० प्रविष्ट पिछड़ी तथा ७० प्रविष्ट अनुपुष्टि वातियों में है की की वायु काँ छेदाक स्तरों (क्व है क्व विस्तार) एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रवेश के स्थान पर कि का नाम बताते

वाका नागरिक ^{१३} अनुसूचित वासि का विस्तार ३५ वर्गमि त्रिभु है जो वासि के
 सामानों की वास है बनाने का कार्य करता है । अनुसर रत्नेवाडे नागरिक २० प्रविष्ट
 अनुसूचित, २० प्रविष्ट पिछड़ी तथा २, = प्रविष्ट उच्च (नागरिक) वासियों में है
 जो की वासु काँ (२१-२५ वर्ग होकर) विस्तार का वासर क्षेत्राक स्तरों
 का नृमक एवं नकुर काँ का प्रतिनिधित्व करी है । राक्षीतिक वर्गों के १६, २
 प्रविष्ट कर्णों ने कने प्रीत का नाम हूद बताया वीर ठेक अनुसर रहे । राक्षीतिक
 वर्गों के कर्णों की हूदता का प्रविष्ट कर्ण नागरिकों के वधिक है किन्तु मुख्यमान
 एवं उच्च वासियों के नागरिकों के कम है । राक्षीतिक वर्गों के कर्णों की कने
 प्रीत के नाम की जानकारी न होना यह सीमा देता है कि राक्षीतिक वर नागरिक
 राक्षीतिक का ज्ञान कने की कर्णों तक नहीं पहुँचाते हैं । क्या किसी नागरिकों
 राक्षीतिक वर वधिक एवं वर सीमा कर्णों प्राप्त करने के लिए ही कर्ण कर्ण
 बताते हैं या वापर नागरिकता की जिज्ञा की प्रमाण करते हैं ?

वापर प्रीत का कर्णान मुख्य मंत्री वीर है ? का उपर ६५, =
 प्रविष्ट नागरिकों ने पूर्ण कर्ण वधिक कम है हूद किया तथा १४, ५ प्रविष्ट ने
 वरुद किया वीर १६, ० प्रविष्ट नागरिक अनुसर रहे । हूद उपर रत्नेवाडे नागरिक
 २२, ४ प्रविष्ट उच्च, ६० प्रविष्ट पिछड़ी, ५० प्रविष्ट मुख्यमान तथा ३० प्रविष्ट
 अनुसूचित वासियों में है जो की वासु काँ (विधेयकर २१-२५ वर्ग) क्षेत्राक
 स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर वर प्रविष्ट) तथा व्यवसाय काँ (व्यवसाय
 वर प्रविष्ट) का प्रतिनिधित्व करी है । वरुद उपर रत्नेवाडे नागरिक (विधेय है
 वधिकर्ण ने वीमती वधिरामाधी बताया कर्ण प्रदान मंत्री एवं मुख्यमंत्री का वीर
 कर्ण ने में कर्ण रहे) ३० प्रविष्ट अनुसूचित २० प्रविष्ट मुख्यमान, २५ प्रविष्ट पिछड़ी
 तथा ८, ३ प्रविष्ट उच्च वासियों में है जो की वासु काँ, क्षेत्राक स्तरों (स्नातक
 एवं स्नातकोपर होकर) एवं व्यवसाय-काँ (व्यवसाय एवं वीमती होकर) का
 प्रतिनिधित्व करी है । अनुसर रत्नेवाडे नागरिक ४० प्रविष्ट अनुसूचित, ३० प्रविष्ट
 मुख्यमान, २५ प्रविष्ट पिछड़ी तथा ८, ३ प्रविष्ट उच्च वासियों में है जो की वासु
 काँ (विधेयकर २६-३५ वर्ग) क्षेत्राक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर होकर
 का विधेयकर विस्तार) तथा कर्णों, नृमक एवं नकुर काँ का प्रतिनिधित्व
 करते हैं । राक्षीतिक वर्गों के ६६, २ प्रविष्ट कर्णों ने कने प्रीत के मुख्यमंत्री का

नाम बताया की सामान्य नामांकों से यद्यपि कुछ अधिक प्रसिद्ध है तथापि उच्च वासि के नामांकों से १४, २ प्रसिद्ध कम है । क्या वर्तमान मुख्यमंत्री के नाम की जानकारी में की जा प्रमुख कारण वल्लभ आजादापि है किन्हीं की कमजोरी वन्दन प्रमुखा, की नारायण बच तिवारी एवं की रामचन्द्र बाबू ने कानून प्रवर्धन किया ? क्या अधिकांशों का प्रभाव प्राचीनों के संस्कार को बहुत कम दूर कर पाया है ? राजनीतिक वर्गों का प्रमुख दायित्व है कि वे राजनीतिक ज्ञान के स्तरों में उत्तरीय प्रविष्ट की ।

वापके प्रविष्ट की राजधानी कहाँ है ? का उत्तर नामांकों से ७८, ६ प्रसिद्ध कुछ (कमजोर) तथा १५, ६ प्रसिद्ध बहुत किया और ५, २ नामांकों उत्तर रहे । कुछ उत्तर देनेवाले नामांकों का प्रसिद्ध मुख्यमान, ६५ ७ प्रसिद्ध उच्च (प्राकृतिक कम प्रसिद्ध) ६० प्रसिद्ध पिछड़ी तथा ५० प्रसिद्ध अनुसूचित जातियों में है की की वायु का, क्षेत्रांक स्तरों एवं व्यवसाय का का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत उत्तर देनेवाले नामांकों से कम प्रसिद्ध ' पिछड़ी ' बताया किसी स्पष्ट होता है कि १५, ६ प्रसिद्ध नामांकों प्रविष्ट एवं देश की राजधानी में उत्तर कमजोर में कमजोर है । बहुत उत्तर देनेवाले नामांकों ३० प्रसिद्ध अनुसूचित ३० प्रसिद्ध पिछड़ी तथा ८, ३ प्रसिद्ध उच्च (प्राकृतिक होकर) जातियों में है की की वायु का, क्षेत्रांक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोत्तर होकर) एवं व्यवसाय का (व्यवसाय होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । उत्तर देनेवाले नामांकों २० प्रसिद्ध अनुसूचित तथा १० प्रसिद्ध पिछड़ी जातियों में है की २१-४५ वर्ष के वायु का, निरक्षर तथा छात्र क्षेत्रांक स्तरों और कुलक तथा मकदूर का का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक वर्गों के ६२, ३ प्रसिद्ध सदस्यों ने कुछ का ७, ७ प्रसिद्ध ने बहुत उत्तर दिए की राजनीतिक स्वीकृति के प्रभाव को प्रसिद्ध करता है ।

उत्तर प्रविष्ट किसान मण्डल के दोनों छदों के नाम बताये ? के उत्तर में नामांकों ने ३१, ६ प्रसिद्ध किसान का तथा १७, १ प्रसिद्ध किसान परिवर्धन का नाम बताया ; ३, ६ प्रसिद्ध नामांकों ने दोनों छदों के बहुत नाम बताया तथा ६१, २ प्रसिद्ध नामांकों उत्तर रहे । ' किसान का ' कुछ नाम देनेवाले नामांकों ५० प्रसिद्ध उच्च, २० प्रसिद्ध पिछड़ी तथा २० प्रसिद्ध अनुसूचित

वातियों में से जो छोटी वायु काँ, छिपाक स्तरों (विस्तार होकर, पिछेकर स्नातक से नीचे एवं ऊपर) तथा किवाची, व्यापक, पुष्पक एवं व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । ' विधान परिषद् ' का मूल नाम ब्रह्मदेवादि नागरिक ३३, ३ प्रविष्ट उच्च तथा ५० प्रविष्ट निम्नी वातियों में से जो छोटी वायु काँ छिपाक स्तरों (विस्तार होकर, पिछेकर स्नातक से नीचे एवं ऊपर) एवं व्यवसाय काँ (गहूरी एवं पीकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । इसी स्पष्ट है कि निम्नी, अनुपिष्ट तथा पुष्पक वातियों के नागरिकों की ' विधान परिषद् ' की जानकारी बहुत कम है किन्तु प्रसुत कारण इसका उत्पत्ति विधा है । नीचीं ऊंची के बहुत नाम ब्रह्मदेवादि नागरिक १० प्रविष्ट अनुपिष्ट, ५ प्रविष्ट निम्नी तथा २, ८ प्रविष्ट उच्च वातियों में से जो प्रम, भूतीय एवं चूर्ण वायु काँ, विस्तार, चार्ड स्तूप एवं स्नातक से नीचे छिपाक स्तरों तथा किवाची एवं पुष्पक काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । ऊपर देनेवाले नागरिक इस प्रविष्ट पुष्पक, ७० प्रविष्ट अनुपिष्ट, ७० प्रविष्ट निम्नी वाति तथा ३०, २ प्रविष्ट उच्च वातियों में से जो छोटी वायु काँ (पिछेकर २६-२६ वर्ष और १६-७० वर्ष) छिपाक स्तरों (पिछेकर विस्तार, ऊपर, प्राथमिक एवं चार्ड स्तूप) तथा व्यवसाय काँ (व्यापक होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षसीय वर्गों के ३८, ५ प्रविष्ट ऊंची ने विधान काँ तथा ३०, ८ प्रविष्ट ने ' विधान परिषद् ' का नाम बताया जो कि उच्च वाति के नागरिकों की जेदता कम है किन्तु सामान्य स्तर से अधिक है । यद्यपि राक्षसीय वर्गों की उत्पत्ति प्रकृति का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है किन्तु वर्गीकरण प्रतीय होता है ।

ऊपर प्रीति का उच्च न्यायालय काँ पर स्थित है ? का उच्च नागरिकों ने ६३, ५ प्रविष्ट मूल (उदात्तवाय) तथा ३, ६ प्रविष्ट अनुपिष्ट वाति और २, ६ प्रविष्ट नागरिक ऊपर रहे । मूल उपर देनेवाले नागरिक इस प्रविष्ट पुष्पक, ६०, २ प्रविष्ट उच्च, ६० प्रविष्ट निम्नी तथा ८० प्रविष्ट अनुपिष्ट वातियों में से जो छोटी वायु काँ, छिपाक स्तरों तथा व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत उपर देनेवाले नागरिकों ने प्रायः बिली पताया किसे स्पष्ट होता है कि वे नागरिक वर्गीय तथा उच्च न्यायालय के मध्य फिरे करने की समता नहीं

रहते हैं। बहुत उमर देनेवाले नागरिक २० प्रतिशत अनुपस्थित तथा १० प्रतिशत शिक्षणी कार्यों में है जो १५-२५ वर्ष के वायु वर्ग, शरीरकृत तथा स्नातक के बीच शैक्षणिक स्तरों तथा विभागीय एवं मजदूर वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उल्लेखनीय है कि ज़ुवर देनेवाले सभी महिला नागरिक हैं और सभी अपने अपने अपने विकास में गठित विकास कुछ अभिप्राय की अवस्था में हैं। महिला वर्ग की उच्च न्यायालय एवं शिक्षा न्यायालय की सभी ज्ञान की दृष्टि का प्रमुख कारण अभिप्रायों में महिला वर्ग की मूलतः व्यक्तिगतता की प्रतीति होती है। राजनीतिक वर्गों के ६२, २ प्रतिशत अवस्था में हुए तथा ७, ७ प्रतिशत में बहुत स्थानों पर उच्च न्यायालय का स्थान होना बताया। उच्च न्यायालय के एक का ज्ञान ६३, १ प्रतिशत नागरिकों में होने के प्रमुख कारणों में शिक्षा विधान का बीच का उदाहरण के रूप में होता, उच्च न्यायालय का उदाहरण में स्थित होना तथा दीर्घकाल के इसी स्थापना है।

उपर प्रेक्ष के उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश का नाम बताएँ का उमर २, ६ प्रतिशत नागरिकों में पूर्ण तथ्या जाति के है हुए तथा ५, २ प्रतिशत में बहुत किया और ६२, २ प्रतिशत नागरिक ज़ुवर रहे। प्रेक्ष के उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश का हुए नाम जानेवाले सभी नागरिक^{१५} है ५, ६ प्रतिशत उच्च जाति में है जो २१-२५ वर्ष तथा २६-३५ वर्ष के वायु वर्ग, स्नातक शैक्षणिक स्तरों तथा व्यवसाय एवं व्यापारी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत उमर देनेवाले नागरिक ८, ४ प्रतिशत उच्च तथा १ प्रतिशत शिक्षणी कार्यों में है जो २१-२५ वर्ष, २६-३५ वर्ष तथा ३६-४० वर्ष के वायु वर्ग, शरीर, शरीर कृत तथा स्नातक के बीच के शैक्षणिक स्तरों तथा विभागीय एवं कुशल वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ज़ुवर देनेवाले नागरिक का प्रतिशत मुख्यतः, का प्रतिशत अनुपस्थित, ६५ प्रतिशत शिक्षणी तथा ८६ प्रतिशत उच्च कार्यों में है जो सभी वायु वर्ग, शैक्षणिक स्तरों एवं व्यवसाय वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के ३, ८ प्रतिशत अवस्था में हुए उमर दिए की कि राजनीतिक कार्याकरण के बीच में राजनीतिक वर्गों के अब तक के अवस्थाओं में का है का है। सभी प्रेक्ष के उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के

नाम की १७, ४ प्रकृत नामांशों की जानकारी न होना अत्यन्त चिन्ता का द्योतक है । प्रसिद्ध के मतानुसार मुख्य मंत्री का नाम ब्रह्मर्षि २४, २ प्रकृत नामांश ब्रह्मर्षि १७, ४ प्रकृत नामांश के उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के नाम पर नामांशों की व्यवस्था १७, ४ प्रकृत नामांश पर, ऐसा क्यों ? इसका विचार करने से स्पष्ट होता है कि प्रसिद्ध के शिष्यों की भाँति, आचार्य क्यों उन पण्डितों की महत्त्वपूर्ण का ईश्वर नामांशों के मुख्य मंत्री के नाम का प्रकार एवं प्रकार प्रकृत नामांशों का नामांश है किन्तु मुख्य न्यायाधीश का नाम जो मंत्री में एक बार नामांशों की पुनर्स्थापना मुख्य मंत्री पिता की मृत्यु है ; प्रसिद्ध का मुख्य मंत्री स्वयं प्रसिद्ध का प्रमाण करते, प्रत्यक्ष का ईश्वर करते तथा अन्तिम नामांशों के शिष्यों का ध्यान करते प्रमाण का स्थायी का ही जाता है किन्तु मुख्य न्यायाधीश विचार रखकर, शीघ्र ही ईश्वर का अन्तिम (उच्च न्यायालय स्तर) के उच्च नामांशों की शिष्य में रखकर ही प्रमाणों को जाता है । वास्तविकता के बिना ईश्वर नामांशों की रचना * (१९७४) का अन्तिम करने से स्पष्ट होता है कि आचार्य की २, २ प्रकृत समय निर्धारित है^{१६} काकि वास्तविक नाम की ८, ७ प्रकृत किन्तु शीघ्र ही ५, ६ प्रकृत तथा वास्तविक शीघ्र ही २, २ प्रकृत समय निर्धारित किया गया है । अर्थ है कि आचार्य रचना के स्थायी स्वयं की कहीं भी नहीं की गई है । आचार्य में न्यायपालिका का स्थायी स्वयं होना बाह्य किन्तु नामांशों का न्याय ईश्वर का नाम निर्धारित हो गई ।

* उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर बाप प्रमाण विश्वास करते हैं ? के उत्तर में नामांशों में ७७, ७ प्रकृत पूर्ण १३, २ प्रकृत कुछ का ७, ६ प्रकृत का * ३, ६ प्रकृत वाचा का १, ३ प्रकृत विस्तृत नहीं विश्वास प्राप्त किया । इसी स्पष्ट है कि २६, ३ प्रकृत नामांशों की उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की न्याय भावना पर पूर्ण विश्वास है कि न्यायपालिका के लिए ईश्वर प्रमाणों की रक्षा है । उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर पूर्ण विश्वास प्राप्त करनेवाले नामांश १० प्रकृत मुख्यमान ७७ प्रकृत उच्च, ७७ प्रकृत पिता का १० प्रकृत अन्तिम नामांशों में है जो की वास्तविक (का है अधिक १६-२० वर्ष की उम्र का है का ७५-८५ वर्ष) ईश्वर स्तरों (का है अधिक स्तरों है की

जहाँ ऊपर क्या ऊँ है कम निस्तार जहाँ बाहर) और व्यवसाय कारी (मच्छूरी ऊँ है कम) का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुर्मी विश्वास प्रकट करनेवाले नागरिक ५० प्रतिशत कुम्भिका , २५ प्रतिशत पिछड़ी, २५ प्रतिशत उच्च तथा १० प्रतिशत मुख्यमान कारियों में है जो की लगी वायु कारी (ऊँ है अधिक ४५-५५ वर्ष) शैक्षणिक स्तरों (ऊँ है अधिक निस्तार) तथा व्यवसाय कारी (ऊँ है अधिक मच्छूरी जहाँ पूर्ण) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक कारों के ७० प्रतिशत कार्यों में उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर पूर्ण विश्वास प्रकट किया । उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर वापसकाउ के पूर्ण बादास पूरा ४५, ४ प्रतिशत वापसकाउ में बादासकाउ २५ प्रतिशत तथा वापसकाउ कार्यालय होने पर बादास पूरा १९, = प्रतिशत नागरिकों ने कुर्मी विश्वास प्रकट किया है । इसी स्पष्ट है कि कता कारों के सम्बन्ध में न्यायापालिका पर विश्वास बढ़ा है फिर भी न्यायापालिका के नीचे के कुम्भिका नहीं है । स्पष्ट जहाँ निम्न न्यायापालिका के विकास में राजनीतिक कारों की भूमिका का वक्तव्य नवीकरण का विषय प्रतीत होता है ।

मुख्य नीति की पर है जहाँ उठा क्या है ? ता ऊपर नागरिकों में २०, ६ प्रतिशत पूर्ण क्या जहाँ कम है उठा क्या ५९, २ प्रतिशत कुम्भिका और २९, ९ प्रतिशत नागरिक ऊपर रहे । पूर्ण क्या जहाँ कम है मुख्य नीति की परकुम्भिका करने की लक्ष्य का विश्वास देनेवाले नागरिक २६, २ प्रतिशत ३० प्रतिशत पिछड़ी तथा २० प्रतिशत कुम्भिका कारियों में है जो की लगी वायु कारी शैक्षणिक स्तरों (निस्तार छोड़कर) तथा व्यवसाय-कारों (मच्छूरी छोड़कर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुम्भिका ऊपर देनेवाले नागरिक १६, = प्रतिशत कता, १०, ९ प्रतिशत प्रभावनी, ५, २ प्रतिशत राष्ट्रपति तथा ६, २ प्रतिशत उच्च में मुख्यनीति की परकुम्भिका करने की लक्ष्य का विश्वास करने हैं । कुम्भिका ऊपर देनेवाले नागरिक ६० प्रतिशत मुख्यमान, ५० प्रतिशत पिछड़ी, ४२, ४ प्रतिशत उच्च तथा ४० प्रतिशत कुम्भिका कारियों में है जो की लगी वायु कारी, शैक्षणिक स्तरों तथा व्यवसाय कारों (वक्तव्य छोड़कर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । ऊपर देनेवाले नागरिक ४० प्रतिशत कुम्भिका, २० प्रतिशत पिछड़ी, १६, ४ प्रतिशत उच्च तथा १० प्रतिशत मुख्यमान,

वाकियों में से जो छठी वायु कर्मा (विधीनकर २६-२९ वर्ष) शैशिक स्तरों (विधीनकर निरन्तर छात्र तथा प्राथमिक) तथा व्यवसाय कर्मा (व्यापक एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक कर्मा के ३५, ६ प्रतिशत कर्मा ने पूर्ण कर्मा वांछित रूप से कुछ कुछ नहीं की परन्तु करनेवाले कर्मा को बताया कि जो कि इन राजनीतिक कर्मा के द्वारा राजनीतिक छापीकरण के बीच में किसी कर्मावाले कर्मा का परिणाम प्रतीत होता है ।

उपर प्रीट का कर्मान राज्यपाल कर्मा है ? का उपर नागरिकों ने १६, ० प्रतिशत कुछ तथा २२, ४ प्रतिशत कुछ किया और १०, ६ प्रतिशत नागरिक कर्मा रहे । पूर्ण कर्मा कर्मा वांछित रूप से कर्मान राज्यपाल का कुछ नाम कर्मान कर्मा नागरिक २५ प्रतिशत उच्च, २० प्रतिशत मुकमान, १५ प्रतिशत पिछड़ी तथा १० प्रतिशत अनुसूचित वाकियों में से जो छठी वायु कर्मा (१६-२० वर्ष होकर) शैशिक स्तरों (निरन्तर होकर) तथा व्यवसाय कर्मा (मजदूरी एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । कर्मान राज्यपाल के स्थान पर कर्मा के राज्यपालों कर्मा अन्य प्रीट राजनीताओं के बीच कर्मा होकरनाथी, डा० कर्माके नाथी का नाम कर्मानवाले कर्मा कुछ उपर कर्मान नागरिक ३० प्रतिशत मुकमान, २५ प्रतिशत उच्च, २० प्रतिशत पिछड़ी तथा १० प्रतिशत अनुसूचित वाकियों में से जो छठी वायु कर्मा (१६-२५ वर्ष होकर तथा विधीनकर १६-२० वर्ष एवं ३६-४५ वर्ष) शैशिक स्तरों (विधीनकर स्नातक से नीचे एवं ऊपर) तथा व्यवसाय कर्मा (व्यापक एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । कर्मान कर्मान नागरिक २० प्रतिशत अनुसूचित १५ प्रतिशत पिछड़ी, १० प्रतिशत मुकमान तथा ५० प्रतिशत उच्च वाकियों में से जो छठी वायु कर्मा, शैशिक स्तरों एवं व्यवसाय कर्मा (व्यापक होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक कर्मा के ३०, ८ प्रतिशत कर्मा ने कर्मान राज्यपाल का कुछ नाम बताया जो कि राजनीतिक छापीकरण के प्रभाव को प्रतीत करता है क्योंकि किसी भी वाकित है के नागरिकों में कर्मान कर्मान नहीं है किन्तु यह प्रतीत कर्मानप्रद है ।

नाथ का कर्मान राज्यपाल कर्मा है ? का उपर नागरिकों ने ५२, ६ प्रतिशत पूर्ण या वांछित रूप से कुछ तथा १०, ५ प्रतिशत

बहुद पिया वीर ३६, ६ प्रविष्ट नामलिख कुण्डर १६ । पूर्ण या वारिष्ठ रूप है
 वर्तमान राष्ट्रपति का हुद नाम बतायेवाले नामलिख ७० प्रविष्ट मुखमान, ६६, ४
 प्रविष्ट उज्ज, ३५ प्रविष्ट पिछड़ी तथा २० प्रविष्ट अनुसूचित जातियों में है जो
 लो जायु काँ, छिदाक स्तरों (किछनकर हाई स्कूल एवं उच्च ऊपर है) तथा
 व्यवसाय-काँ (व्यवसाय एवं प्रविष्ट तथा व्यवसाय २४, ६ प्रविष्ट) का प्रतिनिधित्व
 करती हैं । बहुद उपर देनेवाले नामलिखों में किछनकर तत्कालीन प्रधानमंत्री वीर
 जीत काठीन राष्ट्रपति के नाम बताये जो लीव देता है कि प्रधान मंत्री एवं राष्ट्रपति
 के मध्य किछन करती की कामता तथा महीन परिवर्तनों के प्रति उत्पुनता का समाय
 नामलिखों में है । वर्तमान राष्ट्रपति का बहुद नाम बतायेवाले नामलिख २५ प्रविष्ट
 पिछड़ी, २० प्रविष्ट अनुसूचित तथा २, = प्रविष्ट उज्ज जातियों में है जो लो
 जायु काँ (१६-२० वर्ष होकर) छिदाक स्तरों (स्नातक है नीचे एवं ऊपर
 होकर) एवं व्यवसाय काँ (व्यवसाय, व्यवसाय एवं मजदूरी होकर) का
 प्रतिनिधित्व करती हैं । कुण्डर देनेवाले नामलिख ६० प्रविष्ट अनुसूचित ४० प्रविष्ट
 पिछड़ी, २० प्रविष्ट मुखमान तथा २०, = प्रविष्ट उज्ज, जातियों में है जो
 लो जायु काँ (किछनकर ४६-७० वर्ष) छिदाक स्तरों (किछनकर निरस्तार
 एवं छात्र) तथा व्यवसाय काँ (व्यवसाय होकर) का प्रतिनिधित्व करती हैं ।
 राजनीतिक वर्गों के ६९, ५ प्रविष्ट जगहों में वर्तमान राष्ट्रपति का पूर्ण जगह
 वारिष्ठ रूप है हुद नाम बताया जो उज्ज एवं मुखमान जातियों के नामलिखों
 में है । वारिष्ठ तो यह है कि प्रविष्ट के वर्तमान मुख्यमंत्री के वीरता वर्तमान
 राष्ट्रपति के नाम की जानकारी ३३, २ प्रविष्ट नामलिखों में है । इस लो
 के प्रमुख जगह राष्ट्रपति का व्यक्तित्व निष्पत्ति, संवैधानिक शासन प्रणाली, राज्य
 की राजनीति में नग्य भूमिका, जल प्रत्यक्ष जनसंख्या तथा न्यूनतम पाठ्य एवं
 प्रकार प्रविष्ट होती हैं ।

भारत की राजधानी काँ है १ के उपर में ६४, = प्रविष्ट
 नामलिखों में दिल्ली हुद बताया वीर ५, २ प्रविष्ट नामलिख कुण्डर १६ । भारत
 की राजधानी दिल्ली है इसका ज्ञान देनेवाले नामलिख ७० प्रविष्ट, उज्ज एवं
 प्रविष्ट मुखमान ६० प्रविष्ट अनुसूचित तथा २५ प्रविष्ट पिछड़ी जातियों में है जो

कमी वायु कार्ग, औद्योगिक स्तरीय तथा व्यवसाय कार्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऊपर रूढ़िवादी नागरिक १५ प्रतिशत पिछड़ी तथा १० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में से की कमी वायु कार्ग (१५-२० वर्ष एवं ५५-७० वर्ष होकर) निम्नतर एवं कुम्हार चारों स्तर के औद्योगिक स्तरीय तथा कृषि, मजदूरी, नौकरी एवं नात्य रत्ना के कार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के उच्च प्रतिशत सदस्यों ने भारतीय की राजनीति का बिली स्थित होना बताया।

‘ भारत का वर्तमान प्रधान मंत्री कौन हैं ? ’ का उपर ६४, ८ प्रतिशत नागरिकों ने सुद तथा १, ३ प्रतिशत ने कुद दिया और ३, ६ प्रतिशत नागरिक ऊपर रहे। भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री का सुद नाम रूढ़िवादी नागरिक उच्च प्रतिशत मुख्यमान ६५ प्रतिशत पिछड़ी, ६४, ४ प्रतिशत उच्च तथा ६० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में से की कमी वायु कार्ग, औद्योगिक स्तरीय तथा व्यवसाय कार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुद उपर रूढ़िवादी तथा २, ६ प्रतिशत ऊपर रूढ़िवादी नागरिकों की नाम की जानकारी रही क्योंकि इसके पूर्ववर्ती प्रश्नों के उपरों में प्रधान मंत्री का ही नाम बताया किन्तु का प्रधान मंत्री का नाम पूछा गया उस फल से उस नाम की बता देने के कारण कुद नाम बताया जवाब नहीं रहे। इसी स्पष्ट होता है कि ये नागरिक व्यक्ति के फल एवं नाम में उच्च स्थापना करने में तत्पर रहे जो कि राजनीतिक समाजीकरण के जवाब का परिचायक है।

भारत का वर्तमान न्यायाध्यक्ष कौन पर हैं ? का उपर नागरिकों ने ७६, ३ प्रतिशत कुद (दिल्ली) तथा १०, ५ प्रतिशत कुद दिया तथा शेष १३, २ प्रतिशत नागरिक ऊपर रहे। कुद उपर रूढ़िवादी नागरिक ६० प्रतिशत पिछड़ी ७०, ८ प्रतिशत उच्च, ६० प्रतिशत अनुसूचित तथा ६० प्रतिशत मुख्यमान जातियों में से की कमी वायु कार्ग (विशेषकर २५-३५ वर्ष) औद्योगिक स्तरीय (विशेषकर चारों स्तर, स्नातक से नीचे तथा ऊपर) और व्यवसाय कार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुद उपर (प्रायः रूढ़िवादी) रूढ़िवादी नागरिक २० प्रतिशत मुख्यमान, २० प्रतिशत अनुसूचित, ८, ३ प्रतिशत उच्च तथा ५ प्रतिशत पिछड़ी जातियों में से की कमी वायु कार्ग (२१-२५ वर्ष तथा ५५-७० वर्ष होकर) औद्योगिक स्तरीय

(बापार तथा स्नातक एवं स्नातकोपर होकर) तथा व्यवसाय कारी (व्यवसाय तथा नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुपर लगेवाले नागरिक २० प्रतिशत मुकमान , २० प्रतिशत कुमुषित , १३, ६ प्रतिशत उच्च तथा ५०-प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो की उभी वायु कारी (१६-४५ वर्ष होकर) ऐतिहासिक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर होकर) तथा व्यवसाय कारी (व्यवसाय एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक वर्गों के ८८, ५ प्रतिशत अवस्था में कर्माध्य न्यायालय के मुद्द स्थान बताया की राजनीतिक कारीकरण के प्रभाव का उचित होता है ।

कर्माध्य न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश का नाम बताया है * के उतर में नागरिकों में १०, ५ प्रतिशत मुद्द तथा १, ३ प्रतिशत कुमुद नाम बताया और उच्च ८८, २ प्रतिशत नागरिक कुपर रहे । कर्माध्य न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश का पूर्ण कर्माध्य जाति रूप है मुद्द नाम बताया है नागरिक १३, ६ प्रतिशत उच्च १० प्रतिशत कुमुषित , १० प्रतिशत मुकमान तथा ५ प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो की उभी वायु कारी (१६-२० वर्ष होकर , बिलेनकर १६ है ४५ वर्ष) बापार कारी स्कूल तथा स्नातक एवं स्नातकोपर ऐतिहासिक स्तरों और व्यवसाय कारी (मजदूरी एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुमुद उतर देनेवाले १० प्रतिशत मुकमान नागरिक हैं जो २६-३५ वर्ष के वायु कारी, कारी स्कूल ऐतिहासिक स्तर तथा व्यापारी कारी का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुपर लगेवाले नागरिक १५ प्रतिशत पिछड़ी १० प्रतिशत कुमुषित, ८६, १ प्रतिशत उच्च तथा ८० प्रतिशत मुकमान, जातियों में है जो की उभी वायु कारी, ऐतिहासिक स्तरों तथा व्यवसाय कारी का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक वर्गों के ११, ५ प्रतिशत अवस्था में कर्माध्य न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश का नाम पूर्ण कर्माध्य जाति रूप है मुद्द बताया । यद्यपि मुद्द उतर देने में राजनीतिक वर्गों के अवस्था का प्रतिशत अधिक है किन्तु अतीनाकत है । कर्माध्य न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के नाम की इतनी कम जानकारी का प्रधान कारण उन एकल जातियों में न्यायपालिका की उचित स्थान न मिलना की है ।

* भारत के राष्ट्रपति का क्या है बड़ा अधिकार क्या है ?
का उतर नागरिकों में १०, २ प्रतिशत मुद्द (जपासनातीन बीजणा) तथा १५, ५ प्रतिशत कुमुद (अन्य अधिकारों) दिया और ४०, ३ प्रतिशत नागरिक

बुधर रहे । भारत के राष्ट्रपति के कम से कम अधिकार के कम में वापस लाठी न
 पोषण की बतानेवाले नागरिक २२, २ प्रतिशत उच्च २० प्रतिशत मुछमान
 १० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो की वायु कर्मी
 (पिछेकर १६-२० वर्ष) छेपिक स्तरों (पिछेकर स्नातक से नीचे एवं ऊपर ,
 निस्तार छेपिक) तथा व्यवसाय कर्मी (मजदूरी एवं नीकरी छेपिक) का प्रतिनिधित्व
 करते हैं । राष्ट्रपति के छेपिक लाठी न अधिकार के बतानेवाले अन्य अधिकारों में छेपिक
 में करना, राज्यवालों की नियुक्ति, नामादान, बन्धावेक, न्यायवीलों की
 नियुक्ति बापि बतानेवाले नागरिक ४१, ७ प्रतिशत उच्च, ४० प्रतिशत मुछमान,
 २० प्रतिशत पिछड़ी तथा २० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में है जो की वायु कर्मी
 (कम से कम ४६-५५ वर्ष वीर कम से अधिक ५६-७० वर्ष) छेपिक स्तरों (पिछेकर
 स्नातक से नीचे एवं ऊपर) तथा व्यवसाय कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं । बुधर
 रनेवाले नागरिक ७० प्रतिशत अनुसूचित ६० प्रतिशत पिछड़ी , ४० प्रतिशत मुछमान
 तथा २६, १ प्रतिशत उच्च जातियों में है जो की वायु कर्मी (पिछेकर ४६-५५ वर्ष)
 छेपिक स्तरों (पिछेकर निस्तार एवं सादार) तथा व्यवसाय कर्मी का प्रतिनिधित्व
 करते हैं । राबनीतिक वलों के १५, ४ प्रतिशत छवर्षों में प्रत्येक का छुद उतर दिया
 जो कि छुद उतर देनेवाले व्यक्त नागरिकों का ४४, ५ प्रतिशत है फिर भी कर्मीजनक
 प्रतीत होता है ।

भारत के राष्ट्रपति की कम से कम छेपिक का करता है
 के उतर में १८, ४ प्रतिशत नागरिकों में महाभियोग (छुद) तथा ४८, ७ प्रतिशत में
 छुद बतानेवाले वीर २२, ६ प्रतिशत नागरिक बुधर रहे । छुद उतर देनेवाले नागरिक
 २०, ८ प्रतिशत उच्च, २० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत पिछड़ी जातियों में
 है जो की वायु कर्मी (पिछेकर १६-२५ वर्ष) छेपिक स्तरों, (पिछेकर
 स्नातक से नीचे एवं ऊपर वीर निस्तार छेपिक) तथा व्यवसाय कर्मी (मजदूरी
 एवं नीकरी छेपिक) का प्रतिनिधित्व करते हैं । छुद उतर देनेवाले नागरिकों
 में पिछेकर पुनाय एवं अधिकारों के उपायों का करारा लिया किछे यह
 स्पष्ट होता है कि नागरिक लाठी न अधिकारियों की पदच्युत करने के लिए पुनाय
 की एक कम छेपिक मानते हैं । कार्यकाठ के मध्य में पदच्युत करने के लिए प्रान

प्रधान के छिरे प्रयुक्त रीतिवाले वधिरबाह प्रस्ताव की प्रक्रिया की राखरूपति के छिरे भी कायानिबन्धन करने की एक समान बाह्या प्रतीत होती है । वृद्ध उपर रीतिवाले नागरिक ८० प्रतिशत मुखजान , ५५ प्रतिशत पिछड़ी , ५० प्रतिशत अनुसूचित तथा ३६, १ प्रतिशत उच्च जातियों में है जो की की जायु काँ (विधेयकर २६ वर्ष के ऊपर के) छेदिक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करी है । वृद्ध रीतिवाले नागरिक ३६, १ प्रतिशत उच्च, २५ प्रतिशत पिछड़ी, ३० प्रतिशत अनुसूचित तथा २० प्रतिशत मुखजान जातियों में है जो की की जायु काँ (विधेयकर २६-२६ वर्ष) छेदिक स्तरों । विधेयकर निरक्षर एवं छात्र) तथा व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक दलों के २२, १ प्रतिशत सदस्यों ने वृद्ध उपर दिये की राजनीतिक समाधीकरण का छेदित रीति है ।

‘ नारसीय छेद के दोनों छेदों के नाम बताये के उपर में ४२, २ प्रतिशत नागरिकों ने छेदित छेदों तथा १२, ७ प्रतिशत ने ‘ राज्यसभा ’ की बताया , २, ६ प्रतिशत नागरिकों ने वृद्ध उपर दिया की ५३, ६ प्रतिशत नागरिक वृद्ध रीति है । ‘ छेदित छेदों ’ बताये वाले नागरिक ५५, ६ प्रतिशत उच्च , ३५ प्रतिशत पिछड़ी , ३० प्रतिशत अनुसूचित तथा २० प्रतिशत मुखजान जातियों में है जो की की जायु काँ (विधेयकर २६-३५ वर्ष) छेदिक स्तरों (निरक्षर एवं छात्र वास्तु का) तथा व्यवसाय काँ (मजदूरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । ‘ राज्य सभा ’ बताये वाले नागरिक ३०, ६ प्रतिशत उच्च १५ प्रतिशत पिछड़ी १० प्रतिशत अनुसूचित तथा मुख्य प्रतिशत मुखजान जातियों में है जो की की जायु काँ , छेदिक स्तरों (निरक्षर होकर) तथा व्यवसाय काँ (मजदूरी एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । वृद्ध उपर रीतिवाले नागरिक १० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत मुखजान जातियों में है जो २६-२५ वर्ष तथा २६-३५ वर्ष के जायु काँ , छेदित स्तर तथा मजदूरी तथा व्यापार के व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । वृद्ध रीतिवाले नागरिक ७० प्रतिशत मुखजान ५५ प्रतिशत पिछड़ी, ६० प्रतिशत अनुसूचित तथा ४५, ४ प्रतिशत , उच्च जातियों में है जो की की जायु काँ, छेदिक स्तरों (विधेयकर निरक्षर तथा छात्र)

ने प्रश्न का कुछ उत्तर दिया जो कि नागरिकों की अपेक्षा अधिक का उच्च वांछि है का है ।

‘जन्य न्यायालय, संघ और राष्ट्रपति - ये तीनों किसी निश्चित रसी हैं के उतर में ७, ८ प्रतिकृत नागरिकों में ‘डीकान’ (कुल) का ४०, ४ प्रतिकृत ने कुल निदेश का नाम बताया और ४४, ८ प्रतिकृत नागरिक अनुसार है । ‘डीकान’ की न्यायाधिका, व्यवस्थापिका एवं कार्यवाहिका का निदेश समझने वाले नागरिक १६, ७ प्रतिकृत उच्च वांछि (वर्य होकर) में है वन्य किसी भी वांछि के एक भी नागरिक ने ऐसा नहीं समझा । कुछ उत्तर देनेवाले नागरिक २६-३० वर्ष के मध्य के वायु काँ, छादार, जॉई स्कूल तथा स्नातक एवं स्नातकोपर शैक्षिक स्तरों और व्यवसाय एवं कृषि व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत उत्तर देनेवाले नागरिकों ने विवेचनकर प्रवान मंत्री ^{३१} श्रीमती शीबरा नाथी की तीनों का निदेश निरूपित किया जो कि एक पद के प्रभावों का परिचायक है । बहुत उत्तर देनेवाले नागरिक ६० प्रतिकृत मुख्यमान, ५० प्रतिकृत उच्च, ४५ प्रतिकृत पिछड़ी तथा ३० प्रतिकृत अनुसूचित जातियों में है जो की वायु काँ, शैक्षिक स्तरों तथा व्यवसाय काँ (व्यवसाय होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । उत्तर देनेवाले नागरिक ७० प्रतिकृत अनुसूचित ५५ प्रतिकृत पिछड़ी, ४० प्रतिकृत मुख्यमान तथा ३३, ३ प्रतिकृत उच्च जातियों में है जो की वायु काँ (विवेचनकर ४६-७० वर्ष के मध्य) शैक्षिक स्तरों (विवेचनकर निरदार एवं छादार) तथा व्यवसाय काँ (व्यवसाय होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षीतिक काँ है १६, २ प्रतिकृत सदस्यों ने कुछ उत्तर दिया जो एक है अधिक है और राक्षीतिक समीकरण के परिणाम का परिचायक है । डीकान के महत्व की ६२, २ प्रतिकृत नागरिक नहीं समझते यह उत्पन्न निराशाजनक तथ्य है ।

जन्य अधिक किसी निश्चित है के प्रश्न उत्तरों में नागरिकों ने ४४, ३ प्रतिकृत कक्षा ११, ८ प्रतिकृत सरकार का २, ६ प्रतिकृत डीकान में जन्य अधिक का निवास बताया और १, ३ प्रतिकृत नागरिक अनुसार है । ‘कक्षा’ में जन्य अधिक के निवास पर निवास प्रकट करनेवाले नागरिक ६१, ७ प्रतिकृत

उच्च, १० प्रतिशत मुखजान २० प्रतिशत पिछड़ी तथा ६० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में है जो सभी जायु वर्ग (२१-२५ वर्ष) तक प्रतिशत) शैक्षणिक स्तरों (हाईस्कूल तथा स्नातक एवं स्नातकोपर तक प्रतिशत) तथा व्यवसाय वर्ग (व्यवसाय एवं नीकरी तक प्रतिशत) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।" बहारा में सर्वोच्च शिक्षा का अनुभव करनेवाले नागरिक ३० प्रतिशत अनुसूचित १० प्रतिशत मुखजान, १० प्रतिशत पिछड़ी तथा ६० प्रतिशत उच्च जातियों में है जो सभी जायु वर्ग (२१-२५ वर्ष) हाईस्कूल (हाई स्कूल, स्नातक एवं स्नातकोपर हाईस्कूल) तथा व्यवसाय वर्ग (व्यवसाय एवं व्यवसाय हाईस्कूल) का प्रतिनिधित्व करते हैं स्पष्ट है कि पिछड़ेतर निरक्षर एवं साधारण शैक्षणिक स्तरों के नागरिक वर्गों के बीच में तीव्रतात्मक छात्र प्रजाती के महान मूल्य है व्यक्त नहीं है ।" शोधन में सर्वोच्च शिक्षा अनुभववाले नागरिक १० प्रतिशत अनुसूचित तथा ५ प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो स्नातक एवं नीचे के शैक्षणिक योग्यता रखनेवाले व्यक्त, ज्ञान है । अनुभव रखनेवाले ५ प्रतिशत पिछड़ी जाति के नागरिक हैं जो ३६-४५ वर्ष के जायु वर्ग, निरक्षर शैक्षणिक स्तर तथा श्रमिक के व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक दलों के ६२, ३ प्रतिशत सर्वसर्वोच्च शिक्षा का निवास करता है स्वीकार करते हैं जो कि तीव्रतात्मक मूल्यों में जायु का एक है केवल प्रमाण है और तीव्रता की परिधीयता का राज है । अत्यन्त प्रसन्नता है कि शोधन विधान का दोष के ६२, ३ प्रतिशत नागरिक वर्गों में व्यक्त करता है सर्वोच्च शिक्षा (प्रत्युत) के निवास पर विश्वास करते हैं जो कि जनता का लक्ष्य है ।

शोधन विधान का निवासियों में महान प्रगति का ठीक ज्ञान न होने के कारण बस्तीपूत वर्गों को सेवा विध ७ (१) में स्पष्ट किया गया है किसे ज्ञान होता है कि एड १६६७ ई० के निवासियों में एक है जायु ६० प्रतिशत नव बस्तीपूत हुए हैं ।

सन्दर्भ-संकेत:- १५१

- १- श्री विकास बहादुर सिंह, जिराँव, श्री बरौंछाठ, श्री दुर्ग (दुर्ग की दुर्ग)
- २- श्री कल्याण कुमारा, बहायनीया ।
- ३- १ मई, १९७७ के पूर्व, क्योंकि वह तिथि की विविधता कता पाटी की स्थापना पूर्व ।
- ४- श्री शेषमणि कुल, जिराँव, सक्रिय जस्य जतिव ।
- ५- श्री सत्य नारायण सिंह (यादव) बहायनीया ; श्री मन्मथ यादव, जना ;
श्री पुष्पकान्तमणि बिपाठी बिपाठिया ; श्री जलमणि मिश्र, कुडा ;
श्री राव नारायण यादव - बाठा , श्री हरदेव (कुलपति बाति) बिपाठिया ।
- ६- श्री महादेव प्रसाद मिश्र- बाठा ; श्री श्रीराम यादव - मन्मथ ; श्री कुलपति
बाठिया - जिराँव ; श्री बरह प्रसाद यादव, बाठिया ;
- ७- श्री जिराँव सिंह प्रसाद , बाठियापुर
- ८- श्री बलराम कुमारा , प्रसादबाठिया केव जिराँव जस, बाठिया ।
- ९- श्री राम प्रसाद , बरौंछाठ, जिराँव एवं श्री रामबिपाठिया, जिराँव ।
- १०- श्री हरदेव, बरौंछाठ, बिपाठी हरदेव कल्याण जस, बिपाठिया ।
- ११- श्री राव बहादुर सिंह, बहायनीया ।
- १२- श्री रामबिपाठिया कुल, जिराँव ।
- १३- श्री राम प्रसाद, बरौंछाठ, जिराँव ।
- १४- (क) श्रीमती कुमारी देवी नौब - बिपाठी, जिराँव केव बिपाठिया जसि बिपाठिया
(ख) श्रीमती नौब देवी बिपाठी, बाठिया, जिराँव केव बिपाठिया जसि,
बाठिया ।
- १५- (क) श्री रामबिपाठिया कुल, बाठिया ।
(ख) श्री शेषमणि कुल, जिराँव, बरौंछाठ केव जिराँव केव जिराँव, बाठिया
- १६- भारत बाणिज्य जस, १९७६, कुला एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत
बहायनीया, कुल १९६ ।

- १७- श्री बाल्याय प्रसाद कुलवाचा, बराकरीवा ।
- १८- श्री हर्षेण सिंह, गिरडीट ; श्री मु० बरीदी बन्सारी, गीपाडीपुर
- १९- श्री राम कुलवाचा, लखरा ।
- २०- श्री मु० लकी बन्सारी, का लकी लखुरावर ।
- २१- श्री मु० लखन बन्सारी, बीपुर (लायन)
- २२- श्री लाल प्रताप सिंह, लखपुर ; श्री लालमणि मिश्र- कुन्दा ; श्री नानिक बन्स-
रवाणी-बरीच ; कुनारी सुरक्षा बन्सारी- बीला ; श्री बन्सुल रज्जव -
देवदत्ता बापि ।

उ प र

संसार के राजनीतिक इतिहास में 20वीं शताब्दी "छोटी शताब्दी" के रूप में स्मरण की जाती है। छोटीशताब्दी की उपनामिता एवं छोटीशताब्दी के प्रभाव से अन्य अन्य छोटीशताब्दी की परिधि में घिरे हुए हैं। छोटीशताब्दी की उपनामिता ने हमें यह अधिक स्पष्ट रूप से बताया कि राजनीतिक घटनाओं का है किन्हीं कारणों राजनीतिक छोटीशताब्दी के प्राणाधार के रूप में स्वीकार किया जाता है। भारतवर्ष में अपनी स्वतंत्रता की प्राप्ति करने के पश्चात् अपने को छोटीशताब्दी के मर्यादित सीमाओं में घिरे हुए परिणामों के साथ ही रहने लगे हैं। स्वाधीनता के पूर्व एवं पश्चात् की राजनीतिक यह भारतीय राजनीति में अत्यधिक दूर तथा अपनी अपनी शक्तियों के छोटीशताब्दी को हाथ, कंधा, कान, व्यावहारिक तथा पिराया छिड़ दिया उनके प्रति समान एवं नापी पीढ़ी की ही रहनी। राजनीतिक घटनाओं के द्वारा नागरिकों का राजनीतिक व्यवहार किया जाता है तथा स्वयं राजनीतिक यह अपने को छोटीशताब्दी, तत्पश्चात् एवं बीच बीच में जाने के निमित्त को संभल तथा नैतिक करते हैं उसे प्रकाश करने का प्रयास किया गया है। यह प्रयास सामान्य निष्कर्ष प्राप्त करने की दिशा में एक प्रयत्न है क्योंकि एक छोटीशताब्दी - विधान तथा लोक के अन्तर्गत राजनीतिक घटनाओं की संख्या तथा प्रभावों का अध्ययन किया गया है। निष्कर्ष राजनीतिक घटनाओं के महाधिकारियों एवं नेताओं के साक्षात्कार और नागरिकों के साक्षात्कार पर अवलम्बित है।

छोटीशताब्दी विधान तथा लोक में अति भारतीय क्रांति का प्रचार एवं प्रसार स्वतंत्रता प्राप्ति के हेतु साम्प्रदायिक के पाठ्यक्रम के द्वारा जिसमें अनेक व्यक्तियों ने अपने हाथ, पाठ्यक्रम, रचना, अतिमान, उत्कृष्ट वेद ग्रंथ आदि का अत्यन्त उदाहरण किया है उनका प्रदर्शन किया किन्हीं किसी बड़े पत्रिका मराठी तक पहुँच गई किन्तु वह वह होता है दुर्लभ रहकर तथा के उपनाम पर कीन्तु ही वह उही समय से उसे पराजित के दुर्लभ को देखने लगे हैं। भारतीय जनसंघ छोटीशताब्दी, साम्प्रदायिक परिणाम, विधान मर्यादा प्रथापाटी, प्रथा समाकल्पादी यह,

समाजवादी यह, संयुक्त समाजवादी यह, रिपब्लिकन पार्टी, पुनर्निर्माणवादी, भारतीय साम्यवाद, भारतीय लोकवाद, संयुक्त कृषि, हिन्दू महासभा तथा कन्नडा पार्टी आदि की पक्ष विधान समाज के सामान्य, प्रतिष्ठित, वांछित एवं सर्व प्रिय राजनीतिक प्रवृत्तियों के वैयक्तिक मामलों एवं व्यक्तित्व समाजवादी की प्रवृत्ति करनेवाले रूढ़िवाद के रूप में आज प्रभावशाली हुई। राजनीतिक एवं आर्थिक सिद्धान्तों के प्रतिनिधित्व के हेतु कभी तक राजनीतिक कक्षा का स्वरूप निर्धार नहीं होता है क्योंकि सौदीक्षा, बाह्यीक्षा एवं आन्तरिकता अपना रंग अवश्य धारण करती है।

राजनीतिक यह समाज सिद्धान्तों के आधार पर संयुक्त मैतृत्व प्रदान करनेवाला नैतिकीय मानव सुभाव है जो कि समाज के माध्यम से सामंजस्य की प्रति वांछता है। इससे स्पष्ट है कि संसत्-सिद्धान्त, संयुक्त, मैतृत्व, समाज एवं सामंजस्य, राजनीतिक यह के निर्माता हैं। राजनीतिक यह अपने सिद्धान्तों को किसी न किसी 'वाद' के विकास की प्रथा का प्रयुक्त बनाते हैं। इसके अन्वय में यह राजनीतिक यह ही समी है। राजनीतिक यह अपना संयुक्त अपने अलग अलग स्थानिक संस्थाओं के अनुसार करते हैं इसके प्रत्येक इकाईयों में सम्पूर्ण संयुक्त ही स्थापित है जो कि अन्तिम के केंद्रीकरण का परिचायक है। राजनीतिक यह अपनी संसत्-सिद्धान्त इकाईयों के माध्यम से समाज का कम और कम का अधिक विभाजन, मैतृत्व बढ़ावा का विकास, यहाँ में साम्यपूर्ण समाजवादी स्थानिक विच्छा का सम्मेलन, राजनीतिक सामंजस्य (Assimilation) तथा राजनीतिक समाजीकरण करते हैं। नागरिकों को प्रवृत्ति: समी, स्वस्थ, पदाधिकारी, कार्यकर्ता, नेता एवं शासक की भूमिकाओं का समस्त निवृत्ति करने का प्रतिपादन राजनीतिक यह के संयुक्त में निहित है। विधान समाज में भारतीय राष्ट्रीय कृषि की शक्ति कृषि कर्मियों, भारतीय जनता की मजदूर कर्मियों तथा भारतीय लोकवाद की सौदीय कृषि इकाईयों का गठन हुआ है। यह के व्यक्तियों की संस्था इन कक्षाओं के विधान समाज निर्वाहों में प्राप्त कक्षाओं की संस्था का अन्तर्गत सम्पादित है। पदाधिकारियों का चुनाव या चयन या मनोनयन अन्य इकाईयों के पदाधिकारियों या कार्यकर्ताओं या नेताओं अथवा शासकों की इकाईयों के अनुसार तथा उपस्थित 'हुटों' के अनुसार किया जाता है। पदाधिकारी

यह दृष्टि में अपने समय को समाने के सबसे अधिक सुवर्णमय हेतु विवेक समुक्त है ।
 प्रत्येक महाधिकाारी की क्षमता एवं कार्य में स्पष्ट विभाजन नहीं है जिससे उत्तरदायित्व
 की सुस्पष्ट अवधारणा प्राप्त नहीं होती है । कोणाध्वरा का यह क्षीय प्रतीत
 होता है क्योंकि किसी भी दल की ह्वाइ के कोणाध्वरा के पास दल का वैधानिक
 निर्धारित अधिकार नहीं मिला । इन ह्वाइयों में निर्वहणाधीनता, नतिधीनता,
 अनुमतिहीनता, पक्षीय विच्छा, पुनःपुच्छा, उन्निवृत्तता एवं होमनिर्वाहता के वांछित
 अर्थों का अभाव है । प्राचीन लोगों ने राजनीतिक दलों के आधुनिक संरचनाओं की
 ह्वाइयों का बर्णन तो यथार्थ नहीं हुआ है यदि नष्ट भी है तो शिवाधीनता के निरीक्षण
 के लिए दृष्टान्तों की आवश्यकता पड़ेगी । अतः कठिन कष्टों, पक्षीय विच्छा
 तथा पक्षीय कठिन विवेक रूप है जो पक्षों के बर्णन का कार्य करती है । इन
 ह्वाइयों का यथार्थ प्रभाव प्रभावी एवं कार्यकारी दृष्टि न होने का प्रभाव कारण इनका
 अधिकतर ^{स्व} उपयोग होता है जो कि दल के संरचना में होमनिर्वाहता का
 रूप का प्रतीक है ।

राजनीतिक दल के दूसरे तत्त्व नेतृत्व का अध्ययन करने से
 स्पष्ट हुआ कि राजनीतिक दल संरचना नेतृत्व का विकास करते हैं । नेतृत्व परिस्थिति
 बाधित होता है और राजनीतिक प्रवर्तकों के " अर्थ " को विकसित करता है । यथार्थ
 समय में राजनीतिक दल के नेताओं के प्रति जनता में विवेक पूर्ण भाव एवं अविश्वास
 उत्पन्न हुआ है जिसके प्रमुख कारण हैं - नेताओं के अग्रगण्य चरित्र एवं व्यक्तित्व,
 राजनीति को व्यवहार बनाना, तथा , यथार्थ एवं कार्यकारी के लिए राजनीतिक करना
 तथा प्रतीत आदि । नेताओं की व्यक्तित्व प्रकृति होमनिर्वाहता की अवस्था प्राधिकारवादी
 अधिक किसी भी दल के अग्र अनुशासनाधीनता एवं विच्छा का प्रभाव है । नेताओं
 द्वारा दल के अग्रगण्य वर्गों का विच्छा वर्ग ^न बहुत कम होता है जिससे दल में एकतापूर्ण
 पुनःपुच्छा , पक्षीय विच्छा, त्यागपत्र, आदर्श जीवन , होमनिर्वाहता, पुनःपुच्छा
 व्यक्तित्व एवं राजनीति की अभिवृद्धि आदि के संस्कार दल में प्रविष्ट नागरिकों का
 वांछित अर्थों में नहीं हो पाता है । अपने दल को सज्जित करने एवं प्रमुख संरचना करना
 (इस परिस्थितियों में स्वयं को ही) राजनीतिक विच्छा के, राजनीतिक मूल्यों
 का विचार एवं प्रचार, राजनीतिक नीतिज्ञता का निर्धारण प्रतिपादन एवं अभिवृद्धि

कल का प्रतीकीकरण, नीति निर्माण एवं विधानमन्त्र तथा राजनीतिक दलों का विकास राजनीतिक नेताओं के प्रमुख कार्य हैं। नेताओं ने स्वयं नेतृत्व के विकास के लिए पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता का अनुभव किया है।

राजनीतिक कल हासिल करने की प्रक्रिया के लिए कम संख्या में प्राप्त करने का निम्नलिखित अनुशासित तरीका है प्रस्ताव करते हैं जिसका कल उन्हें निष्कर्षों में अपने कल के प्रतिनिधियों को कम प्रतिनिधि निष्कर्षों होने पर मिलता है। निष्कर्षों में कल के प्रस्तावों का निष्कर्ष विधान बना है अपनी महत्वपूर्ण बातों के अनुसार के अनुसार या संवैधानिक है न होकर उच्च स्तरों के प्रशासिकारियों के द्वारा होता है जो कि आत्म निष्कर्ष के विस्तारित हैं। कम प्रतिनिधि होने के लिए प्रस्तावों के कल में विचारक योग्यता को बहुत कम तथा वास्तविक संख्या, वास्तविक संख्या, उपर तक पहुँच, बीतने की वास्तविक एवं नेता के प्रति बहुत अधिक-मान वास्तविक का विशेष ध्यान देना जाता है। प्रस्तावों को किसी कानून के लिए प्रस्ताव: वास्तविक, प्रशिक्षण वास्तविक, वास्तविक ज्ञान तथा विधानमन्त्र का सहारा दिया जाता है और निर्धारित व्यवस्था होती है अधिक कम संख्या में वास्तविक किसी कल द्वारा व्यवस्था करने का अनुमान है। संवैधानिक प्राप्त करने के लिए सरकारी स्तरों को अधिकता भी दिया जाता है तथा अवस्थाओं को संवैधानिक भी दिया जाता है। संवैधानिक प्राप्त करने के लिए राजनीतिक दलों के द्वारा राजनीतिक का वास्तविकीकरण विचार संवैधानिक एवं अनुमान दिया जाता है।

राजनीतिक समाधीकरण राजनीतिक संस्कृति के द्वारा व्यवस्था, अनुमान एवं राष्ट्र में राजनीतिक योजना को विकसित करने की प्रक्रिया है जिससे परमाणु या नावी राजनीतिक समाधीकरण में उनकी सुविधाएँ सुनिश्चित एवं वास्तविक या परिचित की जाती है। राजनीतिक समाधीकरण के तीन चरण- राजनीतिक अनुशासित ज्ञान, राजनीतिक मान प्रमाण एवं राजनीतिक संज्ञान हैं। राजनीतिक मान प्रमाण अपने ज्ञान, व्यवस्था, ज्ञान, वास्तविक एवं ज्ञान का राजनीतिक उद्देश्यों की प्रक्रिया में प्रमाण करना है अर्थात् राजनीतिक व्यवहार है। राजनीतिक कल वास्तविकों को राजनीतिक मान प्रमाण के अनुसार, स्थान, परिवेश एवं कौशल प्रदान करते हैं। वस्तु

कृत्रिम में हरिकन एवं मुसलमान , भारतीय कर्मचारी में उच्च वर्ग और भारतीय छात्रवृत्त में निम्नवर्गों के नागरिक विशेष मान लेते हैं । नागरिकों की दृष्टि से विशेष राजनीतिक सक्रियता के उद्देश्य प्रकट: जातीय, प्रतिष्ठा के साथ जातीय पुनार, सामाजिक, प्रतिष्ठा एवं वेतन सेवा के अभाव में सेवा के उद्देश्य से राजनीति में मान लेनेवाले व्यक्तियों को संज्ञा बहुत कम है । राजनीतिक मान प्रणाली का विनाश, शिक्षा, आयु, व्यवसाय, धर्म, शिक्षण, पारिवारिक जीवन राजनीतिक दल की सफलता एवं जातीय दल विशेष रूप से प्रभावित करनेवाले कारक हैं । अनुपस्थित वातावरण के मादावा^{ओं} का मादान में मान लेने में प्रयत्न और पिछड़ी वातावरणों के मादावाओं का द्वितीय स्थान है । मादावाओं की मादान के प्रति उदासीनता राजनीति में रणनीति के अभाव एवं शुद्धता में बुद्धि के अभाव के कारण होती है ।

राजनीतिक समाधीकरण का अर्थ है मादावाओं के द्वितीय वक्ता राजनीतिक संज्ञान है । राजनीतिक संज्ञान का तात्पर्य राजनीतिक संस्थाओं, प्राधिकारियों , व्यक्तियों एवं समस्याओं से संबंधित ज्ञान को नागरिक में अन्तर प्राप्ति है अर्थात् राजनीतिक संस्कृति है । विकास लक्ष्य स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक की प्रमुख राजनीतिक संस्थाओं, उनके प्राधिकारियों तथा उनकी व्यक्तियों के विचार में ज्ञान की अन्तर प्राप्ति की समझने के लिए वास्तविकता तब ही मिलेगी ज्ञान हुआ कि विकास कक्षा है प्रत्यक्ष संज्ञा है किसी आयु अधिक हो गई है किसी विचार में विशेष प्रचार होती है तथा जो कि समस्याओं का स्रोत स्तर पर समाधान होती है उनके विचार में सभी वातावरण, व्यवसायों, आयु वर्गों एवं शिक्षा स्तरों के नागरिकों की जानकारी है । राजनीतिक ज्ञान के लिए हम हैं अधिक विश्वास रीतियों पर किया जाता है (वास्तविकता में बहुत कम) । भारतीय प्रविष्टि मुसलमान भारतीय ज्ञान प्राप्ति के माध्यमों पर विश्वास नहीं करते हैं । नागरिकों को हम हैं अधिक भारतीय राष्ट्रीय कृत्रिम एवं उनके नेताओं का ज्ञान है । नागरिकों को निर्यात प्रक्रिया की निष्पत्ति पर विश्व है । नागरिकों को अपने विधान तथा स्रोत की प्रमुख समस्याओं की विचारों वाक्यों का अभाव, बेकारी, बच्चों की कमी एवं दुर्घटना, पैस का संकट, व्यवसायों का अभाव एवं उनकी बुद्धिवादी में अज्ञान के वातावरण के वाक्यों का अभाव, विप्लव व्यक्त का अभाव , मुख्य बुद्धि , नारी शिक्षण संस्थाओं

का अभाव, बाधित, प्रष्टाचार, झुठ्ठा व्यवस्था का अभाव, सुर्वस्वकों द्वारा उत्पीड़न तथा हरिकन आवासी का बाधित होना आदि का ज्ञान है। उन्मत्तादि एवं मुक्तमान मानवों के राजनीतिक समाधीकरण का स्तर ज्ञात है किन्तु सभी बाधितों के राजनीतिक कर्तों के व्यवस्था का राजनीतिक उद्गम अधिक है जो यह किछ करता है कि राजनीतिक यह राजनीतिक समाधीकरण के उद्देश्य उन्मत् एवं उन्मत्त अभिकरण है।

हु का व

(1) राजनीतिक यह का एक वन हासन में प्रवेश कर लोक प्रतिनिधित्व करता है और इसका वन संमेलन में कार्य करते यह प्रतिनिधित्व करता है। लोक प्रतिनिधि और यह प्रतिनिधि में अपने वनस्व के लिए कनेक कर्तों में कलह होता है। लोक प्रतिनिधि कलह के कारण कलह पड़ता है एवं यह प्रतिनिधि का अवनान करता है। लोक प्रतिनिधि की अनुशासनीयता यह के द्वारा कलहें हुंड की तरह पान को बाधो है जो यह के विमल में कलहक है। राजनीतिक यह लोक प्रतिनिधियों के नामों की घोषणा करते हैं किन्तु स्वयं निवाधन नहीं कर कलहें। इसको और कलहा निवाधन करती है किन्तु अपने ही प्रतिनिधियों को प्रस्तावित नहीं कर कलही देही स्थिति में लोक प्रतिनिधि अपने यह तथा कलहाताओं दोनों के निर्वकण से आवासी निवाधन तक स्वयंस्व रहता है। अतः यह को अपने लोक प्रतिनिधि को प्रस्तावित करने का अधिकार होना चाहिए और उसकी प्रक्रिया राज्य द्वारा मान्य हो।

(2) प्रत्येक राजनीतिक यह विभिन्न नीतियों से संबंधित प्रस्तावों को कलहें प्रस्ताव से पारित करते हैं। ये प्रस्ताव कलह आकणिक, पनीरक, प्रोत्साहक तथा बाधक प्रतीत होकर हैं। यदि यह कलह विरोध की सरकार न की तो प्रस्ताव कलह हो जाती है। सरकार बनने पर भी कलह एवं कलहा का कलह नहीं रहता। अतः सरकारों यह विरोध पदा है नैतिक समर्थन

को वापस करें और उनकी प्राप्ति होने पर सम्मानित करें। विदेश परदा रक्षात्मक सम्पत्तियों के तथा वह के अस्तित्व के अधिक राष्ट्र के अस्तित्व को महत्व दें। संयुक्त राष्ट्र में विभिन्न सारों पर अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय विकास परामर्शदात्री संस्थाएं करें।

- (३) राज्य की समता का एक प्रमुख एवं निम्नतावान बन सरकारी सेवा में संलग्न है। निम्नता में राज्य के माध्य का कम निम्नता होता है तब सरकारी सेवा बन को विज्ञान पर ताठे लटकी है। समाकषापी व्यवस्था में इनको संस्था में रही है, १९६४ ^{प्र. ३} १९७० ^{प्र. ३} कुल १ करोड़ २५ लाख ८५ हजार थी। कम इन सरकारी कर्मचारियों को सामान का अधिकार प्राप्त है तब किन्हीं भी राक्षनीतिक कठ को व्यवस्था प्रणाली का अधिकार भी निम्नता प्राप्त क्योंकि विभिन्न संस्थाओं के द्वारा राक्षनीतिक कठ के सम्बन्ध रखे हो हैं। राक्षनीय कर्मचारियों को व्यवस्था के राक्षनीतिक कठों की नीतियों में व्यवहारिकता अधिक होगी।

- (४) देश के प्रत्येक व्यवस्था नागरिक के लिए राक्षनीतिक कठ की व्यवस्था अनिवार्य नहीं है परिणामस्वरूप राक्षनीतिक कठ, प्रणाली एवं ज्ञान उन्हें नहीं होता। प्रणाली में सामान करने का प्रतिकूल सामान्य रूप से ५० से कम ही रहता है। राक्षनीतिक अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था है। निम्नता में व्यवस्था करने के लिए विज्ञान, देश सेवा तथा व्यवस्था करों को योग्यता अनिवार्य हो विज्ञान व्यवस्था के योग्य हुए हो लगे।

- (५) कोई भी राक्षनीतिक कठ सरकार के समस्त आय-व्यय की जाँचोखा के अधिकारिक अपनी ओर से प्रणाली ^{आय -} व्यवस्था प्रस्तुत करने को वेष्टा नहीं करता। प्रत्येक कठ का लोक प्रतिनिधि अपने कठ द्वारा निम्नता आय व्यवस्था करने के पटल पर रहें हो सरकारी आय व्यवस्था के लिए विज्ञान निम्नता प्राप्त हो और प्रणाली पर व्यवस्था लगे। कठ के नेताओं में सामान की प्रणाली व्यवस्था है अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान का विकास हो लगे व्यवस्था के प्रशासनिक कर्मचारियों की वेष्टाही पर ही सामान करने के लिए योग्य होगी।

- (५) प्राचीन राक्षसीतिष्ठ यह संस्कारात्मक संज्ञाएँ बनाता है । विशिष्ट कार्यों के लिए संसदीय, निष्पक्ष, अनुशासन और कायस्थिकता समितियों परिणाम एवं फल भी बनाता है । इन समितियों, परिणामों एवं फलों में तथा संस्कारात्मक संज्ञाओं में ही हमारा हीत है । वे हमें अपने व्यक्तित्व रखते हैं किन्तु हम उन्हें सरकार के विभिन्न विभागों में भी व्यवहार में लाना चाहते हैं । हम अपनी उपयोगिता है अगर जातकीयता अनुभव होती है । हमारी अनुकूलता समितियों को देना है दूर होती है । यदि राक्षसीतिष्ठ यह के अन्तर् विभिन्न विभागों के संज्ञाओं की जानकारी का कुल करनेवाली विशिष्ट समिति अनुकूलकारी एवं संस्कारात्मक समितियों ही ही नेताओं में सरकार संस्कारात्मक संज्ञाओं को बाँटती है ।
- (७) राक्षसीतिष्ठ यहाँ का संस्कार, निष्पक्ष, प्रेरक, प्राण एवं अनीष्ट कर्मों को है । संज्ञाओं के अन्तर् तथा अन्तर् ही प्रकल्प करने में है बाह्य रखते हैं । कर्मकारों की प्रकल्प प्रिया के कारण उन्हें कर्मकारों में, पुनः में और यह भी करने में यह व्यक्तियों की ही ही संज्ञा देना ।^२ कर्मों को अपने पक्ष में करने के लिए राक्षसीतिष्ठ यह अनेक प्रत्यक्ष तथा अत्यन्त ही अनेक अनेक और तात्कालिक अनेकों ही-कालिकज्ञान करते हैं । कर्मों में यह सक्षम तथा वह निष्पक्ष होता है । कर्मों के प्रत्यक्ष वह निष्पक्ष ही जाता है और राक्षसीतिष्ठ यह अनेक फल कर्म कर लेते हैं । कर्मों के अतिरिक्त कर्मों का निष्पक्ष यह एवं सरकार दोनों पर होता अनिवार्य है । कर्मों में ही ही सक्षम ही ही राक्षसीतिष्ठ यह ही अपने अनुसार व्यवहार करने से बाध्य होता । कर्मों में राक्षसीतिष्ठ यह को प्रेरित होती है ही कर्म करने के लिए ही ही बाध्य होता है । कर्मों की जानकारी के लिए निष्पक्ष बाधों की बाध स्वयं, निष्पक्ष एवं कर्म संज्ञाओं स्थापना की बाध । कर्मों एवं कर्मों दोनों के निष्पक्ष है राक्षसीतिष्ठ यह के फल ही ही ही ही बाँटती है ।

- (८) प्रत्येक राक्षसीय यह करता है किन्हीं वर्गों के अधिक उपकी प्राप्त करता है । वर्धमान विधान प्रणाली में विध का स्तुति यह प्रमुख हो रहा है । वर्धमान वर्ग की विधीय प्रणाली की प्रतीति करते हैं किन्तु मोक्षवाद है प्रकाश नहीं हो पा रहे हैं । वर्धमान की अनेक ऐसी विधियाँ हो गयी हैं किन्तु उदासीन भी एक है । वर्धमान वर्ग के उचित और स्तुति कायों को केवल प्रकारों के अनुसार यह को उपकी बनाने के निमित्त बन गये हैं । ऐसी स्थिति में प्रत्येक राक्षसीय यह की अधिक स्थिति होक सेवा परीक्षाएँ द्वारा निश्चित एवं वास्तविकता का प्रतीति में परीक्षाएँ होनी चाहिए और विवरण करता तक पहुँचना चाहिए । होक प्रतिनिधियों को अधिक स्थिति का प्रस्ताव वर्ग में ही बार अवश्य होना चाहिए ।
- (९) राक्षसीय यह के अन्तर्गत रक्षक संस्था, वैयक्तिक एवं वर्धमान जीवन उपकी करनेवाले नामों को करता होकप्रति प्रतिनिधि का पुरस्कार होती है किसे सरकार भी मान्य करती है । होक प्रतिनिधि होने का स्थापित करता राज्य बना है ^{२४६} तथा होकप्रति ^{४४२} एवं विधान परिषदों में ^{४३४} तथा विधान बना है ^{२६४९} नामों को भारत में निश्चिता है । ^३ यह का प्रतिनिधित्व करनेवाले नामों को यह वर्धमान का पुरस्कार हो है जाता है और सरकार की ओर है उनकी सेवाओं का कोई भी प्रस्ताव नहीं होता । यह प्रतिनिधि को अधिक बड़ा वर्धमान होने पर वा तो वह अधिक तत्त्व बना होता है वा उदासीन हो जाता है क्योंकि अधिक अन्तर्गत विस्तार है । अतः राक्षसीय सेवा और वायु के आधार पर राज्य द्वारा राक्षसीय निष्ठा केन उपकी अनिवार्य रूप है प्रत्येक यह के लिए होनी चाहिए ।
- (१०) राक्षसीय यह अपने यह है उपकी नामों की राक्षसीय योजना को उदासीन उपकीवादी रखते हैं । अपने वैयक्तिक तत्त्वों को संघ में जाने वाले उपकीओं के मान्य मन में प्रस्ताव होन है प्रवेश करता है । किन्तु

यह अनुभव कल्प तत्त्व है कि वैचारिक सुस्पष्टता का प्रतिफल बहुत कम है। यह के एक ही विचार का माध्यम एक समान नहीं होता। इसका प्रमुख कारण कार्यकर्तियों की वैचारिक शिक्षा का अभाव ही है।
 व्यक्तिगत तथा अपने अनुमानों को बना में उपस्थित, राजनीतिक साहित्य अध्ययन-प्रसारण-वर्णन और इसी प्रकार की क्रियाओं में व्यस्त रहकर उन तक पहुँचा है और उनको अपने विचारों से शिक्षात्मक बोधन करता है। इस को स्याही छान लेना यह के शिक्षात्मक है- कल्प बोध प्रोत्सा है। अब: प्रत्येक राजनीतिक यह को अपने है संवेदनशील व्यक्तियों का शिक्षात्मक बोधन विशिष्ट कार्यकर्तों एवं छात्रों से करना चाहिए तब वैचारिक बोधन तथा व्यावहारिक बोधन में अन्तर नहीं पड़ेगा। ऐसे शिक्षात्मक बोधन व्यक्तियों पर कक्षा विश्वास कर नईनी कल्पता राजनीतिकों का विश्वास को पुनर्जीवित कर रहा है यह तक न पावेना।
 अनुभव ७७ प्रतिफल प्रिटिड नागरिक यह समझते हैं कि राजनीतिक मुठे होते हैं।

- (११) प्रत्येक राजनीतिक यह का अपना अलग नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुख्य है शिक्षावृत्तिगत कर राजनीतिक व्यवहार स्पष्ट करता है और कल्पों का सुवर्णन करता है। किन्तु विरोधी नेता को बना के प्रति, कोई यह नैतिक कल्पन, कोई यह उदासीनता, कोई यह व्यक्तिगत विरोध, कोई यह ही हठता, कोई यह तोड़फोड़ और कोई यह पार पीट का व्यवहार करना उचित समझता है किन्तु वास्तव में उचित क्या है इसका निर्धारण कौन करे ? अल्प व्यावहारिक परिस्थिति के समाधान के लिए राजनीतिक कक्षा की एक जांचार संस्था अनिवार्य है। एक जांचार संस्था होने पर उसको पारदर्शी एवं उपपारदर्शी के उत्कीर्ण करने पर कल्प का प्राविधान हो। निर्वाचन आयोग के अधीनस्थ स्वायत्तताओं द्वारा स्वायत्त प्रदान किया जाय।

सुझावों
 उपरोक्त उपायों पर ~~की जांचारी~~ है मुक्त हो जाने पर राजनीतिक

यह राजनीतिक समायोजन के सम्बन्ध एवं समग्र अभिकर्षों का प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर सकेंगे । राष्ट्रीय एकता, राजनीतिक चेतना तथा राजनीतिक संस्कृति का त्वरित विकास होना और राष्ट्रीय चरित्र तैयार होना । जनता के पुनीत, विश्वकर्मात्मक प्रणयों एवं मानवता प्रपञ्चों को बाधेगी तथा भारत राजनीतिक रूप में प्रगट हो सकेंगे ।

सन्दर्भ - संकेत:-

- १- भारत १९७६, छठवाँ प्रश्न भारत सरकार, पृष्ठ १६१।
- २- एन० कुरनर, पोलिटिकल पार्टीस, १९६५, पृष्ठ २१-२२।
- ३- भारत १९७५, छठवाँ प्रश्न भारत सरकार, पृष्ठ १६१-१६२। ^{राज्यसभा तथा}
- ४- एन० एन० डिमिट, पोलिटिकल पैन, १९७५, पृष्ठ १७६।
- ५- ई० बाकीर, रिक्वेस्टिंग दान गवर्नमेंट १९५८, पृष्ठ २७५।
- ६- दैह्युत (दैनिक समाचार पत्र वर्ष ५ वर्ष १९९) १६ मार्च, १९७६, पृष्ठ ४।

* विधानपरिषदों के सदस्यों की संख्या डा० दुर्गीदास बसु की पुस्तक 'Introduction to the Constitution of India' के १९६८ संस्करण से ली गयी है। लोकसभा तथा विधानसभा के सदस्यों की उसमें नवीनतम संख्या नहीं मिली और न 'भारत-१९६६' अथवा 'भारत-१९६८' ही कहीं उपलब्ध हो सके। अतः वे संख्यायें श्री पुरवराज जैन की पुस्तक 'भारतीय संविधान और नागरिकता' के अंतिम संस्करण से ली गयी हैं।

परिशिष्ट 'क'

(संघन की हकाईयों के पदाधिकारियों के कार्यान्वयन के प्रमुख प्रभावशील)

विकास सचिव : प्रधान पंचायत : ग्राम : राजनीतिक दल का नाम :
 पद : नाम : बापि : आशु : वैदिक योग्यता : मुख्य व्यवसाय :
 नौका व्यवसाय : कुशल योग्यता : वेतन स्तर : पिता की संतान संख्या :
 निजी सम्पत्तियों की संख्या : पितृसुख : विधवा : राजनीतिक आशु :
 पदाधिकारी ।

- १- ग्राम अपने दल का चुनाव किस और कब करा करे ।
- २- दल के संघन की कौन कौन हकाईयों नीचे हैं ऊपर तक है ।
- ३- विकास सचिव स्तर के सभी पदाधिकारियों का विवरण दीजिए ।
- ४- हकाईयों की कौन कौन श्रेणियाँ हैं ।
- ५- आपके दल के हकाईयों की आपके विकास क्षेत्र में वर्तमान समय में किसी संख्या है ।
- ६- विकास सचिव स्तर पर क्या दल का स्थायी कार्यालय है ? यदि हाँ तो कितने कच्चे भूखंड रखता है और स्थायी रूप से कौन उसका कार्य देखता है ।
- ७- दल के पास विकास क्षेत्र स्तर पर बाधा के कौन कौन और कितने बाधन हैं ?
- ८- दल के पदाधिकारियों का चुनाव विकास सचिव स्तर पर कैसे होता है ?
- ९- क्या किसी पद को प्राप्त करने के लिए संघन हुआ ? यदि हाँ तो किस पद के लिए ?
- १०- पदाधिकारियों की बैठकें कब कब और कहाँ होती हैं ?

- ११- हुक्मायें केडक के हंकेय में पदाधिकारियों के पास कैसे पहुंचती हैं ?
- १२- क्या सभी पदाधिकारी निश्चित समय पर केडक में पहुंच जाते हैं ? विलम्ब से कौन जाता है ?
- १३- केडकों का विवरण क्या जिओ पीपिका (रजिस्टर) में लिखा जाता है ? पीपिका कहां रखी है ?
- १४- पिछले वर्ष कुल जितना केडक हुई ?
- १५- केडक की कानूनरक संख्या (कोरम) क्या है ?
- १६- केडकों में यदि बध्मदा अनुमति न दे तो भी क्या सदस्यों की मौलने की स्वीकृता है ?
- १७- आपके यत्न में कौन कौन सेसे नेता है, कितने आपसी हंकेय बन्धे नहीं है
- १८- यत्न के संकलन में कार्य करनेवाला कम साधन के पद को प्राप्त कर लेता है तो उसमें क्या क्या परिवर्तन हो जाते हैं ?
- १९- यत्न के जिओ सदस्य को यत्न की सक्रियता से संश्लि करने का क्या नियम है ?
- २०- आज तक जितने सदस्यों पर सेसी कार्यवाही हुई है ?
- २१- जितने सदस्यों ने स्थान पत्र दिया है और क्यों ?
- २२- यत्न के कार्यवाहियों की किस प्रकार अधिक योग्य बताते हैं ?
- २३- आपके यत्न के कुल पत्र कौन कौन है ? उनको जितनी प्रतिवां इस विकास कण्ड में जाओ हैं ?
- २४- यत्न का सक्रिय करने की क्या निश्चित व्यवधि होती है ?
- २५- क्या सक्रियता अभियान में कोई प्रचार या रना करते हैं ?
- २६- क्या आपके कार्यक्षेत्र में बाका कौन सक्रिय करते हैं ?
- २७- पहले यत्न के सदस्यों, कार्यवाहियों और नेताओं को अपनी ओर किस विधियों से आकर्षित करते हैं ?

- २८- आप इस बह के सफर-प्रश्न बार फिर हन् में को और फिरने जाया ?
- २९- क्या तब से अब तक के सफर फिरों और बह के सफर को ?
- ३०- आप राजनीतिक में 24 घंटे में जितना समय जोरत से को है ?
- ३१- फिरने आपको प्रश्न बार सफर जाया उसी फिर बात है आप अधिक प्रमाणित हो को ।
- ३२- आपने राजनीतिक बह की सफरता क्यों प्रश्न की ?
- ३३- बह के नेता अपने का कार्यवाहों की क्या क्या अप्रतिष्ठ बहाकारों करते हैं ?
- ३४- कार्यवाहिक फिर के कोन कोन से कार्य आपके द्वारा हुए हैं ?
- ३५- आपका बह विधान बना निर्वाचन के लिए प्रत्याक्षी का नियम को करता है ?
- ३६- संसदन को बह से कोटी बहाई से क्या फिरने प्रभाव में परापूर्व जितना गया ?
- ३७- यदि कोई सेवा प्रत्याक्षी का जाता है फिर बहाई की संसुति नहीं रखी तब पराधिकारी क्या करते हैं ?
- ३८- विधान बना के फिरने निर्वाचन में आपके बह का अनुमानित: जितना मन मन्त्र हुआ होना ?
- ३९- बह पराक्षि फिर फिर बहावों से और जितनी प्राप्त हुई होनी ?
- ४०- फिरने कोन है जितना बह फिर ? आप और पराक्षि का अनुमान बीचिक
- ४१- यदि आपका विरोधी प्रत्याक्षी फिर की स्थिति में का बाव तो उसके साथ क्या करेंगे ?
- ४२- आपके बह को फिर बह से अधिक मन है ?
- ४३- सेवा अनुमन आप क्यों करते हैं ?
- ४४- आप पराक्षी को क्यों और जाने के लिए फिर फिर बोवों का बहारा लेते हैं ।
- (क) विद्वान (ख) वातिवाह (ग) वात्वाहन (घ) प्रलोमन (ङ) मन (च) वात्तक (झ) बहाव (ज) आपकी वैमान्य का उद्दीपन (ञ) अन्य बहों की वात्तिका (ट) नेताओं द्वारा सम्बोधन (ड) अन्य ।
- ४५- पराक्षी बह से अधिक फिर उभाव से प्रमाणित होता है ।
- ४६- आपके बह के विचारक । विचारक प्रत्याक्षी ने कार्यवाहों के कोन कोन से कार्य फिर हैं ?
- ४७- क्या आप प्रत्येक राजनीतिक बह के कार्यवाहों एवं नेताओं से संपर्क रखते हैं ? सेवा क्यों करते हैं ?

- ४६- कि वह है आपको वह नहीं लगता है ? ऐसा क्यों ?
- ४७- आपके वह का कि कि क्यों में और कि नाम से संलग्न है । कुंभक पञ्चुर :
विवाही : व्यापक : कलित : व्यापारी : अन्य
- ४८- क्या आप वह बात से संलग्न हैं कि राजनीतिक बलों के कारण अराजक कार्य
होनेवालों की संस्था कबो या रही है ?
- ४९- यदि राजनीतिक नेताओं के साथ न हो तो क्या अराजक कम होंगे ?
- ५०- राजनीतिक वह के नेता सरकारी कर्मचारियों को क्या आकर्षित करके काम
करा लेते हैं ?
- ५१- आप कि उद्देश्य से वह संघर्ष करने जाते हैं ?
- ५२- क्या वह हैं संलग्न का कार्य करने अपने नेतृत्व का विकास कर सकते हैं ?
- ५३- राष्ट्र में क्या कोई छापी या बली है ?
- ५४- भारत का उत्थान कि विचारधारा से संभव है ?
- ५५- कला को हस्तियों का ज्ञान कैसे करते हैं ?
- ५६- आपका वह कौन कौन से उत्थन मानता है ?
- ५७- अपने वह की नीतियों की जानकारी कि माध्यम से करते हैं (क) रेडियो
(ख) समाचार (ग)
- ५८- आपको एक ही पुत्र ही, उसे राजनीति में जाने के लिए क्या करेंगे ?
(क) उत्थापित (ख) क्षीरसाधित (ग) पुत्र नहीं ।
- ५९- पिछले विधान बना चुनाव में आपके वह की वो तीन सहायता मिले हैं क्या
उसकी पूर्ति है ?
- ६०- चुनाव अभियान के समय आपके वह द्वारा कौन कौन से सार्वजनिक कार्य मिले गये ?
- ६१- आपके वह के जितने सक्रिय, वह के प्रत्याक्ष को विधान बना निर्वाचन में मत नहीं दिये
- ६२- यदि वर्तमान है अधिक उत्तरदायित्व का यह बिना जाने तो कौन या यह आप
प्रत्या करेंगे ।
- ६३- आप अपने वह के बाहर के कि तीन व्यक्तियों की बात नहीं टाक सकते हैं ।
- ६४- क्या आपका विश्वास है कि कला के सभी कार्य वैधानिक और लोकतांत्रिक हों
हैं वो सकते हैं ।
- ६५- आपके वह ने वो आपका प्रस्ताव किता है उससे क्या आप संतुष्ट हैं ?

- ८०- आपके बल के निम्ने कार्यकर्ताओं ने पिछले दो वर्षों में बल परिकल्पित किया है ।
- ८१- आप अपना कार्यक्षेत्र कैसा किसे मानते हैं ?
- ८२- यदि आपका कार्यक्षेत्र कैसा बल है तबान पत्र दे दे तो उसके साथ के लिए क्या आप की बल होऊँ देने ?
- ८३- आपके बल के लोक बना बल-य । प्रत्यक्षी का क्या विधान बना सोम में बाकल होता है
- ८४- यदि संसदन के पदाधिकारियों का पद केतिक को बाव तो कैसा रहेगा
(क) बल का संसदन बल होता (ख) पद के लिए बहुत है तोन हलुक हो बावने (ग) पदाधिकारी अपनी व्यक्तिगत किन्ताओं से मुक्त हो बावना (घ) संसदन और बावन बारबर होने ।
क्या आप इसके बलगत है ? यदि हाँ तो पत्र कैसे प्राप्त होगा ?
- ८५- बल के कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत परिण पर किना ध्यान देना चाहिए
(क) अधिक (ख) कम (ग) किन्तु नहीं
- ८६- आपके बल के कार्यकर्ता अपने बल के विद्वान्तों और नीतियों को अपने व्यावहारिक जीवन में किसे जेड तक अपनावे हुए हैं ?
(क) बहुत कम (ख) कम (ग) बाधा (घ) अधिक (ङ) पूर्णरूपेण (च) किन्तु नहीं
- ८७- आपकी दृष्टि है कि राजनीतिक बल का परिणम कबदा किन्ताई बल रहा है और क्यों
- ८८- आपका बल अपने आवश्यक कार्यों के संवाहन के लिए पत्र कैसे हलुठठा करता है
(क) बल-यता मुक्त (ख) व्यापारियों को दृष्टिधा प्रदान कर - जैसे कोटा, पराधि, लाहौर (ग) बाव ।
- ८९- बल सब पत्र को कहां कहां व्यव करते हैं ? पुनाय में किन किन स्मों में व्यव करते हैं ?
- ९०- बल के व्यावहारिक मामलों को कार्यकर्ता या कैसा किन किन रूपों में प्रकट करते हैं ?
(क) बाव विवाद (ख) उच्च पदाधिकारियों से किन्ता (ग) कलता में प्रचार (घ) विरोधी बलों को बाकल (ङ) बारबीट (च) नाती कलौध (झ) अन्य ।

६६- यह केन्द्रोन्नति किन किन आधारों पर होती है ?

- (क) समय का दान (ख) वनीय प्रतिनिधित्व (ग) पौखीय प्रतिनिधित्व
(घ) यह के प्रति निष्ठा (ङ) वैवाहिक योग्यता (च) साधन योग्यता
(झ) कार्य के अनुभव (ज) नेताओं के प्रति शक्ति (झ) अन्य ।

६७- प्रत्येक राजनीतिक दल के नेता आपस में मिलते रहें तो क्या रहेगा ?

समाचार पत्राधिकारी

दिनांक

परिशिष्ट ' ह '

(राक्षसीतिक वलों के नेताओं से साधारणकार में प्रमुख प्रत्यापत्ति)

राक्षसीतिक वल का नाम : नाम : वाति : पद : बाहु :
 राक्षसीतिक बाहु : क्षैपिक बोधका : कुल्य ज्यवाय : गौण ज्यवाय :
 गुरुण । स्त्री : धर्म : नाणाओं का नाम संकुमा विभक्त परिवार :
 परिवार सकल संस्था १ परिवार में स्थान : राक्षसीति में प्रमुख वल :
 पदों का अनुस :

- १- किन परिस्थितियों में आपको राक्षसीति में ला दिया ?
- २- संसदन में अनुशासन काये रखने के लिए आप क्या क्या उपाय करते हैं ?
- ३- वल को क्षमिताओं के लिए क्या क्या करते हैं ?
- ४- वन 1974 ई० के विधान बना चुनाव में बीता बार किन स्थितियों में हुए ?
- ५- सभी नागरिकों को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान कैसे कराया जाना चाहिए ।
- ६- नेता में किन किन विशेषताओं का होना आवश्यक है ।
- ७- वल परिवर्तन पर आपका क्या विचार है ?
- ८- सभी वलों के नेता आपस में मिलते जुलते हैं तो देश पर क्या प्रभाव पड़ेगा
- ९- भारत की वर्तमान प्रगति, वर्तमान परिस्थितियों में कैसे हो सकती है ?
- १०- चुनावों में जन के सुझाव को कैसे रोकें जाय ।
- ११- यदि मतदाताओं की परीक्षा का देने का अधिकार मिल जाये तो विधान बना निर्वाचन पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?
- १२- राक्षसीतिक वलों में कुछ कच्ची स्त्रियाँ पैदा हो जाती हैं ?

- १३- बाप राखनीति करना कब्य कर दें तो आपकी क्या क्या शानियाँ होंगे ?
- १४- राखनीति करनेवालों के प्रति कसता बाकसत कैसा पाव रक्ती है ?
- १५- राखनीतियों के लिए बाह्यक्रम और प्रशिक्षण हो तो कैसा रहेगा ?
- १६- बस के अन्धर किन्तु किन्तु बनों में शर्मस्य कैसे ब्काले है ?
- १७- कार्यश्रमियों का व्यवस्थित जित किन किन रूपों में करते है ?
- १८- बस की नीतियों का निर्धारण कितने लोग करते है ?
- १९- कामावालों को अपने प्रतिनिधियों को बापस जुलाने का अधिकार मिल बाव तो कैसा रहेगा ?
- २०- कार्यश्रमियों को विभिन्न बनों पर नियुक्त करने में किन किन बातों पर ध्यान कैसी है
- २१- बस के प्रत्याखे का अन्तिम निर्णय निर्वाचन दौत्र में बस के सदस्यों के द्वारा ही निर्वाचित हो तो कैसा रहेगा ?

कतापार

विनांक

परिचिष्ट ' न '

(नान्तरिकों से साक्षात्कार में प्रयुक्त प्रत्ययसूची)

विधान समान दौलत : विकास समूह : स्वायत्त विभाग : प्रायः

नाम : वाणिज्य : आर्थ : विभाग :

मुख्य व्यवसाय : माध्यम व्यवसाय : कुशल का प्रयोग ?

केवल स्तर ? परिवार समूह संस्था : परिवार में साक्षात्कार संस्था

व्यवसायिक साक्षात्कार संस्था : माध्यम : कार्य : नगर में संस्था

समूह संस्था : व्यवसायिक क्षेत्र :

- १- विकास समूह का सबसे बड़ा अधिकारी कौन होता है ?
- २- आपके विकास समूह के प्रमुख (प्रमुख प्रमुख) का क्या नाम है ?
- ३- विकास समूह समिति का क्या कार्य है ?
- ४- समूहोत्थार का क्या प्रमुख कार्य है ?
- ५- धानाध्वरा (धानेदार) का क्या कार्य है ?
- ६- किसका सबसे बड़ा अधिकारी कौन होता है ?
- ७- किस परिवार का क्या काम है ?
- ८- किसके स्वायत्तताओं का सबसे बड़ा अधिकारी कौन होता है ?
- ९- मुख्य विभाग का किसमें सबसे बड़ा अधिकारी कौन होता है ?
- १०- साक्षात्कार किसमें विभागों की कुल संस्था मिलती है ?
- ११- किसका विधान समान दौलत का वर्तमान विभाजक कौन है ?
- १२- इस दौलत का वर्तमान संस्था समूह कौन है ?
- १३- नाम किस प्रयोग के विभाजक है ?
- १४- आपके प्रयोग का वर्तमान मुख्य क्षेत्र कौन है ?
- १५- आपके प्रयोग की साक्षात्कारी कौन है ?
- १६- उपर प्रयोग विधान समूह के दोनों सदस्यों के नाम बताइये ?

- १७- उपर प्रवेश का उच्च न्यायालय कहाँ पर स्थित है ?
- १८- उपर प्रवेश के उच्च न्यायालय के वर्तमान प्रधान न्यायाधीश का नाम बताइये ?
- १९- उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर आप किना विश्वास करते हैं ?
- २०- मुख्य न्यायाधीश को क्या हक है और क्या शक्त है ?
- २१- उपर प्रवेश का वर्तमान राष्ट्रपति कौन है ?
- २२- भारत का वर्तमान राष्ट्रपति कौन है ?
- २३- भारत की राजधानी कहाँ है ?
- २४- भारत का वर्तमान प्रधान न्यायाधीश कौन है ?
- २५- भारत का सर्वोच्च न्यायालय कहाँ पर है ?
- २६- सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश का नाम बताइये ?
- २७- भारत के राष्ट्रपति का क्या हक है और अधिकार क्या हैं ?
- २८- भारत के राष्ट्रपति को क्या हक है और क्या शक्त है ?
- २९- भारतीय संसद के दोनों सदन के नाम बताइये ।
- ३०- भारत के प्रधान न्यायाधीश का क्या हक है और क्या शक्त है ?
- ३१- सर्वोच्च न्यायालय, संसद और राष्ट्रपति ये तीनों किससे निर्वाचित रहते हैं ?
- ३२- भारत के प्रमुख राजनीतिक दल कौन कौन हैं ?
- ३३- संविधान विधान क्या दोष है और क्या दल का प्रस्तावों पिछले विधान बना हुआ है किन्हीं कुछ ?
- ३४- पिछले विधान बना हुआ पुनः में द्वितीय स्थान कि दल के प्रस्तावों का रहा ?
- ३५- तीसरे स्थान पर कि दल का प्रस्तावों रहा है ?
- ३६- प्रत्येक राजनीतिक दल के एक एक प्रधान जोषित नेता का नाम बताइये ।
- ३७- प्रत्येक राजनीतिक दल कौन का प्रमुख कार्य करते हैं ?
- ३८- इन राजनीतिक दलों में और क्या क्या आवाजें करने पाएँ ?
- ३९- आप कि दल है प्रभावित है और क्यों ?
- ४०- आप कि दल को क्या है पुरा समझते हैं और क्यों ?
- ४१- विधान बना की वर्तमान निर्वाचित प्रणाली में कौन का परिवर्तन पाएँगे ?
- ४२- विधान बना का लोक बना के पुनः आपकी जानकारी में क्या निष्कर्ष होते हैं ?

- ४३- आपने अब तक विधान बना के कितने निर्वाचनों में अपना बहुमुख्य भा दिया है
- ४४- आख्यान में आप किसी सलाह को सब से अधिक महत्व देते हैं
 (क) परिवार (ख) ग्राम प्रधान (ग) लंडन विश्व (घ) रिस्तेदार
 (ङ) बासीय नेता (च) नांदरी प्रधानमंत्री (छ) अन्य (ज) किसी की नहीं
- ४५- आख्यान के पछे कितने भी लोग भा पाँगे जाये क्या उन्हें आस्वादन देना चाहिये ?
- ४६- भा पाँगेवाले को किस बात पर अधिक ध्यान देना चाहिये ?
 (क) गरिब (ख) ईमानदारी (ग) व्यवहार (घ) आर्थिक दशा
 (ङ) शांति (च) सेवा में (छ) पुरुष (ज) शिक्षा (झ) शिक्षा
 (ञ) प्रचार (ट) बीतने को आशा (ठ) धर्म (ड) निर्वाचन क्षेत्र का निवासी ।
- ४७- वर्तमान समय में सब से कम ईमानदार लोग हैं ?
 (क) कुशाक (ख) पुरखुर (ग) बकील (घ) ईश्वरनिष्ठ (ङ) राजनीतिक नेता
 (च) काबिल का बाबू (छ) व्यावसायिक (ज) पुलिस (झ) मंत्री
- ४८- आप किस राजनीतिक दल के सदस्य हैं ? और क्यों ?
- ४९- आपका कोई रिस्तेदार या भिन्न किस दल का सदस्य या नेता है ?
- ५०- आपने किसी प्रदर्शन, जुलूस, सत्याग्रह, मेराव आदि राजनीतिक आन्दोलन में कभी भाग लिया है ?
- ५१- आपने कितने राजनीतिक दलों के नेताओं के माध्याम हुने हैं ?
- ५२- किस नेता की बात आपको प्रिय लगे ।
- ५३- लोग तो बात बर रही है ?
- ५४- राजनीति बानकारी के लिए आप क्या पढ़ते हैं ?
- ५५- क्या आपके परिवार में रेडियो या ट्रांसिस्टर है ?
- ५६- परिवार के कितने सदस्य समाचार पढ़ते हैं या समाचार पढ़ते हैं ?
- ५७- किस समय समाचार पत्र पढ़ने या समाचार हुने को प्रसन्न हवा उत्पन्न होती है
- ५८- क्या वर्तमान सरकार से बीकन, जन और प्रतिष्ठा की सुरक्षा खुश करते हैं ?
- ५९- सेवा खुश क्यों हुआ ?
- ६०- किन्तु समाज की कई व्यवस्था को क्या समाप्त कर देना चाहिये ?

- ६१- बाजारों में बौ भी सामान मिलते हैं क्या उनका मूल्य स्थिर । क्यों। क्यों रहना चाहिए ?
- ६२- अपना विचार कर लेने के लिए तुम्हारा और तुम्हारे दोस्तों को क्या स्वतन्त्रता का क्या चाहिए ?
- ६३- क्या व्यक्तिगत सम्पत्ति हम के पास होनी चाहिए ?
- ६४- समाज या राज्य का विकास होना चाहिए वह कब तक चलने से संतुष्ट करता रहे तो सबसे क्या होगा ?
- ६५- इस समय भारत में कौन कौन सम्पत्तियाँ चल रहे हैं ?
- ६६- चुनाव बीच जाने के बाद क्या किसी को अपना मत बदलना चाहिए ?
- ६७- बौ चुनाव हुआ व्यक्ति यदि मत बदलें तो क्या उसका मत समाप्त कर दिया जाय ?
- ६८- चुनावों के कारण कलहा में क्या बढ़ा है (क) वृद्धि (ख) संघर्ष
- ६९- सर्वोच्च शक्ति किसने निरूपित है (क) सरकार (ख) संविधान (ग) कलहा
- ७०- चुनाव और राजनीतिक दृष्टि के लिए आप किस पर अधिक विश्वास करते हैं (क) समाचार पत्र (ख) रेडियो (ग) राजनीतिक दल (घ) पत्रिका
- ७१- कौन या राजनीतिक दल दल में जाने या क्या रहे तो आपकी स्थिति बहुत अच्छी रहेगी ।
- ७२- आप अपना मत निर्णय कैसे करते हैं (क) चुनाव के पूर्व (ख) चुनाव के पक्ष (ग) चुनाव के अन्त (घ) डीक मत डालने के पहले
- ७३- क्या आपके पास चुनाव अभियान में कोई दल बन भी चाहने जाय ? यदि दिया तो किना ?
- ७४- क्या इस समय बोलना या बोलन सेना में आपने मान लिया है ?
- ७५- सरकार के लिए कानून है आपका कौन या नाम हुआ है ?
- ७६- किस कानून है कौन ही कानून नहीं है
- ७७- क्या है आप कानून का दल है क्या है आप तक विधान सभा और संसदीय चुनावों में मिलने क्यों को मत दिया है
- ७८- पिछले विधान सभा चुनाव में किस किस दल के कार्यकर्ता आपके नहीं मिले ?
- ७९- किस दल का प्रस्ताव आपने अपनाये पर जाया ?
- ८०- राजनीतिक दलों के अलावा क्या अन्य कोई व्यक्ति आपसे चुनाव के संबंध में मिला

- ८१- कौन से अन्य संरक्षणों से आपका सम्बन्ध है
- ८२- क्या अन्य संरक्षण जो चुनावों में अपना विचार व्यक्त करने से रोकता है ?
- ८३- यदि राक्षसीय नेता और व्यक्ति महापुरुष दोनों एक ही समय आपके दरवाजे पर आये तो पहले किसी पिछे ?
- ८४- आप राक्षसीय नेताओं की बातों पर किसी विश्वास करते हैं ?
(क) बहुत कम (ख) कम (ग) बाधा (घ) अधिक (ङ) विश्वस्त नहीं ।
- ८५- क्या वर्तमान युग में चुनाव, पाठ, कला और धर्म करना जरूरी है ?
- ८६- व्यक्ति को कमाने को छोड़ दे उचित और अनुचित का विचार ध्यान रख रहा है -
(क) बहुत कम (ख) कम (ग) बाधा (घ) आगे से अधिक (ङ) पूरा पूरा (प) विश्वस्त नहीं ।
- ८७- स्वतंत्रता के परभाव वास्तविक जीवन में क्या परिवर्तन हुआ है -
(क) बड़ा (ख) बड़ा (ग) समान
- ८८- अपना महान, धर्म और व्यवसाय सब सरकार के हाथों में क्यों देना देना ?
(क) बहुत अच्छा (ख) अच्छा (ग) कम अच्छा (घ) सराव (ङ) बहुत सराव
- ८९- किसी छिद्र परना सब से अच्छा होना ?
(क) अच्छी (ख) वास्तविक (ग) नहीं (ङ) कम (ङ) प्रतिष्ठा (घ) पैर
- ९०- पिछले विधान सभा चुनाव में आपके मतदान से कौन कौन बहुत असह्य हुए
- ९१- कुछ राक्षसीय मतों के विचार में टीकाये हैं क्या आप इसे सह्य हैं ?
(क) सदा कठिनाई हरिकर्तों एवं सुखानों पर विशेष ध्यान देती है
(ख) कर्तव्य में व्यापारी और उद्योग के लोग अधिक हैं ।
(ग) संरक्षण कठिनाई में अब छोटे लोग बने हैं ।
(घ) भारतीय लोक कठ में छोटी बातियों के लोगों का ही मोलबाला है ।
(ङ) हिन्दू व्यवस्था और रामराज्य परिणाम की अब कोई आवश्यकता नहीं है ।
(प) सुखित व्यवस्था सुखानों को विशेष कर्तव्य दिखाना चाहती है
- ९२- चुनाव के समय मतदाताओं की बातों पर अधिक ध्यान दिया जाता है और पाप में नेताओं की क्या यह सब है ?
- ९३- मतदाता अपने वास्तविक विचारों को व्यक्त नहीं करता कि मातृ कौन अपनी बात कमाने के लिए भेरे पाठ अन्तिम पाठ तक वा आध्यात्म क्या यह सब करे ?

- ६४- जो मावाता मा देने नहीं बाते है उसका प्रमुख कारण क्या है ?
 (क) राजनीति में रुचि नहीं (ख) समय का अभाव (ग) जाने में काम का दुष्मान (घ) उस दिन के मौसम की व्यवस्था नहीं (ङ) निश्चित पर विश्वास नहीं (च) कोई वास्तव नहीं करता (झ) कौन माराच को बावेंने (न) अन्य ।
- ६५- जो राजनीति में बहुत सक्रिय रहता है उसका क्या उद्देश्य है ?
 (क) मन कमाना (ख) स्वार्थ हासिल (ग) बातीय सम्मान (घ) सामाजिक प्रतिष्ठा (ङ) प्रतिष्ठा के साथ आर्थिक सुधार (च) देश सेवा (झ) अन्य
- ६६- अपनी आर्थिक स्थिति का सुधारण करते हुए अपने को क्या समझते हैं ?
 (क) बहुत अच्छा (ख) साधारण (ग) साधारण से नीचे
- ६७- समाज में हम से दुसी जीवन व्यतीत करने के लिए आप कौन सा कार्य सम्भव करेंगे ?
 (क) कुंठ (ख) कौन से मजदूरी (ग) कारखाने में मजदूरी (घ) व्यापन (ङ) व्यापार (च) राजनीति (झ) डाक्टरी (न) कारखाने में मजदूरी (ङ) साहित्य सेवा (न) किनेमा में मजदूरी (ट) अन्य
- ६८- यदि विधान बना चुनाव में परीक्षा का मा देने का अधिकार आपको मिल जाय तो क्या रहेगा ?
 (क) बहुत अच्छा (ख) अच्छा (ग) मराय (घ) बहुत मराय (ङ) कुछ नहीं
- ६९- आपको दुष्टि में कि वाति है मावाता मावान में किने प्रतिष्ठा मान लेते हैं ?
 (क) गरिब (ख) दुष्मान (ग) बाक (किन्व वा केवट (ङ) प्राप्ता (च) दानि (झ) धर्म (न) अन्य ।
- ७०- कि व्यक्ति को अच्छे चुनाव में अपने दौम का विवाक माना अच्छा होगा ?
- ७१- कौन चुनाव कि कारणों से बीच बाती है ?
- ७२- राजनीतिक पक्ष चुनावों में कन कि कि क्पा में व्यव करते हैं ?
- ७३- किमा विधान बना दौम की कौन कौन प्रमुख समझाते हैं ?

Bibliography

Books

1. Adair, John , Training for Leadership (London 1974).
2. Alatas, Syed Hussein. Intellectuals in developing Society (London 1977)
3. Almond Gabriel A. and Coleman James S. (Eds). The Politics of Developing Areas (Princeton 1960).
4. Almond Gabriel A. Powell G. Bingham. Comparative Politics (Amerind , second Indian reprint, 1975)
5. Almond Gabriel A. and Verba Sidney, The Civic Culture (Princeton, 1963).
6. Apter David, The Politics of Modernization (Chicago, 1965)
7. Banfield Edward C., Political Influence (New York, 1961)
8. Barnes Harry Elmer, Sociology and Political Theory - A Consideration of the Sociological Basis of Politics (New York 1925).
9. ^xBaxter G., The JanSangh , A Biography of an Indian Political Party (Philadelphia, 1969).
10. Blondel J. Voters, Parties and Leaders (Penguin Book 1963)
11. Boring Edwin Carrigues, Longfield Herbert Sidney and Weld Harry Parter, Eds. Foundations of Psychology (Asia Publishing House, 1963).
12. Brass Paul R., Functional Politics In An Indian State. The Congress Party In Uttar Pradesh (Bombay 1966)
13. Brocher Michael, Political Leadership in India. An Analysis of Elite Attitudes (Vikash Publication 1969).
14. Brecht Arnold, Political Theory, The Foundations of Twentieth Century Political Thought (Bombay 1965).
15. Burger Angela Sutherland, Opposition in a Dominant Party system (Berkley and Los Angeles, 1969)
16. Burns Edward Mc Hall, Ideas in conflict - The Political Theories of the Contemporary World (New York 1960).

17. Campbell Angus, Gurin Gerald and Miller Warren. E.,
The Voters Decides (Evanston Peterson and Company 1964).
18. Gastles P.G., Pressure Group and Political Culture
(London 1967)
19. Ceter Francis W., Recent Political Thought (New York 1934)
20. Gam.Paul H., Conflict and Decision Making - An Introduction
to Political Science (New York 1971).
21. Dahl Robert A., Modern Political Analysis (New York 1972).
22. Dennis Easton, Children In Political System (New York 1969)
23. Deutsch Karl W., The Nerves of Government Models of
Political Communication and Control (New York, Glencoe 1963).
24. Duverger Maurice, Political Parties- translated by
Barbara and Robert North (London 1965).
25. Eckstein Harry, Pressure Group Politics (Stanford 1960).
26. Eldeveld Samuel J., Political Parties - A Behavioral
Analysis (Vera & Co., Bombay First Indian Reprint 1971).
27. ^u Eulon Heinz, Eldeveld Samuel J. Janowitz Morris.,
Political Behavior (Amerind Publishing Co., New Delhi,
Indian edition 1972).
28. Field John Osgood , Electoral Politics in the Indian
States. The Impact of Modernization (Delhi 1977 Vol.3)
29. Friedrich C.J., Man and his Government - An Empirical
Theory of Politics (New York 1963).
30. Ghosh Sankar, Socialism and Communism in India
(Allied Publishers 1971).
31. Goel, Madanlal, Political Participation in a developing
Nation-India (Bombay 1974).
32. Goldthorpe John H., Lockwood David , Bechhofer Frank,
Platt Jennifer- The Affluent Worker, Political Attitudes
and Behaviour (Cambridge 1968).
33. Greenings Evan Kelley H.W., Leiserson Michael Eds.
The Study of Coalition Behavior (New York 1970)
- 33(A) Grusky OSCAR, Miller George A. eds. The Sociology
of Organization Basic Studies (New York 1970)

34. Hardgrave Robert L. jr., India Government and Politics in Developing Nations 2nd Ed. (New York 1978).
35. Hartmann Horst, Political Parties in India (Moonakshi Prakashan, Meerut, 1971).
36. Huntington Samuel P., Political Order in Changing Society (Bombay May 1978).
37. Hyman Herbert H. Political Socialization (Amerind Publishing Co., New Hark Delhi, 1972).
38. Johnson Harry M., Sociology A systemic Introduction (Allied Publishers, 4th Indian Reprint, 1973).
39. Jennings Sir Iver ,Party Politics. Volume I,II (Cambridge 1960, 1961).
40. Jupp J., Political Parties (London 1968).
41. Kanak K.L. and Mayer Ralph C., Democratic Politics In India (New Delhi, 1977).
42. Katz Elihu and Lazarsfeld Paul, Personal Influence (Glencoe 1965)
43. Kay.V.O., Politics , Parties and Pressure Groups (New York 1968).
44. Kothari Rajani, Politics in India (Orient Longman, 1970).
45. Kay V.O. Jr. Public Opinion and American Democracy (New York 1961).
46. Krech David and Crutchfield Richard S., Theory and Problems of Social Psychology (Tokyo 1948).
47. Lasaki Harold J., A Grammar of Politics (London 1960).
48. Lazarsfeld Paul F., Berelson Bernard and Gaudet Hazel. The People's Choice (New York 1944).
49. Lasswell Harold, The Decision Process (College Park 1966)
50. Lasaki Gerhard, Power and Privilege (New York, 1966)
51. Lindsay Gardner, eds., The Hand Book of Social Psychology (Reading Mass : Addison Wesley Co. Inc., 1964).
52. Lipset S.M., Political Man (First Indian edition 1973).

54. Mackenzie R.T., British Political Parties, 1954.
55. Martindale Don, The Nature and Types of Sociological Theory (Boston 1970).
56. Harvick Dwaine, Political Decision Makers (Glencoe 1961)
57. Mehta Prayag. Election Campaign. Anatomy of Mass Influence (Delhi 1978).
58. Metcalfe H.C. and Wriwick L. eds. Dynamic Administration (New York 1940).
59. Michel Robert. Political Parties (Glencoe Illinois 1958)
60. Milbrath Lester W., Political Participation (Chicago 1965)
61. Misra B.B., The Indian Political Parties ; An Historical Analysis of Political Behaviour upto 1947 (Delhi 1976).
62. Mukherji S.K., Election to the Howrah Parliamentary Constituency 1971 (The World Press 1975).
63. Narayan Jaya Prakash and others . Towards Fair and Free elections (New Delhi, 1975).
64. Neumann Sigmund (eds). Modern Political Parties (Chicago 1958).
65. Palmer Herman D., The Indian Political System (Boston 1961).
66. Palombara Joseph Ia and Weiner M. eds. Political Parties and Political Development (Princeton New Jersey 1969).
67. Panthan Thomas . Political Parties and Democratic Consensus A Study of Party Organizations in an Indian City(Delhi 1976).
68. Park Richard L and Tinker Irene, eds. Leadership and Political Institution in India (Princeton 1960).
69. Parsons Talcott, The Social System (Glencoe 1951).
70. Perry Ralph B., Realms of Values (Cambridge 1954)
71. Pye Lucian W., Politics ,Personality and Nation Building (New Haven 1962).
72. Pye Lucian W., Aspects of Political Developments (Indian edition 1972).
73. Pye Lucian W., eds. Communications and Political Development (First Indian Reprint 1972).
74. Pye Lucian W and Verba Sidney, eds. Political Culture and Political Development (Princeton New Jersey 1965).

75. Mookach Milton., The Open and closed Mind (New York 1960).
76. Renssch Joseph S. eds. Contemporary Sociology
Peterewen- London.
77. Rubinstein Alvin S. eds. Communist Political Systems
(Prentice Hall, New Jersey 1966)
78. Rush Floyd L. Psychology and Life, 7th edition Runciman
W.G., Social Science and Political Theory (Cambridge 1968).
- 78(A) { Runciman
79. Sartori Giovanni, Parties and Party Systems. A frame Work
for Analysis Volume I (Cambridge 1976).
80. Seliger Martin. Ideology and Politics (London 1976).
81. Shah Giri Raj. India Rediscovered (New Delhi 1975).
82. Siraihar, V.M., Rural Elite in a developing Society .
A study in Political Sociology (New Delhi 1970).
83. Smelser Neil J. (ed.) Sociology (New Delhi 1970).
84. Snyder Richard C., Bruck H.W. and Burton Sapin - Decision
Making as an Approach to the Study of International
Politics (Princeton 1964)
85. Stern Robert W., The Process of Opposition In India two
case studies of How Policy shapes Politics (Chicago 1970).
86. Stickland D.A. Wade L.L. and Johnston R.B. - A Primer
of Political Analysis (Chicago 1968).
87. Varma S.P., Modern Political Theory(New Delhi 1975)
88. Varma S.P. Iqbal Narain and Associates, Voting Behaviour
In A Changing Society (Delhi 1973).
89. Welch James, Faction and Front : Party Systems in
South India (New Delhi 1976).
90. Wasky Stephen L. eds. Political Science- The Discipline
and it's Dimensions, An Introduction (Calcutta 1972).
91. Weiner M., The Politics of Secrecy (Chicago 1962).
92. Political Parties and Political Development (Princeton 1966).
93. - Party Building in a New Nation - The Indian National
Congress (Chicago 1967).
94. - Party Politics in India (Princeton New Jersey 1967).
95. Wilcox Allen R .eds., Public Opinion and Political Attitudes
(New York 1974).

96. Young Pavline V., Scientific Social Surveys and Research (Prentice Hall ,London).
97. Zetterberg H. eds. Sociology in the United States of America (Paris UNESCO 1968).
98. Baidi A Mein eds . The Annual Register of Indian Political Parties Proceedings and Fundamental Texts 1973-74 (New Delhi 1974).

Articles.

1. Ahmed Bashiruddin. The Electorate, Seminar 212 April, 1977, page 19-24.
2. Catherine C. Currie, Political Sociology of Barrington Moore, Political Science Review 15 (2-4) 1976 page 1-25.
3. Chatterjee Partha, Stability and change in the Indian Political system ; Political Science Review 16 (1) 1977 page 1-32.
4. Das B.C., The Dynamics of factional Conflict. Indian Political Science Review January, 1977 page 60-66.
5. Frank P. Belloni and Dennis C. Belloni- The Study of Party factions as competitive Political Organization. The Western Political Quarterly 29 (4) 1976.
6. Friedrich Carl J. Political Pathology. The Political Quarterly 37(1) 1966 page 70-85.
7. Irvings Felsdare , Effect of Neighbourhood on Voting Behavior, Political Science Quarterly 83, 1968 page 516-29.
8. Jennings M. Kent and Nien Richard G., Transmission of Political Values from parent to child. American Political Science Review Volume 64 (4) 1970 page 169-184.
9. Krishnan P., Toward a mathematical representation of growth of political parties in India. Indian Political Science Review 741p Jan. 1978. page 1-7.

10. Marvin E. Olsen- Three Routes to Political Party Participation
The Western Political Quarterly 29 (4) Dec., 1976 page 820-82.
11. Palma Giuseppe Di and Clusky Herbert M. Personality
and Conformity : The Learning of Political Attitudes,
American Political Science Review 64 (4) Dec., 1970
page 1054-1073.
12. Pomper Gerald N. Decline of Parties in American Elections.
Political Science Quarterly Vol.92 Spring 1977 page 21-41.
13. Mathore L.S. The Congress for Democracy in Indian Politics,
Genesis and Contribution , Indian Journal of Political
Studies 2 (1) Jan 1973 page 43-57.
14. Seth Pravin N., The Electoral Behaviour : Patterns of
continuity and change . The Indian Journal of Political
Science, volume 34 (2) April-June, 1973.
15. Srivastava S. Patterns of Political Leadership in emerging
areas : A case study of U.P., Political Science Review
9 (3-4) July-Dec., 1973 page 355-377.
16. Talwar Sadanand, Janata Party- An Attempt towards Polarisation
of Political Forces, Indian Political Science Review 11(2)
July 1977 page 157-168.
17. Thapar Renuka - The Academic Professional , Seminar 222
Feb 1978 page 18-23.
18. Vajpayi Dhirend K. -The Role of Mass Communication in
Modernization and Social change in Uttar Pradesh . The
Indian Journal of Political Science volume 34(2) April-
June 1973.
19. Winter Jerry J. Political Parties, Interest Representation
and Economic Development in Poland, American Political
Science Review volume 64(4) Dec. 1970 page 1239-1245.
20. William H. Riker and Peter C. Ordeshook, A Theory of Calculus
Voting . American Political Science Review 62, March 1968,
page 25-42.
21. William P. Browne .Benefits and Membership. A Reappraisal
of interest group activity. The Western Political Quarterly,
volume 29(2) June 1976.
22. William R. Schenfeld, The Focus of Political Socialization
Research World Politics Volume 23, 1971 page 544-578.